आगम-साहित्य रत्न-मालाया स्तृतीयं रत्नम्

स्थविर-पुंगव श्री विसाहगणि महत्तर-प्रणीतं, सभाष्यं

निशीथ सूत्रम्

आचार्य-प्रवर श्री जिनदास महत्तर-विरचितया
विशेष-चूर्ण्या समलंकृतम्

प्रथमो विभागः

पी ठि का

सम्पादक

उपाध्याय कवि श्री अमरचन्द्र जी महाराज
मुनि श्री कन्हैयालाल जी म० "कमल"

आगम-प्रतिष्ठान
सन्मति-ज्ञान पीठ आगरा

अ र्प ण

जिनकी सहज स्नेह-सिक्त चरण सेवा में इस 'तुच्छ सेवक ने निःश्रेयसाभिमुख गति प्रगति की
जिनकी सहज सरल शिक्षा के द्वारा जीवन-क्षेत्र में यथावसर महत्वपूर्ण प्रेरणा मिलती रही,
जिनकी मधुर स्मृति, महाकाल के सुदीर्घ प्रवाह मे भी सहसा निमज्जित नही हो सकती

उन्हीं सद्-गत श्रद्धेय गुरुदेव

श्री प्रतापमल जी महाराज

की

पुण्य-स्मृति में

सादर सभक्ति

विनीत
मुनि कन्हैयालाल "कमल"

प्रकाशकीय

आज सौभाग्य से सन्मति-ज्ञान पीठ एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन लेकर उपस्थित हुआ है। यह प्रकाशन अपने आप में इतना शानदार है कि जिस पर ज्ञानपीठ और उसके स्नेही सहयोगियों को सात्विक गौरवानुभूति है।

आचार्य **जिनदास महत्तर**" जिन शासन के श्रृंगार है। उन पर आज से नही, बहुत प्राचीन काल से ही जैन समाज परमादर का भाव रखता आया है। इस महान् सरस्वतीपुत्र की साहित्य सेवा युग-युगान्तर तक अविस्मरणीय रही है और रहेगी। उनकी अनेक कृतियां हैं, किन्तु उन सब में **"निशीथ चूर्णि"** एक अमरकृति मानी जाती है। जैन जैनेतर सभी विद्वान् इस महान् ग्रन्थ के अध्ययनार्थ सोत्कठ रहे हैं, यही कारण है कि इसके प्रकाशन की चर्चा इन दिनो काफी जोरदार हो चली थी।

सन्मति ज्ञानपीठ एक अल्प-साधन साहित्यक केन्द्र है। अतः उसकी ऐसी क्षमता नही थी कि, वह इतना गुरुतर भार अपने दुर्वल कधों पर उठाता। किन्तु सहज ही मरुधरा के एक ऐसे छेदसाहित्य-प्रेमी सहयोगी मिले, जिनके सत्साहस पर यह उत्तरदायित्व ले लिया गया, जिसका एक अंश शीघ्र ही विद्वानों की सेवा मे अर्पित करते हुए आज हमें हर्ष है।

श्रद्धेय उपाध्याय श्री अमरचन्द्र जी महाराज तथा पण्डित मुनि श्री कन्हैयालालजी महाराज ने जिस लगन और श्रम से सम्पादन कार्य किया है, वह अद्भुत है। जिन सज्जनों ने मुनि युगल को सम्पादन करते देखा है, वे ही इस कार्य की गुरुता को ठीक-ठीक समझ सकते हैं। यदि हमारे अन्य विद्वान् मुनि भी इस दिशा में रस लें तो हमे आशा है, जैन साहित्य की वह श्रीवृद्धि होगी, कि शुद्ध जैनत्व का गौरव-गान दिग्-दिगन्त में गूँज उठेगा।

विजयसिंह दूगड़
मत्री—सन्मति ज्ञान-पीठ आगरा

सम्पादकीय

प्राचीन जैन आगम साहित्यः

प्राचीन भारतीय वाङ्मय में जैन आगम साहित्य का अपना एक विशिष्ट एव महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह स्थूल अक्षरदेह से जितना विराट् एवं विशाल है, उतना ही, अपितु उससे भी कही अधिक, सूक्ष्म अन्तर् विचार चेतना से महान् है, महत्तर है। भारतीय चिन्तन क्षेत्र से जैन आगमसाहित्य को यदि कुछ क्षण के लिए एक किनारे कर दिया जाए तो भारतीय चिन्तन की चमक कम हो जाएगी और वह एक प्रकार से धुंधला-सा मालूम पडेगा। इसका एक कारण है। जैन आगमसाहित्य केवल कल्पना की उडान नहीं है, केवल बौद्धिक विलास नही है, केवल मत-मतान्तरों के खण्डन-मण्डन का तर्क-जाल नही है; वह है ज्ञान सागर के मन्थन से समुद्भूत जीवन-स्पर्शी अमृत-रस। इसकी पृष्ठ-भूमि में त्याग वैराग्य का अखण्ड तेज चमकता है आत्म-साधना का अमर स्वर गूजता है, और मानवीय सद्गुणो के प्रतिष्ठान की मोहक सुगन्ध महकती है।

आगम दर्शन–शास्त्र ही नही, साधना शास्त्र भी हैं। जैनागमों के पुरस्कर्त्ता मात्र दार्शनिक ही नहीं, साधक रहे हैं। उन्होने अपने जीवन का एक बहुत बड़ा भाग साधना में गुजारा है। अपने अन्तर्मन को साधना की अग्नि में तपाया है, उसे निर्मल बनाया है। क्या आश्रव है, क्या संवर है, क्या ससार है, क्या मोक्ष है—यह सब जाँचा है, परखा है। अहिंसा और सत्य के विचारों को आचार के रूप में उतारा है, और अन्ततः आत्मा में परमात्म-भाव के अनन्त ऐश्वर्य का साक्षात्कार किया है। यही कारण है कि आगमसाहित्य में साधना के क्रमबद्ध चरण-चिन्ह मिलते हैं। यह ठीक है कि प्राचीन वैदिक साहित्य भी भारतीय जन-जीवन की दिव्य झाकी प्रस्तुत करता है। परन्तु वेद और ब्राह्मण आध्यात्मिक चिन्तन की अपेक्षा देव-स्तुतिपरायण अधिक हैं। उनमें आत्म-चिन्तन की अपेक्षा लोक-चिन्तन का स्वर अधिक मुखर है। उपनिषद् आध्यात्मिक चिन्तन की ओर अग्रसर अवश्य हुए हैं किन्तु वे भी आत्म-साधना का कोई खास वैज्ञानिक विश्लेषण उपस्थित नही कर पाए। उपनिषदो का ब्रह्मवाद और आत्म-चिन्तन दार्शनिक चर्चा के लौह आवरण में ही आबद्ध रहता है, वह सर्वसाधारण जनता को आत्म-निर्माण की कला का कोई विशिष्ट देखा-परखा व्यवहार-सिद्ध मार्ग नही बतलाता। किन्तु आगम साहित्य इस सम्बन्ध में अधिक स्पष्ट है। वह जितनी ऊँचाई पर साधना का विचारपक्ष प्रस्तुत करता है, उतनी ही ऊँचाई पर उसका आचारपक्ष भी उपस्थित करता है। आगम साहित्य बतलाता है—साधक कैसे चले, कैसे खडा हो, कैसे बैठे, कैसे सोए, कैसे खाए, कैसे बोले, कैसे जीवन की दैनिक चर्या का अनुगमन करे, जिससे कि आत्मा पाप कर्म से लिप्त न हो, भव-भ्रमण से भ्रान्त न हो। यह बात अन्यत्र दुर्लभ है। दर्शन और जीवन का, विचार और आचार का, भावना और कर्तव्य का, यदि किसी को सर्वसुन्दर एवं साथ ही वैज्ञानिक समन्वय देखना हो, तो वह जैन आगमों में देख सकता है।

छेद-सूत्रों की परम्परा:

आगम-साहित्य में छेद सूत्रों का स्थान और भी महत्त्वपूर्ण है। भिक्षु-जीवन की साधना का सर्वाङ्गीण विवेचन छेद-सूत्रों में ही उपलब्ध होता है। साधक आखिर साधक है। उसकी कुछ मर्यादा है। वह सावधानी रखता हुआ भी कभी असावधान हो सकता है, कभी-कभी क्या कर्तव्य है और क्या अकर्तव्य इसका ठीक-ठीक निर्णय नहीं हो पाता, कभी-कभी कर्मोदय के प्राबल्य से जानता हुआ भी मर्यादाहीन आचरण से अपने को पराङ् मुख नही कर सकता, कभी-कभो धर्म और संघ की रक्षा के प्रश्न भी शास्त्रीय विधि-निषेध की सीमा को लाँघ जाने के लिए विवश कर देते हैं। इत्यादि कुछ ऐसी स्थितियाँ हैं, जिनमें उलझने पर साधक को पुनः सँभलने के लिए कुछ प्रकाश चाहिए। यह प्रकाश छेद-सूत्रों के द्वारा ही मिल सकता है। छेद का अर्थ है—जीवन् में से असंयम के अंश को काट कर अलग कर देना, साधना में से दोषजन्य अशुद्धता के मल को धोकर साफ कर देना। और जो शास्त्र भूलों से बचने के लिए पहले सावधान करते हैं, भूल हो जाने पर पुनः सावधान करते हैं, तथा भूलों के परिमार्जन के लिए यथावसर उचित निर्देश देते हैं, वे छेद शास्त्र कहलाते हैं। भिक्षु-जीवन की समस्त आचार-सहिता का रस-परिपाक छेद सूत्रो में ही हुआ है।

यही कारण है कि छेदसूत्रो का गंभीर अध्ययन किए बिना कोई भी भिक्षु अपना स्वतंत्र संघाड़ा (भिक्षुसमुदाय) लेकर ग्रामानुग्राम विचरण नही कर सकता, गीतार्थ नही बन सकता, आचार्य और उपाध्याय-जैसे उच्च पदो का अधिकारी नही हो सकता। यदि कोई आचार्य बनने के बाद छेदसूत्रो को भूल जाता है, और पुनः उनको उपस्थित नही करपाता है, तो वह आचार्य पद पर प्रतिष्ठित नही रह सकता है। छेदसूत्रों के ज्ञानाभाव में श्रमणसंघ का नेतृत्व नही किया जा सकता, और न वह हो ही सकता है। फिर तो 'अन्धेनैव नीयमाना यथाऽन्धा.' की भणिति चरितार्थ होती है। भला, जो स्वयं अंधा है, वह दूसरे अन्धो का पथ-प्रदर्शक कैसे हो सकता है ?

भाष्य और चूर्णियाँ:

छेदसूत्र बहुत संक्षिप्त शैली से लिखे गए हैं। जितना उनका अर्थ-शरीर विराट् है, उतना ही उनका शब्द-शरीर लघुतम है। थोडे-से इने-गिने शब्दो में विशाल अर्थों की योजना इस खूबी से की गई है कि सहसा आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। जब हम छेदसूत्रो पर के भाष्य और उनकी चूर्णियो को पढते हैं तो ऐसा लगता है, मानो सूत्रीय शब्द-बिन्दु में अर्थ-सिन्धु समाया हुआ है। एक-एक सूत्र पर, उसके एक-एक शब्द पर इतना विस्तृत ऊहापोह किया गया है, इतना चिन्तन मनन किया गया है कि ज्ञान की गंगा-सी वह जाती है। साधुता का इतना सूक्ष्म विश्लेषण, जीवन के उतार चढ़ाव का इतना स्पष्ट चित्र, अन्यत्र दुर्लभ है, दुष्प्राप्य है। एक प्राचीन संस्कृत कवि के शब्दों में यही कहना होता है कि 'यदिहास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।' साधना के सम्बन्ध में जो यहाँ है, वह अन्यत्र भी है, और जो यहाँ नहीं, वह अन्यत्र भी कही नही। एकमात्र धार्मिक जीवन ही नही, तत्कालीन भारत का प्राचीन सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन का सच्चा इतिहास भी भाष्य और चूर्णियो के अध्ययन से ही जाना जा सकता है। यही कारण है कि आज के तटस्थ शोधक समाज-शास्त्री विद्वान्, अपने शोधन ग्रन्थों के लिए अधिकतम विचारसामग्री, भाष्यों और चूर्णियों पर से ही प्राप्त करते हैं। मै स्वयं भी अपने यदाकदा किए गए क्षुद्र अध्ययन के आधार पर कह सकता हूँ कि भाष्यो और चूर्णियो के अध्ययन के बिना न तो हम प्राचीन साधु-समाज का जीवन समझ सकते हैं और न गृहस्थ-

समाज का ही। और अतीत का ठीक-ठीक अध्ययन किए विना, न वर्तमान समझ में आ सकता है और न भविष्य ही। ससार की संघर्ष-भूमिका से अलग-थलग रहने वाले भिक्षु-समाज के जीवन में भी भला-बुरा परिवर्तन कब आता है, क्यो आता है, और वह क्यो आवश्यक हो जाता है, इन सब प्रश्नो का उत्तर हम छेद-सूत्रो पर के विस्तृत भाष्यो तथा चूर्णियो से ही प्राप्त कर सकते हैं। इतना ही नहीं, छेदसूत्रों का अपना स्वयं का मूल ग्रन्थ भी भाष्य और चूर्णि के विना यथार्थतः समझ में नही आ सकता। यदि कोई भाष्य और चूर्णि को अवलोकन किए विना छेदसूत्रगत मूल रहस्यो को जान लेने का दावा करता है, तो मैं कहूँगा, क्या तो वह भ्रान्ति में है, या दभ में है। दूसरों की वात छोड भी दूँ, किन्तु मैं अपनी बात तो सचाई के साथ कह सकता हूँ कि मूल, केवल मूल के रूप में, कम से कम मेरी समझ में तो नही आया। भाष्यो और चूर्णियो का अध्ययन करने पर ही पता चला कि वस्तुतः छेदसूत्र क्या हैं? उनका गुरुगभीर मर्म क्या है? उत्सर्ग और अपवाद क्या हैं? अपवाद में भी मार्गत्व क्या है और वह क्यो है? इत्यादि।

निशीथ भाष्य तथा चूर्णि:

छेदसूत्रो में निशीथसूत्र का स्थान सर्वोपरि है। वह आचारांगसूत्र का ही, एक भाग माना जाता है। आचाराग सूत्र के दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध नो अध्ययनों में विभक्त हैं। द्वितीय श्रुतस्कन्ध की पांच चूला हैं। प्रस्तुत निशीथ सूत्र पाँचवी चूला है। अतएव निशीथ पीठिका में कहा हैं—'एताहिं पंचहिं चूलाहिं सहितो आयारो।' चौथी चूला तक का भाग आचाराग कहा जाता है, और पाँचवी चूला निशीथ के रूप में अपना स्वतत्र अस्तित्व रखती है। किन्तु है वह मूल रूप में आचाराग सूत्र का ही एक अंग। इसीलिए निशीथसूत्र को यत्र-तत्र निशीथ चूला-अध्ययन कहा गया है। और निशीथ-सूत्र का एक और नाम जो आचार-प्रकल्प है, उसके मूल में भी यही भावना अन्तर्निहित है।

आचारांग-सूत्र भिक्षु की आचार-सहिता है। उसमें विस्तार के साथ वताया गया है कि भिक्षु को कैसे रहना चाहिए, कैसे खाना चाहिए, कैसे पीना चाहिए, कैसे चलना चाहिए, कैसे बोलना चाहिए, आदि आदि। निशीथ सूत्र में आचाराग-निर्दिष्ट आचार में स्खलना होने पर कव, कैसा, क्या प्रायश्चित्त लेना चाहिए, यह वताया गया है। अतएव निशीथ सूत्र आचाराग का, जैसा कि उसका नाम चूला है, अन्तिम पाँचवाँ शिखर है। आचाराग सूत्र के अध्ययन की पूर्णाहुति निशीथ सूत्र के अध्ययन में ही होती है, पहले नहीं।

निशीथ-सूत्र मूल पर एक निर्युक्ति है, मूल और निर्युक्ति पर भाष्य है, और इन सब पर चूर्णि है। निशीथ-सूत्र मूल, निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णि के कर्ता कौन महान् श्रुतधर हैं, इसकी चर्चा अन्यत्र किसी खण्ड में करने का विचार है। प्रस्तुत प्रथम खण्ड में हम केवल यही कहना चाहते हैं–कि निशीथ सूत्र जैसे महान् है, वैसे ही उसके भाष्य और चूर्णि भी महान् हैं। मूलसूत्र का मर्मोद्घाटन भाष्य और चूर्णि में यत्र-तत्र इतनी सुन्दर एवं विश्लेषणात्मक पद्धति से किया गया है कि हृदय सहसा गदगद हो जाता है। आज की सर्वथा आधुनिक कही जाने वाली रिसर्च पद्धति के दर्शन, हमें उस प्राचीन काल में भी मिलते हैं, जबकि साहित्यसामग्री आज के समान सर्वसुलभ नही थी।

आगमोद्धारक आदरणीय पुण्यविजयजी के अभिमतानुसार भाष्य के निर्माता आचार्य संघदास गणी वड़े ही बहुश्रुत आगम-मर्मज्ञ हैं। छेदसूत्रों के तो वे तलस्पर्शी विद्वान् हैं। उनकी जोड का और कोई

छेदसूत्रज्ञ आचार्य आज के विद्वानों की जानकारी में नहीं है। आचार्य संघदास जिस विषय को भी उठाते हैं, उसे इतनी गहराई में ले जाते हैं कि साधारण विद्वानों की कल्पना वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकती।

और आचार्य जिनदास, वह तो चूर्णि-साहित्य के एक प्रतिष्ठापक आचार्य माने जाते हैं। उनका आगमों पर लिखा हुआ चूर्णि साहित्य, जैन साहित्य में ही नहीं, अपितु भारतीय साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। आगे लिखी जाने वाली संस्कृत टीकाएँ अधिकतर चूर्णियों की ही ऋणी हैं। निशीथसूत्र और भाष्य पर आचार्य जिनदास की चूर्णि, एक विशेष-चूर्णि है। विद्वत्संसार में इसकी सर्वोपरि प्रतिष्ठा है। विवादास्पद प्रसंगो पर चूर्णि का निर्णय खासतौर पर निर्णायक भूमिका के रूप में स्वीकार किया जाता है।

आज से नहीं, बहुत वर्षों से जैन अजैन सभी शोधक विद्वान् निशीथभाष्य और चूर्णि के प्रकाशन की प्रतीक्षा में थे। बहुत से विवादस्पद विषयों का अन्तिम निर्णय इनके प्रकाशन के अभाव में रुका हुआ भी था। हमने अल्प एवं सीमित साधनों के आधार पर इस दिशा में उपक्रम किया है, देखिए, भविष्य सफलता की दिशा में हमारा कितना साथ देता है।

छेद-सूत्रों का प्रकाशन गोपनीय है, फिर भी:

आजकल बहुत से मुनिराज तथा श्रावक छेद-सूत्रों का प्रकाशन ठीक नहीं समझते। आजकल क्या, बहुत पहले से यह मान्यता रही है। स्वयं भाष्य और चूर्णि के निर्माता भी यही धारणा रखते हैं। वे छेदसूत्रों को अत्यन्त गोप्य बताते हैं और किसी योग्य अधिकारी के लिए ही उन्हें प्ररूपित करने की बात कहते हैं।

यह ठीक है कि छेदसूत्र गोप्य हैं। उनमें भिक्षुओं के निजी आचार तथा प्रायश्चित्त का वर्णन है। उनमें की कुछ बातें अतीव गंभीर एवं गुप्त रखने जैसी भी हैं। साधारण व्यक्ति उनका आशय ठीक-ठीक नहीं समझ पाता, फलतः वह भ्रान्त हो सकता है, और कदाचित् उसके अन्तर्मन में जिन शासन के प्रति अवज्ञा का भाव भी पैदा हो सकता है। यह सब कुछ होते हुए भी छेदसूत्रों का प्रकाशन हुआ है और अब हो रहा है। स्थानकवासी परम्परा में आगमोद्धारक पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज के द्वारा संपादित हिन्दीअर्थ-सहित छेदसूत्र प्रकाशित हुए हैं। बहुत पहले श्वेताम्बर देहरावासी संप्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री माणेक मुनिजी ने व्यवहारसूत्र भाष्य और संस्कृत टीकासहित प्रकाशित किया था। वर्तमान में सुप्रसिद्ध आगमोद्धारक बहुश्रुत श्री पुण्य विजयजी महाराज की ओर से भी बृहत्कल्प सूत्र का सर्वथा अद्यतन पद्धति से सपादन तथा प्रकाशन हुआ है। अन्य स्थानो से भी गुजराती अनुवाद के साथ कितने ही छेदसूत्र प्रकाश में आए है। मैं समझता हूँ, इतने प्रकाशनो के बाद शुद्धजैनत्व को कोई क्षति तो नही पहुँची है। अपितु समझदार जनता की जिज्ञासा को अधिकाधिक प्रेरणा ही मिली है।

अब रहा प्रश्न गोपनीयता का। इस सम्बन्ध में तो यह बात है कि प्रायः प्रत्येक शास्त्र ही गोपनीय है। अधिकारी का ध्यान सर्वत्र ही रखना चाहिए। क्या अन्य सूत्र अनधिकारी को प्ररूपित किए जा सकते हैं? नहीं। प्राचीनकाल में जैसे लेखन था, वैसे ही आज के युग में मुद्रण है। गुरु-मुख से चली आने वाली श्रुत-परम्परा जिस दिन कलम और दवात का सहारा लेकर पुस्तकारूढ़ हुई, उसी दिन उसकी गोप्यता का प्रश्न समाप्त हो गया। जब श्रुत पुस्तकारूढ़ है, तो वह कभी भी, कहीं भी, किसी भी व्यक्ति के हाथो में आ सकता

है और कोई भी उसे पढ सकता है। मेरे विचार में तत्कालीन लेखन और अद्यतन मुद्रण की स्थिति में कोई विशेष अन्तर नही है। और फिर आज के युग में साहित्य जैसी सामग्री का कोई कब तक संगोपन किए रख सकता है ? जैन या अजैन कोई भी विद्वान्, कभी भी, किसी भी ग्रन्थ को मुद्रणकला की नोक पर चढ़ा सकता है। आज साहित्य के प्रकाशन या अप्रकाशन का एकाधिकार किसी एक व्यक्ति या समाज के पास नही है।

एक बात और है। भाष्य तथा चूर्णि के साथ छेदसूत्रो का प्रकाशन होने से जैन आचार को अधिक महत्त्व मिल सकता है। दो-चार बातों के मर्मस्थल को ठीक तरह न समझने के कारण, तथा तद्युगीन देश काल की स्थितियो का तटस्थ अध्ययन न करने के कारण, संभव है, थोड़ा बहुत ऊहापोह अज्ञ समाज में हो सकता है। किन्तु जब हमारे साध्वाचार के मौलिक तथ्य प्रकाश में आएँगे, जैन भिक्षु को चर्या का क्रमबद्ध वर्णन विद्वानो के समक्ष पहुँचेगा, आदर्श और यथार्थ का सुन्दर समन्वय अध्ययन करने में आएगा, सिद्धान्त और जीवन के संघर्ष में कब, किसका, किस तरह बलाबल होता है—यह समझा जाएगा, तो मैं अधिकार की भाषा में कहूँगा कि जैन तत्त्वज्ञान का गौरव बढेगा ही, घटेगा नही।

आज के जैन भिक्षुओ के लिए भी छेदसूत्रों के इस प्रकार सर्वाङ्गीण विराट प्रकाशन आवश्यक हैं। कारण ? जिस आचार का आज भिक्षु पालन करते हैं, वे स्वयं उसका हार्द नही समझ पाते हैं। आदरणीय पुण्य विजयजी के शब्दो में "आज उन्हें अच्छी तरह पता नहीं कि—उनके अपने धार्मिक आचार तथा रीति-नीति क्या-क्या हैं ? किस मूल आधार पर वे निर्दिष्ट एवं योजित हुए हैं ? उनका अपना क्या महत्त्व है ? और वह किस दृष्टि से है ? प्राचीन युग में साधुजीवन के नियम कितने अधिक कडक थे, और क्यों थे ? उन नियमों में आज कितनी विकृति, शिथिलता तथा परिवर्तन आया है ? साधुजीवन में तथा सामान्य धार्मिक नियमों में द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भाव के ज्ञाता दीर्घदर्शी आचार्यों ने किस-किस तरह का किस-किस स्थिति में परिवर्तन किया है ?" यदि छेदसूत्रों का गभीर अध्ययन किया जाए तो उपर्युक्त सब स्थितियों पर स्पष्ट प्रकाश पड़ सकता है, जिसके द्वारा हम अपने अतीत और वर्तमान की जीवन-पद्धति एव साधना-पद्धति का तुलनात्मक निरीक्षण कर सकते हैं। इतना ही नही, यदि जरा साहस से काम लें, जीवन-निर्माण के लिए सुदृढ़ अभीप्सा जागृत कर लें, तो भविष्य के लिए भी हम अपना जीवन-पथ प्रशस्त कर सकते हैं। जहाँ तक मेरा अध्ययन मुझे कुछ कहने की आज्ञा देता है, मैं कह सकता हूं कि छेदसूत्रों से सम्बन्धित इस प्रकार के व्यापक प्रकाशन हमारे मिथ्याचारों का शुद्धीकरण करेंगे, हमारे विभिन्न साम्प्रदायिक अह को ध्वस्त करेंगे, हमें साध्वाचार के मूल स्वरूप की यथावत् सुरक्षा करते हुए भी देश कालानुसार उचित कर्तव्य-पथ के लिए प्रशस्त प्रेरणा देंगे।

हाँ, एक बात ध्यान में रखने-जैसी है:

एक बात और भी है, जिसका उल्लेख करना अत्यावश्यक है। वह यह कि भाष्य तथा चूर्णि की कुछ बातें अटपटी-सी हैं। इस सम्बन्ध में कुछ तो उस युग की साम्प्रदायिक मान्यताएँ हैं और कुछ तद्युगीन देश काल की विचित्र परिस्थितियाँ हैं। अत. विचारशील पाठकों से अनुरोध है कि वे तत् तत् स्थलों का बहुत गम्भीरता से अध्ययन करें, व्यर्थ ही अपने चित्त को चल-विचल न बनाएँ। ऐसे प्रसगो पर हंस बुद्धि से काम लेना उपयुक्त होता है। प्राचीन आचार्यों ने अपने ग्रन्थो में जो कुछ लिखा है, वह सब कुछ सब किसी के लिए नही हैं। और सर्वत्र एवं सर्वदा के लिए भी नही हैं। सतत प्रवहमान चिरन्तन सत्य का अमुक

व्यवहारोपयोगी स्थूल अंश कभी-कभी अमुक देश और काल की क्षुद्र सीमाओं में अटक कर रह जाता है। अतः उसे हठात् सर्वदेश और सर्वकाल में लागू करना, न युक्ति-संगत है और न सिद्धान्त-संगत ही।

सम्पादन में प्रयुक्त लिखित प्रतियों का परिचयः

सौभाग्य या दुर्भाग्य की बात नही कहता, किन्तु इतना कहना आवश्यक है कि यदि यह सम्पादन-कार्य गुजरात या महाराष्ट्र प्रदेश के अहमदाबाद तथा पूना आदि नगरों में होता, तो बहुत अच्छा होता। क्योंकि वहाँ ज्ञान भण्डारो में प्राचीन प्रतियो का संग्रह विपुल मात्रा में मिल जाता है। इधर उत्तर-प्रदेश आदि में इस प्रकार के प्राचीन संग्रह नही हैं। अतएव प्रस्तुत सम्पादन के लिए प्राचीन प्रतियाँ, प्राच्य संशोधन मन्दिर अर्थात् भाण्डार कर इन्स्टीट्यूट पूना से प्राप्त की गई हैं। हमारी इच्छा के अनुसार ताड-पत्र की प्रति तो नही, किन्तु क़ागज पर लिखी हुई कुछ प्राचीन प्रतिया मिल गईं, जिनके आधार पर हमारा कार्य पथ यथाकथचित् प्रशस्त हो सका।

(१) **निशीथ-सूत्र मूल**—एक प्रति निशीथसूत्र की मूल मात्र है। पत्र संख्या ३७ है। प्रति पुरानी मालूम होती है, किन्तु लेखनकाल का उल्लेख नही है। प्रति सुवाच्य है, यत्रतत्र हाशिये पर संस्कृत तथा गुजराती भाषा में टिप्पण लिखे हुए हैं।

(२) **निशीथ-भाष्य**—यह प्रति एक ही है और देखने में काफी सुन्दर लगती है। किन्तु अक्षर-विन्यास अस्पष्ट है। व और च, म और स आदि की भ्रांतियाँ तो प्रायः पद-पद पर तंग करती हैं। लेखनकाल विक्रमाब्द १६५५ है, और लेखक हैं श्री धर्मसिन्धुर गणी। पत्र संख्या १०४ है।

(३) **निशीथ-चूर्णि**—निशीथ-चूर्णि की दो प्रतियाँ हैं। एक तो अत्यन्त जीर्ण हैं, यत्रयत्र कीट कवलित भी है। यह १६५० संवत् की लिखी हुई है। पत्र संख्या ७४४ है। दूसरी प्रति कुछ ठीक हालत में है। अशुद्धि-बहुल तो है, किन्तु सुवाच्य होने से इस प्रति का ही अधिकतर उपयोग किया गया है। प्रति काफी पुरानी प्रतीत होती है, किन्तु लेखनकाल का उल्लेख नही हैं। लेखक का भी कही निर्देश नही है। पत्र संख्या ६७० है। यह है लिखित प्रतियो का सक्षिप्त परिचय पत्र। इस पर से सहृदय पाठक देख सकते हैं, हमें कितना सीमाबद्ध होकर काम करना पड़ा है।

(४) **टाइप-अंकित प्रति**—निशीथ भाष्य तथा चूर्णि की एक और प्रति है, जिसका उल्लेख करना आवश्यक है। यह प्रति टाइप की हुई है और आचार्य श्री **विजयप्रेम सूरीश्वरजी** तथा पं० **श्री जम्बू विजयजी गणी** द्वारा संपादित है। यह प्रति बडे ही श्रम एवं लगन से निर्मित की गई हैं। यह प्रति भी निर्भ्रान्त तो नही है, फिर भी इससे हमारी कठिनाइयों को हल करने में काफी सहयोग मिला है, अतः हम कृतज्ञता के नाते उन मुनि-युगल का सादर अभिनन्दन करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

उक्त प्रतियों के सम्बन्ध में एक बात और है। वह यह कि प्रायः सभी प्रतियो में तकार और धकार की श्रुति अधिक है। कही-कही तो ये श्रुतियाँ पाठक को सहसा भ्रान्त भी कर देती हैं। उदाहरण-स्वरूप-जहा और तहा के स्थान में जधा और तधा का प्रयोग है। अहवा के स्थान में अधवा का प्रयोग प्रचुर हुआ है। गाहा के लिए गाधा का प्रयोग बड़ा ही विचित्र-सा लगता है। सावय के स्थान में सावत, कदाचित् के स्थान में कताति के प्रयोग तकार श्रुति के हैं, जो कभी-कभी बड़े ही अटपटे मालूम पड़ते हैं। अतः पाठक इस ओर सावधान होकर चलेंगे तो अच्छा रहेगा।

हमारी दुर्बलताएँ, जो लक्ष्य में हैं:

प्रस्तुत भीमकाय महाग्रन्थ का संपादन वस्तुतः एक भीम कार्य है।। हमारी साधन-सीमाएँ ऐसी नहीं थी कि हम इस जटिल कार्य का गुरुतर भार अपने ऊपर लेते । न तो हमारे पास उक्त ग्रन्थ की यथेष्ट विविध लिखित प्रतियाँ हैं । और जो प्राप्त हैं वे भी शुद्ध नही हैं । अन्य तत्सम्बन्धित ग्रन्थो का भी अभाव है । प्राचीनतम दुरूह ग्रन्थों की सम्पादन कला के अभिज्ञ कोई विशिष्ट विद्वान् भी निकटस्थ नहीं हैं । यदि इन सब में से कुछ भी अपने पास होता, तो हमारी स्थिति दूसरी ही होती ?

किन्तु किया क्या जाय ? मनुष्य के पास जो वर्त्तमान में साधन हैं, वे ही तो काम में आते हैं । ऐसे ही प्रसग पर ऋजु-सूत्र नयका वह अभिमत ध्यान में आता है, जो स्वकीय वस्तु को ही वस्तु मानता है और वह भी वर्तमानकालीन को ही । उसकी दृष्टि में अन्य सब अवस्तु हैं । अस्तु हमें भी जो भी अस्तव्यस्त एवं अपूर्ण साधन-सामग्री प्राप्त है, उसी को यथार्थ मानकर चलना पड रहा है ।

हमारा अपना विचार इस क्षेत्र में अवतरित होने का नही था । हम इसकी गुरुता को भलीभाँति समझे हुए थे । बडे-बडे विद्वानो के श्रीमुख से ज्ञात था कि निशीथ भाष्य तथा चूर्णि की लिखित प्रतियाँ बहुत अशुद्ध हैं । वह अशुद्धियो का इतना बड़ा जंगल है कि खोजने पर भी सही मार्ग नही मिल पाता । एक दो उपक्रम इस दिशा में हुए भी हैं, किन्तु वे इसी अशुद्धि-बहुलता के कारण सफल नहीं हो पाए । किन्तु हमारे कितने ही सहयोगी एक प्रकार से हठ में थे कि कुछ भी हो, निशीथ भाष्य तथा चूर्णिका संपादन होना ही चाहिए । उनकी उक्त ग्रन्थ राज के प्रति इतनी अधिक उत्कट अभीप्सा थी कि कुछ पूछिए ही नहीं । फलतः हम अपनी दुर्बलताओं को जानते हुए भी "अव्यापारेषु, व्यापार" में व्यापृत हो गए ।

हमारी जितनी सीमा है, उतनी हम सावधानी रखते हैं । 'यावद् बुद्धिबलोदयम्' हम सावधानी से कार्य कर रहे हैं । फिर भी साधनाभावके कारण, हम जैसा चाहते हैं कर नहीं पाते हैं । अतएव प्रस्तुत ग्रन्थराज के इस कार्य को संपादन न कह कर यदि प्रकाशन मात्र कहा जाए तो सत्य के अधिक निकट होगा । और यह प्रकाशन भी पृष्ठ भूमि मात्र है, भविष्य के सुव्यवस्थित प्रकाशनो के लिए । अधिक-से-अधिक प्राचीन ताड-पत्र की प्रतियों के आधार पर जब कभी भी भविष्य में समर्थ विद्वानो द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थराज का सपादन होगा, तव हमारा यह लघुतम प्रयास उन्हें अवश्य ही थोडी-बहुत सुविधा प्रदान करेगा, यह हमारा विश्वास है । और जब तक वह विशिष्ट सम्पादन नही होता है, तव तक ज्ञान - पिपासुओं की कुछ-न-कुछ जिज्ञासा-पूर्ति होगी ही और चिरकाल से अवरुद्ध सत्य का प्रकाश भी कुछ-न-कुछ प्रस्फुरित होगा ही, इसी आशा के साथ हम अपने कार्य-पथ पर अग्रसर हैं ।

हमारे सहयोगी, जिनका स्मरण आवश्यक है:

प्रस्तुत सम्पादन के लिए प्राचीन लिखित प्रतिया आवश्यक थी, जो इधर मिल नहीं रही थी । अतः इसके लिए भाण्डारकर इन्स्टीट्यूट से प्रतियाँ मँगाने का प्रश्न सामने आया । इतनी दूर से बिना किसी परिचय के प्रतियो का आना एक प्रकार से असभव ही था । परन्तु तत्र विराजित हमारे चिर स्नेही पं० मुनिश्री श्रीमल्लजी म० के सहयोग को हम भूल नही सकते, जिसके फलस्वरूप हमें इतनी दूर रहते हुए भी शीघ्र ही प्रतियाँ उपलब्ध हो गई । श्रीयुत कनकमलजी मूणोत पूना का इस दिशा में किया गया सफल प्रयास भी चिरस्मरणीय रहेगा । सेवा मूर्ति श्री अखिलेश मुनि जी का सतत सहयोग भी भूलने

जैसा नही है। अन्य भी एक श्रावक महानुभाव हैं जिनका स्मरण हम यहाँ मनमें कर लेते हैं, वे अपने नाम को अभिव्यक्त करने की इच्छा नही रखते। यदि उनका सहयोग न होता, तो यह कार्य किसी भी प्रकार इतना शीघ्र इस रूप में सम्पन्न नही हो पाता।

मेरा अपना कर्तृत्व:

प्रस्तुत सम्पादन में मेरा उल्लेख योग्य कर्तृत्व कुछ नही है। आजकल शारीरिक स्थिति ठीक नही रहती है। मोतिया का आपरेशन हो जाने के कारण अब आँखो में पहले जैसी काम करने की क्षमता भी नही है। लिखापढी का अधिक काम करने से पीड़ा होती है, और वह कभी-कभी लंबी भी हो जाती है। अतः मैं तो एक तटस्थ द्रष्टा के रूप में रहा हूँ। जो कुछ भी कार्य किया है, वह मुनि श्री कन्हैयालालजी ने किया है। वस्तुतः उनका श्रम महान् है, और साथ ही धैर्य के साथ काम करते रहने की अन्तर्निष्ठा भी। यह तरुण मुनि काम करने की अद्भुत क्षमता रखता है। मैं प्रस्तुत प्रसंग पर हार्दिक भाव से मुनिश्री के महान् उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगल-कामना किए बिना नही रह सकता।

संपादन का सारा श्रेय मुनिश्रीजी को है। मेरा तो यत्रतत्र निर्देशन मात्र है, जो अपने आप में कर्तृत्व की दृष्टि से कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखता।

यह संक्षिप्त कहानी है निशीथ-सूत्र, भाष्य तथा चूर्णि के संपादन की। प्रारम्भ अच्छा हुआ है, आशा से भरा और पूरा। मैं चाहता हूँ, समाप्ति भी इसी प्रकार आशा के भरे-पूरे क्षणों में हो।

दिनाक
मार्गशीर्ष शुक्ला, मौन एकादशी
वि० २०१५, सन् १९५७

—उपाध्याय, अमर मुनि
आगरा, उत्तर-प्रदेश

विषयानुक्रम

विषयानुक्रम

णिसीह-पेढिआ समत्ता

अर्हम्

स्थविर-शिरोमणि श्री विसाहगणि-महत्तरविनिर्मितम्

निशीथ-सूत्रम्

[भाष्य-सहितम्]

आचार्य-प्रवर श्री जिनदास महत्तर - विरचितया

विशेष-चूर्ण्या समलंकृतम्

पी ठि का

अट्ठविह-कम्मपंको, णिसीयते जेण तं णिसीधं ति।
अविसेसे वि विसेसो, सुइं पि जं णेइ अण्णेसिं॥

—भाष्यकार

राग-द्दोसाणुगता, तु द्प्पिया कप्पिया तु तद्भावा।
आराधतो तु कप्पे, विराधतो होति द्प्पेणं॥

—भाष्यकार:

अर्हम्

नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

आचार्य प्रवर श्री विसाहगणी-विनिर्मितं, सभाष्यम्

आचार्य श्री जिनदासमहत्तर विरचितया
विशेष चूर्ण्या समलंकृतम्

पी ठि का

नमिऊणऽरहंताणं, सिद्धाण य कम्मचक्कमुक्काणं ।
सयणसिनेहविमुक्काण, सव्वसाहूण भावेण ।। १ ।।
सविसेसायरजुत्तं, काउ पणामं च अत्थदायिस्स ।
पज्जुण्णखमासमणस्स, चरण-करणाणुपालस्स ।। २ ।।
एवं कयप्पणामो, पकप्पणामस्स विवरणं वन्ने ।
पुव्वायरियकयं चिय, अहं पि तं चेव उ विसेसा ।। ३ ।।
भणिया विमुत्तिचूला, अहुणावसरो णिसीहचूलाए ।
को संबंधो तस्सा, भण्णइ इणमो णिसामेहि ।। ४ ।।

संबंधगाथा सूत्रम् –

णवबंभचेरमइओ, अट्ठारस-पद-सहस्सिओ वेदो ।
हवइ य सपंचचूलो, बहुबहुयरओ पयग्गेण ।। १ ।।

"णव" इति संख्यावायगो सद्दो । "बंभं" चउव्विह णामादि । तत्थ णामबंभं जीवादीणं जस्स बंभ इति नामं कज्जति । ठवणाबंभ अक्खातिविण्णासो । अहवा जहा बंभणुप्पत्ती आयारे भणिया तहा भाणियव्वा । गयाओ णाम-ठवणाओ । इयाणिं दव्वबंभं । तं दुविहं । आगमओ नोआगमओ य । आगमओ जाणए, अणुवउत्ते । नोआगमओ-जाव-वइरित्तं । अण्णाणीणं जो वत्थि-संजमो, जाओ य अकामिआओ रंडकुरंडाओ बंभं धरेंति तं सव्वं दव्वबंभं । भावबंभं दुविहं । आगमओ णोआगमओ य । आगमओ जाणए उवउत्ते । णोआगमओ साहूणं वत्थि-संजमो । वत्थि-संजमोत्ति मेहुणाओ विरती । सा य अट्ठारसविहा भवति । सा इमा—ओरालियं च दिव्वं च ।

जं तं ओरालियं त ण सेवति, ण सेवाविति, सेवंतं पि अण्णं ण समणुजानाति । एवं दिव्वे वि तिण्णि विकप्पा । जं तं ओरालियं ण सेवति तं मणेणं वायाए काएण । एव कारावणाणुमतीए वि तिण्णि तिण्णि विकप्पा । एते णव । एवं दिव्वे वि णव य । एते दो णवगा अट्ठारस हवन्ति ।
अहवा सत्तरसविहो संजमो भाववंभं भवति । गयं भावबंभं ।

इयाणि "चेरं" ति चरणं । तं छव्विहं । णामं १ ठवणा २ दविए ३ खेत्ते ४ काले ५ य भावचरणं ६ चिति । णाम-ठवणाओ, गयाओ ।

वतिरित्तं दव्वचरणं तिविहं । गतिचरणं १ भक्खणाचरणं २ आचरणाचरणं च ३, तत्थ गतिचरणं रहेण चरति, पाएहिं चरति एवमाइ गतिचरणं भण्णति । भक्खणाचरणं णाम मोदए चरति देवदत्तो, तणाणि य गावो चरति । आचरणाचरणं णाम चरगादीणं, अहवा तेसिं पि जो आहारादिणिमित्तं तवं चरति तं दव्वचरण । लोउत्तरे वि उदाइमारग पभिईणं दव्वचरणं । खेत्तचरणं जत्तियं खेत्तं चरति-गच्छति-इत्यर्थः अहवा सालिखेत्त चरति गोणो । काले य जो जत्तिएण कालेण गच्छति भुंजति वा । भावे दुविहं । आगमतो णोआगमओ य । आगमओ जाणए उवउत्ते । णो-आगमओ तिविहं-गतिचरणं १ भक्खणा-चरणं २ गुणचरणं ३ । तत्थ गतिभावचरणं जं इरियादि समिओ चरति गच्छति । भक्खणे जो वायालीसदोसपरिसुद्धं वीतंगालं विगयधूमं कारणे आहारेति एयं आहारभावचरणं । गुणचरणं दुविधं पसत्थं अप्पसत्थं च । अप्पसत्थं मिच्छत्तअण्णाणुवहयमतीता ज अण्णउत्थिया धम्मं उवचरंति मोक्खत्थं पि । किं पुण णियाणोपहता । लोउत्तरे पि णियाणोवहया अप्पसत्थं तवं उपचरंति । पसत्थं तु णिज्जराहेउं । भणियं चरणं । ब्रह्मचरणं च व्याख्यातं ।

अतस्तयोर्ब्रह्मचरणयोरुत्पत्तिनिमित्तं साधनार्थं वा शस्त्रपरीज्ञादीनि उपधानश्रुतावसानानि नवाध्ययनान्यभिहितानि, जम्हा णव एताणि बंभचेराणि तम्हा "णवबंभचेरमतिओ" इमोत्ति, जह मिम्मओ घडो, तंतुमओ पडो, एव णवबभचेरमतिओ आयारो । सो य अज्झयणसंखाणेण णवज्झयणो पयपरिमाणेण "अट्ठारसपयसहस्सिओ वेओ" । अट्ठ य दस य अट्ठारसत्ति संखा । पय इति पयं । तं च अत्थप-रिच्छेयवायग पयं भवति । सहस्सं ति गणिताभिण्णाणेण चउत्थं ठाणं भवति जहा संखं एगं दह सयं सहस्सं ति । स एवायारो अट्ठारसपयसहस्सिओ वेओ भवति । कहं ? विद ज्ञाने, अस्य धातोः घञ् प्रत्ययान्तस्य वेद इति रूपं भवति, अतस्तं विदंति, तेन विदंति, तंमि वा विदंति इति वेदो भवति ।

सीसो भणति—"किमेत्तियमायारो उत अण्णं पि से अत्थि किंचि ?"

अतो भण्णति –

"हवइ य सपंचचूलो" । "हवइत्ति" भवतित्ति भणित होति । "च" सद्दो चूलाणुकरिसणे "सहे" ति युक्त । "पंच" इति संखावायगो सद्दो । "चूला" इति चूल त्ति वा अग्गं ति वा सिहरं ति वा एगट्ठं । सा य छव्विहा-जहा दसवेयालिए भणिया तहा भाणियव्वा । ताओ य पुण साओ पंच-चूलाओ-पिंडेसणादिजावोग्गहपडिमा ताव पढमा चूला, १ वितिया सत्तिक्कगा, २ तइया भावणा, ३ चउत्था विमोत्ती, ४ पंचमी आयारपक्कप्पो । ५ एताहिं पंचहिं चूलाहिं सहिओ आयारो । "वहु" भवति णवअज्झयणेहिंतो । "वहुतरो" भवति "पयग्गेणं" ति अट्ठारसपयग्गसहस्सेहिंतो पंचचूलापएहिं सहितो पयग्गेणं वहुतरो भवतित्ति । अहवा णवज्झयण-पढमचूलासहिता वहू भवंति । अट्ठारसपयसहस्सा पढमचूलापदेहिं सहिना वहुतरा पयग्गेण भवंति । एवं क्रमवृद्धया णेयं-जाव-पंचमी चूला । अहवा सपंचचूलो सुत्तपयग्गेण मूलगंथाओ वहू भवति । अत्थपयग्गेण वहुतरो भवति अहवा "वहुवहुतर" पदेहिं सेसपदा सूतिता भवंति । ते य इमे

बहुतम-बहुतरतम-बहुबहुतरतम इति । अन्नो भणति-णवबंभचेरमइओ आयारो अट्ठारसपयसहस्सिओ पढमचूलज्झयणसुत्तत्थपदेहिं जुत्तो बहू भवति । पढमचूलासहितो मूलग्रंथो दुइय-चूलज्झयण-सुत्तत्थपयेहिं जुत्तो बहुतरो भवति । एवं ततियचूलाए वि बहुतमो भवति । चउत्थीए वि बहुतरतमो भवति । पंचमीए वि बहुबहुतरतमो भवति । "पयग्गेणं" ति पदानामग्गं पदाग्रं पदाग्रेणेति पदपरिमाणेनेत्यर्थ. । स एवं पयग्गेण बहुबहुतरो भवति। एव संबंधगाहासूत्रे व्याख्याते,

चोदग आह –

नवबंभचेरमतिते आयारे वक्खाते आयारग्गाणुजोगारंभकाले संबंधार्थं इदमेव [1]गाथासूत्रं प्रागुपदिष्टं प्रथमचूडातश्च द्वितीयचूडाया अनेनैव गाथासूत्रेण संबंधः उक्तो भवति । एवं द्वितीयचूडातः तृतीयचूडायाः । तथा तृतीयचूडातः चतुर्थचूडातश्च पंचमचूडायाः संबधः उक्त एव भवति ।

एवं सति प्रागुक्तस्य सबंधगाहासूत्रस्येह पुनरुच्चारणम् किमर्थं ?

आचार्य आह –

गाहा – पुव्वभणियं तु जं एत्थ, भण्णति तत्थ कारणं अत्थि ।
पडिसेहो अणुण्णा, कारणं विसेसोवलंभो वा ॥१॥

सीसो पुच्छति –

कस्स पडिसेहो ? कहं वा अणुण्णा ? किंवा कारणं ? को वा-विसेसोवलभो ?

आचार्य आह –

तत्र प्रतिषेधः चतुर्थचूडात्मके आचारे यत्प्रतिषिद्धं तं सेवंतस्स पच्छितं भवतित्ति काउं, किं सेवमाणस्स ? भणति, "जे भिक्खू हत्थकम्मं करेति, करेंत वा सातिज्जति" एवमादीणि सुत्ताणि, एस पडिसेहो । अत्येण कारणं प्राप्य तमेवणुजानाति । तं जयणाए पडिसेवंतो सुद्धो । अजयणाए स पायच्छित्ती। कारणमणुण्णा जुगवं गता । विसेसोवलंभो-इमो । आइल्लाओ चत्तारिचूलाओ कमेणेव अहिज्झंति, पचमी चूला आयारपकप्पो ति-वास-परियागस्स आरेण ण दिज्जति, ति-वास-परियागस्स वि अपरिणामगस्स अतिपरिणामगस्स वा न दिज्जति, आयारपकप्पो पुण परिणामगस्स दिज्जति । एतेण कारणेण सबध-गाहा पुनरुच्चार्यते । अहवा बहु अतीत कालत्वात् प्रागुक्तसंबंधस्य विस्मृति· स्यात् अतस्तस्य प्रागुक्तसंबंधस्य स्मरणार्थं प्रागुक्तमपि संबंधगाहासूत्रमिह पुनरुच्चार्यते ।" एस संबंधो भणिओ ॥१॥

अनेन संबंधेनागतस्य पकप्पचूलज्झयणस्स चत्तारि अणुओगद्वाराणि भवन्ति । तं जहा – उवक्कमो १ निक्खेवो २ अणुगमो ३ नओ ४ । तत्थ उवक्कमो णामादि छव्विहो । णाम-ठवणाओ गताओ ।

दव्वोवक्कमो सचित्ताइ तिविहो, सचित्तो दुपद-चतुप्पद-अपयाणं । एक्केक्को परिकम्मणे संवट्टणे य । दुपयाण-मणुस्साणं परिकम्मणं कलादिग्गहण, संवट्टण, मारणं । चउप्पयाणं अस्साईणं परिकम्मणं सिक्खावणं, तेसिं चेव मारणं संवट्टणं । अपयाण[2] लोमसी आदीणं परिकम्मणं, तासिं चेव विणासणं सवट्टणं ।

अचित्ते सुवण्णे – कुण्डलाइकरणं परिकम्मणं तस्सेव विणासण संवट्टणं ।

मिस्से दुपयाणं अलंकिय – विभूसियाणं कलादि गाहणं परिकम्मणं तेसिं चेव मारणं सवट्टणं, चउप्पयाणं अस्सादीण वम्मिय[3] गुडियाणं[4] परिकम्मणं सिक्खावण तेसिं चेव मारणं सवट्टणं । खेत्तोवक्कमो हलकुलियादीहिं, कालोवक्कमो णालियादीहि । भावोवक्कमो दुविधो—पसत्थो १ अपसत्थो य २ । अपसत्थो [5]गणिगा-मरुगिणि-अमच्चदिट्ठतेहिं । पसत्थो भावोवक्कमो आयरियस्स भाव उवलभति ।

---

१ आचारांग प्र. श्रु. प्र. अ. प्र. उद्देशे निर्युक्त्या एकादशमीगाथा। २ कर्कटिकादीनां (देशीवचनं) । ३ वम्मिया अस्सा । ४ गुडिया गया । ५ बृह० पीठिका भाष्य-गाथा २६२ ।

गाथा– जो जेण पगारेणं, तुस्सत्ति [1]कारविणयाणुवित्तीहिं ।
आराहणाए मग्गो, सो च्चिय अव्वाहओ तस्स ।।२।।

अहवा णोआगमओ भावोवक्कमो छव्विहो—आणुपुव्वी १ णामं २ पमाणं ३ वत्तव्वया ४ अत्थाहिगारो ५ समोतारो ६ इच्चेयं णिसीहचूलज्झयणं उवक्कमिय आणुपुव्वीमाइएहिं दारेहिं जत्थ जत्थ समोयरति तत्थ तत्थ समोयारेयव्वं ।

से किं तं आणुपुव्वी ? आणुपुव्वी दसविहा पण्णत्ता । तं जहा णामाणुपुव्वी १ ठवणाणुपुव्वी २ दव्वाणुपुव्वी ३ खेत्ताणुपुव्वी ४ कालाणुपुव्वी ५ उक्कित्तणाणुपुव्वी ६ गणणाणुपुव्वी ७ संठाणाणुपुव्वी ८ सामायारियाणुपुव्वी ९ भावाणुपुव्वी १० एयं आणुपुव्विं दसविहं पि वण्णेऊणं इच्चेयं णिसीहचूलज्झयणं गणणानुपुव्वीए उक्कित्तणाणुपुव्वीए य समोयरति । गणणाणुपुव्वी तिविहा पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी । पुव्वाणुपुव्वीए इच्चेय णिसीहचूलज्झयणं छव्वीसइम[2], पच्छाणुपुव्वीए पढमं, अणाणुपुव्वीए एतेसिं चेव एगादीयाए एगुत्तरियाए छव्वीसगच्छगयाए सेढ़ीए अण्णमण्णब्भासो दुरूणूणो । उक्कित्तणाणुपुव्वीए अज्झयणं उक्कित्तेति । सेत्तं आणुपुव्वी ।

णामं दसविहं पि वण्णेऊणं इच्चेयं णिसीहचूलज्झयणं छण्णामे समोयरति । तत्थ छव्विहं भावं वण्णेऊणं सव्वं सुयं खओवसमियं ति काऊणं खओवसमिए भावे समोयरति । से त्तं णामं ।

पमाणं चउव्विहं । तं जहा दव्वप्पमाणं १ खेत्तप्पमाणं २ कालप्पमाणं ३ भावप्पमाणं ४ । इच्चेयं णिसीहचूलज्झयणं भावप्पमाणे समोयरति । तं भावप्पमाणं तिविहं तंजहा गुणप्पमाणं १ णयप्पमाणं २ संखप्पमाणं ३ । गुणप्पमाणे समोयरति । गुणप्पमाणं दुविहं—जीव-गुणप्पमाणं १ अजीव-गुणप्पमाणं च २ । जीवगुणप्पमाणे समोयरति । तं तिविहं—णाणगुणप्पमाणं १ दंसणगुणप्पमाणं २ चारित्तगुणप्पमाणं ३ । णाणगुणप्पमाणे समोयरति । तं चउव्विहं—पच्चक्खं १ अणुमाणं २ उवम्मो ३ आगमो ४ । आगमे समोयरति । आगमो तिविहो—अत्तागमो १ अणंतरागमो २ परंपरागमो ३ । इच्चेयस्स—णिसीहचूलज्झयणस्स तित्थगराणं अत्थस्स अत्तागमे । गणहराणं सुत्तस्स अत्तागमे । गणहराणं अत्थस्स अणंतरागमे । गणहरसिस्साणं सुत्तस्स अणंतरागमे, अत्थस्स परंपरागमे । तेण परं सेसाणं सुत्तस्स वि अत्थस्सवि णो अत्तागमे, णो अणंतरागमे, परंपरागमे । से त्तं आगमो । से त्तं गुणप्पमाणे ।

इयाणिं णयप्पमाणे "गाथा"

मूढनइअं सुयं कालियं तु, ण णया समोयरंति इह ।
अपुहुत्ते समोयारो, णत्थि पुहुत्ते समोयारो ।। २ ।। से त्तं णयप्पमाणे ।

इयाणिं संखप्पमाणं । सा य संखा अट्ठविहा, तं जहा—णाम-संखा १ ठवण २ दव्व ३ उवम्म ४ परिणाम ५ जाणणा ६ गणणासंखा ७ भावसंखा ८ । एत्थ पुण परिमाणसंखाए अहिगारो । सा दुविहा—कालिय-सुय-परिमाणसंखा १ दिट्ठिवाय-सुय परिमाणसंखा य २ । एत्थ कालिय-सुय-परिमाणसंखाए अहिगारो । तत्थ इच्चेयं णिसीहचूलज्झयणं संखेज्जा पज्जाया[3] संखेज्जा अक्खरा, संखेज्जा संघाया, संखेज्जा पदा एवं गाहा, सिलोगा, उद्देसा, संगहणीओ य । पज्जवसंखाए अणंता णाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता चरित्तपज्जवा । से त्तं संखप्पमाणो ।

---

१ इच्छाकारादि । २ आचारांग प्रथमश्रुतस्कन्धे नव अध्ययनानि द्वितीयश्रुतस्कंधे षोडश, अनेनेदं षड्विंशतितमं । ३. संखेज्जा अज्झाया, संखेज्जा अक्खरा, संखेज्जा संघाया, संखेज्जा पादा-इति प्रत्यंतरेषु, परमशुद्धं दृश्यते ।

इदाणिं वत्तव्वया। सा तिविहा ससमयवत्तव्वया १ परसमयवत्तव्वया २ उभयसमयवत्तव्वया। इह ससमयवत्तव्वयाते-अहिगारो। जम्हा भणिय—"उस्सण्णं सव्व सुयं, ससमयवत्तव्वयं समोयरति"। से त्तं वत्तव्वया।

अत्थाहिगारो पच्छित्तेण मूलगुण-उत्तरगुणाण। इच्चेयं णिसीहचूलज्झयणं आणुपुव्विमाइएहिं दारेहिं जत्थ जत्थ समोयरति तत्थ तत्थ समोयारियं। गओ उवक्कमो।

इयाणिं णिक्खेवो सो तिविहो—ओहणिप्फण्णो १ णामणिप्फण्णो २ सुत्तालावगणिप्फण्णो ३। अज्झयणं अज्झीणं आओ झवणा य एगट्ठा। अज्झयणं णामादि चउव्विहं पण्णवेऊण भावे इमं भवति। "जह दीवा दीवसयं" गाहा ३। आओ झवणासु वि णामादि ॥३॥ परूवितेसु इमाओ गाहाओ भवंति। "णाणस्स दंसणस्स" य गाहा ॥४॥ "अट्ठविहं कम्मरयं" गाहा। गओ ओघ-निप्फण्णो ॥१॥

इयाणिं णाम-णिप्फण्णो। सो य णामाओ भवतित्ति काउं भणति णाम-निप्फण्णो—

आयारपकप्पस्स उ, इमाइं गोण्णाइं णामधिज्जाइं।
आयारमाइआइं, पायच्छित्तेणऽहीगारो ॥ २ ॥

आयरण "आयारो"। सो य पंचविहो। णाण १ दसण २ चरित्त ३ तव ४ विरियायारो ५ य। तस्स पकरिसेणं कप्पणा "पकप्पणा"। सप्रभेदप्ररूपणेत्यर्थ.। "इमाइं" ति वक्खमाणाति। "गोण" ग्रहण पारिभासियवुदासत्थं। तं जहा-सह मुद्दो समुद्दो, इंद गोवयतीति इंदगोवगो एवं तस्स आयारपकप्पस्स णामं ण भवति। गुणनिप्फण्णं भवति। गुणणिप्फण्ण गोण्ण। तं चेव जहत्थमत्थवी बिंति। तं पुण खवणो जलणो तवणो पवणो पदीवो य णामाणि अभिधेयाणि "णामधेज्जाणि"।

अहवा धरणीयं णि वा धेज्जाति "णामधेज्जाति" सार्थकाणीत्यर्थः। "आयारो" आदि जेसिं ताणि नामाणि आयारादीणि पंच, पायच्छित्तेणहीगारत्ति। छट्ठं दारं।

सीसो पुच्छति –

"णणु पायच्छित्तेणहीगारत्ति अत्थाहिकारे एव भणिओ ?"।

आयरियो भणति –

"सच्चं तत्थ भणिओ इह विशेष-ज्ञापनार्थं भण्णति। अण्णत्थ वि आयारसरूवपरूवणा कया इह तु आयारसरूवं सपायच्छित्तं परूविज्झति।" अहवा प्रायश्चित्ते प्रयत्न इत्यर्थः। अहवा इह भणिओ तत्थ दट्ठव्वो। आयारमाइयातिं ति जं भणियं ताणि य इमाणि-॥१॥

आयारो अग्गं चिय, पकप्प तह चूलिया णिसीहं ति।
णीसितं सुतत्थ तहा, तदुभए आणुपुव्वि अक्खातं ॥३॥

एसा दारगाहा वक्खमाणसरूवा ॥३॥

आयारमाइयाणं इमा-सामण्णणिक्खेवलक्खणा गाहा—

आयारे णिक्खेवो, चउविधो दसविधो य अग्गंमि।
छक्को य पकप्पंमि, चूलियाए णिसीधे य ॥४॥

जहासंखेण जं भणियं आयारे चउविहो णिक्खेवो सो इमो-ह्क (ईं=४) लृ (१०) ६, ६, ६। ॥४॥

णामं ठवणायारो, दव्वायारो य भावमायारो ।
एसो खलु आयारे, णिक्खेवो चउव्विहो होइ ॥५॥

णाम-ठवणाओ गयाओ ।

दव्वायारो दुविहो । आगमओ १ णोआगमओ य २ । आगमओ जाणए अणुवउत्ते । णोआगमओ जाणगसरीरं भवियसरीरं-जाणग-भविय-सरीरवइरित्तो इमो—

णामण-धोवण-वासण-सिक्खावण-सुकरणाविरोधीणि ।
दव्वाणि जाणि लोए, दव्वायारं वियाणाहि ॥६॥

णामणादिपएसु आयारो भण्णइ । तप्पसिद्धिमिच्छंतो य सूरी अणायारं पि पण्णवेति दीर्घह्लस्वव्यपदेशवत् । "णामणं" पडुच्च आयारमन्तो तिणिसो अणायारमन्तो एरंडो । "धोवण" पडुच्च कुसुंभरागो आयारमन्तो, अणायारमन्तो किमिरागो । "वासणा" ए कवेल्लुगादीणि[1] आयारमन्ताणि, वइरं अणायारमन्त । सुक-सालहियादि[2] "सिक्खावणं" पडुच्च आयारमन्ताणि, वायस-गोत्थूभगादि[3] अणायारमन्ताणि । "सुकरणं" सुवर्णं आयारमन्तं घंटालोहमणायारमन्तं । "अविरोह" पडुच्च पयसक्कराणं आयारो, दहितेल्ला य विरोधे अणायारमन्ता । गुणपर्यायान्द्रवतीति "द्रव्य" । "जाणि" त्ति अणिदिट्ठसरूवाणि ।

अहवा एताणि चेव "जाणि" भणियाणि । लोक्यत इति "लोकः"—दृश्यते इत्यर्थः तस्मिन् लोके आधारभूते, "दव्वायारं वियाणाहि", एवं अभिहितानभिहितेषु द्रव्येषु द्रव्याचारो विज्ञातव्य इति ॥६॥ गतो दव्वायारो ।

इयाणिं भावायारो भण्णइ । सो य पंचविहो इमो—

नाणे दंसण-चरणे, तवे य विरिये य भावमायारो ।
अट्ठ ट्ठ ट्ठ दुवालस, विरियमहानी तु जा तेसिं ॥७॥

णामणिद्देसगं गाहद्धं, पच्छद्धेन एएसिं चेव पभेया गहिया । णाणमायारो अट्ठविहो, दंसणायारो अट्ठविहो, चरित्तायारो अट्ठविहो, तवायारो बारसविहो, वीरियायारो छत्तीसविहो । ते य छत्तीसइ भेया एए चेव णाणादिमेलिया भवंति । वीरियम्मिति वीरियायारो गहिओ । "अहानी" असीयनं जं तेसिं णाणायाराईणं स एव वीरियायारो भवइ ॥७॥ जो य सो णाणायारो, सो अट्ठविहो इमो—

काले विणये बहुमाने, उवधाने तहा अणिण्हवणे ।
वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविधो णाणमायारो ॥८॥

कालेत्ति दार ॥८॥ तस्स इमा वक्खा—

जं जंमि होइ काले, आयरियव्वं स कालमायारो ।
वतिरित्तो तु अकालो, लहुगाउ अकालकारिस्स ॥९॥

जमिति अणिदिट्ठं सुयं घेप्पइ । जंमि काले आधारभूते होति भवतीत्यर्थः । आयरियव्वं, णाम पढिअव्वं सोयव्वं वा जहा—सुत्तपोरिसीए सुत्तं कायव्वं, अत्थपोरुसीए अत्थो ।

---

१ कटाहादि (पा०-श-को०) । २ सारिका (देशीव०) । ३ वायसगोवगादि गोत्थूभग-वकरा, इति केचित्

अहवा कालियं काल एव ण उग्घाड-पोरुसिए। उक्कालियं सव्वासु पोरुसीसु कालवेलं मोत्तुं। स इति निद्देसे। अओ स एव कालो कालायारो भवति। वइरित्तो णाम जहाभिहियकालाओ अण्णो अकालो भवति, जहा सुत्तं वितियाए अत्थं पढमाए पोरुसिए वा सज्झाए वा असज्झायं वा। तु सद्दो कारणावेक्खी। कारणं पप्प विवच्चासो वि कज्जति। अतो तंमि अकाले दप्पेण पढंतस्स सुणेंतस्स वा पच्छित्तं भवति।

तं च इमं – लहुयाइं उ अकालकारिस्स सुत्ते अत्थे य। तु सद्दो केतिमतविसेसावेक्खी, तं च उवरिं भणीहिति ॥९॥

इयाणि चोदगो भणति –

को आउरस्स कालो, मइलंबरधोवणे व्व को कालो।
जदि मोक्खहेउ नाणं, को कालो तस्सऽकालो वा ॥१०॥

को कः। आतुरो रोगी। कलनं कालः, कलासमूहो वा कालः, तेण वा कारणभूतेन दव्वादिचउक्कयं कलिज्जतीति काल:—ज्ञायत इत्यर्थः। "को" कारसद्दाभिहाणेण य ण कोइ कालाकालोभिधारिज्जइ, यथान्यत्राप्यभिहितं—"को राजा यो न रक्षति"। मलो जस्स विज्जति तं मइलं अवरवत्थं। तस्स य मइलंबरस्स धोवणं प्रति कालाकालो न विद्यते। भणिया दिट्ठंता। इयाणि दिट्ठंतितो अत्थो भण्णति एवं जति जइत्ति अब्भुवगमे। सव्वकम्मावगमो मोक्खो भण्णति। तस्स य हेउ कारणं—निमित्तमिति पज्जाया। ज्ञायते अनेन इति ज्ञानं। यद्येवमभ्युपगम्यते ज्ञानं कारणं भवति मोक्षस्यातो कालो तस्स अकालो वा कः कालः। तस्सेति तस्स णाणस्स अकालो वा मा भवतुत्ति वक्कसेसं।

आयरियो भणति –

सुणेहि चोदग ! समयपसिद्धेहिं, लोगपसिद्धेहिं य कारणेहिं पच्चाइज्जसि।

आहारविहारादिसु, मोक्खधिगारेसु काल अक्काले।
जह दिट्ठो तह सुत्ते, विज्जाणं साहणे चेव ॥११॥

आहारिज्झतीति आहारो। सो य मोक्खकारण भवति। जहा तस्स कालो अकालो य दिट्ठो, भणियं च—"अकाले चरसि भिक्खू"—(सिलोगो) विहरणं विहारो। सो य उडुबद्धे, ण वासासु। अहवा दिवा, न रातो। अहवा दिवसतो वि ततियाए, न सेसासु। सो य विहारो मोक्खकारणं भवति। मोक्खहिगारेसुत्ति मोक्खकारणेसु अहवा मोक्खत्थं आहार-विहाराइसु अहिगारो कीरति। जहा जेण पगारेण दिट्ठो—उवलद्धो, को सो कालो अकालो य, तहा तेण पगारेण; सुत्तेति सुयणाणे, तमि वि कालाकालो भवतीति वक्कसेस। किं च विज्जाणं साहणे चेव कालाकालो दिट्ठो। जहा काइ विज्जा कण्हचाउद्दसि-अट्ठमीसु साहिज्जति। अकाले पुण साहिज्जमाणी उवघायं जणयति। तहा णाणं पि काले अहिज्जमाणं णिज्जराहेऊ भवति, अकाले पुण उवघायकरं कम्मबंधाय भवति। तम्हा काले पढियव्व, अकाले पढतं पडिणीया देवता छलेज्ज जहा—॥११॥

तक्ककुडेणाहरणं, दोहि य धमएहिं होति णायव्वं।
अतिसिरिमिच्छंतीए, थेरीए विणासितो अप्पा ॥१२॥

तक्कं[1] उदसी,[2] कुडो घडो,[3] आहरणं दिट्ठंतो।

---

१ अर्धोदकं तक्रं। २ उदस्वित्॥ ३ तक्रकुटाद्याहरणानि।

[1]तक्कभरिएण कुडेण आहारणं दिज्जति। जहा—

महुराय नयरीए एगो साहु पाओसिअं कालं घेत्तुं अइक्कन्ताए पोरिसीए कालिय-सुयमणुवओगेण पढति। तं सम्मदिट्ठी देवया पासति। ताए चिंतिअं "मा एयं साहुं पंता देवया छलेहिइ" तओ णं पडिबोहेमि। ताए य आहीरि-रूवं काउं तक्ककुडं घेत्तुं तस्स पुरओ "तक्कं विक्कायइ" ति घोसंती गतागताणि करेति। तेण साहुणा चिरस्स सज्झायबाधा यं करेतित्ति भणिया— "को इमो तक्कविक्कयकालो"? तया लवियं—"तुब्भं पुण को इमो कालियस्स सज्झायकालो?" भणियं च—

गाहा – सूतीपदप्पमाणाणि, परच्छिद्दाणि पाससि।
अप्पणो बिल्लमेत्ताणि, पिच्छंतो वि न पाससि ॥६॥

साहु उवाच—"णायं, मिच्छामिदुक्कडं ति" आउट्टो, देवया भणति "मा अकाले पढमाणो पंतदेवयाए छलिज्जिहिसि।"

अहवा – इदं उदाहरणं दोहि य धमएहिं।

गाहा – धमे धमे णातिधमे, अतिधंतं न सोभति।
जं अज्जियं धमंतेण, तं हारियं अतिधमंतेण ॥७॥"

एगो सामाइओ छेत्ते सुवंतो सुअराइ सावयतासणत्थं सिंगं धमति। अन्नया तेणो गोसेणा (ण) चोरा गावीओ हरंति। तेण समावत्तीए धंतं। चोरा कुढो आगओत्ति गावीओ च्छड्डेत्तु गया। तेण पभाए दट्ठुं नीयाओ घरं। चिंतेइ अ धंतप्पभावेण मे पत्ताओ। अभिक्खं धमामि। अण्णा वि पाविस्सं। एवं छेत्तं गावीओ य रक्खंतो अच्छति। अण्णया तेण चेव अन्तेण ते चोरा गावीओ हरंति। तेण य सिंगयं धंतं। चोरेहिं आणक्खेऊण हतो। गावीओ य णीयाओ। तम्हा काले चेव धमियव्वं।

इदाणिं बितिओ धमओ भण्णति। एगो राया दंडयत्ताह चलिओ। एकेण य संखधमेण समावत्तीए तंमि काले संखो पूरितो। तुट्ठो राया। थक्के पूरितोत्ति वाहित्तो संखपूरओ। सयसहस्सं से दिण्णं। सो तेणं चेव हेवाएणं धम्मंतो अच्छति। अण्णया राया विरेयणपीडितो वच्चगिहमतीति तेण य संखो दिण्णो। परवलकोट्टं च वट्टति। राया संतत्थो। वेगधारणं च से जायं। गिलाणो संवुत्तो। तओ उट्ठिएण रण्णा सव्वस्सहरणो कओ। जम्हा एते दोसो अकाल-कारीण तम्हा काले चेव पढियव्वं णाकाले।

'अहवा इमो दिट्ठंतो'। अतिसिरिमिच्छंतीते पच्छद्धं। आयरिओ भणइ – "हे चोदग अकाले तुमं पढंतो" अतिसिरिमिच्छंतो य विणासं पाविहिसि। कहं—

गाथा – "सिरीए मतिमं तुस्से, अतिसिरिं णाइपत्थए।
अतिसिरिमिच्छंतीए, थेरीइ विणासिओ अप्पा ॥" ॥८॥

एगाए छाणहारिग-थेरीए वाणमंतरमाराहियं अच्चणं करेंतीए। अण्णया छगणाणि पल्लत्थयंतीए रयणाणि जायाणि। इस्सरी भूया। चाउस्सालं घरं कारियं। अणेगधण-रयणासयणा-सण-भरियं। [2]सइज्झियथेरी य तं पेक्खति। पुच्छति य कुओ एयं दविणं ति। ताए य जहाभूयं

१ बृह० पीठि० भाष्य गाथा १७१। २ प्रातिवेश्मिकी (देशी)।

कहियं। ताए वि उवलेवण-धुवमादीहिं आराहितो वाणमंतरो। भणति य—ब्रूहि वरं। तया लवितं—जं तीए तं मम दुगुणं भवउ। तं च तीए सव्वं दुगुणं जायं। ततो तुट्ठा अच्छति। ताए पुरिमथेरीए तं सव्वं सुयं। ताए य अमरिसपुण्णाए चिंतियं-मम चाउस्सालं फिट्टउ, तणकुड़ियाँ भवउ। बितियाए दो तिणकुडियाओ जायओ। पुणो तीए चिंतियं-मम एक्कं अच्छिए फुल्लयं भवउ। इयरीए दोवि फुल्लाइं। एवं हत्थो पायो एवं सडिआ विणासमुवगता। एसो असंतोसदोसो। तम्हा अइरित्ते काले सज्झाओ ण कायव्वो॥१२॥ मा एवं विराहणा भविस्सति त्ति भणिओ कालायारो।

इयाणिं विणए त्ति दारं –

णीयासणंजलीपग्गहादिविणयो तहिं तु हरिएसो।
भत्तीओ होति सेवा, बहुमाणो भावपडिबंधो॥१३॥

णीयं निम्नं। आसियते जम्हि तमासणं णीयं आसणं णीयासणं। गुरूण णीचतरं उववसति। तं च पीढगादि आसणं भवति। दोवि हत्था मउल-कमल-संठिया अंजली भण्णति। पगरिसेण गहो पग्गहो। सो य णीयासणस्स वा अंजलिपग्गहो वा। अहवा णिसेज्जदंडगादीण वा पग्गहो भवति। आदि-सद्दग्गहणेण— "णिद्दा-विगहापरिवज्जिएहिं—" गाहा। एवं पढंतस्स सुणेंतस्स वा विणओ भवति। इहरहा अविणओ। अविणीए य पच्छित्तं। तं च इमं—सुत्ते मासलहु, अत्थे मासगुरु। अहवा सुत्ते ङ्क अत्थे ङ्का। तम्हा विणएण अधीयव्वं। विणओववेयस्स इहपरलोगे वि विज्जाओ फलं पयच्छंति। तहिं तु अत्थे विणओवचारित्ते ठियस्स जहा विज्जाओ फलं पयच्छंति।

तहा दिट्ठंतो भण्णति। 'हरिएसो[1]।

'रायगिहं' णयरं। 'सेणिओ' राया। सो य भज्जाए भण्णति-एगखंभं मे पासायं करेहि। तेण वड्ढइणो आणत्ता। गया कट्ठछिदा। सलक्खणो महादुमो दिट्ठो। धूवो दिण्णो। इमं च तेहिं भणियं-जेण एस परिग्गहिओ भूतादिणा सो दरिसावं देउ, जाव ण छिंदामो। एवं भणिऊण गता तद्दिणं। जेण य सो परिग्गहितो वाणमंतरेण तेण अभयस्स रातो दरिसाओ दिण्णो। इमं च तेण भणियं-अहं एगखभं पासायं करेमि, सव्वोउय-पुप्फफलोववेएण वणसंडेण सपायार-परिक्खेवं च, 'णवरं' मा मज्झ णिलओ चिरट्ठिओ रुक्खो छिज्जउ। 'अभयेण' पडिस्सुयं। कओ य सो तेण। आरक्खियपुरिसेहि य अहोरायं रक्खिज्जइ। अण्णया एक्कीए मायंगीए अकाले अंबडोहलो। भत्तारं भणइ-आणेहि। सो भणति-अकालो अंबगाणं। तीए पलवियं जतो जाणसि ततो आणेहि। सो गओ रायारामं। तस्स य दो विज्जातो अत्थि। ओणामणी १ उण्णामणी य २। ओणामित्ता गहियाणि पज्जत्तगाणि। उण्णामणीए-उण्णामिआ साहा। दिट्ठो य रण्णो अंबग्रहणपरित्थडो,[2] चिंतियं च-जस्स एस सत्ती सो अंतेउरं पि धरिसेहित्ति। अभयं भणति-सत्त रत्तस्स अब्भंतरे जति ण चोरं लभसि ततो ते जीवियं णत्थि। गवेसेति। अभओ पेच्छइ य एगत्थ लोगं मिलितं। ण ताव गोज्जो आगच्छति। तत्थ आगंतुं अभओ भणति जाव गोज्जो आढवेइ गेयं ताव अक्खाणयं सुणेह।

एगंमि दरिद्द-सेट्ठिकुले वड्ढकुमारी रूववती। सा य एगत्थ आरामे चोरियाए कुसुमाइं गेण्हइ। ताणि य घेत्तुं कामदेवं अच्चेति। सा य अण्णया आरामिएण गहिया। असुभभावो य सो कड्ढिउमारद्धो। सा भणति-मा मे विणासेहि। तव वि भगिणी भागिणीज्जा वा अत्थि। सो-भणति

१ हरिकेशः=मातंगः। २ परित्थडो-वृत्तान्त। २ (च्छ प्रत्यन्तरे)।

किमेतेण, एक्कहा मुयामि, जया परिणीया तया जति पढमं मम समीवमागमिस्ससि तो ते मुयामि। तीए पडिस्सुयं विसज्जिया। परिणीया य। वासघरं पविट्ठा। भत्तारस्स सब्भावं कहियं। तेण विसज्जिया आरामं जाति। अन्तरा चोरेहिं गहिया। सब्भावे कहिए तेहिं मुक्का पुणो गच्छति। अन्तरा रक्खसो आहारत्थी छण्हमासाणं णीति। तेण य गहिता। सब्भावे सिट्ठे मुक्का। गया आरामियस्स पासं। दिट्ठा, कतो सि। भणति। सो समयो। कहं मुक्का भत्तारेण ? सव्वं कहेति। अहो सच्चपइण्णा एसत्ति मुक्का कहमहं दुहामि। मुक्का य। पडिइंती सव्वेहिं वि मुक्का। भत्तारस-गासमक्खता गया। अभओ पुच्छति-एत्थ केण दुक्करं कयं। जे तत्थ इस्सालू ते भणंति-भत्तारेण। छुहालू-रक्खसेणं। पारदारिया-मालिएणं। 'हरिएसो' भणति-चोरेहिं। 'अभयेण' गहितो। एस चोरोत्ति रण्णो उवणीओ। पुच्छीओ सब्भावो कहिओ। 'राया भणति-जइ विज्जाओ देसि तो जीवसि'। तेण पडिस्सुयं-देमित्ति। आसणत्थो पढियो[1] वाहेति, ण वहइ। 'अभओ' पुच्छिओ— किं ण वहति। 'अभओ' भणति-अविणय गहिया, एस हरिकेसो भूमित्थो तुमं सीहासणत्थो। तओ तस्स अण्णं आसणं दिण्णं। राया णीततरो ठितो। सिद्धा। एवं णाणं पि विणय-गहियं फलं देति। अविणय-गहियं णदेति। तम्हा विणएण गहियव्वं। विणएत्ति दारं गयं।

इयाणिं बहुमाणे त्ति दारं।

बहुहा माणणं बहुमाणो। सो य बहुमाणो णाणाइसंजुत्ते कायव्वो। सो दुविहो भवति-भत्ती बहुमाणं च। को भत्तीबहुमाणाणं विसेसो। भण्णति गाहापच्छद्धं। अब्भुट्ठाणं डंडग्गह-पाय-पुंच्छणासणप्पदाणग्गहणादीहिं सेवा जा सा भत्ती भवति। णाण-दंसण-चरित्त-तव-भावणादिगुणरंजियस्स जो रसो पीतिपडिबंधो सो बहुमाणो भवति। भण्णति-एत्थ चउभंगो[2] कायव्वो। भत्ती णामेगस्स णो बहुमाणो-ङ्क२=४। तत्थ पढमभंगे वासुदेव-पूत्तो पालगो। वितिय-भगे सेदुओ संबो वा, ततिय-भंगे गोयमो। चउत्थे कविला कालसोकरिआइ। इदाणिं भत्तिवहुमाणाणं अण्णोण्णारोवणं कज्जति ॥१३॥

जओ भण्णति –

बहुमाणे भत्ति भइता, भत्तीए वि माणो अकरणे लहुया।
गिरीणिज्झरसिवमरुओ, भत्तीए पुलिंदओ माणे ॥१४॥

जत्थ बहुमाणो तत्थ भत्ती भवे ण वा। भत्तीए बहुमाणो भतिओ, बहुकारलोवं काऊण भण्णति माणो। भत्तिं बहुमाणं वा ण करेति चउलहुया। अहवा भत्तिं न करेति ङ्क। बहुमाणं ण करेति ङ्का। आणाइणो य दोसा भवंति।

भत्तिबहुमाणविसेसणत्थं उदाहरणं भण्णति –

गोरगिरि णाम पव्वतो। तस्स-णिज्झरे सिवो। तं च एगो बंभणो पुलिंदओ य अच्चेति। बंभणो उवलेवणादि काउं ण्हवणच्चणं करेति। पुलिंदो पुण उवचारवज्जियं गल्लोलपाणिएणं ण्हवेति। तं च सिवो सभासिउणं पडिच्छइ आलावं च करेइ। अन्नया बभणेण आलावसद्दो सुओ। पडियरिऊण जहाभूतं णात। उवालद्धो य सो सिवो "तुमं एरिसो चेव पाण सिवो" तेण सिट्ठं "एस मे भावओ अणुरत्तो"। अण्णया अच्छिं उक्खणिउण अच्छइ सिवो। बंभणो आगओ, रडिओ, उवसंतो।

---

१ पढिउमावाहेति। २ (२) णो भत्ती बहुमाणो (३) भत्ती वि, बहुमाणो वि (४) णो भत्ती णो बहुमाणो।

पुलिंदो आगओ। अच्छि णत्थि त्ति अप्पणो अच्छी भल्लीए उक्खणिऊण सिवगस्स लाएति। बंभणो पतीतो। तस्स बंभणस्स भत्ती, पुलिंदस्स बहुमाणो। एवं णाणमंतेसु भत्ती बहुमाणो कायव्वो। बहुमाणे त्ति दारं गयं। ॥१४॥

इयाणिं उवहाणे त्ति दारं –

तं दव्वे भावे य।[1] दव्वे उवहाणगादि। भावे इमं।

दोग्गइ पडणुपधरणा, उवधाणं जत्थ जत्थ जं सुत्तं
आगाढमणागाढे, गुरुलहु आणादि-सगडपिता ॥१५॥

दुट्ठा गती, दुग्गा वा गती दुग्गती। दुक्खं वा जंसि विज्जति गतीए एसा गई दुग्गती। विषमेत्यर्थः। कुत्सिता वा गतिर्दुर्गतिः। अणभिलसियत्थे दुसद्दो जहा दुब्भगो। सा य नरगगती तिरियगती वा। पतनं पातः। तीए दुग्गतीए पतंतमप्पाणं जेण धरेति तं उवहाणं भण्णति। तं च जत्थ जत्थ त्ति एस सुतवीप्सा, जत्थ उद्देसगे, जत्थ अज्झयणे, जत्थ सुयखंधे, जत्थ अंगे, कालुक्कालियअंगाणंगेसु णेया। जमिति जं उवहाणं णिव्वीतितादि तं तत्थ तत्थ सुते (श्रुते) कायव्वमिति वक्कसेसं भवति। आगाढाणागाढेत्ति जं च उद्देसगादी सुतं भणियं तं सव्वं समासओ दुविहं भण्णति-आगाढं अणागाढं वा। तं च आगाढसुयं भगवतिमाइ अणागाढं आयारमाति। आगाढे आगाढं उवहाणं कायव्वं। अणागाढे अणागाढं। जो पुण विवच्चासं करेत्ति तस्स पच्छित्तं भवति। आगाढे ङ्का। अणागाढे ङ्क। आणाअणवत्थ-मिच्छत्त-विराहणा य भवंति।

एत्थ दिट्ठंतो असगडपिया। का सा असगडा? तीसे उप्पत्ती भण्णति –

गंगातीरे एगो आयरिओ वायणापरिस्संतो सज्झाये वि असज्झायं घोसेति एवं णाणंतरायं काऊण देवलोग गओ। तओ चुओ आभीरकुले पच्चायाओ भोगे भुंजति। धूया य से जाया। अतीव रूववती। ते य पच्चतिया गोयारियाए हिंडति। तस्स य सगड पुरतो वच्चति। सा य से धूया सगडस्स तुंडे ठिता। तीसे य दरिसणत्थं तरुणेहिं सगडा पि उप्पहेण पेरियाणि। भग्गाणि य। तो से दारियाए लोगेण णामं कतं असगडा।

असगडाए पिआ, असगडपिआ। तस्स तं चेव वेरग्गं जातं। दारियं दाउं पव्वइतो। पढिओ जाव चाउरंगिज्जं। असंखए उद्दिट्ठे तण्णाणावरणं उदिण्णं। पढंतस्स न ठाति। छट्ठेण अणुण्णवइत्ति भणिए भणति-एयस्स को जोगो। आयरिया भणंति-जाव ण ठाति ताव आयंबिलं। तहा पढति। वारस वित्ता। वारसहिं वरिसेहिं आयंबिलं करेंतेणं पढिया। तं च से णाणावरणं खीणं। एवं सम्मं आगाढजोगो अणागाढजोगो वा अणुपालेयव्वो त्ति। उवहाणे त्ति दारं गयं ॥१५॥

इयाणिं अणिण्हवणे त्ति दारं –

अणिण्हवणं अणवलावो, तप्पडिवक्खो अवलावो, जतो भण्णति –

णिण्हवणं अवलाओ, कस्स सगासे अधितं अण्ण चउगुरुगा।
ण्हावितछुरघरए, दाण तिदंडे णिवे हिमवं ॥१६॥

---

१ गण्डोपधानादि।

कोवि साहू विसुद्धक्खरपदविंदुमत्तादिए पढंतो परूवेंतो य अण्णेण साहुणा पुच्छिओ । कस्स सगासे अहीयं । तगार-हिगाराणं संधिप्पओगेण अगारोलब्भति, ततो अहीतं भवति । तेण य जस्स सगासे सिक्खियं सो य ण सुद्धतक्कसद्दसिद्धतेसु पवीणो जच्चादिसु वा हीणतरो । अतो तेण लज्जति । 'अण्णत्ति' अण्णं जुगप्पहाणं कहयति । तगार-णगाराणं संधिप्पओगा अगारो लब्भति, तेण अण्णमिति भवति । एवं णिण्हवणं भवति । इमं च से पच्छित्तं ङ्क । अहवा सुत्ते । ङ्क । अत्थे । ङ्का । वायणायरियं णिण्हवेंतस्स इहपरलोए य णत्थिकल्लाणं ।

उयाहरणं –

एगस्स ण्हावियस्स छुरघरयं विज्जाए आगासे चिट्ठति । तं च परिव्वायगो बहूहिं उवासणेहिं लद्धुं विज्जं अणत्थ गंतुं तिदंडेण आगासगतेन लोए पूइज्जइ । रण्णा पुच्छिओ-भगवं किं विज्जातिसतो तवाइसतो वा । सो भणति-विज्जातिसओ । कओ आगामिओत्ति— "हिमवंते महरिसिसगासाओत्ति", । तिदंडं खडखडेंतं पडितं । एवं जो वि अप्पगासो आयरिओ सो वि ण णिण्हवेयव्वो । अणिण्हवणे त्ति दारं गयं ॥१६॥

इदाणिं वंजणे त्ति दारं –

व्यंजयतीति व्यंजनं । तं च अक्खरं । अक्खरेहिं सुत्तं णिप्फज्जतित्ति काउं सुत्तं वंजणं । तमण्णहा करेंति । कहं ?

सक्कयमत्ताबिंदू, अण्णभिधाणेण वा वि तं अत्थं ।
वंजेति[1] जेण अत्थं, वंजणमिति भण्णते सुत्तं ॥१७॥

पाइतं सुत्तं सक्कएति, जहा-धर्मो मंगलमुत्कृष्टं । अभूतं वा मत्तं देति फेडेति वा, जहा-सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि एवं वत्तव्वे-सव्वे सावज्जे जोगे पच्चक्खामित्ति भणति । एवं बिंदुं भूतं वा फेडेति, अभूतं वा देति, जहा-णमो अरहंताणं ति वत्तव्वे पंच वि साणुस्सारा णगारा वत्तव्वा, सो पुण नमो अरहंताण भणति । अभिधीयते जेण— तमभिहाणं, जहा-घडो, पडो वा । अण्णं अभिहाणं अण्णभिहाणं । ततो तेण अण्णेणं अभिहाणेण 'तमिति' तं चेव अत्थं अभिलवति, जहा-पुण्णं कल्लाणमुक्कोसं, दयासंवरणिज्जरा । अविसद्दो विकप्पत्थे पयत्थ-संभावणे वा । किं पुण पदत्थं संभावयति, अक्खरपएहिं वा हीणातिरित्तं करेति, अण्णहा वा सुत्तं करेति, एवं पयत्थं संभावेति । सुत्तं कम्हा वंजणं भण्णति ? उच्यते-वंजतित्ति व्यक्तं करोति, जहोदणरसो वंजणसंयोगा व्यक्तो भवति । एवं सुत्ता अत्थो वत्तो भवति । जेणं ति जम्हा कारणा वंजिज्जतित्ति अत्थो । एवं वंजणसामत्थातो, वंजणमिति वुच्चते सुत्तं, णिगमणवयणं । तं वंजणं सक्कयवयणादिभि कप्पयन्तस्स पच्छित्तं भवति ॥१७॥

लहुगो वंजणभेदे, आणादी अत्थभेअ चरणे य ।
चरणस्स[2] य भेदेणं, अमोक्ख दिक्खा य अफला उ ॥१८॥

सक्कयमत्ताबिंदूअक्खरपयभेएसु वट्टमाणस्स मासलहु । अण्णं सुत्तं करेति चउलहुं । आणाअणवत्थ मिच्छत्तविराहणा य भवंति । एवं सुत्तभेओ । सुत्तभेया अत्थभेओ । अत्थभेया चरणभेओ । चरणभेया अमोक्खो । मोक्खाभावा दिक्खादयो किरियाभेदा अफला भवंति । तम्हा वंजणभेदो ण कायव्वो । वंजणे त्ति दारं गयं॥१८॥

---

१ वंजिज्जइ त्ति । २ चरणस्स य भेदे पुण ।

इदाणिं अत्थे त्ति दारं ·

वंजणमभिंदमाणो, अवंतिमादण्ण अत्थे गुरुगो उ।
जो अण्णो अणणुवादी, णाणादिविराधणा णवरिं ॥१९॥

वंजणं सुत्तं । अण्णहा करणं भेदो । ण भिंदमाणो अभिंदमाणो अविणासंतोत्ति[1] भणितं होति। तेसु चेव वंजणेसु ।(अभिण्णेसु) अण्णं अत्थं विकप्पयति, कहं ? जहा अवतिमादण्णेति, "अवंती केया वंती लोगंसि समणाय माहणाय विप्परामुसंतित्ति," अवंती णाम जणवओ, केयत्ति रज्जु, वती णाम पडिया कूवे, लोयंसि णाया जहा कूवे केया पडिता, ततो धावंति समणा-भिक्खुगाइ, माहणा-धिज्जाइया, ते समण-माहणा कूवे ओयरिउं पाणियमज्झे विविहं परामुसति। आदिसद्दातो अण्णं पि सुत्तं एव कप्पति। अण्णंति अण्णहा अत्थं कप्पयति। एवं अत्थे अण्णहा कप्पिए सोही अत्थे गुरुगो उ। अत्थस्स अण्णाणि वंजणाणि करेंतस्स मासगुरु, अह अण्णं अत्थं करेति तो चउगुरुगा। अण्णोति भणितातो[1] अभणितो अण्णो। सो य अणिदिट्ठसरूवो । अणणुपातित्ति अनुपततीत्यनुपाती घडमानो युज्यमान इत्यर्थः । न अनुपाती अननुपाती अघटमान इत्यर्थः । तमघडमाणमत्थं सुत्ते जोजयंतो, णाणातिविराहणत्ति णाणं आदि जेसिं ताणिमाणि णाणादीणि, आदि सद्दातो दंसणचरित्ता, ते य विराहेत्ति । विराहणा खंडणा भजणा य एगट्ठा । णवरिं ति इहपरलोगगुणपावणवुदासत्थं णवरिं सद्दो पउत्तो, विराहणा एव केवलेत्यर्थः । अत्थे त्ति दारं गयं ॥१९॥

इदाणिं तदुभए त्ति दारं –

दुमपुप्फिपढमसुत्तं-अहागडरीयंति रण्णो भत्तं च ।
उभयण्णकरणेणं-मीसगपच्छित्तुभयदोसा ॥२०॥

दोसु मासो दुमो पुप्फ विकसणे । दुमस्स पुप्फं दुमपुप्फं । तेण दुमपुप्फेण जत्थ उवमा कीरइ तमज्झयणं दुमपुप्फिया, आदाणपयेणं च से णामं धम्मो मंगलं । तत्थ पढमसुत्तं पढम-सिलोगो । तत्थ उभयभेदो दरिसिज्जति । "धम्मो मंगलमुक्कट्ठं" एवं सिलोगो पढियव्वो, सो पुण एवं पढति—

"धम्मो मंगलमुक्कुट्ठो, अहिंसा डुंगरमस्तके ।
देवावि तस्स नासंति, जस्स धमे सदा मसी ॥"

अहागडरीयंति त्ति अहाकडेसु रीयंति त्ति । एत्थ सिलोगो पढियव्वो । अत्थ उभयभेदो दरिसिज्जति ।

"अहाकडेहिं रंधंति, कट्ठेहिं रहकारिया ।
लोहारसमावुट्ठा, जे भवंति अणीसरा ।"

रण्णो भत्तं ति । एत्थ उभयभेदो दरिसिज्जति— "रायभत्ते सिणाणे य" सिलोगो कंठो ।

"रण्णो भत्तं सिणो जत्थ, गद्दहो तत्थ खज्जति ।
सण्णज्झति गिही जत्थ, राया पिंडं किमज्झती-किमच्छती ।"

उभयं सुत्तत्थं । तमण्णहा कुणति । सुत्तमण्णहा पढति, अत्थमण्णहा वक्खाणेति । एवमण्णहा सुत्तत्थे कप्पयंतस्स मीसगपच्छित्तं। मीसं णाम वंजणभेदे अत्थभेदे य जे पच्छित्ता भणिता ते दोवीह दट्ठव्वा । ङ्क । ङ्का ।

---

१ अभणितातो (इत्यपि पाठ : प्रत्य०) ।

उभयदोसा य व्यंजनभेदादर्थभेदः, अर्थभेदाच्च चरणभेदः, इह तु चरणभेद एव द्रष्टव्यः, यतः श्रुतार्थप्रधानं चरणं तम्हा उभयभेदो चरणभेदो दट्ठव्वो ॥२०॥

इदाणिं कालाणायारादिसु जेऽभिहिया पच्छित्ता ते केइ मतविसेसिया जह भवति न भवति य तहा भण्णति ।

सुत्तंमि एते लहुगा, पच्छित्ता अत्थे गुरुगा केसिंचि ।
तं[1] पुण जुज्जति जम्हा, दोण्ह वि लहुआ अणज्झाए ॥२१॥

जे एते पच्छित्ता भणिता ते सुत्ते लहुगा अत्थे गुरुगा । केति मतेणेवं भण्णति ।

आयरिओ भणति—तदिदं केति मतं ण युज्जते, ण घडए, णोववत्तिं पडिच्छति ।

सीसो भणति । कम्हा ?

आयरिओ भणति—जम्हा दोण्ह वि लहुगा अणज्झाए । अणज्झाए त्ति अकाले असज्झातिते वा सुत्तत्थाइं करेंताणं सामण्णेण लहुगा भणिता, तम्हा ण घडति ॥२१॥ जे पुण केइ आयरिया लहुगुरु विसेसं इच्छंति ते इमेण कारणेण भणंति—

"अत्थधरो तु पमाणं, तित्थगरमुहुग्गतो तु सो जम्हा ।
पुव्वं च होति अत्थो, अत्थे गुरु जेसि तेसेवं ॥२२॥"

सुत्तधरे णामेगे णो अत्थधरे, एवं चउभंगो कायव्वो । कलिदावराण भगाण सुत्तत्थप्पत्त-गठियाण गुरुलाघवं चिंतिज्जति । कुल-गण-संघसमितीसु सामायारीपरूवणेसु य सुत्तधराओ अत्थधरो पमाणं भवति । तहा—गणाणुण्णाकाले गुरु ततिय भंगिल्लाऽसति वितियभंगे अत्थधरे गणाणुण्णं करेति ण सुत्तधरे । एवं अत्थधरो गुरुतरो पमाणं च । किं च तित्थगर-मुहुग्गतो सो अत्थो जम्हा । सुत्तं पुण गणहर-मुहुग्गतं । "अत्थं भासति अरहा"— गाहा—तम्हा गुरुतरो अत्थो । किं च पुव्वं च होति अत्थो पच्छा सुत्तं भवति । भणियं च—

"अरहा[2] अत्थं भासति, तमेव सुत्तीकरेंति गणधारी ।
अत्थेण विणा सुत्तं, अणिस्सियं केरिसं होति ?" ॥१॥

जेसित्ति जेसिं आयरिआणं ते सेवंति-ज-गारुद्दिट्ठाणं त-गारेणं ति णिद्देसो कीरति, स-गारा एगारो पिहो कज्जति, एवं ततो भवति, एवं सद्देण य एवं कारणाणि घोसेंति-भणंति "अत्थे गुरूणो सुत्ते लहुआ पच्छित्ता ।" इति भणितो अट्ठविहो णाणायारो ॥२२॥

इदाणिं दंसणायारो भण्णति –

दंसणस्स य आयारो दंसणायारो, सो य अट्ठविहो –

णिस्संकिय णिक्कंखिय, णिव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठिय ।
उववूह-थिरीकरणे, वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ॥ २३ ॥

---

१ "तु" सभाव्यते । २ बृह० पीठिका भाष्य गाथा १९३ ।

संक त्ति दारं –

संसयकरणं संका, कंखा अण्णोणदंसणग्गाहो ।
संतंमि वि वितिगिच्छा, सिज्झेज्ज ण मे अयं अट्ठो ॥२४॥

संसयणं संसयः । करणं क्रिया । संसयस्य करणं संसयकरणं ।

सिस्साह–जमिदं संसयकरणं किमिदं विण्णाणत्थंतरभूतं उताणत्थंतरमिति ।

गुरुराह–ण इदमत्थंतरभूतं घडस्स दडादयो जहा, इदं तु अणत्थंतरं, अंगुलिए य वक्ककरणवत् । जदिदं ससयकरणं, सा एव संका, सकणं सका, चिन्ता सकेत्यर्थः । सा दुविहा देसे सव्वे य । देसे जहा-तुल्ले जीवत्ते कहमेगे भव्वा एगे अभव्वा, अहवेगेण परमाणुणा एगे आगासपदेसे पुण्णे अण्णो वि परमाणू तत्थेवागासपदेसे अवगाहति ण य परमाणू परमाणुतो सुहुमतरो भवति, ण य आयपमाणे अण्णावगाहं पयच्छति, कहमेयं ति ? एवमादि देसे सका । सव्वसंकत्ति सव्वं दुवालसंगं गणिपिडगं पागयभासाणिवद्धं माणु एत कुसलकप्पियं होज्जा ।

संकिणो असंकिणो य दोसगुणदीवणत्थं उदाहरणं-जहा ते पेयापाया-दारगा–

एगस्स गिहवतिणो पसवियपुत्ता भज्जा मता । तेण य अण्णा घरिणी कता । तीए वि पुत्तो जाओ । तो दोवि लेहसालाए पढंति । भोयणकाले आगताण दोण्ह वि गिहंतो णिविट्ठाण मासकणफोडिया पेया दिण्णा । तत्थ मुयमातिओ चिंतेइ–"मच्छित्ता इमा" । ससंकिओ पियति । तस्स संकाए वग्गुलियावाही जातो, मतो य । वितिओ चिंतेति–"ण ममं माता मच्छियाओ देति" । णिस्संकितो पिवति, जीवितो य । तम्हा सका ण कायव्वा, णिस्संकितेण भवियव्वं । संके ति दारं गतं ।

इदाणिं कंखे त्ति दारं । कंखा अण्णोण्णदंसणग्गाहो त्ति वितितो पादो गाहाए । कंखणं कखा अभिलाप इत्यर्थः । कंखा अभिलासो, अण्णं च अण्णं च अण्णोण्ण-णाणप्पगारेसु त्ति भणियं होइ, दिट्ठी दरिसणं-मतमित्यर्थः, तेसु णाणप्पगारेसु दरिसणेसु गाहोग्गहणं ग्राह गृहीतिरित्यर्थः । एरिसा कखा । सा य दुविहा-देसे य सव्वे य । देसे जहा-किंचि एगं कुतित्थियमतं कंखति, जहा–"एत्थ वि अहिंसा भणिता मोक्खो य, अत्थि सुकयदुक्कयाणं कम्माएा फलवित्तिविसेसो दिट्ठो" एवमादि देसे । सव्वकंखा भण्णति । सव्वाणि सक्काजीविग-कविल-वोडितोलूग-वेद-तावसादिमताणि गेण्हति । सव्वेसु तेसु जहाभिहितकारणेसु रुइं उप्पायंतो सव्वकंखी भवति ।

अकंखिणो कंखिणो य गुणदोसदरिसणत्थं भण्णति उदाहरणं ।

राजा अस्सेण अवहरितो । कुमारोमच्चो य अडविं पविट्ठा । छुहा परज्झा वणफलाणि खायंति । पडिणियत्ताणं राया चिंतेति । लड्डुग-पूडलगमादीणि सव्वाणि भक्खेमि त्ति आगया दो वि जणा । रायेण सूयारा भणिता । जं लोए पवरं ति तं सव्वं रंधेह त्ति । तेहिं रद्धं उवठवियं रण्णो । सो राया पेच्छणगदिट्ठंतं कप्पेति, कप्पडिया बलिएहिं धाडिज्जंति एवं मिट्ठस्स ओगासो होहिति त्ति काउं कठो मंडकोंडगादीणि खतिताणि । तेहिं सूलेण मतो । अमच्चेण पुण वमण-विरेयणाणि कताणि । सो आभागी भोगाणं जाओ । इयरो य मओ । तम्हा कखा ण कायव्वा । कंखेत्ति दारं गतं ।

इदाणिं वितिगिच्छे त्ति दारं । "संतंमि वि वितिगिंच्छ" गाहा-पच्छद्धं । सतमि विज्जमाणंमि, अवि पयत्थ संभावणे, किं संभावयति ? "पच्चक्खे वि ताव अत्थे वितिगिच्छं करेति किमु

परोक्खे" एतं संभावयति । वितिगिंच्छा णाम मतिविप्लुतिः । जहा थाणुरयं पुरिसोऽयमिति । सिज्झेज्ज त्ति-जहाऽऽभिलसितफलपावणं सिद्धी । णगारेण संदेहं जणयति । मे इति आत्मनिर्देशः । अयमिति ममाभिप्रेतः । अर्थः अर्थ्यते इत्यर्थ. । एस पयत्थो भणिओ । उदाहरणसहिओ समुदायत्थो भण्णति । सा वितिगिच्छा दुविहा-देसे सव्वे य । तत्थ देसे – "अह्मे मोय-सेय-मल-जल्ल-पंकदिद्धगत्ता अच्छामो, अब्भंगुव्वट्टणादि ण किंचि वि करेमो, ण णज्जति किं फलं भविस्सति ण वा" एमाति देसे । सव्वे – "बंभचरण-केसुप्पाडण-जल्लधरण-भूमिसयण-परिसहोवसग्ग-विसहणाणि य एवमाईणि बहूणि करेमो, न नज्जइ-किमेतेसिं फलं होज्ज वा ण वा" एवं वितिगिच्छति । जे आदिजुगपुरिसा ते सघयण-धिति-बलजुत्ता जहाभिहितं मोक्खमग्गं आचरंता जहाभिलसियमत्थं साहेंति, अम्हे पुण संघयणादिविहूणा फलं वि लहिज्जामो ण वा ण णज्जति । अहवा सव्वं साहूणं लट्ठं दिट्ठं जति णवरं जीवाकुलो लोगो ण दिट्ठो हुंतो तो सुन्दरं होंतं, देसवितिगिच्छा एसा । सव्ववितिगिच्छा जइ सव्वण्णूहिं तिकालदरिसीहिं सव्वं सुकरं दिट्ठं होंतं तो णं अम्हारिसा कापुरिसा सुहं करेंता, एवं सुन्दरं होंतं ।

णिवितिगिच्छि-विचिगिच्छिणो पसाहणत्थं उदाहरणं भण्णति –

एगो सावगो "णंदीसरवरदीवं" गतो । दिव्वो य से गंधो जाओ दिव्वसंघंसेणं । अण्णेण मित्तसावएण पुच्छितो कहणं ? विज्जाए दाणं । साहणं मसाणे । तिपायं सिक्कगं हेट्ठा इंगाला, खायरो य सूलो, अट्ठसयं वारे परिजवित्ता पादो छिज्जए, एवं बितिए ततिए छिन्ते आगासेण वच्चति । तेण सा विज्जा गहिता । कालचउद्दसिरत्ति साहेति मसाणे । सव्वं उवचारं काउं ण अज्झवसति । चोरो य णगरारक्खेण परब्भसमाणो[1] तत्थेव अतिगतो । ते वेढिऊण ठिता, पभाए घेप्पिहिति । सो य चोरो भमंतो तं विज्जासाहगं पेच्छति । तेण पुच्छितो भणति विज्जं साहेमि त्ति । केण दिण्णा, सावगेण । चोरेण भणियं-इमं दव्वं गिण्हाहि विज्जं देहि । सो सड्ढो वितिगिच्छति सिज्झिज्जा ण वत्ति । तेण दिण्णा । चोरेण चिंतियं समणोवासओ कीडियाए वि पावं णेच्छति, सच्चमेयं । सो साहेउमारद्धो, सिद्धा । इयरो सड्ढो गहितो । तेणआगासगएणं लोगो भिसितो । ताहे सो सड्ढो मुक्को । सड्ढा जाया । एवं णिव्वितिगिच्छेण होंतियव्वं ॥२४॥

अहवा – विदु कुच्छत्ति व भण्णति, सा पुण आहारमोयमसिणाइं ।
तीसु वि देसे गुरुगा, मूलं पुण सव्वहिं होति ॥२५॥

विदु-साहू, कुच्छति-गरहति निंदतीत्यर्थः । व इति वितिय विकप्पदरिसणे भण्णइत्ति भणियं होति । सा इति सा विदुगुंच्छा । पुण सद्दो विसेसणत्थे दट्ठव्वो । पुव्वाभिहितवितिगिच्छतो इमं विदुगुंच्छं विसेसयति । सा पुण विदुगुंच्छा इमेसु संभवति । आहारे त्ति वल्लिकरेसु आहारेति, अहवा मंडली विहाणेण भुंजमाणा पाणा इव सव्वे एक्कलाला असुइणो एते । मोए त्ति काइयं वोसिरिउं दवं ण गेण्हंति समाहीसु वा वोसिरिउं तारिसेसु चेव लंवणेसुं भायणाणि छिवंति । मसिणाणे त्ति अण्हाणा य एते पस्सेयउल्लिय-मलज्झरंतगत्ता सयाकालमेव चिट्ठंति । आदि सद्दातो सोवीरग-गहणं तेण व णिल्लेवणं मोयपडिमापडिवत्ती य एते घेप्पंति ।

---

[1] घिरा हुआ ।

जहा केण कया विदुगुंच्छा तत्थुदाहरणं—

सड्ढो पच्चंते वसति। तस्स धूया विवाहे किह वि साहुणो आगता। सा पिउणा भणिया पुत्ति पडिलाहेहि। सा मंडिय-पसाहिता पडिलाहेति। साहूणं जल्लगंधो तीए अग्घाओ। सा हियएण चितेति-अहो! अणवज्जो धम्मो भगवता देसिओ, जइ जलेण फासुएण ण्हाएज्जा को दोसीं होज्जा। सा तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंता देवलोगगमणं। चुता 'मगहारायगिहे-गणिया धूया' जाया। गब्भगता चेव अरतिं जणेति। गब्भसाडणेहि वि ण पडति। जाता समाणी उज्झिया। सा गंधेण तं वणं वासेति। 'सेणिओ' य तेण ओगासेण-णिगच्छति सामि वंदिउं। सो खंधावारो तीए गंधं ण सहते। उम्मग्गेण य पयाओ। रण्णा पुच्छियं किमेयं। तेहिं कहियं दारियाए गंधो। गंतूणं दिट्ठा। भणति एसेव ममं पढम पुच्छा। भगवं पुव्वभवं कहेति। भणति एस कहिं पच्चणुभविस्सति। सामी भणति-एतिए तं वेइतं इदाणिं, सा तव चेव भज्जा भविस्सति, अग्गमहिसी बारस संवच्छराणि। सा कहं जाणियव्वा। जा तुमं रममाणस्स पट्ठिए हंसोलीणं[1] काहिति तं जाणिज्जासि। वंदित्ता गओ। सा अवगयगंधा एगाए आहीरीए गहिता, संवड्ढिया, जोवणत्था जाया। कोमुतिचारं माताए समं आगता। 'अभओ सेणिओ' य पच्छण्हं कोमुदीचारं पेच्छंति। तीसे दारियाते अंगफासेणं 'सेणिओ' अज्झोववण्णो। णाममुद्दीया य तीसे दसीयाए बंधति। 'अभयस्स' कहेति-णाममुद्दा हरिता, मग्गाहि। तेणं मणुस्सा पेसिता। तेहिं वारा बद्धा। ते एक्केकं माणुसं णीणंति। सा दारिया दिट्ठा। चोरी गहिता। 'अभओ' चितेति-एतदत्थं. से दसिआए. वेढओ बद्धो। 'अभओ' गओ 'सेणियस्स' समीवं। भणति, गहिओ चोरो। कहिं सो? मारिओ। 'सेणिओ' अद्धिति पगओ। 'अभओ' भणइ-मुक्का। सा पुण [2]मयहर धूया वरेत्ता परिणीया। अण्णया [3]बुक्कण्णएण रमंति। राणिआओ पोत्तं वहावेंति, हत्थं वा डेंति। जाहे राया जिच्चइ ताहे ण तं वाहेंति। इयरीए जीतो पोत्त वेढेत्ता विलग्गा। रण्णा सरियं। मुक्का, भणति-ममं विसज्जेह। विसज्जिया, पव्वइया य। एव विदुगुंच्छाए फलं। वितिगिंच्छेत्ति दारं गतं। इदाणिं एएसिं पच्छित्तं भण्णति। तीसु वि पच्छद्धं। तीसु वि सका कंखा वितिगिंच्छा य एताइं तिन्नि। एतासु तीसु वि देसे पत्तेयं पत्तेयं गुरुगा। मूलमिति सव्वच्छेदो। पुण सद्दो सव्वसंकाति विसेसावधारणे दट्ठव्वो। सव्वहिं ति सव्वसकाए सव्वकंखाए सव्ववितिगिंच्छाए य। होति भवतीत्यर्थः। किं तत् मूलमिति-अनुकरिसणवक्कं दट्ठव्वं ॥२५॥

इदाणिं अमूढदिट्ठि त्ति दारं—

मुह्यते स्म अस्मिन्निति मूढः। न मूढः अमूढः। अमूढ दिट्ठि याथातथ्यदृष्टिरित्यर्थः। जहा सा भवति तहा भण्णति—

> **णेगविधा इड्ढीओ, पूयं परवादिणं चदट्ठूणं।**
> **जस्स ण मुज्झइ दिट्ठी, अमूढदिट्ठिं तयं बेंति ॥२६॥ दारम्**

णेगविहत्ति णाणाप्पगारा, का ता? इड्ढिओ। इड्ढित्ति इस्सरियं, तं पुण विज्जामतं तवोमतं वा, विउव्वणागासगमणविभंगणाणादि ऐश्वर्यं। पूयत्ति-असण-पाण-खातिम-सातिम-वत्थ-कंबलाती जस्स वा जं पाउग्गं तेण से पडिलाभणं पूया। केसिं सा? परवादिणं ति जइणसासणवइरत्ता परा ते य परिव्वायरत्तपडिमादी

---

१ खंधे पर चढना। २ ग्रामणीपुत्री। ३ पासोसे।

पासंडत्था, च सद्दाओ गिहत्था धीचारादि, अहवा च सद्दाओ ससासणे वि जे इमे पासत्था तेसिं पूयासक्का-रादि दट्ठुं, च अनुक्करिसणे पायपूरणे वा दट्ठव्वो। दट्ठुणं ति दृष्ट्वा, जहा तेसिं परवादीणं पूयासक्कारिड्ढि-विसेसादी संति ण तहा अम्हं, माणु एस चेव मोक्खमग्गो विसिट्ठतरो भवेज्जा। अतो भण्णति-जस्स पुरिसस्स, ण इति पडिसेहे, मोहो विण्णाण-विवच्चासो, दिट्ठी दरिसणं, स एवं गुणविसिट्ठी अमूढदिट्ठी भण्णति। जस्सेतिपदस्य जगारुद्दिट्ठस्स तगारेण[1] णिद्देसो कीरति तगं ति बेंति ब्रुवंति आचार्याः कथयन्तीत्यर्थः। अमूढदिट्ठी त्ति दारं गयं।

इदाणिं उववूहण त्तिदारं –

उववूहत्ति वा पसंसत्ति वा सद्धा जणणंत्ति वा सलाघणंति वा एगट्ठा ॥२६॥

खमणे वेयावच्चे, विणयसज्झायमादिसंजुत्तं ।
जो तं पसंसए एस, होति उववूहणा विणओ ॥२७॥ दारं

"खमणित्ति" चउत्थं छट्ठं अट्ठमं दसमं दुवालसमं अद्धमासखमणं मास-दुमास-तिमास-चउमास-पंचमास-छम्मासा। सव्वं पि इत्तरं, आवकहियं वा। "वेयावच्चेति" आयरिय-वेयावच्चे, उवज्झाय-वेयावच्चे तवस्सि-वेयावच्चे, गिलाण-वेयावच्चे, कुल-गण-वेयावच्चे, संघ-बालाइअ सहुमेह-वेयावच्चे दसमए। एसिं पुरिसाणं इमेणं वेयावच्चं करेति, असणादिणा वत्थाइणा पीढ-फलग-सेज्जा-संथारग-ओसह-भेसज्जेण य विस्सामणेण य। विणओ त्ति नाण-विणओ, दंसण-विणओ, चरित्त-विणओ, मण-विणओ, वइ-विणओ, काय-विणओ उवचारिय-विणओ य, एस विणओ सवित्थरो भाणियव्वो जहा दसवेयालिए। सज्झाएत्ति वायणा १ पुच्छणा २ परियट्टणा ३ अणुप्पेहा ४ धम्मकहा ५ य पंचविहो सज्झाओ। आदि सद्दाओ जे अण्णे तवभेया ओमोयरियाइ ते घिप्पंति, तहा खमादओ य गुणा। जुत्तं त्ति एतेहिं जहाभिहिएहिं गुणेहिं उववेओ जुत्तो भण्णति। जो इति अणिदिट्ठसरूवो साहू घेप्पइ। तं सद्देण खमणादिगुणोववेयस्स गहणं। पसंसते श्लाघ-यतीत्यर्थः। एस त्ति पसंसाए णिद्देसो। होइ भवति, किं ? उववूहणा विणओ, णिद्देसवयणं, विनयणं विणओ-कम्मावणयणद्वारमित्यर्थः। उववूहण त्ति दारं गयं ॥२७॥

इदाणिं थिरीकरण त्ति दारं –

एतेसु चिअ खमणादिएसु सीदंतचोयणा जा तु ।
बहुदोसे माणुस्से, मा सीद थिरीकरणमेयं ॥२८॥

सीतंतो णाम जो थिरसंघयणो धितिसंपण्णो हट्ठो य ण उज्जमति खमणादिएसु एसा सीयणा। चोयणा प्रेरणा नियोजनेत्यर्थः। तं पुण चोयणं करेति अवायं दंसेउं। जओ भण्णति–बहुदोसे माणुस्से। दोसा अवाया ते य –"दंडक ससत्थ –" गाहा। अहवा जर-सास-कास-खयकुट्ठादओ ॥११॥ संपओगविप्प-ओगदोसेहि य जुत्तं। मा इति पडिसेहे। एवं वयण-किरियासहायत्तेण जं संजमे थिरं करेतित्ति थिरीकरणं सेसं कंठं। थिरीकरणे त्ति दारं गयं ॥२८॥

इदाणिं वच्छल्ले त्ति दारं –

साहम्मि य वच्छल्लं, आहारातीहिं होइ सव्वत्थ ।
आएसगुरुगिलाणे, तवस्सिबालादि सविसेसं ॥२९॥

---

१ तयंति पदेन।

समाणधम्मो साहम्मिश्रो तुल्लधम्मो। सो य साहू साहुणी वा। च सद्दातो खेत्तकालमासज्ज सावगो वि घेप्पति। वच्छल्लभावो वच्छल्लं आदरेत्यर्थः। कहं केण वा, कस्स वा, कायव्वं। साहूण साहुणा सव्वथामेण एयं कायव्वं। आहारादिणा दव्वेण आहारो आदि जेसिं ताणिमाणि आहारादीणि, आदि सद्दातोवत्थ-पत्त-मेसज्जोसह-पाद-सोयाब्भंगण-विस्सामणादिसु य। एवं ताव सव्वेसिं साहम्मियाणं वच्छल्लं कायव्वं। इमेसिं तु विसेसम्रो-आएसो-पाहुणम्रो, गुरु-सूरी, गिलाणो-ज्वरादि-गहितो तम्रो विमुक्को वा, तवस्सी विकिट्ठ-तवकारी, बालो, आदिसद्दातो बुड्ढो सेहो महोदरो य। सेहो अभिणव-पव्वइतो, महोदरो जो बहुं भुंजति। 'सविसेस' त्ति एसिं आएसादिम्राणं जहाभिहिताणं सह विसेसेण सविसेसं सादरं साहिगयरं सातिस-यतरमिति ॥२९॥

जो एवं वच्छल्लं पवयणे ण करेति तस्स पच्छित्तं भण्णति। सामण्णेण साहम्मियवच्छल्लं ण करेति मासलहु।

विसेसम्रो भणति –

आयरिए य गिलाणे, गुरूगा लहुगा य खमगपाहुणए।
गुरुगो य बाल-वुड्ढे, सेहे य महोदरे लहुम्रो ॥३०॥

आयरिय-गिलाणवच्छल्लं ण करेति चउगुरुगा पत्तेयं। खमगस्स पाहुणगस्स य वच्छल्लं ण करेति चउलहुगा पत्तेयं। बालवुड्ढाण पत्तेयं मासगुरुगो। सेह-महोयराणं पत्तेयं मासलहुगो। वच्छल्लेति दारं गतं ॥३०॥

इदाणिं पभावणे त्ति दारं –

गुरुभणियवयणानंतरमेव चोदग आह-णणु जिणाण पवयणं सभावसिद्धं ण इयाणिं सोहिअव्वं।

गुरू भणइ –

कामं सभावसिद्धं, तु पवयणं दिप्पते सयं चेव।
तहवि य जो जेणहिम्रो, सो तेण पभावते तं तु ॥३१॥

काम सद्दोऽभिधारियत्थे अणुमयत्थे वा, इह तु अणुमयत्थे दट्ठव्वो। सो भावो सभावो सहजभावः आदित्ये तेजोवन्त परकृत इत्यर्थः। तेन स्वभावेन सिद्धं प्रख्यातं प्रथितमित्यर्थ.। तु पूरणे। प्र इत्ययमुपसर्ग. वुच्चति जं तं वयणं, पावयणं पवयणं, पहाणं वा वयणं पवयणं, पगतं वा वयणं, पसत्थं वा वयणं पवयणं। दिप्पते भासते सोभतेत्ति भणियं भवति। सयमिति अप्पाणेण। च सद्दो अत्थाणुकरिसणे। एव सद्दो अवहारणे। तह वि य त्ति जइ वि य सद्देणावधारियं पवयणं सय पसिद्धं तहवि य पभावणा भण्णति। च सद्दो जहा संभवं योज्जो। जोगारेण अणिदिट्ठो पुरिसो। जेणत्ति अणिदिट्ठेण अतिसतेण। अधिको प्रबलो। जोगारुदिट्ठस्स सोगारो णिद्देसे। तेगारो वि जेगारस्स णिद्देसे।, प्रख्यापयति तदिति प्रवचनं ॥३१॥ अमूढदिट्ठि उववूह-थिरीकरण-वच्छल्ल-पभावणाणं सरूवा-भणिता।

इदाणिं दिट्ठंता भण्णंति –

सुलसा अमूढदिट्ठि, सेणिय उववूह थिरीकरणसाढो।
वच्छल्लंमि य वइरो, पभावगा अट्ठ पुण होंति ॥३२॥

सुलसा साविगा अमूढदिट्ठित्ते उदाहरणं भण्णति। भगवं चंपाए णयरीए समोसरिओ। भगवया य भवियं थिरीकरणत्थं अम्मडो परिव्वायगो रायगिहं गच्छंतो भणिओ–सुलसं मम वयणा पुच्छेज्जसि। सो चिंतेति पुण्णमंतिया सा, जं अरहा पुच्छति। तेण परिक्खणा-णिमित्तं भत्तं मग्गिता। अलभमाणेण बहूणि रूवाणि काऊण मग्गिता। ण दिण्णं, भणति य-परं, अणुकंपाए देमि ण ते पत्तबुद्धीए। तेण भणियं जति पत्तबुद्धीए देहि। सा भणति ण देमि। पुणो पउमासणं विउव्वियं। सा भणति जइवि सि सक्खा बंभणो तहावि ते ण देमि पत्तबुद्धीए। तओ तेण उवसंधारियं। सब्भावं च से कहियं। ण दिट्ठीमोहो सुलसाए जाओ। एवं अमूढदिट्ठिणा होयव्वं।

सेणिओ उववूहणाए दिज्जति। रायगिहे सेणिओ राया। तस्स देविंदो समत्तं पसंसति। एके देवो असद्दहंतो णगरबाहिं सेणियस्स पुरतो चेल्लगरूवेण अणिमिसे गेण्हति। तं निवारेति। पुणो वाडहिय-संजतिवेसेण पुरओ ठिओ। तं अप्पसारियं णेउं उवचरए पेसिऊण घरिता तत्थेव निक्खिविता। सयं सव्वपरिकम्माणि करेति। मा उड्डाहो भविस्सति। सो य गोमडय सरिसं गंधं विउव्वेति। तहावि ण विपरिणमति। देवो तुट्ठो। दिव्व देविड्ढि दाएत्ता उववूहति। एवं उववूहियव्वा साहम्मिया।

थिरीकरणे आसाढो उदाहरणं –

उज्जेणीए आसाढो आयरिओ। काल करेंते साहू समाहीए णिज्जवेति। अप्पाहेति य, जहा-ममं दरिसावं देज्जह। ते य ण देंति। सो उव्वेतं गतो पव्वज्जाते। ओहाविओ य सलिंगेण। सिस्सेण य से ओही पउत्ता। दिट्ठो ओहावंतो। आगतो। अंतरा य गामविउव्वणं, णट्टियाकरणं, पेच्छणयं, सरयकालउवसंधारो, पधावणं। अंतरा य अण्णगाममब्भासतलाग-छ-दारगविउव्वणं, जलमज्झे खेलणं। आयरिओ पासित्ता ठितो। तेहिं समाणं वाणमंतरवसहिमुवगतो। पच्छा छकाइयाते एगमेगस्स आभरणाणि हरिउमारद्धो। पच्छा ते से दिट्ठंता कहयति। परिवाडीए पढमो भणति।

गाहाओ – जत्तो भिक्खं बलिं देमि, जत्तो पोसेमि णायगे।
सा मे मही अक्कमति, जायं सरणतो भयं॥१२॥

सो भणति अतिपंडिओ सि, मुंच आभरणाणि। बितिओ वि आरद्धो, सो भणति सुणेहि अक्खाणयं।

जेण रोहंति बीयाइं, जेण जीवंति कासगा।
तस्स मज्झे मरीहामि, जायं सरणतो भयं॥१३॥

ततिओ भणति –

जमहं दिया य राओ य, हुणामि महु-सप्पिसा।
तेण मे उडओ दड्ढो, जायं सरणतो भयं॥१४॥

अहवा –

वग्गस्स मए भीतेण, गावओ सरणं कतो।
तेण अंगं महं दड्ढं, जायं सरणओ भयं॥१५॥

चउत्थो भणति।

लंवण-पवण-समत्थो, पुव्वं होऊण किण्ण चाएसि।
दंडलइयग्गहत्थो, वयंस ! किं णामओ वाही॥१६॥

अहवा –

जेट्ठामूलंमि मासंमि, मारुओ सुहसीयलो ।
तेण मे भज्जते अंगं, जायं सरणतो भयं ॥१७॥

पंचमो भणइ ।

जाव वुत्थं सुहं वुत्थं, पायवे निरुवद्दवे ।
मूलाओ उट्ठिया वल्ली, जायं सरणओ भयं ॥१८॥

छट्ठो भणति ।

जत्थ राया सयं चोरो, भंडिओ य पुरोहिओ ।
दिसं भय णायरया, जायं सरणओ भयं ॥१९॥

अहवा –

अब्भंतरगा खुभिया, पेल्लंति बाहिरा जणा ।
दिसं भयह मायंगा, जायं सरणतो भयं ॥२०॥

अहवा –

अचिरुग्गए य सूरिये, चेइयथूभगए य वायसे ।
भित्तीगयए य आयवे, सहि सुहित्ते जणे ण बुज्झति ॥२१॥

सयमेव उ अंमए लवे, मा हु विमाणय जक्खमागयं ।
जक्खाहडए य तायए, अण्णंदाणि विमग्ग तातयं ॥२२॥

'णवमासाकुच्छिधालिए, सयं मुत्तपुलीसगोलिए ।
धूलियाए मे हडे भत्ता, जायं सरणतो भयं ॥२३॥

एवं सव्वाभरणाणि घेत्तूण पयाओ । अंतरा य संजती विउव्वणं । तं दट्ठूण भणति,

कडत्ते य ते कुंडलए य ते, अंजि अक्खि तिलए य ते कए ।
पवयणस्स उड्डाहकारि ते, दुट्ठा सेहि कत्तो सि आगता ॥२४॥

सा य पडिभणति ।

समणो य सि संजतो य सि, बंभयारी समलेट्ठुकंचणो ।
वेहारू य वायओ य, ते जेट्ठज्ज किं ते पडिगाहते ॥२५॥

पुणरवि पयाओ । रागरूवखंधावारविउव्वणं । पडिवुद्धो य । जहा तेण देवेण तस्स आसाढभूतिस्स थिरीकरणं कतं एवं जहासत्तिओ थिरीकरणं कायव्वं ।

वच्छल्ले वइरो दिट्ठंतो ।

भगवं वइरसामी उत्तरावहं गओ । तत्थ य दुब्भिक्खं जायं । पंथा वोच्छिण्णा । ताहे संघो उवागओ । णित्थारेहि त्ति । ताहे पडविज्जा आवाहिता । संघो चडियो । उप्पतितो । सेज्जायगे य चारीए गतो । पासति । चिंतेइ य कोइ विणासो भविस्सति जेण संघो जाति ।[1] इलएण छिहलिं छिंदित्ता भणति । भगवं साहम्मिओ त्ति । ताहे भगवया वि लइतो, इमं सुत्तं सरंतेण –

१ छुरिकया ।

"साहम्मिय वच्छल्लंमि, उज्जता य सज्झाते ।
चरण-करणंमि य तहा, तित्थस्स पभावणाए य ॥"

जहा वइरेण कयं एवं साहंमियवच्छल्लं कायव्वं ।

अहवा – णंदिसेणो, वच्छल्ले उदाहरणं । पभावगा अट्ठिमे, पवयणस्स होंति ॥३२॥

अइसेस इड्ढि-धम्मकहि-वादि-आयरिय-खमग-णेमित्ती ।
विज्जा-राया-गण-संमता य तित्थं पभावेंति ॥३३॥

अतिसेसि त्ति अतिसयसंपण्णो । सो य अतिसओ मणोहि अइसयअज्झयणा य । इड्ढितिइड्ढिदिक्खता रायामच्चपुरोहितादि । धम्मकहि त्ति जे अक्खेवणि विक्खेवणि णिव्वेयणि संवेदणीए धम्मातिक्खंति । वादी वायलद्धि-संपण्णो अजेओ । आयरिओ स्वपरसिद्धंतपरूवगो । खमगो-मासियादि । नेमित्ती अट्ठंग-णिमित्त-संपण्णो । विज्जासिद्धो जहा अज्जखउडो । रायसंमतो रायवल्लभइत्यर्थः । गणपुरचाउवेज्जादि तेसिं सम्मतो । एते अट्ठ वि पुरिसा तित्थं पगासंति । परपक्खे ओभावेंति । भणिया दिट्ठंता ॥३३॥

इयाणिं पच्छित्ता भण्णंति –

दिट्ठीमोहे अपसंसणे य, थिरीयकरणे य लहुआओ ।
वच्छल्लपभावणाण य, अकरणे सट्ठाणपच्छित्तं ॥३४॥

दिट्ठीमोहं करेति ङ्क । उववूहं न करेइ ङ्क । अणुववूहाते केति आयरिया मासलहु भणंति । सम्मत्तादीसु थिरीकरणं ण करेति ङ्क । केति भएण वा मासलहु । वच्छल्ले सामण्णेण विसेसेण, य भणियं तं चेव सट्ठाणं । जं इमाए गाहाए भणियं आयरिए य गिलाणे गुरुगा गाहा ॥३०॥

पभावणं अकरेंतस्स सामण्णेण चउगुरुगा । विसेसेण सट्ठाणपच्छित्तं । तं च इमं । अतिसेसितिड्ढि-धम्मकहि-वादि-विज्ज-रायसम्मतो गणसंमतो अतीतणिमित्तेण य एते ससत्तीए पवयणपभावणं ण करेंति चउलहुगा । पडुपण्णणागतेण य पभावणं ण करेंति चउगुरुगा । एतं सट्ठाणपच्छित्तं । अहवा अतिसेसमादिणो पुरिसा इमेसिं पंचण्ह पुरिसाण अंतरगता, तं जहा – आयरिय-उवज्झाय-भिक्खु-थेर-खुड्डया । एएसु सट्ठाण-पच्छित्ता भण्णंति । आयरिओ पभावणं ण करेति चउगुरुगा । उवज्झाए 'ण' करेति ङ्क भिक्खू ण करेति मासगुरू । थेरो ण करेति मासलहु । खुड्डो ण करेति भिण्णमासो । भणिओ दंसणायारो ॥३४॥

इयाणिं चरित्तायारो भण्णति –

पणिधाणजोगजुत्तो, पंचहिं समितीहिं तिहिं य गुत्तीहिं ।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होति णायव्वो ॥३५॥

पणिहाणं ति वा अज्झवसाणं ति वा चित्तं ति वा एगट्ठा । जोगा मण-वइ-काया । पणिहाणजोगेहिं पसत्थेहिं जुत्तो पणिहाणजोगजुत्तो । तस्स य पणिहाणजोगजुत्तस्स पंचसमितीओ तिण्णि गुत्तीओ भवंति । ता य समितिगुत्तीओ-इमा-इरिया-समिई, भासा-समिई, एसणा-समिई, आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणा-समिई, परिट्ठावणिया-समिई, मणगुत्ती, वयगुत्ती, कायगुत्ती । जीवसंरक्खणजुगमेत्तंतरदिट्ठिस्स अप्पमादिणो संजमोवकरणुप्पायणणिमित्तं जा गमणकिरिया सा इरियासमिती । कक्कस-णिट्ठुर-कडुय-फरुस-असंबद्ध वहुप्पलावदोसवज्जिता हियमणवज्ज-मितासंदेह-अणभिद्रोहधम्मा भासासमिती । सुत्तानुसारेण रयहरण-वत्थ-पादासण-पाण-णिलय-ओसहण्णेसणं एसणासमिती । जं वत्थ-पाय-संथारग-फलग-पीढग-कारणट्ठं गहणणिक्खेव-

करणं पडिलेहिय पमज्जिय सा आदाणणिक्खेवणा समिती । जं मुत्त-मल-सिलेस-गुरिस-सुक्काण ज वा विवेगारिहाणं संसत्ताण भत्तपाणादीण जतुविरहिए थंडिले विहिणा विवेगकरणं सा परिच्चागसमिती ॥५॥ कलुस-किलिट्ठमप्पसंतसावज्जमण-किरियसकप्पणगोवण मणगुत्ती । चावल्ल-फरुस-पिसुण-सावज्जप्पवत्तण णिग्गहकरणं मोणेण गोवणं वइगुत्ती । गमणागमणपचलणादाणण्गेसणप्फंदणादिकिरियाण गोवणं कायगुत्ती ॥३॥ समित्ति-गुत्तीणं विसेसो भण्णति ।

समितो नियमा गुत्तो, गुत्तो समियत्तणंमि भतियव्वो ।
कुसलवइमुदीरतो, जं वइगुत्तो वि समिओ वि ॥१॥
तणुगतिकिरियसमिती, तणुकिरियागोवणं तु तणुगुत्ती ।
वागोवण वागुत्ती वा, समिति पयारो तस्सेव ॥२॥
संकप्पकिरियगोवण, मणगुत्ती भवति समिति-सुपयारो ।
भणिता अट्ठ वि माता, पवयणवणफलणतत्तातो ॥३॥" ॥२७॥२८॥२९॥

गाहापच्छद्धं कंठं ॥३५॥

समितीण य गुत्तीण य, एसो भेदो तु होइ णायव्वो ।
समिती पयाररूवा, गुत्ती पुण उभयरूवातु ॥३६॥
समितो नियमा गुत्तो, गुत्तो समियतणंमि भइयव्वो ।
कुसल वइ उदीरेंतो, जं वतिगुत्तो वि समिओ वि ॥३७॥
समिती पयाररूवा, गुत्ती पुण होति उभयरूवा तु ।
कुसल वति उदीरेंतो, तेणं गुत्तो वि समिओ वि ॥३८॥
गुत्तो पुण जो साधू, अप्पवियाराए णाम गुत्तीए ।
सो ण समिओति, वुच्चति तीसे तु वियाररूवत्ता ॥३९॥

अधिकृतार्थविष्टंभनगाथा ।

इदाणिं चरित्तणायारे पच्छित्तं भण्णति –

समितीसु य गुत्तीसु य, असमिते अगुत्ते सव्वहिं लहुगो ।
आणादिविराधणे तास, उदाहरणा जहा हेट्ठा ॥४०॥

समितीसु असमियस्स गुत्तीसु य अगुत्तस्स मासलहु-सव्वहिं-सव्वसमितीसु सव्वगुत्तीसु य असमित-गुत्तस्स आणाभंगदोसो अणवत्थमिच्छत्त-आयसजमविराहणादोसा य भवति । एया य समिती गुत्ती, तो सतोदाहरणा वत्तव्वा । इह ण भण्णति, अतिदेसो कीरति, जहा हेट्ठा आवसगे, तहा दट्ठव्वा । अट्ठविहो चरित्तायारो गतो ॥४०॥

इयाणिं तवायारो भण्णति –

दुविध तवपरूवणया, सट्ठाणारोवणा तमकरेंते ।
सव्वत्थ होति लहुगो, लीणविणज्झायमोत्तूणं ॥४१॥

दुविह तवेत्ति, बाहिरो अब्भिंतरो य। बाहिरो छव्विहो-अणसणं, १ ओमोयरिया, २ भिक्खा-परिसंखाणं, ३ रसपरिच्चाओ, ४ कायकिलेसो, ५ पडिसंलिणता य। ६ अब्भिंतरो छव्विहो—पायच्छित्तं, १ विणओ, २ वेयावच्चं ३ सज्झाओ, ४ विउसग्गो, ५ ज्झाणं ६ चेति। दुविहा तवस्स य परूवणा कायव्वा। परूवणा णाम पण्णवणा। सा य जहा दुमपुप्फियपढमसुत्ते तहा दट्ठव्वा। इह तु पच्छित्तेणहिकारो। तं भणति सगं ठाणं सट्ठाणस्स आरोवणा सट्ठाणारोवणा। तमिति तवो संबज्झति। अकारो पडिसेहे, करेंते – आचरेंते इत्यर्थः। अकारेण य पडिसिद्धे अणाचारणं। अणाचरेंतस्स य सट्ठाणं तं च इमं। सव्वत्थ होइ लहुगो। सव्वत्थेत्ति सव्वेसु पदेसु अणसणादिसु सति पुरिसकारपरक्कमे विज्झमाणे तवमकरेंतस्स मासलहु। अइपसत्तं लक्खणमिति काउं उद्धारं करेइ। संलीणविणयसज्झायपया तिण्णि मोत्तूणं। पडिसंलीणया दुविहा-दव्वपडिसंलीणया, भावपडिसंलीणया य। इत्थि-पसू-पंडग-पुमसंसत्ता होंति दव्वंमि। भावपडिसंलीणता दुविहा-इंदियपडिसंलीणया, णोइंदियपडिसंलीणया य। इंदियपडिसंलीणया पंचविहा सोइंदियपडिसंलीणयादि। णोइंदियपडिसंलीणया चउव्विहा-कोहादि। एतेसु पडिसंलीणेण भवियव्वं। जो ण भवति तस्स पच्छित्तं भण्णति। इत्थिसंसत्ताए चउगुरु। तिरिगित्थिपुरिसेसु चरित्तायविराहणाणिप्फण्णं चउगुरुगं, पुरिसेसु चउलहुगं। घाणेंदिय-रागेण गुरुगो, दोसेण लहुगो। कोहे माणे य ङ्क। मायाए मासगुरुगो। लोहे ङ्क। पडिसंलीणया गता।

विणओ भण्णति। आयरियस्स विणयं ण करेति चउगुरुगं। उवज्झायस्स ङ्क। भिक्खुस्स मासगुरुं। खुड्डगस्स मासलहुं। विणओ गओ। सज्झाओ भण्णति – सुत्तपोरिसिं ण करेति मासलहु। अत्थपोरिसिं ण करेति मासगुरुं ॥४१॥

सीसो पुच्छति –

तवस्स कहं आयारो, कहं वा अणायारो भवति?

आयरिओ भणति –

बारसविहंमि वि तवे, सब्भिंतर बाहिरे कुसलदिट्ठे।
अगिलाए अणाजीवी, णायव्वो सो तवायारो ॥४२॥

कुसलो दव्वे य भावे य। दव्वे दव्वलाभा भावेऽकम्मलाभा। भावकुसलेहिं दिट्ठतवे। अगिलाएत्ति अगिलायमाणो गिलायमाणं मनोवाक्काएहिं अज्झुरमाणेत्यर्थः। अणाजीवित्ति ण आजीवी अणाजीवी अणासंसीत्यर्थः। आसंसणं इहपरलोएसु। इहलोगे वरं मे सिलाघा भविस्सति। लोगो य आउट्टो वत्थ-पत्त-असणादिभेसज्जं दाहित्ति। परलोगे इंदसामाणिगादि रायादि वा भविस्सामि। सेसं कंठं। गतो तवायारो ॥४२॥

इदाणिं वीरियायारो –

अणिगूहियबलविरिओ, परक्कमती जो जहुत्तमाउत्तो।
जुंजइ य जहत्थामं, णायव्वो वीरियायारो ॥४३॥

वीरियं ति वा बलं ति वा सामत्थं ति वा परक्कमोत्ति वा थामोत्ति वा एगट्ठा। सति बलपरक्कमे अकरणं गूहणं, ण गूहणं अगूहणं बलं सारीरं संघयणोवचया। वीरियं णाम शक्तिः। सा हि वीर्यान्तिरायक्षयो-

पशमाद् भवति । अहवा वल एव वीरियं बलवीरियं । परक्कमते आचरतेत्यर्थः । जो इति साहू । यथा उक्तं यथोक्तं । अन्वत्थं जुत्तो आउत्तो व अप्रमत्त इत्यर्थः । जुंजइ य युजिर् योगे जोजयति च सद्दो समुच्चये । कहं जोजयति अहत्थामं णाम जहत्थामं । पाययलक्खणेण ज-गारस्स वंजणे लुत्ते सरे ठिते अहत्थामं भवति । एवं करेंतस्स णायव्वो वीरियायारो ॥४३॥

वीरियायारपमाणपसिद्धत्थं पच्छित्तपरूवणत्थं च भण्णइ –

णाणे दंसण-चरणे, तवे य छत्तीसती य भेदेसु ।
विरियं ण तु हावेज्जा, सट्ठाणारोवणा वेंते ॥४४॥

अट्ठविहो णाणायारो, दंसणायारो वि अट्ठविहो, चरित्तायारो वि अट्ठविहो, तवायारो बारसविहो, एते समुदिता छत्तीसं भवति । एतेसु छत्तीसईएभेदेसु वीरियं न हावेयव्वं । हावेंतस्स य सट्ठाणारोवणा भवति । सट्ठाणारोवणा णाम णाणायारं हावेंतस्स जं णाणायारे पच्छित्तं तं चेव भवति । एवं सेसेसु वि पच्छित्तं सट्ठाणं । एसा चेव सट्ठाणारोवणा । गतो वीरियायारो ।

सीसो पुच्छति –

एतेसिं णाण-दंसण-चरित्त-तव-वीरियायाराणं कयमेण अहिगारो ? ।

आयरिओ भणति –

णाणायारे पगतं, इयरे उच्चारियत्थसरिसा तु ।
अथवा तेहिं वि पगतं, तदट्ठ जम्हिस्सते णाणं ॥४५॥

पगतं णाम अहिगारो प्रयोजनमित्यर्थः । इयरेत्ति दंसणाइआयारो । उच्चारितो अत्थो जेसिं ते उच्चारियत्था परूवियत्थत्ति भणियं भवति । उच्चारियत्थेण सरिसा प्ररूपणा मात्रमेव । तु सद्दो अवधारणे । णाणायारावधारणातिपसत्तलक्खणासंकितो सूरी भणति । अहवा तेहिं वि पगतं । अहवा सद्दो अनंतरे विकप्पवायी वा दट्ठव्वो । तेहिं वित्ति दंसणाइ आयारेसु पगतं अहिगारो प्रयोजनमित्यर्थः ।

सीसो पुच्छति –

भगवं णाणायारावहारणं काउ कहमियाणिं एएहि वि पयोयणमिच्छसि ? ।

सूरी भणति ।

तदट्ठ जम्हिस्सते णाणं । तदिति दंसणाइ आयारा तेसिं अट्ठो तदट्ठो तयट्ठाय यस्मात् कारणात् इच्छिज्जति णाणं ॥४५॥

सीसो पुच्छति –

तदट्ठोवलद्धिणिमित्तं कहं णाणं ? ।

आयरिओ भणति –

णाणेसुपरिच्छियत्थे, चरण-तव-वीरियं च तत्थेव ।
पंचविहं जतो विरियं, तम्हा सव्वेसु अधियारो ॥४६॥

णज्जति अणेणेति णाण । सुट्ठु परिच्छिया सुपरिच्छिया, के ते ? अत्था, ते य जीवाजीव-बंध-पुण्ण-पावासव-संवर-णिज्जरा-मोक्खो य । एते जया णाणेण सुट्ठु परिच्छिन्ना भवंति तदा चरणतवा पवत्तति । अण्णाणोवचियस्स कम्मचयस्स रित्तीकरणं चारित्तं । तप संतापे, तप्पते अणेण पावं कम्ममिति तपो ।

उक्तं च –

रस-रुधिर-मांस-मेदोऽस्थि-मज्ज-शुक्राण्यनेन तप्यंते ।
कर्माणि चाशुभानीत्यतस्तपो नाम नैरुक्तम् ॥३०॥

वीरियं पि तदंतगंतमेव भवति । च सद्दाओ दरिसणायारो य । जं चरणतवायारादिविरहितं णाणं तं निच्छयणयंगीकरणेण अण्णाणमेव ।

जओ भणियं –

तं णेच्छइय-णयमए, अण्णाणी चेव सुमुणंतो वि ।
णाणफलाभावाओ, कुम्मोव णिबुड्डति भवोघे ॥३१॥
संतं पि तमण्णाणं, णाणफलाभावाओ सुबहुयंपि ।
सक्किरियापरिहीणं, अंधस्स पदीवकोडीव्व ॥३२॥

जम्हा एवं तम्हा सिद्धं वयणं । "तदट्ठ जंमिस्सते णाणं" जतोयं सिद्धं तम्हा पंचसु वि अहिगारो । अहवा पंचविहं जतो वीरियं, तम्हा पंचसु वि अहिकारो । पंच इति संखा । विधा भेदो । जतो यतो यस्मात् कारणात् कथ्यते । किं ? वीरियं, वीर्यं पराक्रमः । तस्मात्कारणात् सव्वेसु णाणाआयारादीसु अहिगारो अधिकारः प्रयोजनं ॥४६॥

विणेओ पुच्छति –

पंचविधं वीरियं कतमं किं सरूवं वा ?

गुरू भणति एवं –

भववीरियं १ गुणवीरियं २, चरित्तवीरियं ३ समाधिवीरियं च ४ ।
आयवीरियं पि य तहा, पंचविधं वीरियं अहवा ॥४७॥

एवं पंचविहं वीरियसरूवं भण्णति । भववीरियं णिरयभवादिसु । तत्थ णिरयभववीरियं इमं जंतासिकुंभिचक्ककंदुपयणभट्ठसोल्लणसिंबलिसूलादीसु भिज्जमाणाणं महंत वेदणोदये वि जं ण विलिज्जंति । एवं तेसिं भववीरियं । तिरियाण य वसभातीण महाभारुव्वहणसामत्थं, अस्साण धावणं, तहा सीय-उण्ह-खुह-पिवासादि-विसहणत्तं च । मणुयाण सव्वचरणपडिवत्तिसामत्थं । देवाण वि पंचविहपज्जत्तुप्पत्तणंतरमेव जहाभिलसियरूवविउव्वणसामत्थं, वज्जणिवाते वेयणोदीरणे वि अविलयत्तं । एवं भववीरियं ।

गुणवीरियं जं ओसहीण तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुरगुणत्ताए रोगावणयण सामत्थं । एतं गुणवीरियं ।

चरित्तवीरियं णाम असेसकम्मविदारणसामत्थं, खीरादिलद्धुप्पादणसामत्थं च ।

समाहिवीरियं णाम मणादीणं एरिसं मणादिसमाहाणमुप्पज्जति जेण केवलमुप्पाडेति सव्वट्ठसिद्धिदेवत्तं वा णिव्वत्तेति, अप्पसत्थमणादिसमाहाणेणं पुण अहे सत्तम-णिरयाउयं णिव्वत्तेति ।

आयवीरियं दुविहं विओगायवीरियं च अविओगायवीरियं च । विओगायवीरियं जहा संसारा-वत्थस्स जीवस्स मणमादिजोगा वियोगजा भवंति । अविओगायवीरियं पुण उवओगो, असंखेज्जायपएसत्तणं च । एवं पंचविहं वीरियं ॥४७॥

अहवा वीरियं इमं पंचविहं –

बालं पंडित उभयं, करणं लद्धिवीरियं च पंचमगं ।
ण हु वीरियपरिहीणो, पवत्तते णाणमादीसु ॥४८॥

बालं असजयस्स असंजमवीरियं। पंडितं संजतस्स संजमवीरियं। बालं-पंडियवीरियं सावगस्स संजमासंजमवीरियं। करणवीरियं क्रियावीर्यं घटकरणक्रियावीर्यं पटकरणक्रियावीरियं। एवं जत्थ जत्थ उट्ठाणकम्मबलसत्ती भवति तत्थ तत्थ करणवीरियं अहवा-करणवीरियं मणोवाक्कायकरणवीरियं। जो ससारीजीवो अप्पज्जत्तगो ठाणादिसत्तिसंजुत्तो तस्स तं लद्धिवीरियं भण्णति। तं च जहा भयवं तिसलाए एगदेसेण कुक्खिं चालियाइतो। च सद्दो समुच्चये। एव पंचविहवीरियवक्खाणेण सव्वाणुवादिवीरियं खावियं भवति। तम्हा एवं भण्णति "णहु वीरियपरिहीणो पवत्तते णाणमादीसु"। जओ य एवं ततो सव्वेसुऽहीकारो। सेसं कंठं। आयारेत्ति मूलदार गतं ॥४८॥

इति श्री निशीथभाष्ये पीठिकायां आचारनाम प्रथमं द्वारं समाप्तम् ॥१॥

इदाणिं अग्गे त्ति दारं दसभेदं भण्णति –

दव्वोग्गहणग आएस, काल-कम-गणण-संचए भावे।
अग्गं भावो तु पहाण-बहुय-उपचारतो तिविधं ॥४९॥

णाम-ठवणाओ गताओ। दव्वग्गं दुविहं आगमओ णोआगमओ य। आगमओ जाणए अणुवउत्ते, णोआगमओ जाणगसरीरं भव्वसरीरं जाणगभव्वसरीरवइरित्तं तिविह। तं च इमं –

तिविहं पुण दव्वग्गं, सचित्तं मीसगं च अच्चित्तं।
रुक्खग्गदेसअवचितउवचित तस्सेव कुंतग्गे ॥५०॥

तिविहं ति तिभेयं। पुण सद्दो दव्वगावधारणत्थं। सचित्तं मीसग च अचित्तं। पच्छद्धेण जहासंख उदाहरणा। सचित्ते वृक्षाग्रं। मीसे देसोवचिय णाम देसो सचित्तो अवचियं णाम देसो अचित्तो, जहा सीयग्गी ईसिदड्ढभित्तरुक्खग्गं वा। अचित्तं कुंताग्रं। दव्वग्गं गतं ॥५२॥

इदाणिं ओगाहणग्गं –

ओगाहणग्ग सासतणगाण, उस्सतचउत्थभागो उ।
मंदरविवज्जिताणं, जं वोगाढं तु जावतीतियं ॥५१॥

अवगाहणमवगाह अधस्तात्प्रवेश इत्यर्थः। तस्सग्गं अवगाहणग्गं। शश्वद्भवंतीति शाश्वताः। णगा पव्वता। ते य जे जंबुद्दीवे वेयड्ढाइणो ते घेप्पंति, ण सेसदीवेसु। तेसिं उस्सयचउत्थभागो अवगाहो भवति। जहा वेयड्ढस्स पणवीसजोयणाणुस्सओ तेसिं चउत्थभागेण छजोयणाणि सपादा तस्स चेवावगाहो भवति। सो अवगाहो वेयड्ढस्स भवति। एवं सेसाण वि णेयं मंदरो मेरु तं वज्जेऊण। एवं चउभागावगाह-लक्खणं भणितं। तस्स उ सहस्समेवावगाहो। जं वा अणिद्दिट्ठस्स वत्थुणो जावतियं ओगाढं। तस्स अग्ग ओगाहणग्गं दट्ठव्वं। गयं ओगाहणग्गं ॥५१॥

अंजणग-दहिमुखाणं, कुंडल-रुयगं च मंदराणं च।
ओगाहो उ सहस्सं, सेसा पादं समोगाढा ॥५२॥

(अस्याश्चूर्णिर्नास्ति)।

इदाणि आएसग्गं –

आदेसग्गं पंचंगुलादि, जं पच्छिमं तु आदिसति ।
पुरिसाण व जो अंते, भोयण-कम्मादिकज्जेसु ॥५३॥

आदिस्सते इति आदेशो निर्देश इत्यर्थः । तेण आदेसेण अग्गं आदेसग्गं । तत्थुदाहरणं पंचंगुलादि । पंचण्हं अंगुलीदव्वाण कम्मट्ठिताण जं पच्छिमं आदिस्सति तं आदेसेण अग्रं भवइ । जहा पुव्वं कण्णसं आदिस्सति पच्छा कणिट्ठियं पच्छा मज्झिमं पच्छा पएसिणी पच्छा-अंगुट्ठयं । एवं आइट्ठेसु अंगुट्ठओ अग्रं भवति । एवं आदि सद्दातो अण्णेसु वि णेयं । अहवा उदाहरणं 'पुरिसाण' वत्ति पुरिसाण कमट्ठियाण जो अंते आदिस्सति तं आदेसग्गं भवति । आदेसकारणं इमं । भोयणकाले जहा सत्तट्ठाण बहुआण कमट्ठिताण इमं बहुयं भोजयसुत्ति आदिसति । एवं कम्माइकज्जेसु वि नेयं । गयं आदेसग्गं ॥५३॥

कालग्ग-कमग्गे एगगाहाते भणति –

कालग्गं सव्वद्धा, कमग्ग चतुद्धा तु दव्वमादीयं ।
खंधोगाह ठितीसु य, भावेसु य अंतिमा जे ते ॥५४॥

कलनं कालः तस्स अग्रं कालाग्रं । सव्वद्धा कहं ? समयो, आवलिया, लवो, मुहुत्तो, पहरो, दिवसो, अहोरत्तं, पक्खो, मासो, उऊ, अयणं, संवच्छरो, जुगं, पलिओवमं, सागरोवमं, ओसप्पिणी, उसप्पिणी, पुग्गलपरिअट्टो, तीतद्धमणागतद्धा, सव्वद्धा । एवं सव्वद्धा सव्वेसिं अग्गं भवति बृहत्वात् । कालग्गं गयं ।

इदाणि कमग्गं –

कमो परिवाडी । परिवाडीए अग्गं कमग्गं । तं चउव्विहं । दव्वकमग्गं, आदिसद्दातोखेत्त-कमग्गं, काल-कमग्गं, भाव-कमग्गं चेति पच्छद्धेण जहासंखेण उदाहरणा । खंध इति दव्वग्गं । ओगाह इति खित्तग्गं ठितिसु य त्ति कालग्गं । भावेसु य त्ति भावग्गं । एतेसिं चउण्ह वि अंतिमा जे ते अग्गं भवंति । उदाहरणं-जहा दु-पएसिओ ति-पएसिओ चउ-पंच-छ-सत्त-ट्ठ-णव-दस-पएसिओ एवं-जावऽणंताणंतपएसितो खंधो ततो परं अण्णो बृहत्तरो ण भवति सो खंधो दव्वग्गं । एवं एगपएसोगाढादि-जाव-असंखेयपदेसावगाढो सुहुमखंधो सव्वलोगे ततो परं अण्णो उक्कोसावगाहणतरो न भवति । स एव खेत्तग्गं । एवं एगसमयठितियं दव्वं दुसमयठितियं-जाव-असंखेज्जसमयठितीयं जतो परं अण्णं उक्कोसतरठितीजुत्तं ण भवति तं कालग्गं । 'च' सद्दो जातिभेयग्गमवेक्खते ।

उदाहरणं –

पुढविकाइयस्स अंतोमुहुत्तादारब्भ-जाव-बावीसवरिससहस्सठितीओ काल-जुत्तो भवति । एवं सेसेसु वि णेयं । अचित्तेसु परमाणुसु एगसमयादारब्भ जाव-असंखकालठिती जाता परमाणुठिती तो परं अण्णो परमाणु-उक्कस्सतरठितिओ ण भवति तं परमाणु जातीतो कालग्ग । एवं जीवाजीवेसु उवउज्ज णेयं । एवं च सद्दो अववखेति । भावग्गं एगगुणकालगाति-जाव-अणंतगुणकालगाति भावजुत्तं तं भावग्गं भवति । ततो परं अण्णो उक्कोसतरो ण भवति । एतं भावग्गं । गतं कमग्गं ॥५४॥

इदाणि गणणग्ग –

एगादी जाव-सीसपहेलिया ततो परं गणणा ण पयट्टति तेण गणणाते सीसपहेलिया अग्गं । गतं गणणग्गं ।

गाहा – उक्कोसं गणणग्गं, जा सीसपहेलिया ठिता गणिए ।
जुत्तपरित्ताणंतं, उक्कोसं तं पि नायव्वं ॥५४॥

संचय-भावग्गा दोवि भण्णंति –

तण-संचयमादीणं, जं उवरिं पहाणो खाइगो भावो ।
जीवादिछक्कए पुण, बहुयग्गं पज्जवा होंति ॥५५॥

तणाणि दब्भादीणि । तेसिं चमो पिंडइत्यर्थः । तस्स चयस्स उवरिं जा पूलिया तं तणग्गं भण्णति । आदि सद्दातो कट्ठपलालाती दट्ठव्वा । गयं संचयग्गं ।

इदाणिं भावग्गं मूलदारगाहाए भणियं –

"अग्ग भावो" त्ति । तं एवं वत्तव्वं –"भावो अग्गं", किमुक्तं भवति ? भाव एव अग्गं (गा. ४९ उत्तरार्धं) भावग्गं । बंधानुलोम्यात् "अग्गं भावो उ" । तं भावग्गं दुविहं—आगमओ णोआगमओ य । आगमओ जाणए उवउत्ते । णोआगमओ इम तिविहं-पहाणभावग्गं बहुयभावग्गं उवचारभावग्गं एवं तिविहं । तु सद्दोऽयंज्ञापनार्थं, ज्ञापयति जहा एतेण तिविहभावग्गेण सहितो दसविहग्गणिक्खेवो भवति । तत्थ पहाण-भावग्गं उदइयादीण भावाण समीवाओ पहाणा खातितो भावो । पहाणेति गयं । गा. ५५

इयाणिं बहुयग्ग भण्णति –

जीवो आदि जस्स छक्कगस्स तं जीवाइछक्कगं । तं चिमं जीवा, पोग्गला, समया, दव्वा, पदेसा, पज्जया चेति । एयंमि छक्कगे सव्वथोवा जीवा, जीवेहिंतो पोग्गला अणंतगुणा, पोग्गलेहिंतो समया अनंतगुणा, समएहिंतो दव्वा विसेसाहिता, दव्वेहिंतो पदेसा अणंतगुणा, पदेसेहिंतो पज्जवा अणंतगुणा । भणियं च –

जीवा पोग्गलसमया, दव्वपदेसा य पज्जवा चेव ।
थोवाणंताणंता, विसेसमहिया दुवेणंता ॥५६॥

जहासंखेण तेण भण्णति बहुयग्गं पज्जवा होंति । बहुत्तेण अग्गं बहुयग्गं बहुत्वेनाग्रं पर्याया भवंतीति वाक्यशेषः । पुणसद्दो बहुत्तावधारणत्थे दट्ठव्वो । गतं बहुअग्ग ॥५५॥

इयाणिं उवचारग्गं –

उवचरणं उवचारो । उवचारो नाम ग्रहणं अधिगमेत्यर्थः । स च जीवाजीव-भावेसु संभवति । जीवभावेसु ओदयिकादिसु अजीवभावेसु वर्णादीसु । तत्थ जीवाजीवभावाण पिट्ठिमो जो घेप्पइ सो उवचारग्गं भावग्रं भवति । इह तु जीवसुतभावोवचारग्गं पडुच्च भण्णइ । त च सुत्तभावोवचारग्ग-दुविह-सगलसुत-भावोवचारग्गं देससुतभावोवचारग्गं च । तत्थ सगलसुयभावोवचारग्ग दिट्ठिवातो, दिट्ठिवाते चूला वा । देससुतभावोवचारग्गं पडुच्च भण्णति । तंचिमं चेव पकप्पज्झयणं । कहं ? जओ भण्णति –

पंचण्ह वि अग्गा णं, उवयारेणेदं पंचमं अग्गं ।
जं उवचरित्तु ताइं, तस्सुवयारो ण इहरा तु ॥५७॥

पच इति संखा । अग्गा णं ति आयारग्गा णं । ते य पंच-चूलाओ । अवि सद्दो पंचग्गावहारणत्थे भण्णति । णगारो देसिवयणेण पायपूरणे जहा समणे णं, रुक्खा णं, गच्छा णं ति । उपचरण उपचारः । तेण— उवचारेण करणभूतेण इदमित्याचारप्रकल्पः । पचमं अग्गं ति । पढमं अग्गं उपचारेणं अग्गं ण भवति, एवं वितिय ततिय चउरग्गा वि ण भवंति. पंचमचूलग्गं उवचारेण अग्ग भवति, तेण भण्णति पंचमं अग्गं ।

शिष्याह–कथ ?

आचार्याह – जं उवचरित्तु ताइं । जं यस्मात् कारणात्, उवचरित्तु गृहीत्वा, ताइं ति चउरो अग्गाइं । तस्सेति आचारप्रकल्पस्य उपचारो ग्रहणं । ण इति प्रतिषेधे । इतरहा तु तेष्वगृहीतेषु ॥५७॥

सीसो पुच्छति एत्थ दसविहवक्खाणे कयमेण अग्गेणाहिकारो ?

भण्णति –

उपचारेण तु पगतं उवचरिताधीतगमितमेगट्ठा ।
उवचारमेत्तमेयं, केसिं च ण तं कमो जम्हा ॥५८॥ दारं ॥

उवचारो वक्खातो । पगतं अहिगारः प्रयोजनमित्यर्थः । तु शब्दो अवधारणे पायपूरणे वा । उवयार-सद्दसंपच्चयत्थं एगट्ठिया भण्णंति । उवचारोत्ति वा अहीतं ति वा आगमियं ति वा गृहीतं ति वा एगट्ठं । उवचारमेत्तमेयं ति जमेयं पंचमं अग्गं अग्गत्तेण उवचरिज्जति एतं उपचारमात्रम् । उवचारमेत्तं नाम कल्पनामात्रं । कहं ? जेण पढमचूलाए वि अग्ग सद्दो पवत्तइ, एवं बि-तिय-चउसु वि अग्ग सद्दो पवत्तत्ति, तम्हा सव्वाणि अग्गाणि । सव्वग्गपसगे य एगग्गकप्पणा जा सा उपचारमात्रं भवति ।

केषांचिदाचार्याणामेवमाद्यगुरुप्रणीतार्थानुसारी गुरुराह – "ण तं कमो जम्हा ।" ण इति पडिसेहे । तं ति केयीमयकप्पणा । ण घडतीति वक्कसेसं । क्रमो नाम परिवाडी अनुक्रमेत्यर्थः जम्हा चउसु वि चूलासहीतासु परीक्ष्य पंचमी चूडा दिज्जति तम्हा कमोवचारा पंचमी चूडा अग्गं भवति । उवचारेण अग्गाण वि अग्गं वक्कसेसं दट्ठव्वमिति । गतं मूलग्गदारं ॥५८॥

इति श्री निशीथभाष्ये पीठिकायां द्वितीयमग्रनामद्वारं समाप्तम् ॥२॥

इदाणीं पकप्पे त्ति दारं –

प्रकर्षेण कल्पः प्रकल्पः प्ररूपणेत्यर्थः । प्रकर्षे कल्पो वा प्रकल्पः प्रधान इत्यर्थः । प्रकर्षेण वा कल्पनं प्रकल्पः च्छेदन इत्यर्थः । प्रकर्षाद्वा कल्पनं प्रकल्पः, नवमपूर्वात् तृतीयवस्तुनः आचारप्राभृतात् । एवं प्रशब्दार्थं बाहुल्याद्यथासंभवं योज्यं ।

तस्स णिक्खेवो –

णामं ठवणाकप्पो, दव्वे खेत्ते य काल-भावे य ।
एसो तु पकप्पस्स, णिक्खेवो छव्विहो होति ॥५९॥

णामपकप्पो ठवणापकप्पो दव्वपकप्पो खेत्तपकप्पो कालपकप्पो भावपकप्पो । च सद्दो समुच्चये । पएसो पकप्पस्सणिक्खेवो छव्विहो भणिओ । तु सद्दो अवधारणार्थे । णामठवणाओ गतातो ॥५९॥

दव्व-पकप्पस्सिमेण विहिणा पकप्पणा कायव्वा –

सामित्त-करण-अधिकरण, तो य एगत्त तह पहुत्ते य ।
दव्वपकप्पविभासा, खेत्ते कुलियादि किट्ठं तु ॥६०॥

सामित्तं नाम आत्मलाभः, यथाघटस्य घटत्वेन । कारणं नाम क्रिया येन वा क्रियते, यथा प्रयत्नचक्रादिभिर्घटः । अधिकरणं णाम आधारः, । यथा चक्र-मस्तके घटः । जे ते सामित्तादिविभागास्त्रयः एते एगत्तपुहत्तेहिं णेया । एगत्तं णाम एगं । पुहुत्तं णाम बहुत्तं । एतेहिं छहिं विभागेहिं दव्व-पकप्पस्स विभासा । गुणपर्यायान् द्रवतीति द्रव्यं । दुद्रु गतौ, द्रूयते वा द्रव्यं । द्रु सत्ता तस्या अवयवो वा द्रव्यं । उत्पन्नादिविकारैर्युक्त

वा द्रव्यं । [1]गुणसद्भावो वा द्रव्यं समूहेत्यर्थः । भावयोग्यं वा द्रव्यं । --अतीतपर्यायव्यपदेशाद्वा द्रव्यं । पकप्पणं पकप्पो प्ररूपणेत्यर्थः । विविधमणेगप्पगारा भासा विभासा अर्थव्याख्या इत्यर्थः । दव्वस्स पकप्पो दव्वपकप्पो तस्स विभासा दव्वपकप्पविभासा सामित्ताइ विसेसेण कज्जते । इमो दव्वपकप्पो दुविहो जीवदव्व-पकप्पो अजीवदव्व-पकप्पो य । तत्थ जीवदव्वस्स, जहा देवदत्तस्स अग्गकेसहत्थाण कप्पणं, अजीवदव्वस्स पडस्स दसाण कप्पणं । एवं एगत्ते । पुहत्ते, जहा देवदत्त-जण्णदत्त-विण्हुदत्ताण अग्गकेसहत्थाण कप्पणं, अजीवदव्वाण बहूण पडाण दसाण कप्पणं । गयं सामित्त ।।६०।।

इदाणिं करणे एगत्ते, जहा दात्रेण लुणति पिप्पलगेण वा दसाकप्पणं करेति, पुहुत्ते-दात्रैलु'नंति परसूहिं वा रुक्खे कप्पंति । गयं करणेत्ति ।

इदाणिं अहिकरणे एगत्ते, जहा गडी ठवेऊण तत्थ तणादीणं कप्पणा कज्जति फलगे वा दसाण कप्पणा, पुहत्ते-तिगादिगंडीओ ठवेत्ता तेसिं तणाण दसाण वा कप्पणा कज्जति । एसा दव्वपकप्पविभासा गता ।

इयाणिं खेत्तपकप्पो । खेत्तंति इक्खू खेत्तादी । कुलितें णाम सुरट्ठाविसते दुहत्थप्पमाणं कट्ठं, तस्स अंते अयकीलगा, तेसु एगायओ एगाहारो य लोहपट्टो अडिज्जति, सो जावतितं दोव्वादि तणं तं सव्वं छिंदतो गच्छति । एवं कुलियं । आदि सद्दातो हलदंताला घेप्पंति । किट्ठं णाम वाहितं ।।६०।।

अहवा खेत्त-पकप्पो –

पण्णत्ति जंबुद्दीवे, दीव-समुद्दाण तह य पण्णत्ती ।
एसो खेत्त-पकप्पो, जत्थ य कहणा पकप्पस्स ।।६१।। दा०

पण्णवणं पण्णत्ती । पण्णवणबहुत्ते विसेसणं कज्जति, जंबुद्दीवपण्णत्ती, तस्स जं वक्खाणं सो खेत्तपकप्पो । दीवा जंबुद्दीव धाततिसंडातिणो । उदही समुद्दा, ते य लवणाइणो । तेसिं जेण अज्झयणेण पण्णत्ती कज्जति तमज्झयणं दीव-सागरपण्णत्ती । तहेवत्ति जहा जंबुद्दीवपण्णत्ती खेत्तपकप्पो भवति तहा दीव-सागरपण्णत्ती वि । एसो खेत्तपकप्पो णिद्देसवयणं । अहवा जत्थत्ति खेत्ते, यकारो विकप्पदंसणं करेति, कहणा व्याख्या, पकप्पज्झयणस्सेति वक्कसेसं । खेत्त-पकप्पो गतो ।।६१।।

इयाणिं काल-पकप्पो –

पण्णत्ति चंद-सूर, णालियमादीहिं जंमि वा काले ।
मूलुत्तरा य भावे, परूवणा कप्पणेगट्ठा ।।६२।। दा०

पण्णवणं पणत्ती । विसेसणं चंदपण्णत्ती सूरपण्णत्ती । पण्णत्ती सद्दो पत्तेयं । तेसिं जं वक्खाणं सो काल-पकप्पो । अहवा णालिगमादीहिं णालिगत्ति घडि, आदिसद्दातो छायालग्गेहिं जिणकप्पियादयो वा सुतजियकरणागतागतं कालं जाणंति । अहवा जम्मि काले आयार-पकप्पो वक्खाणिज्जति, जहा वितियपोरिसी एसो काल-पकप्पो । गतो काल-पकप्पो ।

इयाणिं भाव-पकप्पो –

भावकप्पो दुविहो, आगमओ णोआगमओ य । आगमओ जाणए उवउत्ते, णोआगमओ इमं चेव आयारपकप्पज्झयणं जेणेत्थ मूलुत्तरभावपकप्पणा कज्जति । मूलगुण' अहिंसादि महव्वया पंच ।

---

[1] गुणसद्भावो-प्रत्यन्तरे ।

उत्तरगुणा इमे –

गाहा – "पिंडस्स जा विसोही, समितीओ भावणा तवो दुविहो।
पडिमा अभिग्गहा वि य, उत्तर गुण भो वियाणाहि ॥१॥" ॥३३॥

एते चेव मूलुत्तरगुणा भावे समिति। परुवणत्ति वा कप्पणेत्ति वा एगट्ठा। पकप्पेति दारं गतं ॥६२॥

इति श्री निशीथभाष्ये पीठिकायां तृतीयं प्रकल्पनामद्वारं समाप्तम् ॥३॥

इयाणिं चूले त्ति दारं –

णामं ठवणा चूला, दव्वे खेत्ते य काल-भावे य।
एसो खलु चूलाए, णिक्खेवो छव्विहो होइ ॥६३॥

णिक्खेव-गाहा कंठा। णाम-ठवणाओ गयाओ। दव्वचूला दुविहा, आगमतो णोआगमतो य। आगमओ जाणए अणुवउत्ते, णोआगमतो जाणयभव्वसरीरवइरित्ता तिविधा ॥६३॥

तिविधा य दव्वचूला, सचित्ता मीसिगा य अचित्ता।
कुक्कुडसिह मोरसिहा, चूलामणि अग्गकुंतादी ॥६४॥

पुव्वद्धं कंठं। पढमो च सद्दोऽवधारणे, वितिओ समुच्चये। पच्छद्धे जहासंखं उदाहरणा। सचित्तचूडा कुक्कुडचूला, सा मंसपेसी चेव केवला लोकप्रतीता। मीसा मोरसिहा, तस्स मंसपेसीए रोमाणि भवंति। अचित्ता चूलामणी कुंतग्गं वा। आदिसद्दाओ सीहकण्ण-पासाद-थूभअग्गाणि। दव्वचूला गता ॥६४॥

इदाणिं खेत्तचूला-सा तिविहा –

अह-तिरिय उड्ढलोगाण, चूलिया होंतिमा उ खेत्तंमि।
सीमंत-मंदरे वि य, ईसीपब्भारणामा य ॥६५॥ दा०

अह इति अधोलोकः। तिरिय इति तिरियलोकः। उड्ढ इति उड्ढलोकः। लोगसद्दो पत्तेगं। चूला इति सिहा होति भवति। इमा इति प्रत्यक्षो। तु शब्दो क्षेत्रावधारणे। अहोलोगादीण पच्छद्धेण जहासंखं उदाहरणा। सीमंतग इति सीमंतगो णरगो, रयणप्पभाए पुढवीए पढमो, सो अहलोगस्स चूला। मंदरो मेरू। सो तिरियलोगस्स चूला। तिरियलोगचूला तिरियलोगातिक्रांतत्वात्। अहवा तिरियलोग-पतिट्ठियस्स मेरोरुवरि चत्तालीसं जोयणा चूला, सो तिरियलोगचूला। च सद्दो समुच्चये पायपूरणे वा। ईसित्ति अप्प-भावे, प इति प्रायोवृत्या, भार इति भारवकंतस्स पुरिसस्स गायं पायसो ईसि णयं भवति, जा य एवं ठिता सा पुढवी ईसिपब्भारा। णाम इति एतमभिहाणं तस्स। सा य सव्वट्ठसिद्धिविमाणाओ उवरिं बारसेहिं जोयणेहिं भवति। तेण सा उड्ढलोगचूला भवति। गता खेत्तचूला ॥६५॥

इयाणि काल-भावचूलाओ दो वि एगगाहाए भण्णति –

अहिमासओ उ काले, भावे चूला तु होइमा चेव।
चूला विभूसणं ति य, सिहरं ति य होंति एगट्ठा ॥६६॥

बारस-मास-प्पमाण-वरिसाओ अहिओ मासो अहिमासओ अहिवड्डियवरिसे भवति । सो य अधिकत्वात् कालचूला भवति । तु सद्दो ऽ र्थप्पदरिसणाए केवलं अधिको कालो कालचूला भवति, अन्ते वि वट्टमाणो कालो कालचूला एव भवति । एवं जहा ओसप्पिणीए अंते अतिदूसमा । एसा ओसप्पिणी-कालस्स चूला भवति । काल-चूला गता ।

इयाणि भाव-चूला । भवणं भावः पर्याय इत्यर्थः । तस्स चूला भाव-चूला । सा य दुविहा— आगमओ य णोआगमओ य, आगमओ जाणए उवउत्ते । णोआगमओ य इमा चेव । तु सद्दो खओवसमभाव-विसेसणे दट्ठव्वो । इमा इति पकप्पज्झयणचूला । एव सद्दोवधारणे[1] । चूलेगट्ठिता चूल त्ति वा विभूसणं ति वा सिहरं ति वा एते एगट्ठा । चूल त्ति दारं गयं ॥६६॥

इति श्री निशीथभाष्ये पीठिकायां चतुर्थं चूलानामद्वारं समाप्तम् ॥४॥

इदाणि णिसीहं ति दारं –

णामं ठवण-णिसीहं, दव्वे खेत्ते य काल-भावे य ।
एसो उ णिसीहस्स, णिक्खेवो छव्विहो होइ ॥६७॥

कंठा । णाम-ठवणा गता ॥६७॥ दव्व-णिसीह दुविधं, आगमओ णोआगमओ य । आगमओ जाणए अणुवउत्ते । णोआगमतो जाणग-भव्व-सरीर-वइरित्तं । तंचिम ।

दव्व-णिसीहं कतगादिएसु खेत्तं तु कण्ह-तमु-णिरया ।
कालंमि होति रत्ती, भाव-णिसीधं तिमं चेव ॥६८॥

द्रवतीति द्रव्यं । णिसीहमप्रकाशं । कतको णाम रुक्खो तस्स फलं । तं कलुसोदगे पक्खिप्पइ । तओ कलुसं हेट्ठा ठायति । तं दव्व-णिसीहं । सच्छं उवरिं तं अनिसीहं । गयं दव्व-निसीहं ।

खेत्त-निसीहं । खेत्तमागासं । तु पूरणे । कण्ह इति कण्हरातीओ ।

ता अणेण [2]भगवईसुत्ताणुसारेण णेया ।

"कति णं भंते कण्हराईओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कण्हराईओ पण्णत्ताओ ।

कहि णं भते ताओ अट्ठं कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाण कप्पाण, हेट्ठि बंभलोगे कप्पे रिट्ठे विमाणे पत्थडे । एत्थ णं अक्खाडग-समचउरस-सठाणसंठिओ अट्ठ कण्हराइओ पण्णत्ताओ ।"

"तमु त्ति तमुक्काओ । सो य दव्वओ आउक्काओ । सो य ऽणेण [3]भगवतिसुत्ताणुसारेण णेओ ।"

"तमुक्काए ण भंते ! कहिं समुट्ठिए कहिं णिट्ठिए ?

गोयमा ! जबुद्दीवस्स दीवस्स बहिया तिरियमसखेज्जदीवसमुद्दे वीतिवइत्ता अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदय समुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता उवरिल्लाओ

---

१ स्पष्टीकरणार्थम् । २ विवाह पण्ण० शत० ६ उद्दे० ५ । ३ विवाह पण्ण० शत० ६ उद्दे० ५ ।

जलंताओ एगपदेसिआते सेढीए, एत्थ तमुक्काए समुट्ठिते सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसते उड्ढं उप्पतित्ता ततो पच्छा वित्थरमाणे वित्थरमाणे सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ता णं चिट्ठति, उड्ढं पि णं जाव बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडे संपत्ते, एत्थ तमुक्काए णिट्ठिते।

तमुक्काए ण भंते! किं संठिते पण्णत्ते?

गोयमा! अहे "मल्लग" संठिते, उप्पि "कुक्कुडपंजर" संठाणसंठिते।"

णिरया इति णरगा। ते य सीमंतगादिए। कण्ह-तमु-णिरता अप्पगासित्ता खेत्त-णिसीहं भवति। खेत्त-णिसीह गतं।

इदाणिं काल-णिसीहं –

काल-णिसीहं=रात्रिः। गतं काल-णिसीहं।

इदाणिं भाव-णिसीहं –

भवणं भावः। णिसीहमप्पगासं। भाव एव णिसीहं भाव-णिसीहं। तं दुविहं—आगमओ णोआगमओ य। आगमओ जाणए उवउत्ते। णोआगमतो इमं चेव पकप्पज्झयणं। जेण सुत्तत्थ-तदुभएहिं अप्पगासं। एत्र अवधारणे इति ॥६८॥

निशीथ इति कोऽर्थः। निशीथसद्द-पट्ठीकरणत्थं[1] वा भण्णति।

निशीथ इति –

जं होति अप्पगासं, तं तु णिसीहं ति लोगसंसिद्धं।
जं अप्पगासधम्मं, अण्णं पि तयं निसीधं ति ॥६९॥

जमिति अणिदिट्ठं। होति भवति। अप्पगासमिति अंधकारं। जकारणिद्देसे तगारो होइ। सद्दस्स अवहारणत्थे तुगारो। अप्पगासवयणस्स णिण्णयत्थे णिसीहं ति। लोगे वि सिद्धं णिसीहं अप्पगासं। जहा कोइ पावासिओ पओसे आगओ, परेण बितिए दिणे पुच्छिओ "कल्ले कं वेलमागओ सि?" भणति 'णिसीहे" त्ति रात्रावित्यर्थः। न केवलं लोकसिद्धमप्पगासं णिसीहं, जं अप्पगासधम्मं अन्नं पि तं णिसीहं। अक्खरत्थो कंठो। उदाहरणं—जहा लोइया रहस्ससुत्ता विज्जा मंता जोगा य अपरिणयाणं ण पगासिज्जंति ॥६९॥

अहवा दव्व-खेत्त-काल-भाव-णिसीहा अण्णहा वक्खाणिज्जंति।

दव्व-णिसीहं जाणग-भव्व-सरीरातिरित्तं कतक-फलं, जम्हा तेण कलुसुदए पक्खित्तेण मलो णिसीयति, उदगादवगच्छतीत्यर्थः, तम्हा तं चेव कतकफल दव्व-णिसीहं। खेत्त-णिसीहं बहिद्दीवसमुद्दादिलोगा य, जम्हा ते पप्प [2]जिय-पुग्गलाणं तदभावो अवगच्छति। काल-णिसीहं अहो, तं पप्प राती-तमस्स णिसीयणं भवति।

भाव-णिसीहं –

अट्ठविह कम्म-पंको, णिसीयते जेण तं णिसीधं ति।
अविसेसे वि विसेसो, सुइं पि जं णेइ अण्णेसिं ॥७०॥

अट्ठ त्ति संखा। विहो भेओ। क्रियते इति कर्म। पंको दव्वे भावे य। दव्वे उदगचलणी। भावे णाणावरणातीणि पंको। सो भाव-पंको णिसीयते जेण। तस्स भाव-पंकस्स णिसीयणा तिविहा-खओ, उवसमो,

---

१ स्पष्टीकरणार्थम्। २ जीव-पुद्गलानाम्।

खयोवसमो य। "जेण" त्ति करणभूतेण तं णिसीहं भणंति। तंचिम अज्झयणं। जम्हा जहुत्तं आयरमाणस्स अट्ठविह-कम्मगंठी[1] वियारा-इति। तेणिमं णिसीहं।

चोदगाह – जइ कम्मक्खवणसामत्थाओ इमं णिसीहं एवं सव्वज्झयणाणं णिसीहत्तं भवतु ?

गुरु भणति – आमं, किं पुण "अविसेसे वि" त्ति सव्वज्झयण-कम्मक्खवणस्स सामत्थाविसेसा इह अज्झयणे विसेसो। विसेसो णाम भेओ। को पुण विसेसो ? इमो सुतिं पि जं णेनि अण्णेसिं। सुतिं सवणं सोइंदिउवलद्धी जम्हा कारणा, ण इति पडिसेहे एति आगच्छति प्राप्नोतीत्यर्थः, अण्णेसिं ति अगीत-अइपरिणामा-परिणामगाणं ति वक्कसेसं। किं पुण कारणं तेसिमं सुइं णागच्छति ? सुण – इदमज्झयणं अववायबहुलं, ते य अगीयत्थादि दोसजुत्तत्ता विणसेज्ज तेण णागच्छति। "अवि" पदत्थसंभावणे। किं संभावयति ? जति अगीयाण अण्णसाहु-परायवत्तयंताण वि सवणं पि ण भवति कओ उद्देसवायणत्थ-सवणाणि, एवं सम्भावयति।

अहवण्णहा गाहा समवतारिज्जति।

अप्पगास-णिसीह-सद्द-सामण्णवक्खाणाओ सीसो पुच्छति–लोगुत्तर-लोगणिसीहाण को पडिविसेसो ?

उच्यते 'अट्ठविह कम्म-पको" गाहा। अक्खरत्थो सो चेव। उवसंहारो इमो। जइ वि लोइगारण्ण-गामादीणि णिसीहाणि तहवि कम्मक्खवणसमत्थाणि ण भवंतीति अविसेसे विसेसो भणितो। किं च ताणि गिहत्थ-पासडीण सुतिमागच्छंति इमं पुण सुतिं पि जं ण एति अण्णेसिं। अण्णे गिहत्थ अण्णतित्थिया अवि सपक्खागीय-पासंडीण वि।

आयारादि-णिक्खेव-दार-गाहागता वितिय-गाहाए य आयारमादियाइं ति गतं ॥७०॥

इति श्री निशीथभाष्ये पीठिकायां पंचमं निशीथनामद्वारं समाप्तम् ॥५॥

इदाणिं पायच्छित्ते अहिकारो त्ति छट्ठं दारं।

तं च पच्छित्तं एवं भवति –

> आयारे चउसु य, चूलियासु उवएस वितहकारिस्स।
> पच्छित्तमिहज्झयणे, भणियं अण्णेसु य पदेसु ॥७१॥

आयारो णव-बंभचेरमइओ। चउसु य आइल्ल-चूलासु पिंडेसणादि-विमोत्तावसाणासु। एएसु य जो उवदेसो। उवदिस्सइ त्ति उवदेसो क्रियेत्यर्थः। सो य पडिलेहणा-पप्फोडणाति। तं वितह विवरीयं, करेंतस्स आयरेंतस्सेत्यर्थः। पावं च्छिंदतीति पच्छित्तं। इह पकप्पज्झयणे। वुत्तं निर्दिष्टमित्यर्थः। किं इहज्झयणे केवले पच्छित्तं वुत्तं ? नेत्युच्यते, अण्णेसु य पदेसु अन्नपयाणि कप्पववहाराईणि तेसु वि वुत्तं।

अहवा वितहकारिं ति अणायारो गहिओ। किं अणायारे एव केवले पच्छित्तं हवइ ? नेत्युच्यते, अन्नेसु य पएसु-अइक्कमो, वइक्कमो, अइयारो एएसु वि पच्छित्तं वुत्तं।

अहवा किमायार एव सचूले वितहकारिस्स केवल पच्छित्तं वुत्तं ? नेत्युच्यते, अन्नेसु य पदेसू अण्णपदा सूयकडादओ पया तेसु वि वितहकारिस्स पच्छित्तं वुत्तं। "च" पूरणे ॥७१॥

---

1 विद्रावति।

सीसो पुच्छति – "एयं पुण पच्छित्तं किं पुण पडिसेविणो अपडिसेविणो ? जइ पडिसेविणो तो जुत्तं, अह अपडिसेविणो तो सव्वे साहू सपायच्छित्ता। सपायच्छित्तिणो य चरण असुद्धत्तं, चरणासुद्धीओ य अमोक्खो, दिक्खादि णिरत्थया।"

गुरु भणइ –

तं अइपसंग-दोसा, णिसेवते होति ण तु असेविस्स।
पडिसेवए य सिद्धे, कत्तादिव सिज्झए तितयं ॥७२॥

तदिति पूर्वप्रकृतापेक्षं। अति अत्यर्थभावे, प्रसंगो णाम अवशस्यानिष्टप्राप्तिः। जस्स अपडिसेवंतस्स पच्छित्तं तस्सेसो अतिप्पसंगदोसो भवति। वय पुण णिसेवतो इच्छामो णो अणिसेवओ।

अहवा, तं पच्छित्तं, अति अच्चत्थे, पसंगो पाणादिवायादिसु दूसिज्जति जेण स दोसो, अतिपसंग एव दोसो अतिपसंगदोसो। तेण अतिपसंगदोसेण दुट्ठो। णिसेवति त्ति आचरतीत्यर्थः। होति भवति। प्रायश्चित्तमिति वाक्यशेषः। ण पडिसेहे। तु अवधारणे। असेविस्स अणाचरतः। तु सद्दावधारणा अपडिसेविणो न भवत्येव। पडिसेविणो वि णिच्छियं भवति। जो य पडिसेवेति सो य पडिसेवगो। तंमि सिद्धे पडिसेवणा पडिसेवितव्वं च सिद्धं भवति। स्यान्मतिः "कहं पुण पडिसेवगसिद्धीओ पडिसेवणा पडिसेवियव्वाण सिद्धी ?" एत्थ दिट्ठंतो भण्णति। "कत्तादिव सिज्झते तितयं"। जो करेति सो कत्ता आदी जेसिं ताणिमाणि कत्तादीणि, ताणि य करण-कज्जाणि, जहा कर्तरि सिद्धे कत्ता-करण-कज्जाणि सिद्धाणि भवंति। कहं ? उच्यते, स कत्ता तक्करणेहिं पयत्तं कुर्वाणो तदत्थं कज्जमभिणिप्फायति। इव उवम्मे। एवं जहा पडिसेवणाए पडिसेवियव्वेण य पडिसेवगो भवति, तस्सिद्धीओ ताणि वि सिद्धाणि। एवं सिज्झते तितयं। तितयं णाम पडिसेवगादि ॥१२॥

तंचिमं –

पडिसेवतो तु पडिसेवणा य पडिसेवितव्वयं चेव।
एतेसिं तिण्हं पि, पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥७३॥

पत्तेयमिति पुढो पुढो। पगरिसेण रूवणं परूवणं स्वरूपकथनमित्यर्थः। सेसं कंठं ॥७३॥

एत्थ कमुद्दिट्ठाणं पुव्वं पडिसेवणा पदं भणामि ? किमुक्कमे कारणं ?

भणति-पडिसेवणामंतरेण पडिसेवगो ण भवति त्ति कारणं।

अतो पडिसेवणा भण्णति –

पडिसेवणा तु भावो, सो पुण कुसलो व होज्ज अकुसलो वा।
कुसलेण होति कप्पो, अकुसल-पडिसेवणा दप्पो ॥७४॥

पडिसेवणं पडिसेवणा। चोदक आह "सा किं किरिया भावो" ?

पण्णवग आह ण किरिया भावो। तु सद्दो भावावधारणे। सो इति भावः। पुण विसेसणे। किं विसेसयति ? इमं–कुसलो व होज्ज अकुसलो व होज्ज। "कुसलो" नाम प्रधान : कर्मक्षपणसमर्थ इत्यर्थः। "अकुसलो" नाम अप्रधानः बंधाय संसारायेत्यर्थः। वा समुच्चये पायपूरणे वा। कुसलाकुसलभावगुण-दोस-प्रख्यापनार्थं भणति। कुसलेण होति पच्छद्धं।

सीसो पुच्छति – "कुसलाकुसलभावजुत्तस्स किं भवति" ?

गुरू भणति – "कुसलेण" पच्छद्धं । कप्पो कत्तव्वं । दप्पो अकत्तव्वं । सेसं कंठं ।।७४।।

एवं पडिसेवण-सिद्धीओ पडिसेवग-पडिसेवियव्वाण वि सिद्धी ।

एवं तिसु वि सिद्धेसु चोदक आह "भगवं"! जहा घडादि-वत्थूणुत्पत्ति काले कत्ता-करण-कज्जाणमच्चंत भिण्णता दीसति किमिहं पडिसेवग-पडिसेवणा-पडिसेवियव्वाण भिण्णयत्ति" ।

पण्णवग आह – सिया एगत्तं सियमण्णत्तं ।

कहं ? भण्णति–

णाणी ण विणा णाणं णेयं पुण तेसऽणण्णमण्णं वा ।
इय दोण्ह व अणाणत्तं, भइतं पुण सेवितव्वेणं ।।७५।।

ज्ञानमस्यास्तीति ज्ञानी । ण इति पडिसेहे । विना-ऋते अभावादित्यर्थः । ज्ञायते अनेनेति ज्ञानं । ज्ञानी ज्ञानमंतरेण न भवत्येवेत्यर्थः । ज्ञायते इति ज्ञेयं ज्ञान-विषय इत्यर्थः । पुण विसेसणे । किं विसेसयति ? इमं, "तेसऽणण्णमण्णं वा" । तेषामिति ज्ञानि ज्ञानयो', "अणण्णं" अभिण्णं अपृथगित्यर्थः "अण्णं" भिण्णं पृथगित्यर्थः, "वा" पूरणे समुच्चये वा ।

चोयगाह – "कहं" ?

उच्यते, जया णाणी णाणेण णाणादियाण पज्जाए चिंतेति तदा तिण्ह वि एगत्तं धम्मादिपर-पज्जाय-चिंतणे अणण्णत्तं ।

अहवा, भिण्णे अभिण्णे वा णेये उवउत्तस्स उवओगा अणण्णं णेयं । अणुवउत्तस्स अण्ण । एष दृष्टान्त. । इयाणिं विनियोजना । इय एवं । दोण्ह त्ति पडिसेवग-पडिसेवणाणं । णाणाभावो णाणत्तं, न णाणत्तं अणाणत्तं, एगत्तमिति वुत्त भवति । भइयं भज्जं, सिए एगत्तं सिय अण्णत्तं ति वुत्तं भवति । पुण त्ति भइणीय-सद्दावधारणत्थे। सेवियव्वं णाम जं उवभुज्जति, तेण य सह पडिसेवग-पडिसेवणाण य एगत्तं भयणिज्जं । कहं ? उच्यते, यदा कर-कम्मं करेति तदा तिण्ह वि एगत्तं, जदा बाहिर-वत्थुं पलंबाति पडिसेवति तदा अण्णत्तं ।

अहवा, जं पडिसेवति तब्भावपरिणते एगत्तं, जं पुण णो सेवति तंमि अपरिणयत्ताओ अण्णत्तं ।।७५।।

समासतोऽभिहिय पडिसेवगादि-तय-सरूवस्स वित्थर-निमित्तं णिक्खेवो वण्णासो कज्जति –

पडिसेवओ उ साधू, पडिसेवण मूल-उत्तरगुणे य ।
पडिसेवियव्वयं खलु दव्वादि चतुव्विधं होति ।।७६।।

दार-गाहा, तत्थ पडिसेवगो त्ति दारं । पडिसेवणं पडिसेवयती ति पडिसेवगो, सो य साहू । तु सद्दो साहु अवधारणे पूरणे वा । तस्स य पडिसेवगस्सिमे भेदा । पुरिसा णपुंसगा इत्थी ।

तत्थ पुरिसे ताव भणामि –

पुरिसा उक्कोस-मज्झिम, जहण्णया ते चउव्विधा होंति ।
कप्पट्ठिता परिणता, कडयोगी चेव तरमाणा ।।७७।।

एसा भद्दवाहुसामि-कता गाहा । पडिसेवग-पुरिसा तिविहा उक्कोस-मज्झिम-जहण्णा । एते वक्खमाणसरूवा । जे ते उक्कोसादि से चतुव्विहा होंति । कहं ? उच्यते, भंग-विगप्पेण[1] ।

सा य भंग-रयण-गाहा इमा –

संघयणे संपण्णा, धिति-संपण्णा य होंति तरमाणा ।
सेसेसु होति भयणा, संघयण-धितीए इतरे य ॥७८॥

संघयणे संपण्णा धिति-संपण्णा य होंति, एस पढम-भंगो । तरमाण त्ति सण्णासितं चिट्ठउ । भणिताउ जमण्णं तं सेस होति । पढमभंगो भणितो, सेसा तिण्णि भंगा । तेसु भयणा णाम सेवत्थे । किं पुण तं भज्जं ? संघयणं ति । वितियभंग संघयणेण भय । धिति-वज्जियं कुरु । सो य इमो—संघयण-संपण्णो णो धिति-संपण्णो वितीय त्ति । ततिय भगो धिईए भज्जो, णो सघयणभज्जो । सो य इमो—णो संघयण-संपण्णो धिति-संपण्णो । इयरे त्ति इयरा णाम संघयण-धितिरहिता । सो चउत्थो भंगो । इमो—णो संघयण-संपण्णा णो धिति-संपण्णा । एवं एते भंगा रतिता ॥७८॥

चोदग आह – जति उक्कोसादिपुरिस-तिगं तो भंग-विगप्पिया चउरो ण भवंति । अह चउरो तिगं ण भवति ।

पण्णवग आह – जे इमे भंग-विगप्पिया चउरो एते चेव, ततो भण्णंति ।

कहं ? भण्णति –

पुरिसा तिविहा संघयण, धितिजुत्ता तत्थ होंति उक्कोसा ।
एगतरजुत्ता मज्झा, दोहिं विजुत्ता जहण्णा उ ॥७९॥

पढम-भंगिल्ला उक्कोसा । सेसं पुव्वद्धस्स कंठं । एगतरजुत्ता णाम द्वितीय-ततियभंगा । ते दो वि मज्झा भवंति । दोहि वि विजुत्ता णाम संघयण-धितीहिं । एस चउत्थभंगो । एए जहण्णा भवंति । एवं चउरो वि तओ भवंति । जे ते भंगविगप्पिया चउरो पुरिसा ते अणेण पच्छद्ध-भिहिएण चउविकप्पेण चिंतियव्वा ॥७९॥

[2]कप्पट्ठिता णाम जहाभिहिए कप्पे ट्ठिता कप्पट्ठिता । ते य जिणकप्पिया. तप्पडिवक्खा पकप्पट्ठिता । पकप्पणा पकप्पो भेद इत्यर्थः । तंमि ट्ठिता पकप्पट्ठिता । अववादसहिते कप्पे ट्ठिय त्ति भणियं भवति । परिणता णाम सुतेण वएण य वत्ता, तप्पडिवक्खा णाम अपरिणता । कडजोगी णाम चउत्थादि तवे कतजोगा, तप्पडिवक्खा अकडजोगी । तरमाणा णाम जे जं तवो कम्मं आढवेंति तं विनित्थरंति तप्पडिवक्खा अतरमाणा । पच्छद्ध-सरूवं वक्खायं ॥७७॥

इयाणिं चउभंग-विगप्पिया पुरिसा कप्पट्ठितादिसु चिंतिज्जंति –

अतो भण्णति –

उक्कोसगा तु दुविहा, कप्प-पकप्पट्ठिता व होज्जाहि ।
कप्पट्ठिता तु णियमा, परिणत-कड-योगितरमाणा ॥८०॥

---

१ उत्तरार्घार्थं विलोकय गा. ७९ चूर्णि । २ गा. ७७ उत्तरा० ।

दुविहा उक्कोसगा पढमभंगिल्ला । तु सद्दो दुगभेदावधारणे । सो इमो दुभेदो कप्प पकप्पा पुव्व-वक्खाया एव । इदाणिं तरमाणा सण्णासियं पदं समोयरिज्जति । कप्पे पकप्पे वा ट्ठिता पढम-भंगिल्ला णियमा, तरमाणा कयकिच्चं पदय । इदाणिं कप्प-पकप्पट्ठिता पत्तेगसो चिंतिज्जति । कप्पट्ठिता जिणकप्पिया । तु सद्दो पत्तेय णियमावधारणे । परिणता सुतेणं वयसा य णियमा । कड-जोगिणो तवे । तरमाणगा ते णियमा । कप्पट्ठिता गता ॥८०॥

पकप्पट्ठिता भण्णंति । अत्रो भण्णति –

> जे पुण ठिता पकप्पे, परिणत-कड-योगि ताइ ते भइता ।
> तरमाणा पुण णियमा, जेण उ उभएण ते वलिया ॥८१॥

जे इति णिद्देसे । पुण इति पादपूरणे । पकप्पे थेरकप्पे । परिणय-कड-जोगित्तेण भइया । भय सद्दो पत्तेयं । कह् भतिता ? जेण थेरकप्पिता गीता अगीता य सति वयसा सोलस-वासातो परतो य संति तम्हा ते भज्जा । तरमाणा पुण णियमा । कम्हा ? उच्यते, जेण उ उभयेण ते वलिया । उभयं णाम संघयण-धितिसामत्थाओ य जं तवोकम्म आढवेंति त णित्थरन्ति । गतो पढमभंगो ॥८१॥

इयाणिं मज्झिमा पुरिसा वितिय-ततिय–भगिल्ला भण्णति –

> मज्झा य वितिय-ततिया, नियम पकप्प-ट्ठिता तु णायव्वा ।
> वितिया परिणत-कड-योगिताए भइता तरे किंचि ॥८२॥

मज्झा इति मज्झिमपुरिसा । वितिय त्ति वितियभंगो । ततिय त्ति ततियभंगो । णियमा इति अवस्सं । णियम-सद्दाओ जिणकप्प-वुदासो, पकप्पावधारणं । पकप्पो थेरकप्पो । णायव्वं बोधव्वमिति । तु अवधारणे, किमवधारयति ? इमं–दोण्ह् वि मज्झिल्लभंगाण सामण्णमभिहियं, विसेसो भण्णति । वितिया इति वितियभगिल्ला । परणयत्तेण कडजोगित्तेण य भइया पूर्ववत् । तरे किंचि त्ति तरति शक्नोति, किंचिदिति स्वल्पतरमिति ॥८२॥

कहमप्पतरमिति भण्णति –

> संघयणेण तु जुत्तो, अदढ-धिति ण खलु सव्वसो अतरओ ।
> देहस्सेव तु स गुणो, ण भज्जति जेण अप्पेण ॥८३॥

संघयणेण य जुत्तो संपण्णो इत्यर्थ. । अदढ-धिई धितिविरहित । ण इति पडिसेहे । खलु अवधारणे । सव्वसो सर्व्वं प्रकारेण । अकर' असमर्थः, द्विप्रतिषेधः प्रकृतिं गमयति तरत्येवेत्यर्थः । कहं धिति-विरहितो तरो ? भण्णति, देहस्सेव उ स गुणो "देहं" सरीरं, "गुणो" उवगारो । णगारो पडिसेहे । भज्जति विसायमुव-गच्छति । जेण यस्मात्कारणात् । अप्पेणं स्तोकेनेत्यर्थः । गतो वितियभंगो ॥८३॥

इयाणिं ततिओ –

> ततिओ धिति-संपण्णो, परिणय-कडयोगिता वि सो भइतो ।
> एगे पुण तरमाणं, तमाहु मूलं धिती जम्हा ॥८४॥

ततिओ त्ति ततिय-भगो । धिति-संपण्णो धृति-युक्तः, संघयण-विरहित' । अविसद्दा किंचि तरति धिति-संपण्णत्वात् । पुव्वद्धस्स सेसं कं० । एगेत्ति एगे आयरिया । पुण विसेसणे । तरमाणं ति समत्थं ।

तदिति तइयभंगिल्लं । आहुरिति उक्तवंतः । कम्हा कारणा तरमाणं भण्णंति ? भण्णति—तवस्स मूलं धिती जम्हा ॥८४॥

कहं पुण दुविह-संघयणुप्पत्ती भवति ? भण्णति –

णामुदया संघयणं, धिती तु मोहस्स उवसमे होति ।
तहवि सती संघयणे, जा होति धिती ण साहीणे ॥८५॥

णाम इति छट्ठी मूल-कम्म-पगडी । तस्स बायालीसुत्तरभेदेसु अट्ठमो संघयणभेश्रो णाम । तस्स पुक्खलुदया पुक्खल-सरीरसंघयणं भवति । धितित्ति धिति-संघयणं । मोहो णाम चउत्था मूलकम्म-पगडी, तस्स खश्रोवसमा धिती भवति । विसेसश्रो चरित्तमोहक्खश्रोवसमा । तत्थ विसेसश्रो णोकसायचरित्तमोहणीय-खश्रोवसमा । तत्थ विसेसश्रो श्ररतिखश्रोवसमा । एवं दुविह-संघयणुप्पत्ती भवति ।

चोदक श्राह् – "जति संघयण-धितीण भिण्णाणुपत्तीकारणाणि कम्हा तइयभंगो श्रतरमाणगो कज्जति ?" ।

पण्णवगाह-जइ विभिण्णाणुप्पत्तीकारणाणि तह वि सति संघयणे, "सति" त्ति विज्जमाणे संघयणे, जा इति जारिसी, होति धिती, ण सा संघयण-हीणे भवति, तम्हा तइयभंगो श्रतरमाणगो । केतीमतेणं पुण तरमाण एव । गश्रो ततियो भंगो ॥८५॥

इयाणिं चउत्थो –

चरिमो परिणत-कड,-योगित्ताए भइश्रो ण सव्वसो श्रतरो ।
राती-भत्त-विवज्जण, पोरिसिमादीहिं जं तरति ॥८६॥

चरिमो चउत्थभंगो । सेसं पुव्वद्धस्स कंठं । जो धिति-सारीर-संघयण-विहीणो कहं पुण सव्वसो श्रतरो ण भवति ? उच्यते—राती-भत्तं, जं यस्मात् कारणात्, एवमादि प्रत्याख्यानं, तरति, तम्हा ण सव्वसो श्रतरो । गश्रो चउत्थभंगो पुरिस-पडिसेवगो य ॥८६॥

इयाणिं णपुंसगित्थि-पडिसेवगा भण्णंति –

पुरिस-णपुंसा एमेव, होंति एमेव होंति इत्थीश्रो ।
णवरं पुण कप्पट्ठिता, इत्थीवग्गे ण कातव्वा ॥८७॥

णपुंसगा दुविहा – इत्थी-णपुंसगा य पुरिस-णपुंसगा य । इत्थी-णपुंसगा श्रपव्वावणिज्जा । जे ते पुरिस-णपुंसगा श्रप्पडिसेविणो छज्जणा –वद्धिय १, चिप्पिय २, मंत ३, श्रोसहि उवहता, ४, ईसिसत्तो ५, देवसत्तो ६, एते जहा पुरिसा उक्कोस्सगादि-चउसु भंगेसु कप्पट्ठियादि-विकप्पेहिं चिंतिता तह ते वि चिंतेयव्वा । इत्थियाश्रो वि एवं चेव । णवरं जिणकप्पिया इत्थी ण भवति । वर्गो णाम स्त्रीपक्षः । पडिसेवगो त्ति दारं गतं ॥८७॥

इदाणिं पडिसेवणे त्ति दारं ।

तत्थ वयणं "पडिसेवण मूल-उत्तरगुणे य त्ति

सा पडिसेवणा दुविहा –

दप्पे सकारणंमि य, दुविधा पडिसेवणा समासेणं ।
एक्केक्का वि य दुविधा मूलगुणे उत्तरगुणे य ॥८८॥

दप्प इति जो अणेगव्वायामजोग्ग-वग्गणादिकिरियं करेति णिक्कारणे, सो दप्पो। सकारणंमि य त्ति णाण-दंसणाणि अहिकिच्च संजमादि-जोगेसु य [1]असरमाणेसु पडिसेव त्ति, सा कप्पो। समासेण संखेवेण। एक्केक्का वि त्ति वीप्सा, दप्पिया दुविहा कप्पिया दुभेया। दप्पेणं जं पडिसेवति तं मूलगुणा वा उत्तरगुणा वा, कारणे वि जं पडिसेवति तं मूलगुणा वा उत्तरगुणा वा ॥८८॥ ज च पडिसेवति तं पडिसेवियव्वं। तं चिमं [2]गाहापच्छद्धेण गहियं पडिसेवियव्वं तं खलु दव्वादिचतुव्विहं होति"। दव्वं आदी जेसिं ताणिमाणि दव्वादीणि। ताणि य दव्व-खेत्त-काल-भावा। दव्वतो सचेयणमचेयणं वा। खेत्तओ गामे रण्णे वा। कालओ सुभिक्खे वा दुब्भिक्खे वा। भावओ हट्ठो वा अहट्ठो वा पडिसेवणा पडिसेवियव्वाणि दोवि दाराणि जुगवं गच्छिस्संति। जओ पडिसेवियव्वमंतरेण पडिसेवणा ण भवति।

तत्थ जा सा मूलगुण-पडिसेवणा सा इमा –

मूलगुणे छट्ठाणा, पढमे ट्ठाणंमि णवविहो भेदो।
सेसेसुक्कोस-मज्झिम-जहण्ण दव्वादिया चउहा ॥८९॥

मूला गुणा मूलगुणा आद्य-गुणा प्रधानगुणा इत्यर्थः। तेसु पडिसेवणा जा सा छट्ठाणा भवति, छसु ठाणेसु भवति त्ति भणिय होति। ताणि य इमाणि—पाणातिवाओ, १ मुसावाओ, २ अदत्तादाणं, ३ मेहुणं, ४ परिग्गहो, ५ रातीभोयणं च ६। एत्थ पढमट्ठाण पाणातिवातो। तत्थ णवविहो भेओ। सो य इमो— पुढविक्काओ[1] आउक्काओ[2] तेऊ[3]-वाऊ[4]-वणस्सइ[5]-बेतिंदिय[6]-तेइंदिय[7]-चउरिंदिया[8] पंचिंदिया[9]। सेसेसु त्ति मुसावाओ-जाव-रातीभोयणं। एएसिं एक्केक्कं तिविहं ति य, इमे तिभेदा—उक्कोसो, मज्झिमो, जहण्णो। दव्वादिया चउह त्ति,—उक्कोस-मुसावाओ चउव्विहो दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। मज्झिमो वि चउव्विहो दव्वाति ङ्क[3]। जहण्णओ वि चउव्विहो दव्वादि ङ्क। एवं अदत्तादाणमवि दुवालसं भेदं। मेहुणं पि, परिग्रहो वि, रातीभोयणं पि दुवालसभेदं। उक्कोसं पुण दव्वं एवं भवति बहुत्ततो सारतो वा, मुल्लतो वा। एवं मज्झे वि तिण्णि भेदा, जहण्णे वि तिण्णि भेदा। उक्कोसदव्वावलावे उक्कोसो मुसावातो, मज्झिमे मज्झिमो, जहण्णे जहण्णो। एवं अदत्तादिसु वि जोयणिज्जं। खेत्तओ जं जत्थ खेत्ते अच्चियं[4] मज्झिम जहण्णं वा। कालतो ज जत्थ काले अच्चियं मज्झिमं जहण्णं वा। भावओ वि वण्णादि-गुणेहिं उक्कोस-मज्झिम-जहण्णं वा। एवं बुद्धीए आलोएउ जोयणा कायव्वा।

अहवा सेसेसुक्कोस-मज्झिम-जहण्ण त्ति, जेण मुसावाएण अभिहिएण पारंचियं भवति एस उक्कोसो मुसावाओ, जेण पुण दसराइंदियाति जाव अणवट्ठं एस मज्झिमो, जेण पंचराइंदियाणि एस जहण्णो। एव अदत्तादाणे वि-जाव-रातीभोयणे वि।

अहवा दव्वादिया चउह त्ति, एवं पडिसेवितव्वं गहियं।

अहवा एयं पदं एवं पढिज्जति, दप्पातिया चउहा, जे ते मूलगुणे छट्ठाणा एए दप्पादि-चउह-पडिसेवणाए पडिसेवेति ॥८९॥

सा य इमा –

दप्पे कप्प-पमत्ताणाभोग आहच्चतो य चरिमा तु।
पडिलोम-परूवणता, अत्थेणं होति अणुलोमा ॥९०॥

---

१ अनिर्वहिसु। २ गा० ७६। ३ चतुः संज्ञा। ४ उत्कृष्टम्।

दप्प-पडिसेवा कप्प-पडिसेवा पमाय-पडिसेवा अप्पमाय-पडिसेवा । जा सा ऽअपमत्त-पडिसेवा सा दुविहा-अणाभोगा आहच्चओ य । चरिमा णाम अप्पमत्त-पडिसेवा । एतासिं [1]कमोवण्णत्थाणं अप्पमत्तादि-पडिलोम-परूवणा कायव्वा । अत्थेणं पुण एसा चेव अनुलोम-परूवणया । एस अक्खरत्थो ॥९०॥

इदाणि वित्थरो भण्णति ।

चोदकाह – "जति पाणातिपायादि छट्ठाणस्स दव्वादि चउहा पडिसेवा कता तो जा पुव्वं भणिया "दप्पे[2] सकारणंमि य दुविहा" सा इयाणिं ण घडए, जइ दुहा—चउहा न घडए, अह चउहा—तो दुहा न घडए, एवं पुव्वावरविरोहो ।

पन्नवग आह – नो न घडए, घटत एव, कथं ? उच्यते –

एसेव चतुह पडिसेवणा तु, संखेवतो भवे दुविधा ।
दप्पो तु जो पमादो, कप्पो पुण अप्पमत्तस्स ॥९१॥

एसेव त्ति जा पुव्वभणिता । चउहा चउरो भेया दप्पादिया । तु पूरणे । संखेवो समासो, न वित्थरोत्ति भणियं भवेज्ज । दुहा दुभेया । कहं ? दप्पाओ कप्पाओ, जो पमाओ सो दप्पो, तम्हा एगत्ता एगा दप्पा पडिसेवणा । कप्पो पुण अप्पमत्तस्स । अप्पमातो कप्पो भण्णति । तम्हा एगत्ता एगा कप्पिया पडिसेवणा । एवं दो भण्णंति ।

अहवा कारणकज्जमवेक्खातो एगत्तं पुहत्तं वा भवति । पमाया दप्पो भवति अप्पमाया कप्पो । एत्थ दिट्ठंतो भण्णति जहा तंतूओ पडो, तंतुकारणं पडो कज्जं, जम्हा कारणंतरमावण्णा तंतव एव पडो, तम्हा तंतुपडाणं एगत्तं । जम्हा पुण तंतूहिं पडकज्जं ण कज्जति तम्हा अण्णत्तं । एवं पमाददप्पाणं एगत्तं पुहत्तं वा, अप्पमाय-कप्पाण वि एगत्तं पुहत्तं वा । जओ एवं तम्हा पडिसेवणा चउव्विहा वा, ण एत्थ दोसो ॥९१॥

इयाणिं सीसो पुच्छति – "कहं पमाओ दप्पो, अप्पमाओ वा कप्पो" ? ।

गुरू भणति सुणसु जहा भवति –

ण य सव्वो वि पमत्तो, आवज्जति तध वि सो भवे वधओ ।
जह अप्पमादसहिओ, आवण्णो वी अवहओ उ ॥९२॥

अतिवातलक्खणो दप्पो । अनुपयोगलक्खणः प्रमादः । णाणातिकारणावेक्ख अकप्पसेवणा कप्पो । उवओगपुव्वकरणक्रिया लक्खणो अप्रमादः एवं सरूवठितेसु गाहत्थो अवयारिज्जति । ण इति पडिसेहे । सव्व इति-अपरिसेसे । पमत्तो पमायभावे वट्टंतो । आवज्जति पाणातिवाए । जति वि य सो पमादभावे वट्टमाणो पाणातिवायं णावज्जति तहा वि सो णियमा भवे वहओ ।

सीसो पुच्छति – "पाणाइवायं अणावण्णो कहं वहओ ?" ।

गुरुराह – एत्थ वि अण्णो दिट्ठंतो कज्जति । जह अप्पमाय पच्छद्धं । "जहा" जेणप्पगारेण, "अप्पमायसहिओ" अप्पमाययुक्तइत्यर्थः । आवण्णो वि पाणातिवायं अवहगो भवति । भणियं च-"उच्चालियंमि पादे[3]" – गाहा । "ण य तस्स तण्णिमित्तो" गाहा ॥३०॥३१॥

जहा एस सति पाणातिवाए अप्पमत्तो अवहगो भवति एवं असति पाणातिवाए पमत्तताए वहगो भवति । जओ एवं तम्हा चउहा पडिसेवणा दुविहा भवति दप्पिया कप्पिया य ॥९२॥

---

१ क्रमोपन्यस्तानाम् । २ गा० ८८ । ३ ओघनिर्युक्ति गा० ७४९–५० ।

दप्प-कप्पाणं कम्मोवणणत्थाणं[1] पुव्वं कप्पियावक्खाणं भणामि ।

चोदगाह–ततियपाएण "पडिलोमपरूवणता" कहं ? "दप्पिकाया: पूर्वं निपातनं कृत्वा[2] कल्पिकाया व्याख्या कहं पूर्वमुच्यते ?"

अत्रोच्यते – अत्थेणं होइ अणुलोमा अर्थं प्रतीत्य कल्पिका एव पूर्वं भवतीत्यर्थ. ।

कहमत्थेणं होति अणुलोमा ? । भण्णति –

> अप्पतरमच्चियत्तरं, एगेसिं पुव्व जतण-पडिसेवा ।
> तं दोण्ह चेव जुज्जति, बहूण पुण अच्चितं अंते ॥६३॥

अप्पत्तर त्ति । अत्रेके आचार्या आहुर्यदल्पस्वरतरं तत्सर्वं द्वंदे हि पूर्वं निपतति, यथा-प्लक्षन्यग्रोधौ । अचिततरं ति । अण्णे पुणराहुर्यदचितं तत्पूर्वं निपतति, यथा-मातापितरौ वासुदेवार्जुनौ इत्यादि । एताणि कारणाणि इच्छमाणा आयरिया पुव्वं जयणपडिसेवण भणंति । वयं पुण ब्रूम. – तं दोण्ह चेव पच्छद्धं । "तदि" ति अल्पस्वरत्वं अचितत्वं वा, "द्वाभ्यां चे" ति पदाभ्यां, युज्यते घटते इत्यर्थः, न तु बहूनां ।

चोदक आह – "बहुआण कह" ?

उच्यते – बहूण पुण अच्चिंत अते । "बहूनां" पदाना "पुण" सद्दो अवधारणे, "अच्चियं" पद 'अंते" भवति, यथा भीमार्जुनवासुदेवा । उक्कमकारणाणि अभिहितानि ॥६३॥

इदाणिं समवतारो –

> दोण्हं वच्चं पुव्वचियं तु बहूयाण अच्चित्तं अंते ।
> अप्पं च एत्थ वच्चं, जतणा तेणं तु पडिलोमं ॥६४॥

जदा दोपयाणि कप्पिज्जति दप्पिया कप्पिया य तदा दोण्हं वच्च पुव्वच्चियं तु, कप्पियं अच्चिय पदं तं पुव्वं वत्तव्वमिति । जदा बहू पया कप्पिज्जंति, दप्पो कप्पो पमाओ अप्पमातो, तदा बहुआण अच्चिय अंते, अंतपदं अप्पमातो, सो पुव्वं वत्तव्वो ।

अहवा अप्पं च एत्थ वच्चं, तेण वा पुव्वं भणामो । जयणा इति जयणपडिसेवणा । तेण इति कारणेण । पडिलोम इति पच्छाणुपुव्वीत्यर्थः । निश्चयतः इदं कारणं वयमिच्छमाणा कप्पियायाः पूर्वं निपातनं कृतवंतः ।

> ण पमादो कातव्वो, जतण-पडिसेवणा अतो पढमं ।
> सा तु अणाभोगेणं, सहसक्कारेण वा होज्जा ॥६५॥

जम्हा पव्वयंतस्सेव पढमं अयमुवदेसो दिज्जति "अप्रमाद. करणीयः सदा प्रमादवर्जितेन भवितव्यं ।" अतो एतेण च कारणेणं, जयणपडिसेवणाए पुव्विं णित्रार्थं इच्छामो, ण तु अप्पसरमच्चियं वा काउं । बंधाणुलोमताए वा अंते अप्पमत्तपडिसेवणा भणिता, अत्यतो पुण वक्खाणंतेहिं पढमं वक्खाणिज्जति तेण अणुलोमा चेव एसा, अत्थओ ण पडिलोमा, सिद्धं अणुलोमक्खाणं । सा अप्पमायपडिसेवणा दुविहा – अणाभोगा, हव्वतो अ[3] । "चरिमा तु" एयं चेव पयं विपट्टतरं णिक्खिवति । सा उ अणाभोगेणं पच्छद्ध कंठं ॥६५॥

अणाभोगे सहस्सकारे य दो दारा । अणाभोगो णाम अत्यंतविस्मृतिः ।

---

१ क्रमोपन्यस्तानाम्. । २ गाथा ६० । ३ सहसंक्काराओ अ ।

अणाभोगपडिसेवणा सरूवं इमं –

अण्णतरपमादेणं, असंपउत्तस्स णोवउत्तस्स ।
रीयादिसु भूतत्थेसु अवट्टतो होतणाभोगो ॥९६॥

पंचविहस्स पमायस्स इंदिय-कसाय-वियड-णिद्दा-वियहा-सरूवस्स एएसिं एगतरेणावि असंपउत्तस्स अयुक्तस्येत्यर्थः, 'णोवउत्तस्स रीयातिसु भूयत्थेसु' "नो" इति पडिसेहे, उवउत्तो मनसा दृष्टिना वा, युगांतर-पलोगी । रीय त्ति इरियासमिती गहिता, आदि सद्दातो अण्णसमितीतो य । एतासु समितीसु कदाचित् विसरिएणं उवउत्तत्तणं ण कयं होज्जा अप्पकालं सरिते य मिच्छादुक्कडं देति । भूयत्थो णाम विआर-विहार-संथार-भिक्खादि संजमसाहिका किरिया भूतत्थो, धावणवग्गणादिको अभूतत्थो, अवट्टओ पाणातिवाते । एवं गुणविसिट्ठो होयणाभोगो ।

अहवा एवं वक्खाणेज्जा, असंपउत्तस्स पाणातिवातेण ईरियादिसमितीण जो भूयत्थो तंमि अवट्टंतो होतणाभोगो त्ति । सेसं पूर्ववत् । इह अणाभोगेण जति पाणातिवायं णावण्णो का पडिसेवणा ? उच्यते, जं तं अणुवउत्तभावं पडिसेवति स एव पडिसेवणा इह नायव्वा । गतो अणाभोगो ॥९६॥

इयाणि सहस्सक्कारो । तस्सिमं सरूवं –

पुव्वं अपासिऊणं, छूढे पादंमि जं पुणो पासे ।
ण य तरति णियत्तेउं पादं सहसाकरणमेतं ॥९७॥

पुव्वमिति पढमं चक्खुणा थंडिले पाणी पडिलेहेयव्वा, जति दिट्ठा तो वज्जणं । अपासिऊणं ति जति ण दिट्ठा तंमि थंडिले पाणी । छूढे पायमिति पुव्वणसियथंडिलाओ उक्खित्ते पादे, चक्खुपडिलेहिय थंडिलं असंपत्ते अतरा वट्टमाणे पादे । जं पुणो पासेत्ति "जमि" ति पुव्वमदिट्ठं पाणिणं 'पुणो" पच्छा "पस्सेज्ज" चक्खुणा । ण तरति ण सक्केति–णसणकिरियव्वावारपवियट्टं पायं णियत्तेउं । पच्छा दिट्ठ-पाणिणो उवरिं णिसितो पाओ । तस्स य संघट्टणपरितावणाकिलावणोद्दवणादीया पीडा कता । एसा जा सहस्सकारपडिसेवा । सहस्साकरणमेयं ति सहसाकरणं सहसक्करणं जाणमाणस्स परायत्तस्सेत्यर्थः । "एतमि" ति एयं सरूवं सहसक्कारस्स ।

इदाणिं सहसक्कारसरूवोवलद्धं पंचसु वि समितीसु णियोतिज्जति ।
तत्थ पढमा य इरियासमितो भण्णति –

दिट्ठे सहस्सकारे, कुलिंगादी जह असिंमि विसमे वा ।
आउत्तो रीयाती, तडि-संकमण उवहि-संथारे ॥९८॥

जतिणा असणाति-किरियापवत्तेण अप्पमत्त-ईरिओवतत्तेण दिट्ठो पाणी, कायजोगो य पुव्वपयत्तो, ण सक्कइ णियत्तेउं एवं सहसक्कारेण वावादितो कुलिंगी । आदि सद्दातो पंचिंदी वि । जहा जेण पगारेण । असी खग्गं । विसमं णिण्णोण्णतं । उवउत्तो अप्रमत्तः । तडिसंकमणं वा आउत्तो करेति । तडी नाम छिण्णटंका । उवहिं संथारगं वा उप्पाएंतो । सव्वत्थ आउत्तो जति वि कुलिंगं वावातेति तहवि अबंधको सो भणिओ ॥९८॥

चोदगाह – "किं वुत्तं कुलिंगी ? काणि वा लिंगाणि ? को वा लिंगी ? ।
पण्णवगाह –

कुच्छितलिंगकुलिंगी, जस्स व पंचेंदिया असंपुण्णा ।
लिंगिंदियाइं अत्ता, लिंगी तो घेप्पते तेहिं ॥९९॥

कु सद्दो अणिट्ठवादी, कुत्सितेंद्रिय इत्यर्थः । सेस कठं । जस्सेति जस्स पाणिणो । पंचेंदिया असंपुण्ण त्ति, अत्थि पंचिंदिया, किं तर्हि, असंपुण्णा, जहा असण्णिणो परिफुडत्थपरिच्छेदिणो" ण भवंति त्ति भणियं भवति । एरिसे अत्थे एयं वयणं ण भवति, इमं तु पंच ण [1]पुज्जंति त्ति भणिय भवति । द्वीद्रियादारभ्य यावत् चउरिंद्रिय इत्यर्थः । सो कुलिंगी । लिंगमिति जीवस्य लक्षणं, यथा अप्रत्यक्षोऽप्यग्निर्धूमेन लिंग्यते ज्ञायते इत्यर्थः। एवं लिंगाणिंद्रियाणि, अतो आत्मा लिंगमस्यास्तीति लिंगी । आत्मा लिंगी कहं घेप्पते ? तेहिं इंद्रियैरित्यर्थः ॥९९॥

चोदगाह – "कहं पुण सो अप्पमत्तो विराहेति ?" ।

पण्णवगाह – जह असिंमि विसमे वा । एयस्स वक्खाणं –

असि. कंटकविसमादिसु, गच्छंतो सिक्खिओ वि जत्तेणं ।
चुक्कइ एमेव मुणी, छलिज्जती अप्पमत्तो वि ॥१००॥

असी खग्गं । जहा तस्स धाराए गच्छंतो सुसिक्खिओ वि आउत्तो वि लंछिज्जइ । कटगाग्गिणो वा जो पहो तेण गच्छंतस्स आउत्तस्स वि कंटओ लग्गति । विसमं णिण्णोण्णतं । आति सद्दाओ णदीतरणाइसु जत्तेणं प्रयत्नेन । चुक्कति छलिज्जति । एस दिट्ठंतो । इणमत्थोवणओ एवमवधारणे । मुणी साहू । इरियासमिती गता ॥१००॥

इदाणिं भासासमिती ।

कोति साहू सहसा सावज्जं भासं भासेज्ज । ण य सक्किओ णिग्घेत्तुं वाओगो[2] । एवं भासा समितीए सहस्सक्कारो । सो अज्झत्थविसोहीए सुद्धो चेव ।

एत्थ भासासमितिसहस्सक्कारो भण्णति –

अस्संजतमतरंते, वट्टइ ते पुच्छ होज्ज भासाए ।
वट्टति असंजमो से, मा अणुमति केरिसं तम्हा ॥१०१॥

असजतो गिहत्थो । अतरंतो गिलाणो त साहू पुच्छेज्ज सहसक्कारेण – "वट्टति त्ति" लट्ठंति । तं च किं असंजमो असंजमजीवियं वा । एत्थ साहुणो सुहुमवायाजोगेहिं अणुमती लब्भति । एवं होज्ज भासाए त्ति भासासमितीए सहस्सक्कारो । वट्टति असंजमो से गयत्थ । मा अणुमती भविस्सति, तम्हा एवं वत्तव्वं, केरिसं ? इह वयणे अत्थावत्तिपओगेण वि सुहुमो वि अणुमतिदोसो ण लब्भति । गता भासासमिती ॥१०१॥

इदाणिं तिण्णि समितीओ जुगवं भण्णति –

दिट्ठमणेसियगहणे, गहणिक्खेवे तहा णिसग्गे वा ।
पुव्वाइट्ठो जोगो, तिण्णो सहसा ण णिग्घेत्तुं ॥१०२॥

दिट्ठमणेसियगहणे त्ति एस एसणासमिती । गहण-णिक्खेवे त्ति आयाण-णिक्खेवसमिती । तहा णिसग्गे त्ति एस परिठावणिया समिती । पच्छद्धेण । तिण्ह वि सरूवं कठं । एसणासमितीए उवउत्तो ण दिट्ठमणेसणिज्जं पच्छा दिट्ठं ण सक्किओ गहणजोगा णियत्तेउ । एवं सहसक्कारो एसणासमितीए भवति । एवं गहण-णिक्खेवेसु वि । पुव्वाइट्ठो ण सक्कितो जोगो णिग्घेत्तुं । तहा णिसग्गे वि भणिओ सहसकारो ॥१०२॥

---

१ पूर्यन्त । २ वाग्योग ।

एवं अणाभोगेण वा सहसक्कारेण वा पडिसेविए वि बंधो ण भवति ।

जतो भण्णइ –

पंचसमितस्स मुणिणो, आसज्ज विराहणा जदि हवेज्जा ।
रीयंतस्स गुणवओ, सुव्वत्तमबंधओ सो उ ॥१०३॥

पंचहिं समितीहिं समियस्स जयंतस्सेत्यर्थ । मुणिणो साधोः । आसज्ज त्ति एरिसमवत्थं पप्प पाणिविराहणा भवति । रीयंतस्स कायजोगे पवत्तस्स । गुणवतः गुणात्मनः । सुव्वत्तं परिस्फुटं । अबंधओ सो उ । "तु" सद्दो अवधारणे । गया अप्पमायपडिसेवणा ॥१०३॥

इदाणिं अवसेसाओ तिण्णि ।

एतासिं कतरा पुव्वं भासियव्वा ? उच्यते, अल्पतरत्वात् तृतीया वक्तव्या, पच्छा पढमा बितिया य एगट्ठा भण्णिहिति ।

सा य पमाय-पडिसेवणा पंचविहा –

कसाय-विकहा-वियडे, इंदिय-णिद्द-पमायपंचविहे ।
कलुसस्स य णिक्खेवो, चउविधो कोधादि एक्कारो ॥१०४॥

कसायपमादो १, विगहापमादो २, विगडपमादो ३, इंदियपमादो ४, णिद्दापमादो ५, कलुस्स य त्ति कसायपडिसेवणा गहिता । "च" सद्दाओ कसाया चउव्विहा—कोहो माणो माया लोभो । एतेसिं एक्केकस्स णिक्खेवो चउव्विहो दव्वादी कायव्वो । सो य जहा आवस्सते तहा दट्ठव्वो ।

तत्थ कोहं ताव भणामि । कोहादि एक्कारेत्ति । कोहुपत्ती जातं आदिं काउं एक्कारस भेदो भवति । ते य एक्कारसभेया –

अप्पत्तिए[1] असंखड[2]-णिच्छुभणे[3] उवधिमेव[4] पंतावे[5] ।
उद्दावण कालुस्से, असंपत्ती चेव संपत्ती ॥१०५॥

अप्पत्तियं[1] पच्चामरिसकरणं । असंखडं[2] वाचिगो कलहो । तमुवायं[3] करेति जेण स गच्छातो णिच्छुभति । उवकरणं[4] वा वाहिं घत्त त्ति हारावे त्ति वा । पंतावणं[5] लगुडादिभिः । उद्दवणं मारणं । कालुस्से कसा उप्पत्ती घेप्पति । अप्पत्तियादि-जाव-पंतावणा असंपत्ति-संपत्तीहिं गुणिया दस । आदिकसायउप्पत्तीए सहिता एते एक्कारस ॥१०५॥

इमं पच्छित्तं –

लहुओ य दोसु दोसु अ, गुरुगो लहुगा य दोसु ठाणेसु ।
दो चतुगुरु दो छल्लहु, अणवट्ठेक्कारसपदासु ॥१०६॥

आदिकसाउप्पत्तीए लहुओ । अप्पत्तीए असंपत्तीए लहुगो, संपत्तीए मासगुरुं । असंपत्तीए असंखडे मासगुरुं, संपत्तीए ड्ढ । णिच्छुभणे ड्ढ, संपत्तीए ड्ढा । उवकरणस्स हारवणे असंपत्तीए ड्ढा, संपत्तीए फुं । पंतावणस्स असंपत्तीए फुं, संपत्तीए अणवट्ठप्पो । एव उद्दवणवज्जा एक्कारसपदा ॥१०६॥

अहवा एक्कारसपदा आदिकसाउप्पत्तीकारण वज्जेऊण उद्दावणसहिया एक्कारस ।

अहवा गाथा –

लहुगो गुरुगो गुरुगो, दो चउलहुगा य दो य चउगुरुगा ।
दो छल्लहु अणवट्ठो, चरिमं एक्कारसपयाणि ॥१०७॥

इमा रयणा – अप्पत्तीए संपत्तीए मासलहुं, संपत्तीए मासगुरुं ।
असंखडे असंपत्तीए मासगुरुं, संपत्तीए ङ्क ।
णिच्छुभणे असपत्तीए ङ्क, संपत्तीए ङ्का ।
उवकरणहारवणस्स असंपत्तीए ङ्का, संपत्तीए फुं ।
पंतावणस्स असंपत्तीए फुं सपत्तीए अणवट्ठप्पो ।
उद्दवणे पारंची । एव वा एक्कारसपदा ॥१०७॥

अहवण्णो आदेसो भण्णति –

लहुओ य दोसु य, गुरुओ लहुगा य दोसु ठाणेसु ।
दो चउगुरु दो छल्लहु, छगुरुआ छेद मूलदुगं ॥१०८॥

एए पण्णरसा पायच्छिता । एतेसिं ठाणट्ठाणणियोयणा भण्णति ।

चोदगाह – अच्छतो ताव ट्ठाणणियोयणं, इद ताव णाउमिच्छामि कहमप्पत्तियमुप्पण्णं ? ।

पण्णवगाह –

सहसा व पमादेणं, अप्पडिवंदे कसाइए लहुओ ।
अहमवि य ण वंदिस्सं, असंप-संपत्ति लहुगुरूओ ॥१०९॥

एगेण साहुणा साहू अभिमुहो दिट्ठो । सो य तेण वंदिओ । तेण य अण्णकिरियावावारोवउत्तेण अण्णतरपमायसहितेण वा "अप्पडिवदे" ति तस्स साहुस्स वंदमाणस्स ज त पडिवदणं ण पडिवंदणं अप्पडिवंदणं । अहमणेण ण वंदित्तो त्ति कसातितो । एव तमप्पत्तियमुप्पण्णं ।

इदाणिं णियोयणा –

तस्सेदं कसातियमेत्तस्स चेव लहुओ । तदुत्तरं कसातितो एवं चिंतेति-जया एसो वदिस्सति तया अहमपि चेयं न पडिवदिस्सं । तस्स असंपत्तीए मासलहु । संपत्तीए मासगुरुं । अक्खरत्थो कंठो ॥१०९॥

एवमसंखडे वी, असंपगुरुगो तु लहुग संपत्ते ।
णिच्छुभणमसंपत्ते, लहुच्चिय णीणिते गुरुगा ॥११०॥

असंखडे असंपत्तीए मासगुरूं ङ्क । णिच्छुभणे असंपत्तीए ङ्क । संपत्तीए ङ्का । णीणितो णाम णिच्छूढो धाडितेत्यर्थ. ॥११०॥

उवधी हरणे गुरुगा, असंप-संपत्तिओ य छल्लहुया ।
पंतावणसंकप्पे, छल्लहुया अचलमाणस्स ॥१११॥

उवहिं हरामि वा हारेमि वा असंपत्तीए ङ्का संपत्तीए फुं । पतावण संकप्पो णाम जट्ठि-मुट्ठि-कोप्पर-प्पहारेहि गहणामि त्ति चिंतयति । अचलमाणस्स त्ति तदवस्थस्सेव कायकिरियमपुंजंतस्स फुं ॥१११॥

पहरणमग्गणे छग्गुरु, छेदो दिट्ठंमि अट्ठमं गहिते ।
उग्गिण्ण दिण्ण अमए, णवमं उद्दावणे चरिमं ॥११२॥

इतो इतो पहरणं लउडादि मग्गिउमारद्धो, तत्थ से फुं । तेण य मग्गंतेण दिट्ठं, चक्खुणिवाए कयमेत्ते चेव च्छेदो । गंतूण हत्थेण गहियं, एत्थ से अट्ठमं । मासलहूआतो गणिज्जंतं मूलं अट्ठमं भवति, जस्स रुसिम्रो तस्स उग्गिणं पहरणं णवमं भवति, दिण्णे पहारे जति ण मतो तहा वि णवमं चेव, अणवट्ठप्पं ति भणियं होति । पहारे दिण्णे मतो सिया चरिमं । चरिमं णाम पारंची, चरिमावस्थितत्वात् । पढम-बितिय-ततियआदेसाण सामण्णलक्खणागाहा ॥११२॥

विसेसओ पढमा एसस्सिमा –

अप्पत्तियादि पंच य, असंप-संपत्ति संगुणं दसओ ।
कोधुप्पादणमेव तु, पढमं एक्कारस पदाणि ॥११३॥

अप्पत्तिय पदं आदिं काउं जाव पंतावणं ताव पंचप्पदा । एते असंपत्ति-संपत्तिपदेहिं गुणिता दस भवंति । एयं तिण्ह वि आदेसाणं सामण्णं । इमं पढमादेसे वइसेसयं कोहउप्पायणमेव उ पढमं, एतेण सहिता एक्कारस पदा भवंति । सेसं कंठं ॥११३॥

एवं कोवि अहिकरणं काउं –

तिव्वाणुबद्धरोसो, अचयंतो धरेत्तु कुसलपडिसिद्धं ।
तिण्हं एगतराए, वच्चंते अंतरा दोसा ॥११४॥

तिव्वो अणुबद्धो गृहीत्वेत्यर्थः । तिव्वेण वा रोसेण अणुबद्धो अप्पा जस्स सो तिव्वाणुरोसबद्धो । अचएंतो असक्कंतो धरेत्तुमिति खमिउं । भावकुसला तित्थकरा, पडिसिद्धो णिवारितो, कोह इति वयणं दट्ठव्वं । एवं सो तेण तिव्वेण रोसेण अणुबद्धो । जेण से सह अहिकरणं समुप्पण्णं तं पासितुमसक्केंतो गणातोवच्चितु-मारद्धो । तिण्हमेगतरापत्ति वक्खमाणं । अंतरा इति मूलगणातो णिग्गयस्स अण्णं अगणं अपावेंतस्स अतरं भवति । दोस इति विराहणा ॥११४॥

तिण्हमेगतराए त्ति पदस्स वक्खा –

संजमआतविराधणा, उभयं वा ततियगं च पच्छित्तं ।
णाणादितिगं वा वि, अणवत्थादि तिगं वा वि ॥११५॥

संजमो सत्तरसविहो, तस्स एगभेयस्स वा विराहणं करेति । आत इति अप्पा, तव्विराहणं वा [1]वाल-क्खाणु-कंटादीहिं वा । उभयं णाम संजमो आया य । विराहणा सद्दो पत्तेगं ।

अहवा तिगं नाण-दंसण-संजमविराहणाणं तिगं, से पच्छित्तं भवति ।

अहवा तिगं णाणविराहणा सुतत्थे अगेण्हंतस्स विस्सरियं अपुच्छंतस्स, दंसणविराहणा अपरिणतो चरगादीहिं दुग्गाहिज्जति, चरित्तविराहणा एगागी इत्थिगम्मो भवति ।

---

१ व्याल:=सर्प: ।

अहवा तिगं, अणवत्थादी तिगं वा वि एवं सो गणाओ णिग्गओ, अण्णोवि साहू चिंतेति अहं पि णिग्गच्छामि, अणवत्थीभूतो गच्छधम्मो। न जहा वाइणो तहा कारिणो मिच्छत्तं जणेंति अहिणवधम्माणं। विराहणा आयसंजमो ॥११५॥ आयविराहणा खाणु-कंटगादीसु।

संजमविराहणा इमा –

अहवा वातो तिविहो, एगिंदियमादी-जाव-पंचिंदी।
पंचण्ह चउत्थाई, अहवा एक्कादि कल्लाणं ॥११६॥

अहव त्ति विकप्पदरिसणे। अवादो दोसो। तिविहो त्ति एगिंदियावातो, विगिलिंदियावातो, पंचेदियावातो।

अहवा "वातो तिविहो" त्ति पच्छित्तवातो तिविहो। सो य एगिंदियादि जाव पंचेंदिएसु वावातिएसु भवति सो इमो। पंचण्ह त्ति एगेंदिया-जाव-पंचेंदिया, चउत्थादि ति चउत्थं आदि काउं-जाव-बारसमं। एगिंदिए चउत्थं। बेइंदिए छट्ठं। तेइंदिए अट्ठमं। चउरिंदिए दसमं। पंचेंदिए बारसमं। एक्को आएसो।

अहवा एगिंदिए एगकल्लाणयं-जाव-पंचिंदिए पंचकल्लाणय। बितिओ आदेसो। एतेसु जो एगिंदिएसु पच्छितावाओ सो जहण्णो। विगलिंदिएसु मज्झिमो। पचेंदिएसु उक्कोसो। एस तिविहो पच्छिता-वाओ। एए दो आदेसा। दाणपच्छित्तं भणितं ॥११६॥ अहवा दो एए।

इमो ततिओ आवत्ति पच्छित्तेण भण्णति –

छक्काय चउसु लहुगा, परित्त लहुगा य गुरुग साधारे।
संघट्टण परितावण, लहुगुरु अतिवायणे मूलं ॥११७॥

छक्काय त्ति पुढवादी-जाव-तसक्काइया। चउसु त्ति, एएसिं छण्हं जीवणिकायाणं चउसु पुढवादिवा-उक्काइयंतेसु संघट्टणे लहुगो, परितावणे गुरुगो, उद्दवण चउलहुगा। परित्तवणस्सइकाइए वि एवं चेव। साहारण-वणस्सतिकाइए संघट्टणे मासगुरुं, परितावणे ङ्क, उद्दवणे ङ्का। संघट्टण-परितावणे त्ति वयणा। सुत्तत्थोलहुगुरुगा इति चउलहुं चउगुरु च गहितं। सेसा पच्छित्ता अत्थतो दट्ठव्वा। पंचिंदिय संघट्टणे छगुरुगा, परितावेइ छेओ, उद्दवेति मूलं। दोसु अणवट्ठी, तिसु पारंची। एस अक्खरत्थो। इमो वित्थरओ अत्थो। पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-परित्तवणस्सतिकाए य एतेसु संघट्टणे मासलहुं, परितावणे मासगुरुं, उद्दवणे ङ्क। अणंतवणस्सतिकाये संघट्टणे मासगुरुं, परितावणे ङ्क, उद्दवणे ङ्का। एवं बेइंदिएसु चउलहु [1]आढत्तं छल्लहुएट्ठाति। तेइंदिएसु चउगुरु आढत्तं छग्गुरुए ट्ठाति, चउरिंदियाण छल्लहु आढत्तं छेए ट्ठाति. पंचदियाण छग्गुरुगाढत्तं मूले ट्ठाति, एस पढमा सेवणा। अतो परं अभिक्खासेवणाए हेट्ठा ट्ठाणं मुच्चति, उवरिक्कं वड्ढिज्जति। पुढवाति-जाव-परित्तवणस्सइकाइयाण वितियवाराए मासगुरुगाति चउगुरुगे ट्ठाति, एव-जाव-अट्ठमवाराए चरिमं पावति, णवमवाराए परितावणे चेव चरिम, दसमवाराए संघट्टणे चेव चरिमं, एवं सेसाण वि सट्ठाणातो चरिमं पावेयव्वं। एस कोहो भणिओ। सेसकसाएसु वि यथा संभवं भाणियव्वं। कसाय त्ति दारं गयं ॥११७॥

इयाणिं कह त्ति दारं –

इत्थिकहं भत्तकहं, देसकहं चेव तह य रायकहं।
एता कहा कहंते, पच्छित्ते मग्गणा होंति ॥११८॥ दारगाहा

---

१ आरम्भ।

पच्छद्धं कंठं । इत्थिकह त्ति दारं । इत्थीण कहा इत्थिकहा ।

सा चउव्विहा इमा – ॥११८॥

जातीकहं[1] कुलकहं[2], रूवकहं[3] बहुविहं च सिंगारं[4] ।
एता कहा कहिते, चतुजमला कालगा चतुरो ॥११९॥

एता इति जातिमादियाओ । चउजमल त्ति चत्तारि "जमला" मासट्ठविज्जंति । माससामण्णे किं गुरुगा लहुगा ? । भण्णति, "कालगा" कालग त्ति गुरुगा मासा । तेहिं चउहिं मासेहिं चउगुरुग त्ति भणियं भवति । एरिसगा चउगुरुगा चउरो भवंति । जाइकहाए चउगुरुं, कुलकहाए चउगुरु, रूवकहाए चउगुरुं, सिंगारकहाए चउगुरुं । एवं चउरो । जातीए तवकालेहिं लहुगं, कुले कालगुरुं तवलहुगं, रूवे तवगुरुगं काललहुं, सिंगारे दोहिं वि गुरुं ।

अहवा चत्तारि जमला जातिमातिसु भवति–के ते कालगा चउरो चउगुरुगं ति भणियं भवति ? तवकालविसेसो तहेव ।

अहवा चउरो त्ति संखा, जमलं दो, ते य तवकाला, ताणि तवकाला जुयलाणि चउर त्ति भणियं भवति । कालगा इति बहुवयणा चउगुरु, ताणि चउगुरुगाणि चउरो ।

अग्गद्धस्स वक्खाणगाहा इमा –

माति-समुत्था जाती, पिति-वंस कुलं तु अहव उग्गादी ।
वण्णा ऽऽकिति य रूवं, गति-पेहिति-भास सिंगारे ॥१२०॥

माउप्पसादा रूवं भवति, जहा सोमलेराण, एवं जा कहा सा जाइकहा । पिउपसादा रूवं भवति, जहा एगो सुवण्णगारो अच्चत्थं रूवस्सी गणिगाहिं भाडिं दाउं णिज्जति रिउकाले, जा तेण जाया सा रूवस्सिणी भवति, एवं कुल-कहा । सेसं कंठ ॥१२०॥

इत्थीकहा दोसदरिसणत्थं –

आय-पर-मोहुदीरणा, उड्डाहो सुत्तमादिपरिहाणी ।
बंभव्वते अगुत्ती, पसंगदोसा य गमणादी ॥१२१॥

इत्थिकहं करेंतस्स अप्पणो मोहोदीरणं भवति, जस्स वा कहेति परस्स तस्स मोहुदीरणं भवति । इत्थिकहं करेंतो सुओ लोएणं उड्डाहो – "अहो झाणोवयुत्ता तवस्सिणो" जाव इत्थिकहं करेंति तावता सुत्त-परिहाणी । आदिसद्दातो अत्थस्स, अण्णेसिं च संजमजोगाणं । बंभव्वए अगुत्ती भवति ।

भणियं च –

गाहा – वसहि[1] कह[2] निसे[3]ज्जिंदि[4] य, कुड्डंतर[5] पुव्वकीलिय[6] पणीते[7] ।
अतिमायाहार[8] विभूसणा[9] य, णव बंभचेरगुत्तीओ ॥" ॥३२॥

एवं अगुत्ती भवति । पसंग एव दोसो पसंगदोसो कहापसंगाओ वा दोसा भवति ते य गमणादी गमणं उण्णिक्खमइ । "आदि" सद्दाओ वा कुलिंगी भवति, सलिंगट्ठितो वा अगारिं पडिसेवति संजतिं वा हत्थकम्मं वा करेति । इत्थिकह त्ति दारं गतं ॥१२१॥

इदाणिं भत्तकह त्ति दारं –

भत्तस्स कहा भत्तकहा ।

सा चउव्विहा इमा –

आवायं णिव्वावं, आरंभं बहुविहं च णिट्ठाणं ।
एता कथा कथिंते, चउजमला सुक्किला चउरो ॥१२२॥

चउजमला सुक्किला चउरो, वक्खाणं तहेव, तवकालविसेसियं, णवरं सुक्किलत्ते आलावो । सुक्किला णाम लहुगा ।

अग्गद्धस्स वक्खाण –

सागघतादावावो, पक्कापक्को उ होइ णिव्वावो ।
आरंभ तित्तिरादी, णिट्ठाणं जा सतसहस्सी ॥१२३॥

सागो मूलगादि, सागो घय वा एत्तियं गच्छति । पक्कं अपक्कं वा परस्स दिज्जति सो णिव्वावो । आरंभो एत्तिया तित्तिरादि मरति । णिट्ठाणं णिप्फत्ती, जा लक्खेणं भवति ॥१२३॥

आहारकहा-दोस-दरिसणत्थं गाहा –

आहारमंतरेणाति, गहितो जायई स इंगालं ।
अजितिंदिया ओयरिया, वातो व अणुण्णदोसा तु ॥१२४॥

अंतरं णाम आहाराभावो । आहाराभावे वि अच्चत्थं गिद्धस्स सतः जायते स इंगालदोसो । किं चान्यत् – लोके परिवातो भवति । अजिइंदिया य एते, जेण भत्तकहाओ करेंता चिट्ठंति । रसणिंदियजये य सेसिंदियजतो भवति । ओदरिया णाम जीविता हेउं पव्वइया, जेण आहारकहाए अच्छंति, ण सज्झाए सज्झाणजोगेहिं । किं चान्यत्–अणुण्णादोसो य त्ति । गेहीओ सातिज्जणा, जहा अंतदुट्ठस्स भाव-पाणातिवातो, एवं एत्थ वि सातिज्जणा सातिज्जणाओ य छज्जीवकायवहाणुण्णा भवति । "च" सद्दाओ भत्तकहा-पसगदोसा, एसणं ण सोहेति । आहारकह त्ति दार गतं ॥१२४॥

इयाणिं देसकहा –

छंदं विधीं विकप्पं, णेवत्थं बहुविहं जणवयाणं ।
एता कथा कथिंते, चतुजमला सुक्किला चउरो ॥१२५॥

पच्छद्धं तहेव । अग्गद्धस्स इमा वक्खा –

छंदो गम्मागमं, विधी रयणा भुंजते व जं पुव्विं ।
सारणीकूवविकप्पो, णेवत्थं भोयडादीयं ॥१२६॥

छंदो आयारो । गंमा जहा लाडाणं माउलदुहिया, माउसस्स धूया अगमा । विही नाम वित्थरो, रयणा णाम जहा कोसलविसए आहारभूमी हरितोवलित्ता कज्जति, पउमिणिपत्ताइएहिं भूमी अत्थरिज्जति, ततो पुप्फोवयारो कज्जति, तओ पत्ती ठविज्जति, ततो पासेहिं करोडगा कट्ठोरगा मंकुया

[१]सिप्पीओ य ट्ठविज्जंति । भुंजते य जं पुव्वं जहा कांकणे पेया, उत्तरावहे सत्तुया, अण्णेसु वा जं विसएसु दाऊण पच्छा अणेगभक्खप्पगारा दिज्जंति । सारणीकूवाईओ विकप्पो भण्णति । णेवत्थं भोयडादीयं भवति । "भोयडा" णाम जा लाडाणं कच्छा सा मरहट्ठयाणं भोयडा भण्णति । तं च बालप्पभिति इत्थिया ताव बंधंति जाव परिणीया, जाव य आवण्णसत्ता जाया, ततो भोयणं कज्जति, सयणं मेलेऊण पडओ दिज्जति, तप्पभिइं फिट्टइ भोयडा ॥१२६॥

इदाणिं देसकहा-दोस-दरिसणत्थं भण्णति –

राग-द्दोसुप्पत्ती, सपक्ख-परपक्खओ य अधिकरणं ।
बहुगुण इमो त्ति देसो, सोत्तुं गमणं च अण्णेसिं ॥१२७॥

देसकहाते जं देसं वण्णेति तत्थ रागो इयरे दोसो । राग-दोसओ य कम्मबंधो । किं च सपक्खेण वा परपक्खेण वा सह अहिकरणं भवति । कहं ? साधू एगं विसयं पसंसति अवरं णिंदति, ततो सपक्खे पर-पक्खेण वा भणितो तुमं किं जाणसि कूवमंडुको, तो उत्तरपच्चुत्तरातो अधिकरणं भवति । किं चान्यत्, देसे वण्णिज्जमाणे अण्णो साहू चिंतेति "बहुगुणो इमो देसो वण्णिओ" सोउं तत्थ गच्छति । देसकह त्ति दारं ॥१२७॥

इदाणिं रायकहा –

राज्ञो कहा राजकहा सा चउव्विहा –

अइयाणं णिज्जाणं, बलवाहणकोसमेव संठाणं (कोठारं) ।
एता कहा कहंते, चतुजमला कालगा चउरो ॥१२८॥

बलवाहणं ततिओ भेओ । कोसमेव कोट्ठागारं चउत्थो भेओ । केपि एयं एवं पढंति – "कोसमेव सट्ठाणं" । तत्थ बल-वाहणकोसमेव सव्वं एक्कं । संठाणमिति चउत्थं । सेसं गाहाए कंठं । १२८॥

पुरिमद्ध-वक्खाणं इमं –

अज्ज अतियाति णीति व, णिंतो एंतो व सोभए एवं ।
बल-कोसे य पमाणं, संट्ठाणं वण्ण नेवत्थं ॥१२६॥

अज्ज इति अज्जदिणं । अतिजाति पविसति । णीति णिग्गच्छति । जातस्स रण्णो णितणितस्स विभूती तं दट्ठूणं अन्नेसिं पुरत्तो सिलाघयति ।

अहवा सो राया धवलतुरगादिरूढो कयसेहरो विलेवणोवलित्तगत्तो पुरओ पउंजमाणजयसद्दो अणेग-गय-तुरग-रह-कयपरिवारो णिंतो अयंतो वा एवं सोभति । बलं सारीरं सेनाबलं वा । वाहणं । एत्तियं तेसु एत्तियं पमाणं । एयं कहं करेति । कोसो जहिं रयणादियं दव्वं । कोट्ठागारो जत्थ सालिमाइ धण्णं । तंमि वा एत्तियं पमाणं । जे पुण संट्ठाणं पढंति तस्सिमं वक्खाणं "संट्ठाणं" ति वण्ण-णेवत्थं, संट्ठाणं रूवं, वण्णो सुद्धसामादि, णेवत्थं परिहाणं ॥१२६॥

---

१ सूची देशी ।

रायकहा-दोस-दरिसणत्थं भण्णति –

चारिय चोराहिमरा-हितमारित-संक-कातु-कामा वा ।
भुत्ताभुत्तोहावण करेज्ज वा[1] आसंसपयोगं ॥१३०॥

साहू णिलयट्ठिता रायकहं कहेमाणा अच्छति । ते य सुता रायपुरिसेहिं । ताण य रायपुरिसाण एवमुवट्ठियं चित्तस्स-जइ परमत्थेणिमे साहू तो किमेएसिं रायकहाए । णूणं एते चारिया भंडिया, चोरा वा वेस परिच्छण्णा । अहिमरा[2] णाम दद्दरचोरा । अस्सरयणं वाहियं केणइ रण्णो । रण्णो वा सयणो केणइ अविट्ठेण मारितो । एतेसु संकिज्जति ।

अहवा चारिया चोरेसु संका । अहिमरत्तं अस्सहरणं वा मारणं वा काउ कामा । वा विकप्पदरिसणे ।

अहवा रायकहाए रायदिक्खियस्स अणुसरणं, भुत्तभोगिणो सइकरणं, इतरेसु कोउयं । पुनः स्मरणकोउएणं ओहावणं[3] करेज्ज, कारिज्ज वा आसंस-पओगं । आसंस पओगो नाम निदानकरणं । रायकह त्ति दारं गयं ॥१३०॥

इदाणिं वियडे त्ति दारं –

वियडं गिण्हइ वियरति, परिभाएति तहेव परिभुंजे ।
लहुगा चतु जमलपदा, मददोस अगुत्ति गेही य ॥१३१॥

वियडं मज्जं, तं सड्ढघराओ आवणाओ वा गेण्हइ । केवलं एयं बितियपदं । वितरइ त्ति केणइ साहुणा आयरियाती कोइ पुच्छितो अहमासवं गेण्हामि, सो भणइ–एवं करेहि, एयं वितरणं । एतं पढम-पयं । वंघाणुलोमा गेण्हण पदातो पच्छा कयं । परिभाएति त्ति देति परिवेसयतीत्यर्थः । एतं ततियपदं । परिभुंजति अभ्यवहरतीत्यर्थः । चउत्थं पदं । कमसो दुट्ठतराणि । पच्छित्तं भण्णति । लहुगा इति चउलहुगा ते चउरो भवंति । कहं ? वितरमाणस्स चउलहुं, गेण्हमाणस्स वि चउलहुं, परिभाएमाणस्स वि चउलहुं, भुंजमाणस्स वि चउलहु । जमलपदं णाम तवकाला । तेहिं विसेसिया कज्जंति । पढमपए दोहिं लहु, बितियपदे कालगुरुं, ततियपदे तवगुरुं, चउत्थे दोहिं पि गुरुं, दोसदरिसणत्थ भण्णइ । मददोस अगुत्ति गेधी य । "मददोसो" नाम –

"मद्यं नाम प्रचुरकलहं, निर्गुणं नष्टधर्मं,
निर्मर्यादं विनयरहित, नित्यदोष तथैव ।
निस्साराणां हृदयदहनं, निर्मितं केन पुंसां,
शीघ्रं पीत्वा ज्वलितकुलिशो, याति शक्रोऽपि नाशम् ॥१॥

वैरूप्यं व्याधिपिंडः, स्वजनपरिभवः कार्यकालातिपातो,
विद्वेषो ज्ञाननाश. स्मृतिमतिहरण विप्रयोगश्च सद्भिः ।
पारुष्यं नीचसेवा, कुलबलतुलना धर्मकामार्थहानिः,
कष्टं भोः षोडशैते, निरुपचयकरा मद्यपानस्य दोषाः ॥२॥"

---

१ वासंसप्पओगं । २ अभिमरा (मारा) । ३ अपभावणं ।

"अगुत्ती" णाम अणेगाणि विप्पलवति वायाए, काएण णच्चति, मणसा बहुं चिंतागुलो भवति। "गेही" नाम अत्यर्थमासक्तिः मद्येन विना स्थातुं न शक्नोति। वियडेत्ति दारं गय ॥१३१॥

इदाणिं इंदिए त्ति दारं –

रागेतर गुरुलहुगा, सद्दे रूवे रसे य फासे य।
गुरुगो लहुगो गंधे, जं वा आवज्जती जुत्तो ॥१३२॥

मायालोभेहिंतो रागो भवति। कोहमाणेहिं तो दोसो भवति। सद्दे रूवे रसे फासे य एतेसु चउसु इंदियत्थेसु रागं करेंतस्स चउगुरुगा पत्तेयं। अह तेसुं दोसं करेति तो चउलहुयं पत्तेयं। गंधे रागं करेति मासगुरुं, दोसं करेति मासलहुं। अह सचित्त-पइट्ठिते गंधं जिग्घति मास गुरुं, अचित्त-पइट्ठिते मासलहुं। जं वा आवजतित्ति जिग्घमाणो जं संघट्टणपरितावणं करेति तण्णिप्फण्णं दिज्जति। अहवा जं वत्ति अनिर्दिष्ट-स्वरूपं। आवज्जति पावति। किं च तं संघट्टण दीयं जुत्तोत्ति एगिंदियाणं-जाव-पंचेंदियाणं एत्थ पच्छित्तं दायव्वं। "छक्काय चउसु लहुगा गाहा॥ इंदिए त्ति दारं गयं ॥१३२॥

इदाणिं णिद्दत्ति दारं –

सा पंचविहा – णिद्दा, निद्दानिद्दा, पयला, पयला पयला, त्थीणद्धी –

णिद्दाति-चउक्क-सरूव-वक्खाण-गाहा –

सुहपडिबोहा णिद्दा, दुहपडिबोहा य णिद्दणिद्दा य।
पयला होति ठितस्स, पयलापयला य चंकमओ ॥१३३॥

ठितो णाम णिसण्णो उब्भतो वा गतिपरिणओ ण भवति तस्स जा णिद्दा सा पयला भवति। जो जो पुण गतिपरिणओ जा णिद्दा से भवति सा य पयलापयला भण्णति। सेसं कंठं। णिद्दादिचउक्कं पडिसिद्ध-काले आयरमाणस्स पच्छित्तं भण्णति – ॥१३३॥

दिवस णिसि पढमचरिमे, चतुक्क आसेवणे लहूमासो।
आणाणवत्थुड्डाहो, विराधणा णिद्दवुड्ढी य ॥१३४॥

"दिवसतो" चउसु वि जामेसु। "णिसा" रात्री, ताए पढमजामे चरिमे वा जामे। चउक्कं णाम णिद्दा, णिद्दानिद्दा, पयला, पयलापयला। "आसेवणं" णाम एतासु वट्टति। तत्थ से पत्तेगं पत्तेगं चउसुं वि मासलहुं। णिद्दाए दोण्ह वि लहुं, अतिणिद्दाए कालगुरुं, पयलाए तवगुरुं, अतिपयलाए दोहिं वि गुरुं। सुवंताण य इमो दोसो भगवता पडिसिद्धे काले सुवओ आणाभंगो कओ भवति, आणाभंगेण य चरणभंगो, जतो भणियं – "आणाएच्चिय चरणं, तब्भंगे जाण किं न भग्गं तु।" (३३) अणवत्थदोसो य एगो पडिसिद्ध-काले सुवति, अण्णो वि तं दट्ठुं सुवति; "एगेण कयमकज्जं करेति तप्पच्चया" गाहा। (३४) उड्डाहो य भवति – दिवसतो य सुवंतो दिट्ठो असंजएहिं, ते चिंतयंति – 'जहा एस णिक्खित्तसज्झायज्झाणजोगो सुवति तहेव लक्खिज्जति रातो रतिकिलंतो", एवं उड्डाहो भवति। अहवा भणंति – "ण कंमं ण धम्मो अहो सुव्वइत्तं"-विराहणा (३५) सुत्तो आलीवणगे डज्झेज्जा।

णिद्दवुड्ढि य यत उक्तं –

"पञ्च वर्द्धन्ति कौन्तेय ! सेव्यमानानि नित्यशः।
आलस्यं मैथुनं निद्रा, क्षुधाऽऽक्रोशश्च पञ्चमः।" ॥१३४॥

इदाणिं थीणद्धी सउदाहरणा भण्णति –

थीणद्धी किमुक्तं भवति । ? भण्णइ, इद्धं चित्तं तं थीणं जस्स अच्चंत दरिसणावरणकम्मोदया सो थीणद्धी भण्णति । तेण य थीणेण ण सो किंचि उवलभति । जहा घते उदके वा थीणे ण किंचिदुवलब्भति । एवं चित्ते वि । इमे उदाहरणा –

पोग्गल-मोयग-दंते, फरुसग वडसाल-भंजणे चेव ।
णिद्प्पमादे एते, आहरणा एवमादीया ॥१३५॥

पोग्गलं मंसं । मोयगा मोदगा एव । दंता हत्थिदंता । फरुसगो कुंभकरो । वडसाला डाली । एते पंचूदाहरणा थीणद्धीए ॥१३५॥

पोग्गलवक्खाणं –

पिसियासि पुव्व महिसिं, विगिंचितं दट्ठु तत्थ णिसि गंतुं ।
अण्णं हंतुं खइतं, उवस्सयं सेसयं णेति ॥ १३६ ॥

जहा – एगंमि गामे एगो कुडुंबी । पक्काणि य तलियाणि य तिम्मणेसु य अणेगसो मंसप्पगारा भक्खयति । सो य तहारूवाण थेराण अंतिए धम्मं सोऊण पव्वतितो । विहरति गामाइसु । तेण य एगत्थ गामे मसत्थिएहिं महिसो विकिच्चमाणो दिट्ठो । तस्स मांसअहिलासो जाओ । सो तेणाभिलासेण अव्वोच्छिण्णेणेव भिक्खं हिंडितो । अव्वोच्छिण्णेणेव भुत्तो । एवं अव्वोच्छिण्णेण वियारभूमिं गतो । चरिमा सुत्तपोरिसी कता । सज्झोवासणं[1] पडिसिया य पोरिसी । तदभिलासो चेव सुत्तो । सुत्तस्सेव थीणद्धी जाता । सो उट्ठितो गओ महिसमंडलं । अण्णं हतुं भक्खियं । सेस आगंतुं उवस्सगस्स उवरि ठवियं । पच्चूसे गुरूण आलोएति "एरिसो सुविणो दिट्ठो" । साहूहिं दिसावलोयं करेंतेहिं दिट्ठं कुणिम । जाणियं जहा एस थीणद्धी । थीणद्धियस्स लिंगपारंचियं पच्छित्तं । तं से दिण्णं ॥१३६॥

इदाणिं मोअगो त्ति –

मोयगभत्तमलद्धुं, भेत्तु कवाडे घरस्स णिसि खाति ।
भाणं च भरेत्तूणं, आगतो आवस्सए वियडे ॥१३७॥

एगो साहू भिक्खं हिंडंतो मोयगं भत्तं पासति । सुचिरं उ इक्खिय । ण लद्धं । गओ जाव तदज्झवसितो सुत्तो । उप्पण्णा थीणिद्धी । रातो तं गिहं गंतूण भेत्तूण कवाडं मोदगे भक्खयति । सेसे पडिग्गहे घेत्तुमागओ । वियडणं चरिमाते, भायणाणि पडिलेहंतेण दिट्ठा । सेसं पोग्गलसरिसं ॥१३७॥

फरुसगे त्ति –

अवरो फरुसगमुंडो, मट्टियपिंडे व छिंदितुं सीसे ।
एगंते पाडेति, पासुत्ताणं वियडणा तु ॥१३८॥

एगत्थपतिवादगोदाहरणाणं कमो उक्कमो वा ण विज्जतीति भण्णति फरुसगं ।

एगंमि महंते गच्छे कुंभकारो पव्वतितो । तस्स रातो सुत्तस्स थीणिद्धी उदीण्णा । सो

[1] पाउसिया ।

य मट्टियच्छेदब्भासा समीवपासुत्ताण साधूण सिराणि च्छिंदिउमारद्धो। ताणि य सिराणि कलेवराणि य एगंते पाडेति। सेसा ओसरिता। पुणरवि पासुत्तो। सुमिणमालोयणं पभाए। साहुसंहारणं णायं। दिण्णं से लिंगपारंचियं ॥१३८॥

दंते त्ति –

अवरो विधाडितो, मत्तहत्थिणा पुर-कवाड भेत्तूण।
तस्सुक्खणेत्तु दंते, वसहीबाहिं वियडणा तु ॥१३९॥

एगो साहू गोयरणिग्गतो हत्थिणा पक्खित्तो कह वि पलाओ। रुसिओ चेव पासुत्तो। उदण्णिा थीणद्धी। उट्ठिओ गतो। पुरकवाडे भेत्तूण गतो वावातितो। दंतमूसले घेत्तूण समागओ। उवस्सयस्स बाहिं ठवेत्ता पुणरवि सुत्तो। पभाए उट्ठितो। संज्झोवासणे सुविणं आलोएति। साहूणं दिसावलोयणं। गयदंतदरिसणं। णायं, तहेव विसज्जितो ॥१३९॥

वडसाल त्ति –

उब्भामग वडसालेण, घट्टितो के वि पुव्व वणहत्थी।
वडसालभंजणाण, उवस्सयालोयण पभाते ॥१४०॥

उब्भामगं भिक्खायरिया।

एगो साहू भिक्खायरियं गओ। तत्थ पंथे वडसालरुक्खो। तस्स साला पहं णिण्णेणं लंघेत्तु गया। सो य साधू उण्हाभिहतगाओ भरियभायणो तिसियभुक्खिओ इरिओवउत्तो वेगेण आगच्छमाणो ताए सालक्खंधीए सिरेण फिडितो। सुट्ठु परिताविओ। रुसिओ जाव पासुत्तो। थीणिद्धीतो उदिण्णा पउट्ठिओ राओ गंतूणं तं सालं गहेऊण आगओ। उवस्सय-दुवारे ठवियता। [1]वियडणे णायं थीणिद्धी। लिंग-पारंची कतो।

केइ आयरिया भणंति –

सो पुव्वभवे वणहत्थी आसी। ततो मणुय-भवमागयस्स पव्वइस्स थीणिद्धी जाया। पुव्वाभासा गंतूण वडसाल-भंजणाणयणं। सेसं तहेव ॥१४०॥

थीणद्धी-बल-परूवणा कज्जति –

केसव-अद्धबलं पण्णवेंति, मुय लिंग णत्थि तुह चरणं।
संघो व हरति लिंगं, ण वि एगो मा गमे पदोसं ॥१४१॥

केसवो वासुदेवो। जं तस्स बलं तब्बलाओ अद्धबलं थीणिद्धिणो भवति। तं च पढम-संघयणिणो, ण इदाणिं पुण सामण्णबला दुगुणं तिगुणं चउगुणं वा भवति। ई। अ एवं बलजुत्तो मा गच्छं रुसिओ विणासेज्ज तम्हा सो लिंग-पारंची कायव्वो। सो य साणुणयं भण्णति-"मुय लिंगं णत्थि तुह चरणं।" जति एवं गुरुणा भणितो मुक्कं तो सोहणं। अह ण मुयति तो समुदितो संघो हरति, ण एगो, मा एगस्स पओसं गमिस्सति। पदुट्ठो य वावादिस्सति ॥१४१॥

---

१ प्रगट करना।

लिंगावहर-णियमणत्थं भण्णति –

अवि केवलमुप्पाडे, ण य लिंग देति अनतिसेसी से ।
देसवत दंसणं वा, गेण्ह अणिच्छे पलातंति ॥१४२॥

अवि संभावणे । किं संभावयति ? इमं, जति वि तेणेव भवग्गहणेण केवलमुप्पाडेति तहवि से लिंगं ण दिज्जति । तस्स वा अण्णस्स वा । एस णियमो अणइसइणो । जो पुण अवहिणाणादि सती सो जाणति ण पुण एयस्स थीणिद्धिणिद्दोदयो भवति, देति से लिंगं, इतरहा ण देति । लिंगावहारे पुण कज्जमाणे अयमुवदेसो । देसवओ त्ति सावगो होहि, थूलग-पाणातिवायाइणियत्तो पंच अणुव्वयधारी । ताणि वा जइ ण तरसि तया दंसणं गेण्ह, दंसण-सावगो भवाहि त्ति भणियं भवति । अह एवं पि अणुणिजमाणो णेच्छति लिंगं मोत्तुं ताहे राओ सुत्तं मोत्तुं पलायंति, देसांतरं गच्छतीत्यर्थः । पमायपडिसेवण त्ति दारं गयं ॥१४२॥

इदाणिं पच्छाणु-पुव्विक्कमेण पकप्पिया पडिसेवणा पत्ता । सा पुण पत्ता वि ण भण्णति । कम्हा ? उच्यते, मा सिस्सस्सेवमवट्ठाहति "पुव्वमणुण्णा पच्छा पडिसेहो" । अतो पुव्व पडिसेहो भण्णति । पच्छा अणुण्णा भणिहिति ।

दप्पादी पडिसेवणा, णातव्वा होति आणुपुव्वीए ।
सट्ठाणे सट्ठाणे, दुविधा दुविधा य दुविधा य ॥१४३॥

दप्पिया पडिसेवणा भण्णति । आदि सद्दातो कप्पिया वि । आणुपुव्वी-गहणातो पुव्विं दप्पिय भणामि । पच्छा कप्पियं । केसु पुण ट्ठाणेसु दप्पिया कप्पिया वा संभवति ? भण्णति—जं तं हेट्ठा भणिय मूलगुण-उत्तरगुणेसु । मूलगुणे पाणातिवाताइसु, उत्तरगुणे पिंडविसोहादिसु । तत्थ मूलगुणेसु पढमे पाणातिवाते णवसु ट्ठाणेसु । सट्ठाणे सट्ठाणे वीप्सा, दुविहा दुविहा य दुविहा य तिण्णि दुगा ॥१४३॥

एएसिं तिण्ह वि दुगाणं इमा वक्खाण-गाहा –

दुविहा दप्पे कप्पे, दप्पे मूलुत्तरे पुणो दुविधा ।
कप्पम्मि वि दु-विकप्पा, जतणाजतणा य पडिसेवा ॥१४४॥

पढम-दुगे दप्पिया कप्पिया य । बितिय-दुगे एक्केक्का मूलुत्तरे पुणो दुविहा । ततिय-दुगे जा सा कप्पिया मूलुत्तरेसु, सा पुणो दुविहा—जयणाजयणासु । जयणा णाम तिपरियट्टं काऊण अप्पणा पच्छा पणगादि पडिसेवणा पडिसेवति, एस जयणा ।

अहवा पुढवाइसु सट्ठाणे सट्ठाणे दुविहा—दप्पे कप्पे य । दुतीय दुगं वीप्सा-प्रदर्शनार्थं । ततियदुगं मूलुत्तरे पुणो दुविहा पडिसेवणा ।

अहवा आणुपुव्विग्गहणे पुढवाइकाया गहिता । तेसु य दुविहा पडिसेवणा मूलगुणे वा उत्तरगुणे वा । पढम-सट्ठाण-गहणेण मूलगुणा गहिता, दुतिय-सट्ठाण-गहणेण उत्तरगुणा । मूलगुणे दुविहा—दप्पिया कप्पिया य । उत्तरगुणे वि—दप्पिया कप्पिया य । मूलगुणे जा कप्पिया उत्तरगुणे य जा कप्पिया एताओ दो वि दुविहा । जयणाते अजयणाए य । एवेयं ततियदुगं ॥१४४॥ जे सट्ठाणा पुढवादी अत्थतो अभिहिता ते दप्पओ पडिसेवमाणस्स उच्चरियं पायच्छित्तं दिज्जइ ।

पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सती चेव ।
बिय तिय चउरो, पंचिंदिएसु सट्ठाण-पच्छित्तं ॥१४५॥

एतेसु सट्ठाण-पायच्छित्तं इमं—"छक्काय चउसु लहुगा –" गाहा । एसा गाहा जहा पुव्वं वण्णिया तहा दट्ठव्वा ॥गा. ११७ पुढवाइसु संखेवओ पायच्छित्तमभिहियं ॥१४५॥

इयाणिं पुढवाइसु एक्केक्के विसेस-पायच्छित्तं भण्णति –

तत्थ पढमं पुढविक्काओ । सो इमेसु दारेसु अणुगंतव्वो ।

ससरक्खाइहत्थ[1] पंथे[2], णिक्खित्ते[3] सचित्त-मीस-पुढवीए ।
गमणाइ[4] पप्पडं[5]गुल[6], पमाण[7]-गहणे[8] य करणे[9] य[10] ॥१४६॥ द्वारगाथा

-दस दारा । एतेसिं दाराणं संखेवओ पायच्छित्तदाणं इमं –

पंचादिहत्थ पंथे, णिक्खित्ते लहुयमासियं मीसे ।
कट्ठोल्ल-करणे लहुगा, पप्पडए चेव तस पाणा ॥१४७॥

पंचादिति, ससरक्खादि सोरट्ठावसाणा एक्कारस पूढविक्काइय अत्था, एतेसु जो आदि ससरक्ख-हत्थो तंमि पणगं, सेसे पुढविक्काय-हत्थेसु पंथे य मासलहु । सचित्ते पुढविकाए अणंतरणिक्खित्ते लहुगा । जत्थ जत्थ मीसो पुढविक्काओ तत्थ तत्थ मासलहुं । मीस-पुढविक्काय दरिसणं इमं—"कट्ठोल्ल" कट्ठं णाम हलादिणा वाहियं, उल्लं णाम आउक्काएण, सो मीसो भवति । वाउल्लगमादिकरणे[1] चउलहुगा । पप्पडए व चउलहुगा । "च" सद्दाओ गमणं । अंगुलप्पमाणगहणे य चउलहुगा । पप्पडए राइविवरेसु तसा पविसंति, ते विराहिज्जंति, तक्कायणिप्फण्णं तत्थ पायच्छित्तं ॥१४७॥

इयाणिं ससरक्खादि दस दारा पत्तेयं पत्तेयं सपायच्छित्ता विवरिज्जति –

तत्थ पढमं दारं ससरक्खादि हत्थ त्ति । ससरक्खं आदिर्यस्य गणस्य सोयं ससरक्खादी गणो । कः पुनरसौ गणः ? उच्यते ।

१ पुरेकम्मे २ पच्छाकम्मे ३ उदउल्ले ४ ससिणिद्धे ५ ससरक्खे ६ मट्टि-आऊसे ।
७ हरियाले ८ हिंगुलए ९ मणोसिला १० अंजणे ११ लोणे ।
१२ गेरुय १३ वण्णिय १४ सेडिय १५ सोरट्ठिय १६ पिट्ठ १७ कुकुस १८ उक्कुडे चेव ।

एते अट्ठारस कायणिप्फण्णा पिंडेसणाए भणिया हत्था । तत्थ जे पुढविकायहत्था तेहिं इह पओयणं, ण जे आऊ वणस्सतीकाय हत्था । अतो पुढविकायहत्थाण सेसकायहत्थाण य विभागप्पदरिसणत्थं भण्णति –

ससणिद्ध दुहाकम्मे, रोट्टु कुट्ठे य कुंडए एते ।
मोत्तूणं संजोगे, सेसा सव्वे तु पत्थिव्वा ॥१४८॥

जत्थूदयबिंदू ण संविज्जति तं ससिणिद्धं । दुहा कम्मंति पुरेकम्मं, पच्छा कम्मं । उदउल्लं एत्थेव दट्ठव्वं । एते आउक्कायहत्था । रोट्टो नाम लोट्टो, रलयोरेकत्वाल्लोट्टो भण्णति । उक्कुट्ठो णाम सचित्त-वणस्सतिपत्तंकुर-फलाणि वा उदूक्खले छुब्भंति, तेहिं हत्थो लित्तो, एस उक्कुट्ठ-हत्थो भण्णति । कुंडगं

---

१ पुत्तलकादि दे० व० पुतला ।

णाम सण्हतंदुलकणियाम्रो कुकुसा य कुंडगा भण्णंति । एते वणस्सति-काय-हत्था । एते मोत्तूणं संजोगे एते आउ-वणस्सति-हत्थे मोत्तूण, संजोगो णाम जेहिं सह हत्थो जुज्जति स संजोगो भण्णति । अतो एते हत्थसंजोगे मोत्तूण सेसा सव्वे उ पत्थिव्वा पुढविकाय-हत्थ त्ति भणियं भवति । ते इमे—ससरक्खादि हत्था, आदिग्गहणातो मट्टियादि-जाव-सोरट्ठिय त्ति एक्कारस हत्था । एतेहिं इहाधिकारो ।

अतो भण्णति –

कर-मत्ते संजोगो, ससरक्ख पणगं तु मास लोणादी ।
अत्थंडिल-संकमणे, कण्हादपमज्जणे लहुगो ॥१४६॥

ससरक्खादिहत्थे त्ति दारं –

करो त्ति हत्थो, मत्तो य भायणं । संजोगो णाम चउक्कभंगो कायव्वो । सो य इमो – ससरक्खे हत्थे ससरक्खे मत्ते १ ससरक्खे हत्थे णो मत्ते २ णो हत्थे मत्ते ३ णो हत्थे णो मत्ते ४ । आदि भंगे संजोगपायच्छित्तं दो पणगा । बितिय-ततितेसु एक्केक्कं पणगं । चउत्थो भंगो सुद्धो । मास लोणादि त्ति ।

सीसो पुच्छति – कहं ससरक्खहत्थाणंतरं मट्टिया हत्थं मोत्तूण लोणादिग्गहणं कज्जति ?

आयरिय आह—एयं सेसे हत्थाण मज्झग्गहणं कयं ।

अहवा बंधाणुलोमा कयं । इतरहा मट्टियाइ हत्था भाणियव्वा । तेसु य एक्केक्के कर-मत्तेहिं चउभंगो कायव्वो । पढमभंगे दो मासलहुं, बितिय-ततिएसु एक्केक्कं मासलहुं, चरिमो सुद्धो । ससरक्खादि हत्थे त्ति दारं गयं ।

इदाणिं पंथे त्ति दारं –

पंथे त्ति दारं । पंथे वच्चंतो थंडिलाम्रो अथंडिलं संकमति, अच्चित्त-भूमीतो सचित्त-भूमी संकमति-त्ति भणियं भवति । कण्हभूमीओ वा णीलभूमीं संकमति । एत्थ अविहि-विहि-पदरिसणत्थं भगा । ते इमे-अपमज्जणे त्ति, ण पडिलेहेति, ण पमज्जति । ण पडिलेहेइ, पमज्जइ । पडिलेहेति, ण पमज्जति । चउत्थ-भगे दो वि करेति ।

णवरं – दुप्पडि लेहियं दुप्पमज्जियं ४, दुप्पडिलेहियं सुपमज्जियं ५ ।
सुप्पडिलेहियं दुप्पमज्जियं ६, सुप्पडिलेहियं सुपमज्जियं ७ ।

आदिल्लेसु तिसु भंगेसु मासलहु । पढमे तवगुरु काललहुं, बितिए तवलहुं कालगुरुओ, ततिए दोहि लहुओ । चउत्थ-पंचम-छट्ठेसु पंचराइंदिया, एवंचेव तवकालविसेसिता । चरिमो सुद्धो । पंथे त्ति दारं गयं ॥१४९॥

इयाणिं णिक्खित्ते-त्ति दारं –

णिक्खित्तं दुविहं—सचित्त-पुढवि-णिक्खित्तं, मीस-पुढवि-णिक्खित्तं च । जं तं सचित्त-पुढवि-णिक्खित्तं तं दुविहं—अणंतर-णिक्खित्तं, परंपर-णिक्खित्तं च । मीसे वि दुविहं—अणंतरे, परंपरे य । एतेसु सचित्त-मीस-अणंतर-परंपर-णिक्खित्तेसु पच्छित्तं भण्णति –

सचित्त-णंतर-परंपरे य, लहुगा य होंति लहुगो य ।
मीसाणंतर लहुओ, पणगं तु परंपरपतिट्ठे ॥१५०॥

सचित्त-पुढविकाए अणंतर-णिक्खित्ते चउलहुगं, परंपर-णिक्खित्ते मासलहुं । मीसे पुढविकाए अणंतर-णिक्खित्ते मासलहुं, परंपर-णिक्खित्ते पंचरातिंदिया । णिक्खित्ते त्ति दारं गयं ॥१५०॥

सा पुण मीसा पुढवी कहिं हवेज्जा ? भण्णति –

खीरदुम-हेट्ठ पंथे, अभिणव कट्ठोल्ल इंधणे मीसं ।
पोरिसि एग दुग तिगे, थोविंधण-मज्झ-बहुए य ॥१५१॥

खीरदुमा वड-उंबर-पिप्पला, एतेसिं महुररुक्खाण हेट्ठा मीसो । पंथे य अहि-णव-हलवाहिया य पुढवी, उल्ला वासे य पडियमित्तंमि सभवति ।

अहवा कुंभकारादी मट्टिया इंधण-सहिया मीसा भवति । सा य कालतो[1] एव चिर थोविंधण-सहिया एगपोरिसी मीसा, परतो सचित्ता, मज्झिमणसहिया दो पोरुसीओ मीसा, पुरतो सचित्ता, बहुइंधण-सहिता तिण्णि पोरुसीओ मीसा, परतो सचित्ता ।

एगे आयरिया एवं भणंति । अण्णे पुण भणंति जहा –

एग दु-तिण्णि पोरिसीओ मीसा होउं, परओ अचित्ता होति । एत्थ पुण इंधणविसेसा दोवि आदेसा घडावेयव्वा । साहारणिंधणेण एग-दु-तिपोरिसीणं मीसा, परतो सचित्ता भवति । असाधारणेणं पुण अचित्ता-भवति । [2]मीसे-कट्ठउल्लगे त्ति दारं गतं ॥१५१॥

इदाणिं गमणे त्ति दारं –

आदि ग्रहणे णिसीयणं तुयट्टणं च घेप्पति ।

गाउ य दुगुणा दुगुणं, बत्तीसं जोयणाइं चरमपदं ।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥१५२॥

सचित्त-पुढविकाय-मज्झेण १ गाउयं गच्छति, २ गाउयं दुगुणं अद्धजोयणं ३ अद्धजोयणं दुगुणं जोयणं ४ जोयणं दुगुणं दोजोयणाइं ५ दोजोयणा दुगुणा चत्तारि जोयणाइं ६ चउरो दुगुणा अट्ठजोयणा ७ अट्ठ दुगुणा सोलसजोयणा ८ सोलसदुगुणा बत्तीसं जोयणा । चरिमपदग्गहणातो परं णेड्यं दुगुणेण । गाउ आदि बत्तीस-जोयणावसाणेसु अट्ठसु ठाणेसु पायच्छित्तं भण्णति । चत्तारि छच्च लहु गुरु विसेसिया चउरो पायच्छित्ता भवंति—१ चउलहुअं, २ चउगुरुगं, ३ छलहुयं ४ छगुरुयं ति भणियं भवति। ५ छेदो ६ मूलं ७ दुगं—अणवट्ठप्प ८ पारंचियं । एते गाउयादिसु जहासंखं दायव्वा पायच्छित्ता ॥१५२॥

एवं ता सचित्ते, मीसंमि सतेण अट्ठवीसेणं ।
हवति य अभिक्खगमणे, अट्ठहिं दसहिं व चरम-पदं ॥१५३॥

एवं ता सचित्ते पुढविक्काए भणियं । मीस-पुढविक्काए भण्णति । मीस-पुढविक्काए पुण गच्छ-माणस्स गाउयादि दुगुणा दुगुणेण-जाव अट्ठावीसुत्तरं सतं चरिमपदं दसट्ठाणा भवंति । एत्थ पच्छित्तं पढमे मासलहुं-जाव-अट्ठावीसुत्तरसत पदे पारंचियं भवति । एतेसिं चेव अभिक्खसेवा भण्णति । अभिक्खसेवा णाम पुणो पुणो गमणं । तत्थ पायच्छित्तं वितियवाराए सचित्त-पुढवीए गच्छमाणस्स गाउयादि चउगुरुआ आढत्तं-जावं-सोलसजोयणपदे पारंचियं, ततियवाराए छलहु आढत्तं अट्ठजोयणपदे पारंचियं । एवं-जाव-अट्ठवाराए

१ इयदर्थे । २ गा. १४७ ।

गाउयं चेव गच्छमाणस्स पारंचियं एवं मीस-पुढविक्काए वि अभिक्खगमणं। णवरं दसमवाराए गाउते पारंचियं पावति। गमणादि त्ति दारं गतं ॥१५३॥

इदाणिं पप्पडए त्ति दारं —

पप्पडए सचित्ते, लहुयादी अट्ठहिं भवे सपदं।
मास लहुगादि मीसे, दसहिं पदेहिं भवे सपदं ॥१५४॥

पप्पडगो णाम सरियाए उभयतडेसु पाणिएण जा रेल्लिया भूमी सा, तंमि पाणिए ओहट्टमाणे तरिया वद्धा होउं उण्हेण छित्ता पप्पडी भवति। तेण सचित्तेण जो गच्छति गाउयं तस्स चउलहुगं। दोसु गाउएसु चउगुरुयं। एव दुगुणा दुगुणेण-जाव- बत्तीसं जोयणे पारंचियं। अभिक्खसेवा तहेव जहा पुढविक्काए। मीसे पप्पडए गाउय 'दुगुणा" दुगुणेण मासलहुगादि-जाव-अट्ठावीसुत्तरजोयणसते पारंचियं। अभिक्खसेवा जहेव-पुढविक्काए। पप्पडिए त्ति दार गतं ॥१५४॥

इदाणिं[1] आदि सद्दो वक्खाणिज्जति, अतिल्लदारस्स च सद्दो य।

ठाण णिसीय तुयट्टण, वाउलग्गमादि करणभेदे य।
होंति अभिक्खा सेवा, अट्ठहिं दसहिं च सपदं तु ॥१५५॥

सच्चित्ते पुढविक्काते पप्पडए य सच्चित्ते ट्ठाणं निसीयणं तुयट्टण वा करेति। करेंतस्स पत्तेय चउलहुयं। "वाउल्लगमातित्ति" वाउल्लगं णाम पुरिस-पुत्तलगो, तं सचित्त — पुढवीए करेति चउलहुयं, काऊण वा भजति तत्थवि ङ्क। 'आदि" सद्दातो गय-वसभातिरूव करेति भंजेति वा तत्थ वि पत्तेयं चउलहुगं। एतेसिं चेव ट्ठाण-निसीयण-तुयट्टण-करणभेदाण पत्तेयं पत्तेयं। अभिक्खसेवाए अट्ठमवाराए पारचिय पावति। मीस-पुढविक्काए वि ट्ठाणादि करेमाणस्स पत्तेय मासलहुयं। ठाणादिसु पत्तेयं अभिक्खसेवाए दसमवाराए सपदं पावति। सपयं णाम पारचियं। आदि सद्दंतरालदारं गतं ॥१५५॥

इदाणिं अंगुले त्ति दारं —

चतुरंगुलप्पमाणा, चउरो दो चेव जाव चतुवीसा।
अंगुलमादी वुड्ढी, पमाण करणे य अट्ठेव ॥१५६॥

अंगुल-रयणा ताव भण्णति। चउरंगुलप्पमाणा चउरो त्ति अंगुलादारब्भ-जाव-चउरो अंगुला अहो खणति, एस पढमो चउक्कगो। चउरंगुला परतो पंचंगुलादारब्भ-जाव अट्ठंगुला, एस बितिओ चउक्कगो। एवं णवमअंगुलादारब्भ-जाव बारस, एस ततितो चउक्कगो। तेरसंगुलादारब्भ-जाव-सोलसमं, एस चउत्थो चउक्कगो। दो चेव-जाव-चउवीसा सोलसअगुलापरतो दु-अगुल-विड्ढी कज्जति अट्ठारस, वीसा, बावीसा, चउवीसा। अंगुलमादी वुड्ढि त्ति अगुलादारब्भ चउरंगुलिया दुअंगुलिया एसा वुड्ढी भणिया। आदि सद्दातो मीसे वि एव।

णवरं—तत्थ आदिए छ चउक्कगा कज्जंति, परतो चउरो दुगा, एव बत्तीसं अगुला भवंति। दसट्ठाणा। एसा अगुल-रयणा।

एतेसिमं पच्छित्तं भण्णति। सच्चित्ते अंगुलादारब्भ-जाव-चउरो अगुला खणति, एत्थ चउलहुयं। पंचमतो जाव अट्ठम, एत्थ चउगुरुयं। णवमाओ-जाव-बारसमं, एत्थ छल्लहुयं। तेरसमातो-जाव-सोलसमं, एत्थ

[1] गा० १४६ गमणाइ "करणे य" द्दा० पंचं०।

छग्गुरुयं । सत्तरस अट्ठारसमेसु छेयो। अउणवीस-वीसेसु मूलं। एक्कवीस बावीसेसु अणवट्ठप्पो। तेवीस-चउवीसेसु पारंची । अभिक्खसेवा भण्णति । पमाण करणे य अट्ठेव अभिक्खण खणणं करेति तत्थ प्पमाणं अट्ठमवाराए पारंचियं ।

अहवा पमाण-करणे य अट्ठेव त्ति पमाणगहणेण पमाणदारं गहितं, करणग्रहणेण करणदारं गहियं, च सद्दाओ गहणदारं गहियं । अंगुलदारं पुण अहिगतं चेव । एतेसु चउसु वि अभिक्खसेवं करेंतस्स अट्ठमवाराए पारंचियं भवति ।

इदाणिं मीसगपुढविक्कायं खणंतस्स पायच्छित्तं भण्णति – मीसे पुढविक्काए पढमं चउक्कं खणंतस्स मासलहुं, बितियचउक्के मासगुरु, ततियचउक्के चउलहुं, चउत्थचउक्के चउगुरुं, पंचमे चउक्के छलहुं, छट्ठे चउक्के छग्गुरुं, पणछव्वीसंगुलेसु छेओ, सत्तट्ठवीसेसु मूलं, अउणतीस-तीसेसु अणवट्ठो, अतो परं पारंचियं । मीसाभिक्खसेवाए दसमवाराए पारंचियं पावति ।

अण्णे पुण आयरिया—सच्चित्त-पुढविक्काए खणणाभिक्खासेवं एवं वण्णयंति—अभिक्खणेणं अंगुलं एक्कसिं खणति ङ्क । बितिय वाराए ङ्का। ततिय वाराए फुं। चउत्थ वाराए फुं । एवं-जाव-चउवीसतिवाराए पारंचियं पावति । एवं मीसेवि बत्तीसतिवाराए पारंचियं पावति ।।१५६।।

सीसो पुच्छति – कीस उवरिं चउरंगुलिया वुड्ढी कता अहे दुयंगुलिया ?

आयरिओ भणति –

उवरिं तु अप्पजीवा, पुढवी सीताऽऽतवाऽणिलाऽभिहता ।
चउरंगुलपरिवुड्ढी, तेणुवरिं अहे दुअंगुलिया ।।१५७।।

कंठा । अंगुले त्ति दारं गतं ।।१५७।।

इयाणिं पमाणे त्ति दारं । तत्थ गाहा –

कलमत्तातो अद्दामल चतुलहु दुगुणेण अट्ठहिं सपदं ।
मीसंमि दसहिं सपदं, होति पमाणंमि पत्थारो ।।१५८।।

"कलो"-चणगो । तप्पमाणं सचित्त-पुढविक्कायं गेण्हति चउलहुयं । उवरिं कलमत्तातो-जाव-अद्दामलगप्पमाणं एत्थ वि "चउलहुयं" चेव । दुगुणेणं ति अओ परं दुगुणा वुड्ढी पयट्टति । दो अद्दामलगप्पमाणं सचित्त-पुढविक्कायं गेण्हति चउगुरुयं । चउ अद्दामलगप्पमाणं पुढविक्कायं गेण्हति छल्लहुअं । अट्ठ अद्दामलगप्पमाणं गेण्हति छग्गुरुं । सोलस अद्दामलगप्पमाणं गेण्हति तस्स छेदो । बत्तीसाद्दामलगप्पमाणं गेण्हति मूलं । चउसट्ठि-अद्दामलग प्पमाणं गेण्हति अणवट्ठप्पो । अट्ठावीसुत्तरसयअद्दामलगप्पमाणं गेण्हति पारंचियं । एवं अट्ठहिं वारेहिं सपयं पत्तो । मीसंमि दसहिं सपदं होति । पमाणंमि त्ति पमाणदारे । पत्थारो त्ति अद्दामलगादि दुगुणा दुगुणेणं जाव-पंचसयबारसुत्तरा । एतेसु मासलहुगादि पारंचियावसाणा पच्छित्ता । एवं दसहि सपदं ।।१५८।।

एसेव अत्थो पुणो भण्णति अन्याचार्यरचित-गाहासूत्रेण –

कलमादद्दामलगा, लहुगादी सपदमट्ठीउवीसएणं ।
पंचेववारसुत्तर, अभिक्खट्ठहिं दसहिं सपदं तु ।।१५९।।

कंठा । णवरं – अभिक्खट्ठहिं दसहिं सपदं तु । एसा अभिक्खसेवा गहिता । सचित्त पुढविक्काते अभिक्खसेवाए अट्ठहिं सपदं, मीसे अभिक्खसेवाए दसहिं सपदं । पमाणेत्ति दारं गयं ।।१५९।।

इदाणिं गहणे त्ति दारं। तं चिमं –

गहणे पक्खेवंमि य, एगमणेगेहिं होति चतुभंगो।
जदि गहणा तति मासा एमेव य होति पक्खेवे ॥१६०॥

गहणं हत्थेण, पक्खेवो पुण मुहे भायणे वा। एतेसु य गहण-पक्खेवेसु चउभंगो। सो इमो, एगं गहणं एगो पक्खेवो, एग गहण अणेगपक्खेवा, अणेगाणि गहणाणि एगो पक्खेवो, अणेगाणि गहणाणि अणेगे पक्खेवा। एवं चउभंगेसु पूर्ववत् स्थितेषु पढमभंगे दो मासलहु, सेसेहिं तिहिं भगेहिं जत्तिय गहणा पक्खेवा तत्तिया मासलहु। एवं भायणपक्खेवे मासलहुं, मुह-पक्खेवे पुण णियमा चउलहु। गहणे त्ति दारं गयं ॥१६०॥

इदाणिं करणे त्ति दारं –

वाउल्लादीकरणे लहुगा, लहुगो य होति अच्चित्ते।
परितावणादिणेयं, अधिव-विणासे य जं वण्णं ॥१६१॥

वाउल्लगो पुरिस-पुत्तलगो, आदिसद्दाओ गोणादिरूवं करेति। एगं करेति चउलहुअं, दो करेति चउगुरुगं, तिहिं छल्लहुअं, चउहिं छगुरुयं, पंचहिं छेदो, छहिं मूल, सत्तहिं अणवट्टो, अट्ठहिं चरिमं। मीसे वि एवं।

णवर—मासलहुगादि दसहिं चरिमं पावति। अच्चित्ते पुढविक्काते पुत्तलगादि करेति, एत्थ वि असामायारिणिप्फण्णं मासलहुं भवति। परितावणाति णेयं ति वाउल्लयं करेंतस्स जा हत्थादि परितावणा अणागाढादि भवति एत्थ पच्छित्तं। अणागाढ परियाविज्जति ङ्क, गाढं परियाविज्जति ङ्का। परितावियस्स महादुक्खं भवति ङ्(ल)। महादुक्खातो मुच्छा उप्पज्जति ङ्गी गु. फुं। तीए मुच्छाए किच्छपाणो जातो छेदो। किच्छेण ऊससिउमारद्धो मूलं। मारणंतिय-समुग्घातेण समोहतो अणवट्टो। कालगतो चरिमं।

अहवा पुत्तलगं परविणासाय दप्पेण करेति, तं मतेण अभिमतेऊगं मम्मदेसे विंधेति, तस्स य परस्स परितावणादि दुक्ख भवति। पायच्छित्तं तहेव। 'अहिव-विणासे य जं वण्णं' ति अहिवो राया, तस्स विणासे य करेति, तंमि य विणासिते जुवरायमच्चादीहिं णाए "जं" ते रुसिया तस्सण्णस्स वा संघस्स वा वह-बंध-मारणं, भत्त-पाण-उवहि-णिक्खमणं वा णिवारिस्संति एतम "ण्णं" ति भणियं भवति। गया पुढविक्कायस्स दप्पिया पडिसेवणा ॥१६१॥

इदाणिं पुढविकायस्स चेव कप्पिया भण्णति –

तत्थिमा दारगाहा –

अद्धाण[1] कज्ज[2] संभम[3], सागरिय[4] पडिपहे[5] य फिडिय[6] य।
दीहादीह[7] (य) गिलाणे[8], ओमे[9] जतणा य जा तत्थ ॥१६२॥ द्वारगाथा

नव दारा एते। नवसु दारेसु जा जत्थ जयणा घडति सा तत्थ कत्तव्वा। तत्थ अद्धाणे त्ति पढमं दारं। तंमि य अद्धाणदारे ससरक्खादि हत्थदारा दस अववदिज्जंति ॥१६२॥

तत्थ पढमं ससरक्खादिहत्थे ति दारं –

जइउमलाभे गहणं, ससरक्खकएहिं हत्थ-मत्तेहिं।
तति बितिय पढमभंगे, एमेव य मट्टिया लित्ते ॥१६३॥

यतित्वा अलाभे तत्थ पढमं ततियभंगेण, पच्छा वितिएण, ततो पढमभंगेण। एसेव अतिदिट्ठो "एमेव य मट्टियालित्तेत्ति"। हत्थेति दारं अववदियं ॥१६३॥

इदाणिं पंथेत्ति दारं अववतिज्जति –

सागारिय तुरियमणभोगतो य अपमज्जणे तहिं सुद्धो।
मीसपरंपरमादी, णिक्खित्तं जाव गेण्हंति[1] ॥१६४॥

थंडिल्लाओ अण्णथंडिलं संकमंते सागारिय त्ति काउं पादे ण पमज्जेज्जा. तुरेतो वा तेहिं कारणेहिं गिलाणादिएहिं ण पमज्जेज्जा, अणाभोगओ वा ण पमज्जेज्जा। अपमज्जंतो सुद्धो "सुद्धो" त्ति अप्पायच्छित्ती, तहिं ति अथंडिले असामायारिए वा। पंथे त्ति दारं गतं।

इदाणिं णिक्खित्तं ति दार अववदति –

"मीस परंपर" पश्चार्द्धं। एत्थ जयणा पढमं मीस-पुढविक्काय-परंपर-णिक्खित्तं गेण्हति, आदि सद्दातो असति मीसए णंतरेणं गेण्हति, असति सच्चित्तपरंपरेण गेण्हति, असति सचित्तपुढविक्कायअणंतरणिक्खित्तं पि गेण्हइ। णिक्खित्तं ति दारं गतं ॥१६४॥

इदाणिं गमणे ति दारं अववतिज्जति –

पुव्वमचित्तेण गंतव्वं, तस्सासतीते मीसतेणं गम्मति। तत्थिमा जयणा –

गच्छंती तु दिवसतो, ततिया अवणेत्तु मग्गओ अभए।
थंडिलासति खुण्णे, ठाणाति करेंति कत्तिं वा ॥१६५॥

गमणं दुहा—सत्थेण एगागिणो वा। जति णिब्भयं एगागिणो गच्छंति। दिवसतो "तलिया" उवाहणाओ ता अवणेत्ता अणुवाहणा गच्छंति। तस्स य सत्थस्स "मग्गतो' पिट्ठओ-जति अभयं तो तलियाओ अवणेत्तु पिट्ठओ वच्चंति, सभए मज्झे वा पुरतो वा णुवाहणा गच्छंति। जत्थ अथंडिले सत्थसण्णिवेसो तत्थिमा जतणा-थंडिलस्स असती जं त्थामं सत्थिल्लजणेण खुण्णं-मद्दियं-चउप्पएहिं वा मद्दियं तत्थ ठाणं करेंति, आदि सद्दाओ निसीयणं तुयट्टणं भुंजणं वा। कत्ति त्ति-छंदडिया (सादडी) जति सव्वहा थंडिलं णत्थि तो तं कत्तियं पत्थरेउ ठाणाइ करेंति, कत्तिय अभावे वा वासकप्पादि पत्थरेउं ठाणादि करेंति। सच्चित्ते वि पुढविक्काए गच्छंताणं एसेव जयणा भाणियव्वा। गमणे त्ति[2] दारं गयं ॥१६५॥

इदाणिं पप्पडंगुलदारा दो वि एगगाहाए अववइज्जंति –

एमेव य पप्पडए, सभयाऽगासे व चिलिमिणिनिमित्तं।
खणणं अंगुलमादी, आहारट्ठा व ऽहे वलिया ॥१६६॥

जहा पुढविक्काए गमणादीया जयणा तहा पप्पडए वि अविसिट्ठा जयणा णायव्वा। पप्पडए त्ति दारं गतं।

इदाणिं खणणदारं अववज्जति –

अरण्णादिसु जत्थ भयमत्थि तत्थ वाडीए कज्जमाणीए खणेज्जा वि।

---

१ सचित्तं। २ निषीदनादपि।

अहवा आगासे उण्हेण परिताविज्जमाणा मंडलिनिमित्तं दिवसओ चिलमिणी-णिमित्तं खणणं संभवति। तं च अंगुलमादी-जाव-चउव्वीसं बत्तीसं वा बहुतरगाणि वा।

अहवा मूलपलंबणिमित्तं खणेज्जा। अहवा "आहारट्ठा व" खणणं संभवति, उक्तं च—
"अपि कर्द्दमपिंडानां, कुर्यात्कुक्षि निरंतरम्"।

सोसो भणति—"उवरिं अखया चेव संभवति, किं अहे खन्नति ?"

आयरियाह—वातातवमादीहिं असोसिया सरसा य अहे वलिया तेण अहे[1] खण्णति। अंगुले त्ति दारं गयं ॥१६६॥

इदाणिं पमाण-ग्गहण-करणदारा एगगाहाए अववइज्जंति –

जावतिया उवउज्जति पमाण-गहणे व जाव पज्जत्तं।
मंतेऊण व विंधइ पुत्तल्लगमादि पडिणीए ॥१६७॥

जावतिया उवउज्जति तावतियं गेण्हति पमाणमिति पमाणदारं गहितं। पमाणे त्ति दारं गयं।

इदाणिं गहणदारं अववदिज्जति –

अस्स विभासा। गहणे जाव पज्जत्तं ताव गिण्हति, अणेगग्गहणं अणेगपक्खेवं पि कुज्जा अपज्जत्ते। गहणे त्ति दारं गयं।

इदाणिं वाउल्लकरणं अववदिज्जति –

"मंतेऊण" गाहा पश्चार्द्धं। जो साहु-संघ-चेतित-पडिणीतो तस्स पडिमा मिम्मया णामंकिता कज्जति, सा मंतेणाभिमंतिऊणं मंमदेसे विज्झति, ततो तस्स वेयणा भवति मरति वा, एतेण कारणेणं पुत्तलगं पि पडिणीय-मद्दण-णिमित्तं कज्जति, दंडिय-वशीकरण-णिमित्तं वा कज्जति। करणे त्ति दारं गयं। एवं ताव अद्धाणदारे ससरक्खादिया सव्वे दारा अववदिता। अद्धाणे ति दारं गयं ॥१६७॥

इयाणि कज्ज-संभमा दो वि दारा जुगवं वक्खाणिज्जंति –

असिवादियं कज्जं भण्णति। अगिग-उदग-चोर-बोधिगादियं संभमं भण्णति।

एतेसु गाहा –

जह चेव य अद्धाणे, अलाभगहणं ससरक्खमादीहिं।
तह कज्जसंभमंमि वि, बितियपदे जतण जा करणं ॥१६८॥

जहा अद्धाणदारे अलाभे सुद्धभत्त-पाणस्स असंथरंताण ससरक्खमादी दारा अववतिता तहा कज्जसंभमदारेसु वि "वितियं पयं" अववायपयं—तं पत्तेण ससरक्खादिदारेहिं "जयणा" कायव्वा "जाव करणं"। करणं ति वाउल्लगकरणं। कज्जसंभमे त्ति दारा गता।

इदाणिं सागारिय पडिपह फिडिय दारा तिण्णि वि एगगाहाए वक्खाणिज्जंति –

पडिवत्तीइ अकुसलो, सागारिए घेत्तु तं परिट्ठावे।
दंडियमादिं पडिपहे, उव्वत्तण मग्गफिडिता वा ॥१६९॥

---

1 तेनाधः।

कोइ साहू भिक्खाए अवइण्णो। तस्स य ससरक्खमट्टियालित्तेहिं हत्थेहिं भिक्खा णिप्फेडिया। तओ स साहू चिंतयति –"एस एत्थ धिज्जाति, तो विदू चिट्ठति, एस इमं पुच्छिस्सति "कीस ण गेण्हसि" ? अहं च पडिवत्तीए अकुसलो, "पडिवत्ती" प्रतिवचनं, जहा एतेण कारणेण ण वट्टति तहा अकुसलो उत्तरदाना-समर्थ इत्यर्थः। ततो एवं सागारिए तमकप्पियं भिक्खं घेत्तुं पच्छा परिट्ठवेति। एवं करेंतो सुद्धो चेव। सेसा पदा पायसो ण संभवति। सागारिए त्ति दारं गयं।

इदाणिं पडिपहे त्ति दारं –

पडिपहेण दंडिओ एति, आस-रह-हत्थिमाइएहिं पडिणीओ वा पडिपहेण एति, ताहे उव्वतति पहाओ, न पमज्जए वा पादे, एवं सच्चित्त-पुढवीए वच्चेज्जा। पडिपहे त्ति दारं गयं।

इदाणिं फिडिए त्ति दारं –

मग्गातो विपणट्ठो सच्चित्तमीसाए "वा" पुढवीए गच्छेज्जा, पप्पडएण वा गच्छेज्जा। फिडिए त्ति दारं गयं ॥१६९॥

इदाणिं दीहाति त्ति दारं तत्थ –

रक्खाभूसणहेउं, भक्खणहेउं व मट्टिया गहणं।
दीहादीहि व खइए, इमाए जतणाए णायव्वं ॥१७०॥

दीहादिणा खइए मंतेणाभिमंतिऊण कडगबंधेण रक्खा कज्जति, मट्टियं वा मुहे छोढुं डंको आचु-सिज्जति आलिप्पति वा विसाकरिसणणिमित्तं मट्टियं वा भक्खयति, सप्पडक्को मा रित्तकोट्ठो विसेण भाविस्सति। दीहाइणा खइए एसा जयणा। जया पुण सा मट्टिया घेप्पइ तया इमाए जयणाए ॥१७०॥

दड्ढे मुत्ते छगणे, रुक्खे सुसुणाए वंमिए पंथे।
हल-खणण-कुड्डमादी, अंगुल खित्तादि लोणे य ॥१७१॥

पढमं ताव जो पएसो अग्गिणा दड्ढो तओ घेप्पति। तस्सासति गोमुत्ताति भावियातो वा। ततो जंमि पदेसे छगणछिप्पोल्ली [1]वरिसोवट्ठाविया ततो घेप्पति। पिचुमंद-करीर-बब्बूलादि तुवररुक्खहेट्ठातो वा घेप्पति। अलसो त्ति वा, गडूलो त्ति वा, सुसुणागो त्ति वा एगट्ठं। तेणाहारेउं णीहारिया जा सा वा घेप्पति। तस्सासति वंमीए वम्मितो रप्फो, ततो वा घेप्पति। तस्सासति पंथे तत्थ वा जनपद-णिग्घात-विद्धत्था घेप्पति। तओ हलस्स चउयादिसु जा लग्गा सा वा घेप्पति। खणणं अलित्तं तस्स वा जा अग्गे लग्गा सा वा घेप्पति। णवेसु वा गामागरादिणिवेसेसु घराण कुड्डेसु घेप्पति। अंगुलमादी अहो खणति। खित्तादिणिमित्तं गिलाणणिमित्तं लोणं घेप्पति, एते दो गिलाणदारा ॥१७३॥

एतेसिं सत्थहताण असती व कतो घेतव्वा ? अतो भणति –

सत्थहताऽऽसति, उवरिं तु गेण्हति भूमि तस दयट्ठाए।
उवयारणिमित्तं वा, अह तं दूरं व खणितूणं ॥१७२॥

दड्ढाति सत्थहताणं असती सचित्तपुढवीए उवरिल्लं गेण्हति अखणित्ता, खम्ममाणाए पुण भूमीए जे तसा मंडुक्कादि ते विराहिज्जंति। अहवा भूमिट्टियाणं तसाणं च दयाणिमित्तं अहो न खणति, उवरिल्लं

१ वृष्ट्युपस्थापिता।

गेण्हति । उवयारणिमित्तं णाम जा अहया अणुवहता सती पुढवी, तीए कज्जं परिमंतेऊण किंचि कज्जं कायव्वं, अन्नो एतेण कारणेण अंगुलं वा दो वा तिण्णि वा खणिऊण गेण्हेज्जा । अंगुले त्ति गतं ॥१७२॥

खित्तादिति—कोइ गच्छे खित्तचित्तो दित्तचित्तो जक्खाइट्टो उम्मायपत्तो वा होज्जा । सो रक्खियव्वो इमेण विहिणा –

पुव्वखतोवर असती, खित्ता दट्ठा खणिज्ज वा अगडं ।
अतरंतपरियरट्ठा, हत्थादि जतंति जा करणं ॥१७३॥

पुव्वखओ जो भूघरोव्वरो तंमि सो ट्ठविज्जति । असति पुव्व-खयस्स भूघरोव्वरस्स । खित्तादीणं अट्ठा, अट्ठा निमित्तेण खणेज्जा वा अगडं-अगडो कूवो । एस[1] आदि सद्दो वक्खाओ । हत्थादि त्ति गयं ।

अतरंतपरियरट्ठा वा, अतरंतो गिलाणो, तं परिचरंता, तस्सट्ठा अप्पणट्ठा वा ससरक्खहत्थादिदारेहिं जयंति, सव्वेहिं दारेहिं-जाव-करणदारं ॥१७३॥

इदाणिं गिलाणे त्ति दारं –

लोणं व गिलाणट्ठा, घिप्पति मंदग्गिणं व अट्ठाए ।
दुल्लह लोणे देसे, जहिं व तं होति सच्चित्तं ॥१७४॥

गिलाणनिमित्तं वा लोणं घेप्पति । अगिलाणो वि जो मंदग्गी तस्सट्ठा वा घेप्पति । तं पुण दुल्लभलोणे देसे घेप्पति । तत्थ पुण दुल्लभलोणे देसे उक्खडिज्जमाणे लोणं ण छुब्भति, उवरि लोणं दिज्जति । तेण तत्थ मंदग्गी गेण्हति । तं पुण गेण्हमाणो जत्थ सचित्तं भवति तत्थ ग गेण्हति । तं सच्चित्तट्ठाणं परिहरति ॥१७४॥

इमा जयणा घेत्तव्वा –

सीतं पउरिंधणता, अचेलकणिरोध भत्त घरवासे ।
सुत्तत्थ जाणएणं, अप्पा बहुयं तु णायव्वं ॥१७५॥

जंमि देसे सीयं पउरं, जहा उत्तरावहे, तत्थ जे मंदपाउरणा ते पउरिंधणेहिं अग्गिं करेंति, तंमि [2]उव्वरगे जं लोणं तं ताव धूमादिहिं फासुनीभूतं गेण्हति । गाहा पुव्वद्धऽत्थो सव्वो एत्थ भावेयव्वो । अहवा सीतेण ज [3]घत्थं तं घेप्पति । धूममाइणा वा, पउरिंधणेण जं भीसं तं घेप्पति । अचेलगणिरोहे पुव्ववक्खाणं । भत्तघरए वा जं ट्ठियं तं घेप्पति । एतेसिं असति अणिव्वणं पि घेप्पति सच्चित्तं । तं पुण सुत्तजाणएण अप्पा-बहुयं णाऊण घेत्तव्वं । किं पुण अप्पा-बहुयं ? इमं, "जइत्तं तं लोणं ण गेण्हति तो गेलण्णं भवति । गेलण्णे य बहुतरा संजमविराहणा । इतरहा न भवति ।" गेलण्णे त्ति दारं गय ॥१७५॥

इदाणिं ओमे त्ति दारं –

ओमे वि गम्ममाणे, अद्धाणे जतण होति सच्चेव ।
अच्छंता ण अलंभे, पुत्तुल्लभिचारकाउंट्टा ॥१७६॥

ओमोदरियाए अण्णविसयं गंतव्वं । जा जत्थ जयणा अद्धाणदारे भणिया सच्चेव ओमोदरियाए गम्ममाणे जयणा असेसा दट्ठव्वा । अच्छंता गिलाणादिपडिबंधेण अण्णविसयं अगच्छमाणा अलाभे भत्तपाणस्स ।

१ दीहादी । २ ओवरी । ३ हतम् ।

पुत्तल्लभिचारगाउंट्ट त्ति वाउल्लगेणं विज्जं साहित्ता किंचि इड्डिमंतं आउंटावेति, सो भत्तपाणं दवाविज्जति। गया पुढविक्कायस्स कप्पिया पडिसेवणा ॥१७६॥

इदाणिं आउक्कायस्स दप्पिया भण्णति –

तत्थिमा दारगाहा –

ससिणिद्धमादि[1] सिण्होदए[2] य गमणे[3] य धोव्वणे[4] णावा[5] ।
पमाणे[7] य गहण-करणे[8], णिक्खित्ते[9] सेवती जं च ॥१७७॥ द्वारगाथा

एते दस दारा। सिण्होदएसु गमणसद्दो पत्तेयं। सेवती जं चत्ति एतेसेव अंतभावि दसमं दारं॥१७७॥

तत्थ ससिणिद्धे त्ति दारं –

आदि सद्दाओ उदउल्लपुरपच्छकम्मा गहिया समेयससिणिद्ध-दारस्स णिक्खित्त-दारस्स य सेवती जं चत्ति एतेसिं तिण्हवि जुगवं पच्छित्तं भण्णति –

पंचादी ससणिद्धे, उदउल्ले लहु य मासियं मीसे ।
पुरकम्म-पच्छकंमे, लहुगा आवज्जती जं च ॥१७८॥

पंच त्ति पणगं। तं ससिणिद्धे भवति। इमेण भंगविकप्पेण ससिणिद्धे हत्थे ससिणिद्धे मत्ते चउभंगो। पढमे दो पणगा, एकेक्कं दोसु, चरिमो सुद्धो। "आदि" शब्दो सस्निग्धे एव योज्यः, उदउल्लादीनामाद्यत्वात्। णिक्खित्तं चउव्विहं-सच्चित्ते १ अणंतरपरंपरे २ मीसे ३ अणंतरपरंपरे ४ एते चउरो। एत्थ मीसपरंपरणिखित्ते पणगं मीसाणंतरे मासियं। मीसे त्ति गतं। सच्चित्त-परंपरे मासियं चेव सच्चित्ताणंतरे चउलहुअं। उदउल्ले चउभंगो। पढमे भंगे दो मासलहु, दोसु एक्केक्कं, चरिमो सुद्धो। पुरकम्मपच्छकम्मे लहुगा, कंठं। आवज्जती जं चत्ति एक्केक्के दारे योज्जमिदं वाक्यम्। आवज्जति पावति, जं संघट्टणादिकं सेसकाए तं दायव्वं। ह्म ॥१७८॥

इदाणिं सिण्ह त्ति दारं ठप्पं। दये त्ति दारं। तत्थ –

गाउय दुगुणादुगुणं, बत्तीसं जोयणाइं चरमपदं ।
चत्तारि छच्च लहुगुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥१७९॥

सच्चित्तेण दगेण गाउयं गच्छति, दो गाउया, जोयणं, दो जोयणा, चउरो, अट्ठ, सोलस, बत्तीसं जोयणा। पच्छद्धेण जहा संखं चउलहुगादी पच्छित्ता। दए त्ति दारं गयं॥१७९॥

इदाणिं सिण्ह त्ति दारं भण्णतिं –

सिण्हा मीसग हेट्ठोवरिं च कोसाति अट्ठवीससतं ।
भूमुदयमंतलिक्खे, चतुलहुगादी तु बत्तीसा ॥१८०॥

सिण्ह त्ति वा ओस त्ति वा एगट्ठं। सा हेट्ठतो उवरिं च। ताए दुविहाए मीसोदएण य गाउयं गच्छमाणस्स मासलहुं। दोसु गाउएसु मासगुरुयं, जोयणे चउलहु, दोसु ङ्का, चउसु फुं, अट्ठसु फुं, सोलसेसु छेदो, बत्तीसाए मूलं, चउसट्ठीए अणवट्ठो, अट्ठवीससते पारंची। सिण्ह त्ति दारं गयं। अविसिट्ठमुदगदारं भणियं।

तव्विसेसप्पदरिसणत्थं पच्छद्धं भण्णति—भूमीए उदगं भूमुदगं नद्यादिषु, अंतलिक्खे उदगं-वासोदयेत्यर्थः। तेण गच्छमाणस्स "चउलहुगादी उ बत्तीस" गतार्थं ॥१८०॥

इदाणिं सचित्तुदग-सिण्ह-मीसोदगाणं अभिक्खसेवा भण्णति –

सचित्ते लहुमादी, अभिक्ख-गमणंमि अट्ठहिं सपदं।
सिण्हामीसेवुदए, मासादी दसहिं चरिमं तु ॥१८१॥

सचित्तोदगेण सइ गमणे चउलहुयं, वितियवाराए चउगुरुगं, एवं-जाव-अट्ठमवाराए पारंचियं सिण्हामीसुदगे य पढमवाराए मास-लहुं, वितिय-वाराए मासगुरुं एवं-जाव-दसमवाराए पारंचियं ॥१८१॥

इदाणिं धुवणे त्ति[1] दारं –

सचित्तेण उ धुवणे, मुहणंतगमादिए व चतुलहुया।
अच्चित्त धोवणंमि वि, अकारणे उवधिणिप्फण्णं ॥१८२॥

सच्चित्तेण उदगेण जइ वि मुहणंतगं धुवति तहा वि चउलहुयं। अह अचित्तेण उदगेण अकारणे धुवति तओ उवहिणिप्फण्णं भवति। जहण्णोवकरणे पणगं, मज्झिमे मासलहुं, उक्कोसे चउलहुं। सच्चित्तेणाभिक्खधोवणे अट्ठहिं सपदं, मीसोदएहिं सपदं, अचित्तेण वि णिक्कारणे अभिक्खाधोवणे उवहिणिप्फण्णं, सट्ठाणा उवरिमं णायव्वं। धोवणे त्ति दारं गयं ॥१८२॥

इदाणिं णाव त्ति दारं –

णावातारिमि चतुरो, एग समुद्दंमि तिण्णि य जलंमि।
ओयाणे उज्जाणे, तिरिच्छसंपातिमे चेव ॥१८३॥

तारिणी णावातारिमे उदगे चउरो णावाप्पगारा भवंति। तत्थ एगा समुद्दे भवति, जहा [2]तेयालग-पट्टणाओ वारवइ गम्मइ। तिण्णि य समुद्दातिरित्ते जले। ता य इमा–ओयाणे त्ति अनुश्रोतोगामिनी पानीयानुगामिनीत्यर्थः, उज्जाणे त्ति प्रतिलोमगामिनीत्यर्थः, तिरिच्छ-संतारिणी नाम कूलात्कूल ऋजु गच्छनीत्यर्थः।

एयंमि व चउव्विहे णावातारिमे इमं पायच्छित्तं –

तिरियोयाणुज्जाणे, समुद्दजाणी य चेव णावाए।
चतुलहुगा अंतगुरू, जोयणअद्धद्ध जा सपदं ॥१८४॥

तिरिओयाणुज्जाणे समुद्द-णावा य चउसु वि चउलहुगा। अंतगुरु त्ति समुद्द-गामिणीए दोहिं वि तव-कालेहिं गुरुगा, उज्जाणीए तवेण ओयाणीए कालेण, तिरियाणीए दोहिं वि लहुं। "जोयणअद्धद्ध-जाव-सपदं ति" एतेसिं चउण्हं णावप्पगाराणं एगतमेणा वि अद्धजोयणं गच्छति चउलहुयं, अतो परं अद्धजोयणवुड्ढीए जोयणे चउगुरुयं, दिवड्ढे फुं, दोसु फुं, अड्ढाइज्जेसु छेदो, तिसु मूलं, तिसु सद्धेसु अणवट्ठप्पो, चउसु पारंची। अभिक्खसेवाए अट्ठहिं "सपदं", पारंचियं ति वुत्तं भवइ ॥१८४॥

---

१ प्रक्षालनमिति। २ वेरावल।

णावोदगतारिमे पगते अण्णे वि उदगतरणप्पगारा भण्णंति –

संघट्ट मासादी, लहुगा तु लेप लेव उवरिं च ।
कुंभे दतिए तुम्बे, उडुपे पण्णी य एमेव ॥१८५॥

णिक्कारणे संघट्टेण गच्छति मासलहुयं, आदिसद्दातो अभिक्खसेवाए दसहिं सपदं । अह लेवेण गच्छति तो चउलहुयं, अभिक्खसेवातो अट्ठहिं वाराहिं सपदं । अह लेवोवरिणा गच्छति ङ्क, अट्ठहिं सपयं । कुंभे त्ति कुंभ एव ।

अहवा चउकट्ठि काउं कोणे कोणे घडओ वज्झति, तत्थ अवलंबिउं आरुभिउं वा संतरणं कज्जति । दत्तिए त्ति वायफुण्णो दतितो, तेण वा संतरणं कज्जति । तुंबे त्ति मच्छियजालसरिसं जालं काऊण अलाबुगाण भरिज्जति, तंमि आरूढेहिं संतरणं कज्जति । उडुपे त्ति कोट्टिंबो, तेण वा संतरणं कज्जति । पण्णि त्ति पण्णिमया महंता भारगा बज्झंति, ते जमला बंधेउ ते य अवलंबिउं संतरणं कज्जति । एमेव त्ति जहा दगलेवादीसु चउलहुयं अभिक्खसेवाए य अट्ठहिं सपदं एमेव कुंभादिसु वि दट्ठव्वं । णाव त्ति दारं गतं ॥१८५॥

इयाणिं पमाणे त्ति दारं –

कलमादद्दामलगा, करगादी सपदमट्ठवीसेणं ।
एमेव य दवउदए, बिंदुमातं [1]जली वड्ढी ॥१८६॥

"कलमो" चणगो भण्णति, तप्पमाणादि-जाव-अद्दामलगप्पमाणं गेण्हति । एत्थ चउलहुयं ।

कहं पुण कढिणोदगसंभवी भवति ? भण्णइ–करगादी उदगपासाणा वासे पडंति ते करगा भण्णंति । "आदि" सद्दाओ हिमं वा कढिणं । सपदमट्ठवीसेणं ति अद्दामलगादारब्भ दुगुणादुगणेण-जाव-अट्ठावीसं सतं अद्दामलगप्पमाणाणं । एत्थ चउलहुगादी सपयं पावति । एमेव य दवउदगे द्रवोदक इत्यर्थः, कलमात्रस्थाने विंदुर्द्रष्टव्यः, आर्द्रामलगस्थाने अंजलिर्द्रष्टव्यो, वड्ढि त्ति दुगुणा दुगुणा वड्ढी-जाव-अट्ठावीसं सतं अंजलीणं, चउलहुगादि पच्छित्तं तहेव जहा कढिणोदके । मीसोदकेऽप्येवमेव आर्द्रामलकांजलीप्रमाणम् ।

णवरं—दुगुणा दुगुणेण ताव णेयव्वं-जाव-पंचसतबारसुत्तरा । पच्छित्तं मासलहुगादि । अभिक्खसेवाए दसहिं सपदं । पमाणे त्ति दारं गतं ॥१८६॥

इदाणिं गहणे त्ति दारं –

जति गहणा तति मासा, पक्खेवे चेव होति चउभंगो ।
कुडुभगादिकरणा, लहुगा तस रायगहणाती ॥१८७॥

गहणपक्खेवेसु चउभंगो कायव्वो, एक्को गहो एक्को पक्खेवो ङ्क । जत्तिया गहण-पक्खेवा पत्तेयं तत्तिया मासलहुगा भवंति । गहणे त्ति दारं गतं ।

इदाणिं करणे त्ति दारं –

कुडुंभगादिकरणे त्ति कुडुंभगो—"जलमंडुओ" भण्णति, आदि सद्दाओ मुरवण्णतरं वा सद्दं करेति । कुडुंभगादि सचित्तोदके करेंतस्स चउलहुयं अभिक्खसेवाय अट्ठहिं सपदं । मीसाउक्काए कुडुंभगादि करेंतस्स मासलहुं । अभिक्खसेवाए दसहिं सपदं । कुडुंभगादि च करेंतो पूयरगादि तसं विराहेज्जा, तत्थ तसकायणिप्फण्णं ।

---

[1] अं ।

रायगहणादि त्ति सुंदर कुडुंभग करेसि त्ति मं पि सिक्खावेहि ति गेण्हेज्जा । आदिग्गहणातो उन्निक्खमावेउं[1] पासे धरेज्जा । करणे त्ति दारं गयं । गता आउक्कायस्स दप्पिया पडिसेवणा ॥१८७॥

इदाणिं आउक्कायस्स कप्पिया सेवणा भण्णति –

अद्धाण[1] कज्ज[2] संभम[3], सागारिय[4] पडिपहे[5] य फिडिते[6] य ।
दीहादी[7] य गिलाणे[8], ओमे[9] जतणा य जा जत्थ ॥१८८॥ द्वार-गाथा

एते अद्धाणादी नवाववायदारा –

एतेसु ससणिद्धादी दस वि दारा जह संभवं अववदियव्वा ॥१८८॥

एत्थ पुण अद्धाणदारे इमे दारा पुढविसरिसा –

ससणिद्धे उदउल्ले, पुरपच्छा माण-गहण-णिक्खित्ते ।
गमणे य मही य जहा, तहेव आउंमि वितियपदं ॥१८६॥ कंठा

गमणदारस्स जइ वि पुढवीए अतिदेसो कतो तहा वि विशेष-प्रतिपादनार्थं उच्यते –

उवरिमसिण्हा कप्पो, हेट्ठिल्लीए उ तलियमवणेत्ता ।
एमेव दुविधमुदए, धुवणमगीएसु गुलियादी ॥१६०॥

उवरिमसिण्हाए पडंतीए वासाकप्पं सुपाउयं काउं गंतव्वं । अहो सिण्हाए पुण तलियाओ अवणेत्ता गंतव्वं । एस कारणे जयणा । जह सिण्हाए विही वुत्तो एमेव य दुविहे उदए वि भूमे अंतलिक्खे य । गमणे-त्ति दारं गयं ।

इदाणिं धोवणे त्ति दारं अववदिज्जति –

'धुवणमगीएसु गुलियादी" गिलाणादि-कारणे । जत्थ सचित्तोदगेण धुवणं कायव्वं तत्थिमा जयणा– "अगीयत्थं" त्ति, अपरिणामग अतिपरिणामगा य, तेसिं पच्चयणिमित्तं अतिपसगणिवारणत्थं च गुलियाओ धुविउमाणिज्जंति, दगगुलिगा पुण वक्को भण्णति, उदस्सि भाविय पोत्ता वा । आदि सद्दाओ छगणादि घेतव्वा । धुवणे त्ति दारं गयं ॥१६०॥

इदाणिं णाव त्ति दारं –

णावातारिमग्गहणा इमे वि जलसंतरणप्रकारा गृह्यंते –

जंघातारिम कत्थइ, कत्थइ बाहाहिं अप्प ण तरेज्जा ।
कुंभे दतिए तुंबे, णावा उडुवे य पण्णी य ॥१६१॥

समासतो जलसंतरणं दुविहं—थाहं अथाहं च । जं थाहं तं तिविहं संघट्टो लेवो लेवोवरियं च । एयं तिविहं पि जंघासंतारिमग्गहणेण गहियं । कत्थइ त्ति कचिन्नद्यादिषु ईदृशं भवतीत्यर्थ. । वितियं कत्थइ त्ति कचिन्नद्यादिषु अत्याहं भवतीत्यर्थः । एत्थ य बाहाहिं अप्पणो णो तरेज्जा, हस्तादि प्रक्षेपे बहूदगोपघातत्वाद् ।

---

१ उन्निष्क्राम्य=अगारिणंविधाय ।

जलभाविएहिं इमेहिं संतरणं कायव्वं कुंभेण, तदभावा दतिएण, तदभावा तुंबेण, तदभावा उडुपेण, तदभावा पण्णीए, तदभावा णावाए वंधाणुलोमा मज्झे णावा गहणं कतं ॥१९१॥

एत्तो एगतरेणं तरियव्वं कारणंमि जातंमि ।
एतेसिं विवच्चासे, चातुम्मासे भवे लहुया ॥१९२॥

कंठ्या । णवरं – विवच्चासे त्ति सति कुंभस्स दतिएण तरति चउलहुयं, एवं एक्केक्कस्स विवच्चासे चउलहुयं दट्ठव्वं । सव्वे ते कुंभाती इमाए जयणाए घेतव्वा ॥१९२॥

णावं पुण अहिकिच्च भण्णति –

णवाणवे विभासा तु, भाविता भाविते ति या ।
तदण्णभाविए चेव, उल्लाणोल्ले य मग्गणा ॥१९३॥

सा णावा अहाकडेण य जाति, संजयट्ठा वा । अहाकडाए गंतव्वं । असति अहाकडाए संजयट्ठाए वि जा जाति ताए वि गंतव्वं । सा दुविहा—णवाणवे विभास त्ति णवा पुराणा वा, णवाए गंतव्वं ण पुराणाए, सप्रत्यपायत्वात् । णवा दुविहा—भावियाभाविय त्ति उदगभाविता अभाविता य, जा उदके छूढपुव्वा सा उदगभाविया, इतरा अभाविया, भावियाए गंतव्वं ण इतराए, उदगविराहणाभयाओ । उदगभाविया दुविहा—तदण्णभाविए त्ति तदुदयभाविया अण्णोदयभाविया च, तदुदयभावियाए गंतव्वं ण इतराए, मा उदग शस्त्रं भविष्यतीति कृत्वा । तदुदयभाविया दुविहा—उल्लाणोल्लत्ति (मग्गणा) उल्ला तिंता, अणोल्ला सुक्का, उल्लाए गंतव्वं ण इयरीए, दगाकर्षणभयात् । मग्गणे त्ति एषा एव मार्गणा याभिहिता । एरिसणाव ए पुण गच्छति ॥१९३॥

इमं जयणं अतिक्कंतो –

असती य परिरयस्स, दुविध तेण तु सावए दुविधे ।
संघट्टण लेवुवरिं, दु जोयणा हाणि जा णावा ॥१९४॥

जत्थ णावा तारिमं ततो पदेसाओ दोहिं जोयणेहिं गउं थलपहेण गउडइ[1] । तं पुण थलपहं इम— अतिकोप्परो वा, वरणो वा, संडेवगो वा, तेण दुजोयणिएण परिरयेण गच्छउ, मा य णावोदएण । अह असइ परिरयस्स सई वा इमेहिं दोसेहिं जुत्तो । परिरओ दुविहा—तेण त्ति सरीरोवकरणतेणा, सावते दुविह त्ति सीहा वाला वा, तेण वा थलपहेण भिक्खं ण लब्भति वसही वा, तो दिवड्ढजोयणे संघट्टेण गच्छउ मा य णावाए । अह तत्थ वि एते चेव दोसा तो जोयणे लेवेण गच्छउ मा य णावाए । अह णत्थि लेवो सति वा दोस जुत्तो तो अद्धजोयणे लेवोवरिएण गच्छउ मा य णावाए । अह तं पि णत्थि, दोसलं वा तदा णावाए गच्छउ । एवं दुजोयणहाणीए णावं पत्तो ॥१९४॥

संघट्टलेवउवरीण य वक्खाणं कज्जति –

जंघद्धा संघट्टो, णाभी लेवो परेण लेवुवरिं ।
एगो जले थलेगो, णिप्पगलण तीरमुस्सग्गो ॥१९५॥

---

१ गम्मइ ।

पुव्वद्धं कंठं। संघट्टे गमण-जतणा भण्णति—एगं पायं जले काउं एगं थले। थलमिहागासं भण्णति सामइगसंण्णाए। एतेण विहाणेण वक्खमाणेण जयणमुत्तिण्णो जया भवति तदा णिग्गलिते उदगे तीरे इरिया-वहियाए उस्सग्गं करेति। सघट्टजयणा भणिया ।।१९५।।

इदाणिं लेव लेवोवरिं च भण्णति जयणा –

णिब्भए गारत्थीणं तु, मग्गतो चोलपट्टमुस्सारे।
सभए अत्थेग्घे वा, ओइण्णेसुं घणं पट्टं ।।१९६।।

णिब्भयं जत्थ चोरभयं णत्थि तत्थ। गारत्थीणं मग्गतो। "गारत्था" गिहत्था। तेसु जलमवतिण्णेसु "मग्गतो" पच्छतो जलं ओयरइ त्ति भणियं होइ। पच्छतो य ट्ठिता जहा जलमवतरंति तहा तहा उवरुवरि चोलपट्टमुस्सारेंति, मा बहु उग्घातो भविस्सति। जत्थ पुण सभयं चोराकुलेत्यर्थः, अत्थग्घं जत्थ त्थग्घा णत्थि, तत्थ ओतिण्णेसु त्ति जलं अद्धेसु गिहत्थेसु अवतिण्णेसु, घणं आयणं, पट्टं चोलपट्टं बंधिउं, 'मध्ये अवतर-तीत्यर्थः ।।१९६।।

जत्थ संतरणे चोलपट्टो उदउल्लेज्ज तत्थिमा जतणा –

दगतीरे ता चिट्ठे, णिप्पगलो जाव चोलपट्टो तु।
सभए पलंबमाणं, गच्छति काएण अफुसंतो ।।१९७।।

दगं पानीयं, तीरं पर्यन्त। तत्थ ताव चिट्ठे जाव णिप्पगलो चोलपट्टो। तु सद्दो निर्भयावधारणे। अह पुण सभयं तो हत्थेण गहेउं पलंबमाणं चोलपट्टयं गच्छति। डंडगे वा काउ गच्छति। ण य तं पलंबमाणं दंडाग्रे वा व्यवस्थितं कायेन स्पृशतीत्यर्थः। एसा गिहि-सहियस्स दयुत्तरणे जयणा भणिया ।।१९७।।

गिहि असती पुण इमा जयणा –

असति गिहि णालियाए, आणक्खेत्तुं पुणो वि परियरणं।
एगाभोग पडिग्गह, केई सव्वाणि ण य पुरतो ।।१९८।।

असति सत्थिल्लयगिहत्थाणं जतो पाडिवहिया उत्तरमाणा दीसंति तओ उत्तरियव्वं। असति वा तेसिं णालियाते आणक्खेउं पुणो पुणो पडियरणं। आयप्पमाणातो चउरंगुलाहिगो दंडो "णालिया" भण्णति। तीए "आणक्खेउं" उवघेत्तूण परतीरं गंतुं आरपारमागमणं "पडिउत्तरणं"। णालियाए वा असति तरणं [1]प्रतिकयकरणो जो सो तं आणक्खेउं जया आगतो भवति तदा गंतव्वं। एवं जंघातारिमे विही भणिओ।

इमा पुण अत्थाहे जयणा – तं पढमं णावाए भण्णति। एगाभोगपडिग्गहे त्ति "एगो भोगो" एगो य योगो भण्णति, एगट्ठुवघणं त्ति भणियं होति, तं च मत्तगोवकरणाणं एगट्ठं, पडिग्गहो त्ति पडिग्गहो सिक्कगे अहोमुहं काउं पुढो कज्जति, नौभेदात्मरक्षणार्थं।

"केय त्ति" केचिदाचार्या एवं वक्खाणयंति – सव्वाणि त्ति माउगोपकरणं पडिग्गहो य पादोपकर-णमसेसं पडिलेहियं। एताभ्यामादेशद्वयाभ्यामन्यतमेनोपकरणं कृत्वा स-सीसोवरियं कायं पादे य पमज्जिऊणं णावारुहणं कायव्वं। तं च ण य पुरओ त्ति पुरस्तादग्रतः, प्रवर्तनदोषभयान्नो अनवस्थानदोषभयाच्च। पिट्ठओ वि णारुहेज्जा, मा ताव विमुच्चेज्ज अतिविकृष्टजलाध्वानभयाद्वा। तम्हा मज्झेऽऽरुहेज्जा ।।१९८।।

---

१ कुशलः।

तं चिमेट्ठाणे मोत्तुं –

ठाणतियं मोत्तूण उवउत्तो ठाति तत्थणावाहे।
दति उडुवे तुंबेसु य एस विही होति संतरणे ॥१६६॥

देवताट्ठाणं, कूयट्ठाणं, निज्जामगट्ठाणं। अहवा पुरतो, मज्झे, पिट्ठओ। पुरओ देवयट्ठाणं, मज्झे सिवट्ठाणं, पच्छा तोरणट्ठाणं। एते वज्जिय तत्थ णावाए अणाबाहे ट्ठाणे ट्ठायति। उवउत्तो त्ति णमोक्कारपरायणो सागारपच्चक्खाणं पच्चक्खाउ य ट्ठाति। जया पुंण पत्तो तीरं तदा णो पुरतो उत्तरेज्जा, मा महोदगे णिब्बुडेज्जा, ण य पिट्ठतो, मा सो अवसारेज्जेज्जा णावाए, तद्दोस-परिहरणत्थं मज्झे उयरियव्वं। तत्थ य उत्तिण्णेण इरियावहियाए उस्सग्गो कायव्वो, जति वि ण संघट्टति दगं। दति-उडुप-तुंबेसु वि एस विही होति संतरणे। णवरं ठाणं तियं मोत्तुं। णाव त्ति दारं गयं ॥१६६॥

अधुणा पमाणद्दारं –

एत्थ पुण इमं जतणमतिक्कंतो सच्चित्तोदगगहणं करेति –

कंजियआयामासति, संसट्ठसुणोदएसु वा असती।
फासुगमुदगं तसजढं तस्सासति तसेहिं जं रहितं ॥२००॥

पुव्वं ताव कंजियं गेण्हति। "कंजियं" देसीभासाए आरनालं भण्णति। आयामं अवसामणं। एतेसिं असतीए संसट्ठसुणोदगं गेण्हति। गवंगरसभायणणिक्केयणं जं तं "संसट्ठसुणोदगं" "भण्णति।

अहवा कोसलविसयादिसु सल्लोयणो विणस्सणभया सीतोदगे छुब्भति तंतंमि य ओदणे भुत्ते तं अवीभूतं जइ अतसागतो घेप्पति, एतं वा संसट्ठसुणोदं। एतेसिं असतीए जं वप्पादिसु फासुगमुदगं तं तसजढ घेप्पति। तस्सासति त्ति फासुय अतसागस्स असति फासुगं सतसागं [1]धम्मकरकादि परिपूयं घेप्पति। सव्वहा फासुगासति सचित्तं जं तसेहिं रहियं ति ॥२००॥

फासुयमुदगं ति जं वुत्तं, एयस्स इमा वक्खा –

तुवरे फले य पत्ते, रुक्खे सिला तुप्प मद्दणादीसु।
पासंदणे पवाए, आतवतत्ते वहे अवहे ॥२०१॥

तुवरसद्दो रुक्खसद्दे संवज्झति तुवरवृक्ष इत्यर्थः। सो य तुवररुक्खो समूलपत्तपुप्फफलो जंमि उदगे पडिओ तंमि तेण परिणामियं त घेप्पति।

अहवा तुवरफला हरीतक्यादयः, तुवरपत्ता पलासपत्तादयः "रुक्खेत्ति" रुक्खकोटरे कटुफलपत्तातिपरिणामियं घेप्पति। "सिल त्ति" क्वचिच्छिलायां अण्णतररुक्खछल्ली कुट्टिता तंमि जं संघट्टियमुदगं तं परिणयं घेप्पति। जत्थ वा सिलाए तुप्पपरिणामियं उदगं तं घेप्पति। तुप्पो पुण मयय-कलेवर-वसा भण्णति। मद्दणादीसु त्ति हस्त्यादिमर्दितं, "आदि" शब्दो हस्त्यादिक्रमप्रदर्शने। एएसिं तुवरादि-फासुगोदगाणं असतीते पच्छद्धं। आयवतत्ते, अवह, वहे, पासंदणे, पवाते, एष क्रमः। उत्क्रमस्तु बंधानुलोम्यात्। पुव्वं आयवतत्तं अप्पोदगं अवहं घेप्पति। असइ आयवतत्तं वहं घिप्पइ। दोण्ह वि असती कुंड-तडागादीप्पसवणोदं घेप्पति, अण्णोण्णपुढविसंकमपरिणयत्ता अत्रसत्वाच्च। तस्सासति धारोदगं, धारापातविपन्नत्वात् अत्रसत्वाच्च। ततः शेषोदगं ॥२०१॥

---

१ पानी छानने के कपडे से छना हुआ।

मद्दणादिसु त्ति जं पयं, अस्य व्याख्या –

जड्डे खग्गे महिसे, गोणे गवए य सूयर मिगे य ।
उप्परिवाडी गहणे, चातुम्मासा भवे लहुया ॥२०२॥

जडो हृस्ती, खग्गो एग्गसिंगी अरण्णे भवति, महिसे गोणे प्रसिद्धे, गोणागिती गवश्रो, सूयर-मृगी प्रसिद्धौ। जड्डादियाण उक्कमगहणे चउमासा भवे लहुया । अहवा मद्दणाइयाणं वा उक्कमगहणे भवे लहुया । एसा पमाणदारे जयणा भणिया । एत्थं पुण मीस-सचित्तोदगाणं गहणे पत्ते जावतियं उवउज्जति तत्तियमेत्तस्स पढमभंगे गहणं, असंथरणे-जाव-अणेगपक्खेवं पि करेज्जा । अद्धाणे त्ति दार गत ॥२०२॥

इदाणिं सेसा कज्जादि दारा अववदिज्जंति –

जह चेव य पुढवीए कज्जे संभमसागारफिडिए य ।
ओमंमि वि तह चेव तु पडिणीयाउट्टणं काउं ॥२०३॥

जहा पुढवीए तहा इमे वि दारा कज्जे, संभमे, सागारिते, फिडिते य, च सद्दो पडिप्पहे य । ओमंमि वि तह चेव उ "तु" सद्दो अविसेसावधारणार्थे, इमं पुण पडिणीयाउट्टणं काउ ति अद्धाणाति जहा संभवं जोएज्जा, पडिणीयाउट्टणं कातु कामो करणं पि करेज्जा । सत्त दारा गया ॥२०३॥

इदाणिं दीहादि गिलाणे त्ति दारा –

विसकुंभ सेय मंते अगदोसध घंसणादि दीहादी ।
फासुगदगस्स असती गिलाणकज्जइ इतरं पि ॥२०४॥

विसकुंभो त्ति लूता भण्णति । तत्थ सेकणिमित्तं उदगं घेतव्वं । मंते त्ति आयमिउं मंत वाहेति, अगओसहाणं वा पीसण-णिमित्तं विसघायमूलियाणं वा घसणहेउ, "आदि" सद्दातो विषोपयुक्तेतरभुक्ते वा एवमेव । दीहादि त्ति दारं गतं –

इदाणिं गिलाणे त्ति –

फासुगोदगस्स असती गिलाणकार्ये इतरं पि सच्चित्तेत्यर्थः । आउक्कायस्स कप्पिया पडिसेवणा गता ॥२०४॥

इयाणिं तेउक्कायस्स दप्पिया पडिसेवणा भण्णइ –

सागणिए[1] णिक्खित्ते[2] संघट्टण[3]तावणा[4] य णिव्वावे[5] ।
तत्तो इंधणे[6] संकमे[7] य करणं[8] च जणणं[9] च ॥२०५॥ द्वारगाथा

सागणिए त्ति दारं –

अस्य सिद्धसेनाचार्यो व्याख्यां करोति –

सव्वमसव्वरतणिओ जोती दीवो य होति एक्को ।
दीवमसव्वरतणिए लहुगो सेसेसु लहुगा उ ॥२०६॥

एक्केक्को त्ति "जोती" उद्दित्तं, "दीवो" प्रदीपः। ज्योतिः सर्वरात्रं क्रियायमाणो[1] सार्वरात्रिकः इतरस्त्वसार्वरात्रिकः। प्रदीपोऽप्येवमेव द्रष्टव्यः। एतेसिं चउण्ह विकप्पाण अण्णतरेणावि जा जुत्ता वसही तीए ठायमाणाणिमं पच्छित्तं। दीवे असव्वरयणिए लहुगो, सेसेसु त्ति सव्वरातीए प्पदीवे दुविहजोइंमि य चउलहुगा ॥२०६॥

इमा पुण सागणिय–णिक्खित्तदाराण दोण्ह वि "भद्दबाहु" सामिकता प्रायश्चित्तव्याख्यान गाथा –

पंचादी णिक्खित्ते, असव्वराति लहुमाहियं मीसे।
लहुगा य सव्वरातिए, जं वा आवज्जती जत्थ ॥२०७॥

पंच त्ति पणगं, तं आदि काउं जत्थ-जत्थ जं संभवति पायच्छित्तं तं तत्थ तत्थ दायव्वं, णिक्खित्ते त्ति, सचित्तपरंपर-णिक्खित्ते असव्व-राईए य प्पदीवे मासलहुगं।

अहवा "पंचादीणिक्खित्ते" त्ति आदिणिक्खित्ते पणगं, मिस्सगणिपरंपरणिक्खित्तेत्यर्थः। कथं पुनराद्यं ? द्वितीयपदे प्राप्ते "पूर्वं तेन ग्रहणमिति करेज्जा" कृत्वा। मासियं मीसि त्ति मीसाणंतरगणि-णिक्खित्ते मासलहुयं। लहुगा य सव्वराइए त्ति सव्वरातीए य पदीवे दुविह जोयंमि य चउलहुगा। च शब्दात्सचित्ताणंतरणिक्खित्त य। जं वा आवज्जती जत्थ त्ति एयं सव्वदाराणं सामण्णपयं, जं संघट्टणादिकं, आयविराहणा-णिप्फण्णं वा, तसकाय-णिप्फण्णं वा, आवज्जति प्राप्नोति, "जत्थ" त्ति सागणियादिसु दारेसु, जहा-संभवं योज्यमिति वाक्यशेषः। "सागणिय-णिक्खित्ते त्ति दारा गता ॥२०७॥

इयाणिं संघट्टणे त्ति दारं –

एयस्स इमा भद्दबाहुसामिकता-वक्खाण-गाहा –

उवकरणे पडिलेहा, पमज्जणाऽऽवास पोरिसि मणे य।
णिक्खमणे य पवेसे, आवडणे चेव पडणे य ॥२०८॥

उवकरणे पडिलेह त्ति पदं, एवं पमज्जणाऽऽवासग पोरिसि मणे य निक्खमणे य पवेसे आवडणे चेव पडणे य एतावति पदाणि। अवान्तर नव द्वाराणि ॥२०८॥

एतेषां सिद्धसेनाचार्यो व्याख्यां करोति –

पेह पमज्जण वासए, अग्गी ताणि अकुव्वतो जा परिहाणी।
पोरिसि भंगमभंजणजोई होति मणे तु रतिव्व रति वा ॥२०९॥

पेह त्ति उवकरणे पडिलेहा गहिता, पमज्जणे त्ति वसहिपमज्जणा गहिता, वासए त्ति आवसगदारं गहितं, अग्गि त्ति एताणि पेहादीणि करेंतस्स अग्गी विराहज्जति त्ति वक्कसेसं। संजोतियाए उवकरणं पडिलेहेति मासलहुअ. अह अगणीए च्छेदणगाणि वडंति तो चउलहुयं। अह अगिणिविराहणाभया पेहादीणि ण करेति, ताणि अकुव्वतो जा परिहाणि त्ति,. तमावज्जते। उवकरणपडिलेहणपरिहाणीए असमायारिणिप्फण्णं मासलहुं उवहिणिप्फण्णं वा,. वसहिं ण पमज्जंति अइंतणिता वा ण पमज्जंति मासलहुं, अह पमज्जंति तहा

१ सिज्जायमाणो (प्र०)।

वि मासलहुं, अह पमज्जिते च्छेदणगेहिं अगणिकाओ विराहिज्जति तो चउलहुयं। पोरिसि त्ति दारं— "पोरिसिभंगमभंजणजोती" व्याख्यापदं, सुत्तपोरिसिं भंजति मासलहुं, अत्थपोरिसिं ण करेति मासगुरुं, सुत्तं णासेति ङ्क, अत्थं णासेति ङ्का, अभंगे पुण जोती विराहिज्जति।

इदाणिं मणे त्ति दारं –

"होइ मणे तु रतिव्व-रति वा" व्याख्यान पदं, स जोतिवसहीए जति रती होज सुहं अच्छिज्जति त्ति रागेत्यर्थः तो चउगुरुयं, अह अरतिं भण्णति – उज्जोते तो चउलहुयं ॥२०९॥

आवस्सगपरिहाणी पुण इमा –

जइ उस्सग्गे ण कुणइ, तति मासा सव्व अकरणे लहुगा।
वंदण थुती अकरणे, मासो संडासगादिसु य ॥२१०॥

जति उस्सग्गे ण करेति तइ मासा, कंठं। सव्वावसगस्स अकरणे चउलहुयं। अह करेति तो जत्तिया उस्सग्गा करेति तति चउलहुगा, सव्वंमि चउलहुयं चेव। जति ण देति वदणए थुतीतो वा तत्तिया मासलहु भवंति। अह करेति तं चेव य मासलहुं। संडासगपमज्जणे अपमज्जणे वि मासो ॥२१०॥

णिक्खमण – पवेसे त्ति दो दारा –

इमा व्याख्या –

आवस्सिया णिसीहिय, पमज्जासज्ज अकरणे इमं तु।
पणगं पणगं लहु लहु, आवडणे लहुगं जं चण्णं ॥२११॥

णिक्खमंतो आवस्सियं ण करेति, पविसंतो णिसीहियं ण करेति, णिताणितो वा ण पमज्जति, आसज्जं वा ण करेति, एतेसिमं पायच्छित्तं आवासिगातिसु जहासंखेण पणगं, पणग, मासलहु, मासलहु। अहावस्सिणीसीहिया न करेति नो पणगं चेव असमायारिणिप्फण्णं वा। पमज्जासज्जाणं पुण करणे अगिणि-णिप्फण्णं। णिक्खमण-पवेसे त्ति दारा गया।

आवडण-पडणे त्ति दारा। आवडणं पक्खलणं, त पुण भूमिअसपत्तो, संपत्तो वा जाणुक्कोप्परेहिं। पडिओ पुण सव्वगत्तेण भूमीए। एत्थ आवडणे लहुग त्ति आवडणे पडणे वा चउलहुग त्ति भणितं भवति। "जंचण्ण त्ति" आवडितो पडिओ वा छण्ह जीवणिकायाण विराहणं करिस्सती त णिप्फण्ण त्ति भणियं होति। अहवा आत्मविराहणाणिप्फण्णं, अहवा अगणिणिप्फण्णं ॥२११॥ आवडण-पडण त्ति दारा गता। गतं च सघट्टण दारं।

इयाणिं तावणे त्ति दारं –

सेहस्स विसीदणता, उसक्कतिसक्कणऽण्णहिं णयणं।
विज्झविऊण तुयट्टण, अहवा वि भवे पलीवणता ॥२१२॥

सच्चित्तमीस अगणी णिक्खित्ते [1]संतणंतरे चेव।
सोधी जह पुढवी तावणदारस्सिमा वक्खा ॥२१३॥

---

१ सांतरनिरंतरम्।

अगणिसहितोवस्सए ठ्ठिताणं सीयत्तो सेहो अप्पाणं पि तावेज्जा, हत्थपादे वा । तावणे त्ति दारं गयं ।

उक्कमेणं इंधणे त्ति दारं वक्खाणे त्ति–

इंधण तमेवं दारुयं करेति । उसक्कतिसक्कण त्ति लहुं विज्जाउ त्ति जलमाणिंधणाणं उकट्टणा उसक्कणा भण्णति, जलउ त्ति तेसिं चेव समीरणा अतिसक्कणा भण्णति, अण्णं वा इंधणं पक्खिवइ । इंधणे त्ति दारंगयं ।

इदाणिं संकमणे त्ति दारं –

अण्णहिं णयणंति स्थानात्स्थानान्तरं संक्रमेत्यर्थं । तत्पुनः शयनीयस्थानाभावात्करोति, प्रदीपनक-भयाद्वा । संकमणे त्ति दार गयं ।

इदाणिं णिव्वावणे त्ति दारं –

विज्जवितूण तुयट्टणे त्ति पलीवणगभया णिव्वावेतु छारधूलीहिं स्वपितीत्यर्थः । इह वक्खाणुक्कम-करणं ग्रंथलाघवार्थं । णिव्वावणे त्ति दारं गतं ।

इदाणिं करणं च त्ति दारं –

अलातचक्रादिकरणं करणेत्यर्थः । तत्रात्मविराधना अग्निविराधना वा । अहवा वि भवे पलीवण-य त्ति तेनालातेन भ्राम्यमाणेन प्रदीपनं स्यात् ।।२१२।।२१३।।

तत्थ इमं पायच्छित्तं –

गाउय दुगुणा दुगुणं बत्तीसं जोयणाइं चरिमपदं ।
दट्ठूण व वच्चंते तुसिणी य पओस उड्डाहे ।।२१४।।

पुव्वद्धं कंठं । णवरं – चउलहुगादी पच्छित्तं । दट्ठूण व वच्चते तुसिणीए त्ति देवउलादिमि पलित्ते आत्मोपकरणं गृहीत्वा आत्मापराधभयात्साधवः प्रयाताः, ते य वच्चंते तुसिणीए दट्ठूणं गिहत्था पदोसं गच्छेज्जा उड्डाहं वा करेज्जा । ते य पदुट्ठा भत्तोवकरणं वसहिं वा ण देज्जा, पंतवणा य करेज्जा, सेयवडेहिं ति दड्ढमुड्डाहं करेज्जा । च सद्दो समुच्चये । करणे त्ति दारं गय ।।२१४।।

इदाणिं संघट्टणादियाण करणंताण पच्छित्तं भण्णति –

संघट्टणादिएसु जणणावज्जेसु चउलहू हुंति ।
छप्पइकादिविराधण इंधणे तसपाणमादीया ।।२१५।।

पुव्वद्धं कंठं । तावणद्दारे इमं विसेसपच्छित्तं, छप्पतिआइविराहण त्ति तावंतस्स छप्पतिदा विराहिज्जति, तं णिप्फण्णं पायच्छित्तं भवतीति वाक्यशेषः । 'आदि' सद्दातो जइवारे हत्थादी परावत्तेउं तावेति तइ चउलहुगा । इंधणे त्ति इंधणदारे इमं विसेसं पायच्छित्तं, तसपाणमादीयं ति इंधणे परिकप्पमाणे उद्देहिगमादि तसा विराहिज्जंति, "आदि" शब्दात् थावरा वि, तं णिप्फण्णं पायच्छित्तं दायव्वमिति ।।२१५।।

इदाणिं जणणं ति दारं –

अहिणवजणणे मूलं, सट्ठाणणिसेवगे य चतुलहुगा ।
संघट्टण परितावण, लहुगुरु अतिवायणे मूलं ।।२१६।।

उत्तराधरअरणिमहणप्पयोगे अहिणवमग्गि जणयति तत्थ से मूलं भवति। इदाणिं च शब्दो व्याख्यायते—"सट्ठाणणिसेवणे य" त्ति जत्थ गिहत्थेहिं पज्जालिया अगणी तत्थ ट्ठिय चेव आयपरप्पओगेणं असघट्टंतो सेवति तत्थ चउलहुगं। सयं पज्जालिए पुण अगणिक्काए पुढवादीयाण तसकायपज्जंताण संघट्ट-परितावण लहुगुरुग-तिवायणे मूल, एवं कम्मणिप्फण्णं ॥२१६॥

चोदगाह –

जति ते जणणे मूलं, हते वि णियमुप्पत्ती य तं चेव।
इंधणपक्खेवंमि वि, तं चेव य लक्खणं जुत्तं ॥२१७॥

यदीत्यभ्युपगमे, ते भवत, उत्तराधरारणिप्पओगेण "जणिए"–उत्पादितेत्यर्थः, मूल भवति, एवं ते "हते" विघातेत्यर्थः, नियमा अवस्सं अण्णो अग्गी उप्पाइज्जिस्सति, तम्हा हते वि तं चेव मूलं भवतु। किं चान्यत् – "इंधणपक्खेवमिवि" अन्योऽग्निः उत्पाद्यते, अपि पदार्थसंभावने, उस्सकणे अन्योग्नि-रुत्पाद्यते। तं चेव य लक्खणं ति तदेवाग्न्युत्पत्तिलक्षणं, "च" शब्दो लक्षण अविशेषाभिधायी, जुत्तं योग्यं घटमाणेत्यर्थ.। तम्हा एतेसु वि मूलं भवतु ॥२१७॥

पुनरवि चोदक एवात्रोपपत्तिमाह।

अवि य हु जुत्तो दंडो, उवघाते ण तु अणुग्गहे जुज्जे।
अणुकंपा पावतरी, णिक्किवता सुन्दरी किह णु ॥२१८॥

अपि च, ममाभिप्रायात्, हु शब्दो दंडावधारणे, जुत्तो योग्यः, दंडणं दंडः, उवघातेति विनाशेत्यर्थः, न प्रतिषेधे, तु शब्दो प्रतिषेधावधारणे स्तोकप्रायश्चित्तप्रदानविशेषणे वा, अणुग्गहे त्ति अणुवघाते उज्जालनेत्यर्थः, जुज्जे युक्तः। अणुकंपणमणुकंपा दये त्ति भणियं होइ सा पावतरी कहं भवति? स्यात्कथं? बहुप्पच्छित्तप्पयाणातो, णिक्किवता णिग्घिणिया, सा सुंदरा पहाणा कहं भवति? स्यात्, कथं? अप्पपच्छित्तप्पदाणातो; कहं ति प्रश्नः, तु वितर्के ॥२१८॥

आचार्याह –

उज्जालज्झंपगा णं, उज्जालो वंणिओ हु बहु कंमो।
कम्मार इव पउत्तो, बहुदोसयरो ण भंजंतो ॥२१६॥

उज्जालओ प्रज्वालकः, झंपको णिव्वावको, णं शब्दो वाक्यालंकारार्थ.। एतेसिं दोण्हं पुरिसाणं उज्जालो वण्णिओ [1]भगवतीए बहुकम्मो, तु शब्दो निश्चितार्थावधारणे। अस्यार्थस्य प्रसाधनार्थं आचार्यो दृष्टान्तमाह – कंमारे त्ति कम्मकरो लोहकारो इव उवंमे, पउत्ता आयुधाणि णिव्वत्तित्ता सो बहुदोसतरो भवति, ण य ताणि आयुधाणि जो भजतेत्यर्थः। तर शब्दो महादोषप्रदर्शने, यथा कृष्णः कृष्णतरः, एवं बहुदोसो बहुदोषतरो भवति, एष दृष्टान्तः। तस्योपसंहारः एवं अग्निशस्त्रं पज्जालयन्तो पुरिसो बहुदोषतरो, न निर्वापयतेत्यर्थ: ॥२१६॥ तेउकायस्स दप्पिया पडिसेवणा गता।

इयाणिं तेउक्कायस्स कप्पिया पडिसेवणा भण्णति –

बितियपदमसति[1] दीहे[2] गिलाण[3] अद्धाण[4] सावते[5] ओमे[6]।
सुत्तत्थ जाणएणं अप्पा बहुयं तु णायव्वं ॥२२०॥

---

1 विवाहप० शत० ७ उद्दे० १०।

वितियं अववायपदं, उस्सगं पदमंगीकृत्य द्वितीयं अववायपदं। तत्थिमे दारा—असति, दीहे, गिलाणे, श्रद्धाणे, सावते, श्रोमे ॥२२०॥

एए पंतीए ठावेऊण एतेसिं हेट्ठातो सागणियादी जणणपज्जवसाणा णव दारा ठविज्जंति। तत्थ सागणियदारस्स हेट्ठतो दीवज्जोतीहिं असव्वसव्वेहिं चउरो दारा ठविज्जंति। संघट्टणदारस्स हेट्ठातो पेहातो पडण-पज्जवसाणा णव दारा ठाविज्जंति। सेसा एक्कसरा। एते सागणियादी सभेया असति दारे अववदिज्जंति।

तत्थ सागणिय त्ति दारं –

अद्धाणणिग्गयादी, असतीए जोतिरहियवसधीए।
दीवमसव्वे सव्वे, असव्वसव्वे य जोतिं मि ॥२२१॥

अद्धाणं महंता अडवी, ताओ णिग्गता वसहिमप्राप्ताविल्यर्थः, "आदि" सद्दातो इमेसु ठाणसु वट्टमाणा –

गाहा—"असिवे श्रोमोयरिए, रायभए खुहिय उत्तमट्ठे य।
फिडिय गिलाण तिसेसे, देवया चेव आयरीए॥

ते य वियाले चेव पत्ता गामं। असतीए जोतिरहियवसहीए सजोइवसहीए ठायंताणिमा जयणा। पढमं असव्वरातीए दीवे। असति, सव्वराइए दीवे। तस्सासति, असव्वराईए जोईए। असति, सव्वरातीए जोइए। मि इत्यय निपातः। सागणिय त्ति दारं गयं ॥२२१॥ णिक्खित्तदाराववातो ण संभवति। तो णाववइज्जति।

संघट्टणं ति दारं भणति –

संघट्टणभया पेहादिसु इमा जयणा कज्जति –

कडओ व चिलिमिली वा, असती सभए वहिं य जं अंतं।
ठागासति सभयंमि व, विज्झातगणिंमि पेहेंति ॥२२२॥

पदीवजोतीणं अंतरे वंसकडगादी दिज्जति। तस्सासति, पोत्तादि चिलिमिणी दिज्जति। एवं काऊण पेहादी सव्वद्दारा करेंति। असति कडगचिलिमिणीणं, वहि उवकरणं पेहेत्तु, बहि सभए, "जं अंतं" अंतमित्ति जुण्णं, अचोरहरणीयमित्यर्थः, तं बाहिं पडिलेहेंति, सारुवकरणं अच्छति, "तं विज्झायगणि मि पेहति"। ठागासति त्ति अह वहि अंतुवकरणस्स वि ठाओ नत्थि, सति वा ठाते अंतुवकरणस्स वि सभयं, तो सव्वं चिय अंतसारुवहिं विज्झायगणिंमि पेहंति। पेह त्ति दारं गतं ॥२२२॥

पमज्जणावास-पोरिसि-मणदारा चउरो वि एक्कागाहाए वक्खाणे त्ति –

णिंता ण पमज्जंती, मूगा वा संतु वंदणगहीणं।
पोरिसि बाहि मणे ण वा सेहाय य देंति अणुसट्ठिं ॥२२३॥

णिंता णिग्गच्छंता पविसंता वा वसहिं न पमज्जंति त्ति वुत्तं होइ। मूगा संति वायाए अणुच्चरणं, वंदणगहीणं वंदनं न ददतीत्यर्थः। सुत्तत्थपोरिसीओ वाहिं करेंति। मणे ण व त्ति सजोतिवसहीए रागदोसं न गच्छंति। जे य सेहा होज्ज ताण य सेहाण देंति अणुसट्ठिं, सेहोऽगीतार्थः, च सद्दा गीताण य, "अणुसट्ठी" उवदेसो ॥२२३॥

मूगा वा संतु वंदणगहीणं अस्य व्याख्या –

आवास बाहिं असती, ठितस्संदण-विगड-जतण-थुति-हीणं ।
सुत्तत्थ बाहिं अंतो, चिलिमिलि कातूण व [1]भरंति ॥२२४॥

अणूणमतिरित्तं वाहिमावस्सगं करेंति । वहिठागासति, ट्ठिय त्ति जो जत्थ ठितो सो तत्थ ठितो पडिक्कमति, वंदणग-थुतीहिं हीणं, हीण-सद्दो पत्तेयं, वियडणा आलोयणा, तं जयणाए करेंति, वासकप्पपाउया णिविट्ठा चेव ठिता भणंति "संदिसह" त्ति । [2]"पोरिसि वाहि त्ति" अस्य व्याख्या–सुत्तत्थपोरिसीओ सति ठाए वाहिं करेंति, असति बहिट्ठागस्स अतो चिलिमिलिं काऊण भरंति । वा विकल्पे, चिलिमिणिमादीणं असती अणुपेहादी करेतीत्यर्थः ॥२२४॥

[3]अणुसट्ठ त्ति अस्य व्याख्या –

णाणुज्जोया साहू, दव्वुज्जोतंमि मा हु सज्जित्था ।
जस्स वि ण एंति णिद्दा, स पाउति णिमिल्लिओ गिम्हे ॥२२५॥

अभ्युद्योतो द्रव्योद्योतः, भावे ज्ञानोद्योतः । सज्जित्था शक्तिः गिहीतीत्यर्थः । उज्जोते जस्स वि ण एति णिद्दा स पाउओ सुवति, । अह गिम्हे पाउयस्स घम्मो भवेज्जा तो णिमिल्लियलोयणो सुवति मउलावियलोयणो त्ति वुत्तं भवति । चउरो वि दारा गता ॥२२५॥

इदाणिं णिक्खम-पवेस त्ति दारा –

तुसिणी अइंति णिंति व, उंमुगमादी कओइ अच्छिवंता ।
सेहा य जोति दूरे, जग्गंति य जा धरति जोति ॥२२६॥

तुसिणीया मोणेण, अतिति पविसति, णिंति वा णिग्गच्छति वा, आवस्सग-णिसीहियाओ णो कुव्वंति ति वुत्तं भवइ । णिक्खम-पवेसा गता ।

इयाणिं आवडण-पडणे त्ति दारा –

उमुग अलायं, "आदि" शब्दादग्निशकटिका गृह्यते, आवडण-पडणभया क्वचित् अस्पृश्यमाना इत्यर्थः । गता दो दारा ।

इदाणिं तावणे त्ति दारं –

सेहा अगीतार्था, ते अग्गीए दूरे कीरंति, गीय वसभा य जग्गंति जाव धरति जोति, मा सेहा वि ताविस्संति । तावणे त्ति दारं गयं ॥२२६॥

इदाणिं इंधणे त्ति दारं –

अद्धाणादी अतिणिद्द, पिल्लिओ गीतोसक्किकयं सुयति ।
सावयभय उस्सिक्कण, तेणभए होति भयणा उ ॥२२७॥

अद्धाणातिपरिस्संतो, अतिणिद्दपिल्लिओ अतिनिद्राग्रस्तः, गीयत्थगहण जहा अगीयत्था ण पस्संति तहा, तं जयणाए ओस्सक्किउं सुवति, स एव गीयत्थो सीहसावयादि-भए जयणाए उम्मुगाणि ओसक्कति,

---

१ सरंति-ख० प्रतो । २ गा. २२३ । ३ गा. २२३ ।

चोरभते उसक्कति सक्कणाणं भयणा। कथं ? जति अविवकंति य तेणा तो ओसक्कणं ण कज्जति, मा अग्गिं दट्ठुमागमिस्संति, अह थिरा चोरा तो ओसक्किज्जति, तं जलमाणि अग्गिं दट्ठु जागरंति त्ति नाभिद्दवंति, एसा भयणा ॥२२७॥

अपुव्विंधणपक्खेवं पि करेज्जा –

अद्धाणविवित्ता वा, परकड असती सयं तु जालेंति ।
सूलादी व तावेउं, कतकज्जे छारमक्कमणं ॥२२८॥

अद्धाणं पहो, विवित्ता मुसिया अद्धाणे विवित्ता परकडा परेण उज्जालिया, तस्स असती तत्स्वयमात्मनैव ज्वालयंति, एतदुक्तं भवति-शीतार्ता इधनं प्रक्षिपंति। इंधणे त्ति दारं गयं।

इदाणिं णिव्वावणे त्ति दारं भण्णति –

परकएण वा सयमुज्जालिएण वा सूलाति तावेउं, आदिसद्दातो विसूतिता, कते कज्जे निष्टितेत्यर्थः, पलीवण-भयाच्छारेणाक्कमति । णिव्वावणे त्ति दारं गयं ॥२२८॥

इदाणिं संकमणे त्ति दारं –

सावय-भय आणेंति वा, सोतुमणा वा वि बाहिं णीणिंति ।
बाहिं पलीवणभया, छारेतस्सासति णिव्वावे ॥२२९॥

सावयभए अण्णत्थाणातो आणयंति, तत्थाणातो वा सोउमणा बाहिं णीणयंति। अह बाहिं पलीवणभया ण णीणयंति ताहे तत्थ ट्ठियं छारेण छादयंति। तस्सासति त्ति छारस्स असति अभावा णिव्वावेंत्ति एगट्ठं ॥२२९॥ असति त्ति दार गतं।

दीहादीदारेसु सागणियादिदारा उवउज्ज जं जुज्जति तं जोएव्वं। इमं तु दीहादि दारसरूवं।

तत्थ दीहे त्ति दारं –

दीह छेयण डक्को, केण जग्ग किरियट्ठता दीहे ।
आहार तवण हेउं, गिलाणकरणे इमा जतणा ॥२३०॥

दीहाति य डक्कं कयाति डंभेयव्वं, तं णिमित्तं अगणी घेप्पति। छेदो वा कायव्वो तस्स देसस्स तो अंधकारे पदीवो जोति वा धरिज्जति। डक्को दष्टः, केणं ति सप्पेणण्णतरेण वा वात-पित्त-सिंभ-सभावेन साध्येनासाध्येन वा तत्परिज्ञाननिमित्तं जोति घेप्पति। जग्ग त्ति दट्ठो जग्गाविज्जति, मा विसं ण णज्जिहिति उल्ललियं ण वा। एवं दीहदट्ठस्स किरियणिमित्तं जोई घेप्पति। दीहि त्ति दारं गयं।

इदाणिं गिलाणे त्ति दारं –

पच्छद्धसमुदायत्थो आहारो गिलाणस्स तावेयव्वो, तत्थ पुण तावणकारणे इमे दव्वा तावेयव्वा ॥२३०॥

खीरुण्होद विलेवी, उत्तरणिक्खित्ते पत्थकरणं तु ।
कायव्वं गिलाणट्ठा, अकरणे गुरुगा य आणादी ॥२३१॥

खीरं वा कढेयव्वं, उण्होदगं वा विलेवी वा उवक्खडेयव्वा, इमाते जयणाते उत्तरेति उवचुल्लगो भण्णति, णिक्खित्तं तत्थ दुविधं। सो पुण उवचुल्लो एवं तप्पति जं चुल्लीए इंधणं पक्खिप्पति तस्स जलियस्स

जाला अवचुल्लगं गच्छति, एवं अहाकडं तप्पइ । उवचुल्लगस्सासती पुव्वपक्खित्त-इंधणजलियचुल्लीए ताविज्जति । असतिमंगालगेसु वि पुव्वकतेसु । पत्थकरणं तु एवं सव्वासतीए चुल्लीमंगालगा वा काउं अगणियमानीय इंधण पक्खिवित्तु कायव्वमिति । तु सर्वप्रकारकरणविशेषणे ।

चोदग आह – "ननु अधिकरणं ?"

आचार्याह – यद्यपि अधिकरणं तह वि कायव्वं गिलाणस्स, अकरणे गुरुगा य आणादी ॥२३१॥

अह साहुणो सूलं विसूइया वा होज्ज तो तावणे इमा जयणा –

गमणादि णंत-मुम्मुर-इंगाले इंधणे य णिव्वावे ।
आगाढे उंछणादी, जलणं करणं च संविग्गे ॥२३२॥

आइ त्ति आदावेव जत्थ अगणी अहाकडो झियायति तत्थ गंतुं सूलादि.तावेयव्वं । अह जत्थ अगणी अहाकडो झियाति, तत्थिमे कारणा होज्जा – (अस्या व्याख्या अग्रे)

ठागासति अचियत्ते, गुज्झंगाणंपयावणे चेव ।
आतपरस्सा दोसा, आणणणिव्वावणे ण तहिं ॥२३३॥

ठागो तत्थ णत्थि, अचियत्तं वा गिहवइणो, अहवा गुज्झंगाणि प्पतावेयव्वाणि, ताणि य गिहत्थ-पुरतो ण सक्केति तावेउ तो ण गम्मति । अह तरुणी तत्थित्थीओ, सो य साहू इदियणिग्गह काउमसमत्थो, तो आयसमुत्थदोसभया न गच्छति, परा गिहत्थीओ, ता वा तत्थुवसग्गंति, एवं पि तत्थ ण गम्मइ त्ति, इस्सालुगा गिहत्था ण खमंति । दोस त्ति एवं बहुआ तत्थ दोसा णाऊण अगणीते तत्थ आणयणा कायव्वा, कते कज्जे निव्वावणं कायव्वं । उज्झवणंति वुत्तं हवइ । न तहिं दोसले गंतव्वं ॥२३२॥

जं पुण आणयणं तं इमाए जयणाए । णंति त्ति खुड्डुगा थेरा वा हयसंका [1]णंतगा तावेउं आणयंति, तेण तं तावयंति । अह णंतगं अंतरा आणिज्जमाणं विज्झाति तो मुंमुरमाणयति मुंमुरो अगणिक-णियासहितो सोम्हो च्छारो । मुंमुरस्स असतीए तेण वा अप्पमाणे इंगाले आणयंति, अणिंधणाणि ज्जाला इंगाला भण्णंति । ते पडिहारिए आणयंति । कते कज्जे तत्थेव ट्ठावयति । इंधणे त्ति इंगालासति तेहिं वा अप्पणप्पमाणे जया वा खद्धगिणा पओयणं तया इंधणमवि पक्खिवंति । एवं कारणे गहणं । कडे य कज्जे णिव्वावेयव्वो अगणी च्छारमादीहिं, मा पलीवणं भवे । आगाढगहणा इदं ज्ञापयति—जहा एस किरिया आगाढे, णो अणागाढे । अंच्छणं ति ओसक्कणं, आदि शब्दादन्यत्र नयनं जलनं जालनं ओसक्कं ति एगट्ठ । करणं ति पडणीयाउट्टणनिमित्तं करणमपि कुर्यात् । च शब्दात् ग्लानादिकार्यमवेक्ष्य जननमपि कार्यं । संविग्गे त्ति जो एताणि करेंतो वि संविग्गो सो एवं करेति । गीतार्थः परिणामकेत्यर्थः । एस पुण पच्छद्धत्थो सव्वेसु गिलाणा-दिदारेसु जहासंभवं घडावेयव्वो ॥२३३॥ गिलाणे त्ति दारं गयं ।

इदाणिं अद्धाण-सावए-ओम-दारा तिण्णि वि एगगाहाए वक्खाणेति –

अद्धाणंमि विवित्ता, सीतंमि पलंब-पागहेउं वा ।
परकड असती य सयं, अ जालेंति व सावयभए वा ॥२३४॥

अद्धाणे विवित्ता मुषिता इत्यर्थः, सीतमिति, कप्पाणऽसती सीते पडंते परकडअगणीए हत्थपाय-सरीराण तावणं करेंति । पलंबपागहेउं व त्ति पलंबा फला, पागो पचनं, हेतु करणं, वा विकप्पे, एष एव

1 वस्त्रवाची (दे. व.) ।

पलंबपचनविकल्पः। एस पलंबपागो परकडाए चेव अगणीए कायव्वो। परकडस्स असतीए सयं जालेति। स्वयं आत्मनैव, च उपप्रदर्शने, किं पुनस्तत्प्रदर्शयति ? इमं, ओमद्वारेप्येष एव प्रलंबार्थः। सावया सीहाई, तस्समुत्थे भए अग्गिं पजालयंति ॥२३४॥ गया तेउक्कायस्स कप्पिया पडिसेवणा ॥

इदाणिं वाउक्कायस्स दप्पिया पडिसेवणा भण्णाति –

णिग्गच्छति[1] वाहरती[2] छिड्डे[3] पडिसेव करण[4] फूमे[5] य।
दारुग्घाडकवाडे[6][7][8] संधी[9] वत्थेय[10] छीयादी[11] ॥२३५॥

घम्माभिभूतो णिलयब्भंतराओ बाहिं णिग्गच्छति, अणिलाभिधारणनिमित्तं वाहरति त्ति शब्दयति-बहिट्ठिओ भणति, एहि एहि इतो सीयलो वाऊ। छिड्डे पडिसेव त्ति छिड्डाते पुणो लोए[1] चोप्पालया भण्णंति, तेसु पुव्वकतेसु वाउपडिसेवणं करेति। करणं ति अपुव्वाणि वा छिड्डाणि वायु-अभिधारणणिमित्तं करेति। फूमेति त्ति घंमद्दितो अण्णतरमंगं फूमति, भत्तपाणमुण्हं वा। दार त्ति दुवारं भण्णति, तं पु वकयमिट्ट-गाहिं ट्ठइयमुग्घाडेति, अपुव्वं वा दारमुग्घाडेति त्ति वुत्तं भवति। उग्घाडसद्दो उभयवाची दारे, कवाडे य। उग्घाडेति वा कवाड घम्मतो, अहवा दारमुग्घाडेति, उग्घाडं वा उग्घाडेति उच्छाडेति वुत्तं भवति, कवाडं वा उग्घाडेति, एवं तिण्णि पदा कज्जं ति। "संधि त्ति" – संधी दोण्हं घराणं अंतरा छिंडी वा त सातिज्जति। वत्थयंति वत्थं चउरंस्सगं काउ पडवायं करेंति। "छीतादि त्ति" छीतं छक्कियं, आदि सद्दातो कासियं ऊससिअं नीससिअं, एते छीयादी अविहीए करेति त्ति ॥२३५॥

सुप्पे[12] य तालवेंटे[13], हत्थे[14] मत्ते[15] य चेलकण्णे[16] य।
अच्छिफुमे[17] पव्वए[18], णालिया[19] चेव पत्ते[20] य ॥२३६॥

सुप्पं गयकण्णाकारं भण्णति सव्वजणवयप्पसिद्धं तेण वा वातं करेति, जहा धण्णं पुणंतीओ। तालो रुक्खो, तस्स वेंटं तालवेंटं, तालपत्रशाखेत्यर्थः। सा य एरिसा छिज्जति। हत्थो सरीरेगदेसो, तेण वीयति। मत्तगो मात्रक एव, तेण वा वातं करेति। चेलं वस्त्रं, तस्य कण्णो चेलकण्णो, तेण वा वीयति। अच्छिं फूमइति। अच्छी अक्खी, तं कंदप्पापरस्स फूमति। फूमणसद्दो उभयवाची। पव्वए त्ति वंसो भण्णति, तस्स मज्झे पव्वं भवति, णालिय त्ति अपव्वा भवति, सा पुण लोए "मुरली" भण्णति, एए वायंति। पत्ते य त्ति पत्तं पद्मिनीपत्रादि तैरात्मानं भक्तं वा वीयति ॥२३६॥

संखे सिंगे करतल, वत्थी दतिए अभिक्खपडिसेवी।
पंचेव य छीतादी, लहुओ लहुया अय इंव ॥२३७॥

"संखो" जलचरप्राणिविशेषः "सिंगं" महिसीसिंगं, शखं शृंग वा धमेइ। करो हस्तस्तस्य तलं करतलं, हस्तसंखं पूरेति त्ति वुत्तं भवति। अण्णतरं वा करतलेन वाद्यं करोति। वत्थी चम्ममयो, सो य वेज्जसालासु भवति, तं वायुपुण्णं करेति। दतिओ दृतिकः, जेण णदिमादिसु सतरणं कज्जति, तं वायपुण्णं करोति। अभिक्खपडिसेवी त्ति एते निग्गच्छवाहिराती ट्ठाणा अभिक्खं पडिसेवंतो अप्पप्पणो ठाणातो चरमं

[1] चोप्पाल=वरण्डा (दे)।

पावति । पंचेव य छीयादिसु पणगं भवति । एत्थ वीसहिं वाराहिं सपयं पावति । लहु त्ति जेसु लहुमासो तेसु दसहिं वाराहिं सपयं पावति । लहुगा य अट्ठेव त्ति जेसु चउलहुअ तेसु अट्ठहिं वाराहिं सपदं भवति ॥२३७॥

विणओ पुच्छति – भगवं ! तुब्भे भणत जहा णिग्गच्छदारादिआण अप्पप्पणो पच्छित्तट्ठाणातो सपयं पावति, तमहं सट्ठाणमेव ण याणामि, कहेह तं ।

गुरु भणति –

> णिग्गच्छ फूमे हत्थे, मत्ते पत्ते य चेलकण्णे य ।
> करतल साहा य लहु, सेसेसु य होंति चउलहुगा ॥२३८॥

साहा "साहुली" वृक्षसालेत्यर्थ । अच्छिफुमणे वि, एतेसु सव्वेसु मासलहु भवति, सेसेसु त्ति जे ण भणिया तेसु चउलहुअं । साहा वयण च सद्दे साहा-भंगेण वा पेहुणेण वा पेहुण-हत्थेण वा वीएइ त्ति वुत्तं भवति ॥२३८॥

"सेसेसु होति[1] लहुआओ" एत अतिपसत्तं लक्खणं ।

आयरिओ पच्चुद्धारं करेति –

> जति छिड्डा तति मासा, जा तिण्णी चतु लहु तु तेण परं ।
> एवं ता करणंमी पुव्व कया सेवणे चेव ॥२३९॥

जति छिड्डाणि करेति तति मासलहु, जाव तिण्णि तेण परणं चउलहु भवति एतं ताव पुव्वच्छिड्डकरणे पच्छित्तं । पुव्वकतासेवणे चेव त्ति पुव्वकते एक्कंमि वातपडिसेवणं करेइ मासलहु, दोहिं दो मासलहु, तीहिं तिण्णि मासलहु, तेण परं चउलहु भवति ॥२३९॥

> कमढगमादी लहुगो, कासे य वियंभिएण पणगं तु ।
> एक्केक्कपदादो पुण, पसज्जणा होतिऽभिक्खणतो ॥२४०॥

कमढं साहुजणपसिद्धं, आदि शब्दातो कंसभायणादी, एतेसु मासलहु । कासिअं खासियं, वियंभियं जंभातितं, च सद्दाओ छित्त-उससिअ-नीससिएसु अविहीए पणग । एक्केक्कपयाओ त्ति आत्मात्मीयपदाद् अभीक्षणत उवरुवरिं पदं प्रसज्जति भवतीत्युक्तं भवति ॥२४०॥

सिस्साभिप्पातो किमत्थं पच्छित्तं दिज्जति ? एत्थ भण्णति –

> वास-सिसिरेसु वातो, बहिया सीतो गिहेसु य स उम्हो ।
> विवरीओ पुण गिम्हे, दिय-राती सत्थमण्णोण्णं ॥२४१॥

वास त्ति वरिसाकालो, सिसिरो सीतकालो, एतेसु वास-सिसिरेसु वाओ बहिया गिहाण सीअलो भवति, गिहेसु तु गृहाभ्यंतरेपु सोम्हो सोष्म, एवं तावत्कालद्वये । तव्विवरीतो पुण गिम्हे त्ति पुव्वाभिहित-कालदुगाओ विवरीतो गिम्हे उम्हकाले गृहाभ्यंतरे सीतो वायुः बहिया उण्ण इति । दिय-राइ त्ति वास-सिसिर-गिम्हेसु एतं वाउलक्खणं दिवसओ वि रातीए वि ।

अहवा दिवसओ वाऊ उण्हो भवति रातीए सीयलो भवति । सत्थं शस्त्रं, जं जस्स विणासकारण

[1] चतुलहुगा ।

तं तस्स सत्थं भण्णति, अन्योन्यशस्त्रं परस्परशस्त्रमित्यर्थः । वास-सिसिर-गिहब्भंतरवाओ बहिवायस्स सत्थं, बहिवातो गिहवायस्स सत्थं । एवं गिम्हे वि । एवं दियवातो [1]सव्वरि-वायस्स, सव्वरि-वाओ य दिय-वायस्स ॥२४१॥

जहेसिं वायाणं, अण्णोण्णसत्थकारणत्तं दिट्ठं –

एमेव देहवातो, बाहिरवातस्स होति सत्थं तु ।
वियणादिसमुत्थो वि, य सउपत्ती सत्थमण्णस्स ॥२४२॥

एमेवं अवधारणे, दिट्ठंतोपसंहारपदरिसणत्थे वा । देहवाओ त्ति सरीरवात: सो य च्छीयादिसु संख-संगपूरणे वा दितियादीपूरणे वा भवति । सो य बहिरवायस्स होइ सत्थं तु एवं [2]वियणादिसमुत्थो वि य त्ति, "आदि" शब्द: वियणग-विहाण-तालयंटादिप्पदरिसणत्थं । स इति स्वेन स्वेन विधानेनोत्पन्न:, अन्योन्य-शस्त्रं विज्ञेयमिति । अनेन कारणेन प्रायश्चित्तं दीयत इति ॥२४२॥

इमे य आय-संजमविराहणादोसा भवंति –

संपातिमादिघातो, आउ-वधाओ य फूम वीयंते ।
दंडियमादी गहणं, खित्तादी बहिरकरणं वा ॥२४३॥

वियणादिणा वीयंतस्स मच्छियादि संपातिमादिघातो भवति, एसा संजमविराहणा । आउ-वधातो य फूम वीयंते, फूमंतस्स मुहं सूखति, वीयंतस्स य बाहा दुक्खति, एसो उवघातो । सुंदरं संखं वा वंसं वा वाएति दंडिओ गेण्हेज्जा, उप्पव्वावेइ त्ति वुत्तं भवइ । "आदि" सद्दातो रायवल्लभो वा । खित्तादि त्ति सहसा संखपूरणे कोइ साहू गिहत्थो वा खित्तचित्तो भवेज्ज । "आदि" सद्दातो हरिसिओ दित्तचित्तो भवइ, पमत्तो वा जक्खाइट्ठो हवेज्ज, उम्माओ वा से समुप्पज्जेज्ज । बहिरकरणं व त्ति पुणो पुणो संखं पूरयंतस्स बहिरत्तं भवति त्ति, च समुच्चये ॥२४३॥ गता वाउक्कायस्स दप्पिया पडिसेवणा ।

इदाणीं वाउक्कायस्स कप्पिया पडिसेवणा भण्णति –

बितियपदे सेहादी अद्धाण गिलाण ऽइक्कमे ओमे ।
सण्णा य उत्तमट्ठो, अणधिया से य देसे य ॥२४४॥ दारगाहा ॥

(१) सेहाति त्ति दारं –

सव्वे वि पदे सेहो, करेज्ज अणाभोगतो असेहो वि ।
सत्थो वच्चति तुरियं, अत्थं व उवेति आदिच्चो ॥२४५॥

णिग्गमणादी सव्वे पदा सेहो अयाणमाणो करेज्ज, "आदि"[3] सद्दातो अणाभोगतो असेहो वि णिग्गच्छणादी पदा करेज्ज । सेहादि त्ति गतं ।

(२) अद्धाण त्ति दारं –

अद्धाणपडिवण्णा साहू सत्थेण समाणं । सो य सत्थो तुरियं वच्चिउ कामो, अत्थं वा उवेति आइच्चो, उसिणं च भत्तं तं णिव्वेउं वीयणादीहिं तुरियं भोयव्वमिति । अद्धाणे त्ति गयं ॥२४५॥

---

[1] शर्वरी रात्रि । [2] व्यजन पंखा । [3] सेहादी ।

(३) गिलाणादिक्कमे त्ति दारं ।

पढमालिअ करणे वेला, फिट्टइ सूरत्थमेति वा ओमे ।
विधुणाति फूमणेण वा, सीतावण होति उभए वि ॥२४६॥

गिलाणवेयावच्चकरो पढमालिअं करेति, तं च उसिणं भत्तपाणं, जाव य तं सयमेव सीती भवति ताव गिलाणस्स वेयावच्चवेलातिक्कमो भवति, अतो तं विधुवणादीहिं तुरियं णिव्वावेऊण भोत्तूण य गिलाणस्स य भत्तपाणमाणयति ओसहं वा । गिलाणे त्ति दारं गयं ॥

(४) ओमे त्ति दारं –

"पढमालियाकरणवेला फिट्टइ" एस पढमपादो ओमे वि घडावेयव्वो । सूरत्थमे त्ति ओमे त्ति ओमं दुब्भिक्खं, तंमि य दुब्भिक्खे [1]अत्थमणवेलाए उसिणं भत्तपाणं लद्धं, जति तं सयं सीती होमाणं पडिच्छति जाव ताव य सूरोऽत्थमेति, ण य संथरति, ताहे विहूवणादीहिं विधुवणाति त्ति विविधं धुणाति विधुवणाति, वीयति त्ति वुत्तं भवति ।

अहवा "विधुवणाति त्ति" विहुअणो वियणओ, तेण वीयति । फूमणेण व त्ति मुहेण फूमति । एतेहिं सीयावणं करेति सीतलीकरणमित्यर्थः । उभए वि त्ति भत्तं पानकं च, अहवा सरीरमाहारो य, अहवा ओदनं व्यंजनं च । ओमे त्ति गतं ॥२४६॥

(५) सण्ण त्ति दारं –

सण्णा सिंगगमादी, मिलणट्ठ विहे महल्लसत्थे वा ।
सेसेसु तु अभिधारण, कवाडमादीणि वुग्घाडे ॥२४७॥

सण्ण त्ति सण्णा संगारेत्यर्थः सिंगगमादी धम्मंति संगारणिमित्तं । तस्स य एवं संभवो भवति मिलणट्ठविहे त्ति विहमद्धाणं, तंमि परोप्परं फिडिया मिलणट्ठा सिंगगमादी धम्मति, महल्लसत्थे वा महतो सत्थो खंधवाराती, तंमि ण णज्जति को कत्थ ठितो, ताहे सिंगगमादी पूरिज्जति, गुरुसमीवे ततो सव्वे आगच्छंति, एतेण कारणेण सिंगगमादीपूरणं करेज्जा । सण्ण त्ति दारं गयं ।

सेस त्ति उत्तमट्ठ-अणहियास-देस-दारा । तत्थ उत्तमट्ठट्ठियस्स घम्मो परिडाहो वा, से कज्जति । अणहियासो घम्म ण सहति । देसे वा, जहा उत्तरावहे अच्चत्थं घम्मो भवति । एतेसु तिसु वि दारेसु अभिधारणं करेति, कवाडमादीणि वा उग्घाडेति, "आदि" सद्दातो अपुव्वदारमुग्घाडेति छिड्डाणि वा करेति । गता तिण्णि वि दारा ॥२४७॥ गता वाउक्कायस्स कप्पिया पडिसेवणा ।

इदाणिं वणस्सतिकायस्स दप्पिया पडिसेवणा भण्णति –

बीयादि[1] सुहुम[2] घट्टण णिक्खित्त[3] परित्तणंतकाए य ।
गमणादि[4] करण[5] छेयण[6] दुरूहण[7] प्रमाण[8] गहणे[9] य ॥२४८॥

बीया परित्ताणंता य, "आदि" सद्दा दसविहो वणस्सती । सुहुमं ति पुप्फा, घट्टणसद्दो सव्वेसु

---

१ उवत्थवणवेलाए ।

पत्तेयं । णिक्खित्तं न्यस्तं, तं पुण परित्तवणस्सतिकाए अणंतवणस्सतिकाए वा । गमणादि त्ति परित्तेणाणंतेण वा गमणं करेति, "आदि" सद्दाओ ठाण-णिसीयण-तुयट्टण करणं प्रतिमारूपं करेति । छेदणं पत्तच्छेज्जं करेति । दुरूहणं आरुहणं । आर्द्रामलकादिप्रमाणं । ग्रहणं हत्थेण, च सद्दा पक्खेवो य । एस संखित्तो दारगाहत्थो विवरितो ॥२४८॥

इदाणिं पच्छित्तं भण्णति –

पचादी लहुगुरुगा, लहुगा गुरुगा परित्तणंताणं ।
गाउय जा बत्तीसा, चतुलहुगादी य चरिमपदं ॥२४९॥

पंच त्ति पणगं. "आदि" त्ति बीयद्दारे, 'लहुगुरुगं त्ति' जति परित्तबीयसंघट्टणेण भत्तं गेण्हति तो लहुपणगं, अणंतबीयसंघट्टणेणं तो गुरुअं । 'लहुगा गुरुगा परित्तणंताणंति पणगा संबज्झंति । परित्त-सुहुमे पादादिणा संघट्टेति लहुपणगं, अणंते गुरुपणगं ।

अहवा "लहुग।" गुरुगा परित्तणंताणं ति णिक्खित्तदारं गहियं, परित्तवणस्सतिकाए अणंतर-णिक्खित्ते लहुगा, अणंते अणंतरणिक्खित्ते गुरुगा, परित्ताणंतवणस्सतिकायपरंपरणिक्खित्ते लहुगुरुमासो, परित्ताणंतवणस्सतिकाए मीसे अणंतरणिक्खित्ते लहुगुरुमासो, तेसु चेव परंपरे जहसंखेण लहुगुरुपणगं । गमणदारे गाउय जा बत्तीस त्ति गाउआओ आरब्भ दुगुणा दुगुणेण जाव बत्तीसं जोयणाणि गच्छति, एत्थ अट्ठसु ठाणेसु चउलहुगादी चरमपदति गाउए चउलहुयं एवं-जाव-बत्तीसाए पारंचियं । एव परित्ते । अणंते गाउयाइ दुगुणेण जा सोलस चउगुरुगादी चरिमं पावति । "च" सद्दो अवधारणे ॥२४९॥

पणगं तु बीय घट्टे, उक्कुट्ठे सुहुमघट्टणे मासो ।
सेसेसु पुढवीसरिसं, मोत्तूणं छेदणदुरुहे ॥२५०॥

'पंचादी [1] लहुगुरुग" त्ति एतस्स चिरंतनगाहापायस्स सिद्धसेनाचार्यः स्पष्टेनाभिधानेनार्थमभिधत्ते । पणगं तु बीयघट्टे गतार्थं । सचेयणवणस्सती उदूहले छुण्णो पीसणीए वा पीट्ठो स रसो उक्कुट्ठो भण्णइ । सो पुण परित्तो अणंतो वा, तस्संसट्ठेण हत्थमत्तेण भिक्खं गिण्हइ, परित्ते मासलहुं, अणंते मासगुरुं । सुहुमा फुल्ला, ते परित्ताणंता वा, ते जिंघेतो घट्टेति । मासो त्ति परित्तेसु मासलहुं, अणंतेसु मासगुरुं । सेसेसु ति करण-छेदण-दुरुहण-पमाण-ग्रहणदारा, एतेसु पुढवीसरिसं, मोत्तूणं छेदए दुरुहे कंठ्यं ॥२५०॥

छेदेण दुरुहण वक्खाणं ।

छेदणपत्तच्छेज्जे, दुरुहण खेवा तु जत्तिया कुणति ।
पच्छित्ता तु अणंते, अ गुरुगा लहुगा परित्तेसु ॥२५१॥

छेदणं ति छेदणद्दारं, तत्थ पत्तच्छेज्ज करेति णंदावत्त-पुण्णकलसादी, दुरुहणमारुहणं, तत्थ ऽऽरुहंतो जत्तिया हत्थपादेहिं खेवा करेति, तत्तिया पायच्छित्ता इति वक्कसेसो । ते य च्छेयण दुरुहणेसु पच्छित्ताओ अणंते गुरुगा लहुगा य परित्तेसु, कंठ्यं । छेयण-दुरुहणा दो दारा गता ॥२५१॥

इयाणिं बियद्दाराणमभिक्खसेवा भण्णति –

अट्ठग सत्तग दस, णव वीसा तह अउणवीस जा सपदं ।
सच्चित्त मीस हरिते, परित्तणंते य बीयादी ॥२५२॥

---

१ गा० २४० ।

पुव्वद्ध-पच्छद्धाणं अत्थे जुगवं वच्चइ । सच्चित्त त्ति सचित्त-परित्तवणस्सतिकाए चउलहुगादि अट्ठहिं वारेहिं सपदं पावति । सचित्ताणंतवणस्सतिकाए चउगुरुगादि सत्तहिं वारेहिं सपद पावति । मीस-हरिय त्ति हरित-ग्रहणं बीजावस्थातिक्रांतप्रतिपादनार्थं । मीसपरित्तवणस्सतिकाए मासलहुगाहि दसहिं सपदं पावति, अणंत-मीसे मासगुरुगादि णवहिं सपद । परित्ताणंते य त्ति उभयत्र योज्यं हरिए वीएसु य । परित्तबीएसु पणगारद्धं वीसति वारा सपदं पावति, अणंतबीएसु तहु अउणवीस जा सपदं । यथाद्य-पदेसु तथात्रापि एकैक-पदवृद्ध्या-जाव-एक्कोणवीसइम पदं ताव सपद भवतीत्यर्थ. । आदि सद्दाओ जत्थ जत्थ वि पणगं तत्थ तत्थ वि एयं चेव । वणस्सतिकायदप्पिया पडिसेवणा गता ॥२५३॥

इदाणिं कप्पिया पडिसेवणा भण्णति –

अद्धाण[1] कज्ज[2] संभम[3] सागारिय[4] पडिपहे[5] य फिडिए[6] य ।
दीहादी[7] य गिलाणे[8] ओमे[9] जतणा य जा तत्थ ॥२५३॥ दारगाहा॥

एतेसु अद्धाणादि द्दारेसु बीयादि द्दारा अववतियव्वा । ते य जहा पुढविक्काए तथाऽत्रापि द्रष्टव्याः ॥२५३॥

णवरं—पंथे वच्चंताणं इमा जयणा –

पत्तेगे साहारण, थिराथिरऽऽक्कंत तह अणऽऽक्कंते ।
तलिया विभास कत्ती, मग्गओ खुण्णे य ठाणादी ॥२५४॥

पत्तेगो पत्तेगवणस्सति, सो दुविहो मीसो सचित्तो य । साधारणो अणंतवणस्सई, सो दुविहो-सच्चित्तो मीसो य । थिरो णाम दढसंघयणो, अथिरो अदढसंघयणो । अक्कंतो णाम जनेनागच्छगच्छमाणेन मलितेत्यर्थः, इतरो पुण अणक्कंतो । एतेसु गमणे इमा जयणा ।

(१) पुव्वं पत्तेगमीस थिरक्कंतेण णिप्पच्चवाएण गंतव्वं ।
(२) असते एरिसगस्स पत्तेगमीस थिर अणक्कतेण णिपच्चवाएण गंतव्वं ।
(३) असति तस्स पत्तेगमीस अथिर अक्कंतेण णिपच्चवाएण गंतव्वं ।
(४) असति पत्तेगमीस अथिर अणक्कंतेण णिप्पच्चवाएण गतव्वं ।
एते [1]चउरो विगप्पा पत्तेगमीसे ।
एतेसिं असतिए एतेण चेव कमेण [2]चउरो अणंतवणस्सतिकाए मीसविकप्पा ।
एतेसिं पि असतिए परित्तवणस्सतिकाए सचित्ते एतेणेव कमेण [3]चउरो विगप्पा ।
एतेसिं पि असतीते अणंतवणस्सतिकाए सचित्ते एतेणेव कमेण [4]चउरो विकप्पा ।
एते सोलस णिप्पच्चवाए विगप्पा । सपच्चवाए वि सोलस, ते पुण सव्वहा वज्जणिज्जा ।

(८)१	पत्तेग०	मीस०	थिरो	अक्कंत०	णिप्प०	१	अणं०	मीस०	थि०	अक्कं०	णिप्प०
२	,,	,,	,,	अणाक्कंत	,,	२	,,	,,	,,	अण०	,,
३	,,	,,	अथिरो	अक्कंत	,,	३	,,	,,	अथिर०	अक्कं०	,,
४	,,	,,	,,	अणक्कत	,,	४	,,	,,	,,	अणक्कंत०	,,
(८)१	परि०	(स)	थिरो	अक्क०	णिप्प०	१	अण०	(स)	थिर०	अण०	,,
२	,,		,,	अण०	,,	२	,,		,,	अण०	,,
३	,,		अथिरो	अक्क०	,,	३	,,		अथिर०	अक्कं०	,,
४	,,		,,	अण०	,,	४	,,		,,	अण०	,,

१ मी प. ४ । २ मी. अ. ४ । ३ स. प्र. ४ । ४ स. अ. ४=१६. ।

जया पुण परित्ताणंतमीससचित्ताणंतरेणा वि सोलसण्हं विगप्पाणं गच्छति तदा तलियाविभास त्ति "तलिया" गमणीतो भण्णति, "विभासा" जइ कंटकादीहिं पाउवघाओ अत्थि तो ताओ ण मुच्चंति, अह णत्थि तो ताओ अवणेंति। मग्गओ त्ति पच्छित्तो णिब्भए गमणं करेति, परित्तीकृतेत्यर्थः। कत्त त्ति चम्मंकं, जत्थ पुण अरण्णादिसु सत्थे सण्णिविट्ठे थंडिलं ण भवे तत्थ कत्ति गोण दि-खुण्णे ठाणे ठाणादीणि करेंति, ठाणं उस्सग्गो, आदि सद्दातो णिसीयण-तुयट्टणाणि घेप्पंति। असती कत्तीए कप्पं काउं गोणाति खुण्णे ठाणे ठाणादीणि करेंति। असतिकप्पस्स गोणाति खुण्णे ठाणे ठाणादीणि करेंति। असतीखुण्णस्स पदेसेसु वि करेंति। पंथजयणाभिहिता ॥२५४॥

इमाऽऽरुहणद्दारस्स अववायविही -

सावय तेणभया वा, पंथफिडिया पलंबकज्जे वा।
दुरुहज्ज च्छेदकरणं, पडिणीयाउट्ट-गीतेसु ॥२५५॥

दुरुहेज्ज ति। सावता सीहादि, तेहिं अभिभूतो रुक्खं दुरुहेज्ज। सरीरोवकरणतेणा तब्भया वा रुक्खं दुरुहेज्ज। पंथाओ वा फिडिओ गामपलोयणनिमित्तं रुक्खं दुरुहेज्ज। पलंबाण वा कज्जे रुक्खं दुरुहेज्जा। इमो पुणच्छेयणद्दाराववातो। छेत्तो त्ति विदारणं, करणं क्रिया, तामपि कुर्यात् पडिणीयाउंटणणिमित्तं। पडिणीयस्साभिभवंतस्स पुरतो कयलिखभादि वट्टिज्जंति, भिगुडीविडंबियमुहो होऊण भणति—"जइ ण ट्ठासि, एवं ते सिरं कट्टियामि, जहेस कयलीखंभो," एवं कयकरणो करेति। अगीतेसु त्ति पलंबाणि वा अगीतेसु विकरणाणि काऊणमाणिज्जंति, एवं वा च्छेय-संभवो ॥२५५॥

ताणि य पुण पलंबाणि इमाते जयणाए घेतव्वाणि -

फासुयजोणि परित्तं, एगट्ठियऽबद्धभिन्नऽभिण्णे य।
बद्धट्ठिए वि एवं, एमेव य होति बहुवीए ॥२५६॥

फासुअं ति विद्धत्थं, जीवउप्पत्तिट्ठाणं जोणी भवति, परित्ता जोणी जस्स पलंबस्स तं भण्णति परित्तजोणी, परित्तं अणंतं ण भवति। एगट्ठि त्ति एगबीयं जहा अंबगो। अबद्धो अट्ठिल्लगो जस्स तं अबद्धट्ठियं, अनिष्पन्नमित्यर्थः। भिन्नमिति द्रव्यतो, भावतो नियमा तदभिन्न, कहं? उच्यते, फासुगग्रहणात्। एस पढमभंगो व्याख्यातः। अभिण्णे य त्ति द्वितीयभंगग्रहणमेतत्। अबद्धट्ठिपडिवक्खो घेप्पइ, बद्धट्ठिइए वि एवं, बद्धट्ठियग्रहणात् ततियचउत्थभंगा गहिया, एवं शब्दग्रहणात् जहा पढमबितियाण अंते भिण्णाभिण्णं एवं ततियचउत्थाण वि अंते भिण्णाभिण्णं कर्तव्यमिति। एगट्ठियप्पडिवक्खो घेप्पति, एमेव य होति बहुवीए त्ति एवं बहुवीए वि चउरो भंगा। अबद्धबद्धट्ठिय भिण्णाभिण्णेहिं कायव्वा। एते अट्ठा। अण्णे पत्तेयवणस्सतिपडिवक्खसाहारणेण अट्ठ, एते सोलस। अण्णे फासुगपडिपक्खे अफासुगगहणे सोलस। एते सव्वे बत्तीसभंगा हेट्ठतो णायव्वा ॥२५६॥

एमेव होति उवरिं एगट्ठिय तह य होति बहुवीए।
साधारणस्सऽभावा आदीए बहुगुणं जं च ॥२५७॥

उवरिं रुक्खस्स एमेव बत्तीसं भंगा कायव्वा। एगट्ठिय तह य होति "बहुवीए त्ति" इमं पुण वयणं सेसाण फासुगजोणिपरित्तइयाण वयणाण सपडिवक्खाण सूयणत्थमभिहितं। ताणि य इमाणि फासुगजोणि परित्तो एगट्ठिगा अबद्धभिण्ण सपडिवक्खा, एवं भंगा बत्तीसं, उवरिं साहारणस्स, ऽभावत्ति अनेन अधोवरि

बत्तीसभंगक्रमेण फासुगस्स साहारणसरीरस्स अभावा अलाभेत्यर्थः; सचित्तं गृण्हाति। तत्रेदं वाक्यं "आदीए बहुगुणं जं च" – आदीए बहु गुणंति सेसाण बहुगुणं जनयति करोतीत्यर्थः, "जं च त्ति" यद् द्रव्यं, सति सचित्ते जं दव्वं बहुगुणे करोति तं गेण्हति, परित्तं अणंतं वा। न तत्र क्रमं निरीक्षतीत्यर्थः। अहवा – साहारणस्वभावात् यद्द्रव्यं बहुगुणतर, तमादीयते गृण्हतीत्यर्थः ॥२५७॥ वणस्सतिकायस्स कप्पिया पडिसेवणा गता। गओ य वणस्सतिकायो।

इदाणिं बेइंदियादितसकाए दप्पिया पडिसेवणा भण्णति –

१ २ ३ ४ ५ ६

संसत्तपंथ-भत्ते, सेज्जा उवधी य फलग-संथारे।
संघट्टण परितावण, लहु गुरु अतिवातणे मूलं ॥२५८॥

बेइंदियादीहिं तसेहिं संसज्जति पंथो, संसज्जति भत्तं, संसज्जति सेज्जा, संसज्जति उवही, संसज्जति फलहयं, संसज्जति संथारो। जम्मि य विसए बेइंदियादीहिं पथ-भत्ताती संसज्जंति तत्थ जइ दप्पेण परिगमणं करेति तत्थिमेण विकप्पेणिम पायच्छित्तं।

इदं पश्चार्द्धं व्याख्यानं—संघट्टणपरितावणं त्ति बेइंदियाईणं संघट्टणं करेइ, परितावणं करेइ, उद्दवण करेति। लहुगुरु त्ति बेइंदिया संघट्टेति चउलहुयं, परितावेति चउगुरुयं, उद्दवेति छल्लहुअ। तेइंदियाण-संघट्टणादिसु पदेसु चउगुरुगादि छगुरुगो ठाति। चउरिंदियाण छल्लहुआदी छेदो ठाति। पंचेंदियाण-संघट्टणे छगुरुअं, परितावणे छेदो, उद्दवणेऽतिवातणे मूलं ति पंचेंद्रियं व्यापादयमानस्य मूलेत्यर्थः ॥२५८॥

एसो चेव गाहापच्छद्धो अनेन गाथासूत्रेण स्पष्टतरोऽभिहितः, जओ –

संकप्पे पदभिंदण पंथे पत्ते तहेव आवण्णे।
चत्तारि छच्च लहुगुरु सट्ठाणं चेव आवण्णे ॥२५९॥

संकप्प इति गमणभिप्पायं करेति, पदभिंदणमिति गृहीतोपकरणो प्रयातः, पथे त्ति ससत्तविसयस्स जो पंथो तं, पत्तो त्ति ससत्तविसयं प्राप्त.। तहेव आवण्णे त्ति "तह" शब्दो पादपूरणे, "एव" शब्दो प्रायश्चित्तावधारणे, "आवण्णो" प्राप्त, क प्राप्त ? उच्यते, बेइंदियादिसु संघट्टणपरितावणउद्दवणमिति। चत्तारि छच्च लहु गुरु त्ति "लहुगुरु" शब्द : प्रत्येकं, चत्तारि लहुगुरुए छच्च लहुगुरुए। ते चउरो पच्छित्ता संकप्पादिसु जहासंखेण जोएयव्वा। संकप्पे चउलहु, पदभेदे चउगुरु, पथे छल्लहु, पत्ते छगुरु। सट्ठाण चेव आवण्णे त्ति बेइंदियाईण संघट्टणविकप्पं आवण्णस्स सट्ठाणपच्छित्तं "च" पूरणे एवमवधारणे ॥२५९॥

बिय तिय चउरो, पंचिंदिएहिं घट्टपरितावउद्दवणे।
चतुलहुगादी मूलं, एगदुगे तीसु चरिमं तु ॥२६०॥

गतार्थाः। नवरं—एग-दु-तीएसु चरिमं ति एगं पचेंदियं वावादेति मूलं, दोसु अणवट्ठो। तिण्णि पंचेदिया वावादेति पारंचियं। "तु" शब्दो अभिक्खासेवनप्रदर्शनार्थः। एसदारगाहा समासार्थेनाभिहिता ॥२६०॥

इदाणिं पंथे त्ति दारं व्याख्यायते –

मुइंग-उवयी-मक्कोडगा य संबुक्क-जलुग-संखणगा।
एते उ उभयकालं, वासासण्णे य णेगविधा ॥२६१॥

पंथो इमेहिं संसत्तो मुइंगा पिपीलिया, उवइग समुद्देहिकाउ, मक्कोडगा कृष्णवर्णाः प्रसिद्धाः, संबुक्का अणट्ठिया मंसपेसी, दीर्घा पृष्टिप्रदेशे, आवर्तकडाहं भवति, क्वचिद्विषये पतितमात्रमेव 'भूमौ जलं जलूकाभिः संसज्जति, सखणगा श्लक्ष्णा संखागारा भवंति। एते मुइंगादी पाणा बहुजले विसए उभयकालं भवति, उड्डवासासु त्ति भणियं भवति। वासासण्णेय त्ति "वासा" वर्षाकालः, आसन्नमिति प्रासः वर्षाकाल एवेत्यर्थः, अहवा वर्षाकालो भद्दवदास य मासा, तस्सासण्णो पाउसकालो, तंमि य पाउसकाले अहिणववुट्ठ-भूमीए णेगविहा प्राणिनो भवंतीत्यर्थः, "च" पुरणे अकालवर्षबहुप्राणिसंमूर्च्छने वा। पंथे त्ति दारं गयं ॥२६१॥

इदाणिं भत्ते त्ति दारं –

दधितक्कंबिलमादी संसत्ता सत्तुगा तु जहियं तु।
मूइंगमच्छियासु य, अमेह उड्डादि संसत्ते ॥२६२॥

"दहि" पसिद्धं, "तक्कं" उदसी, छासि त्ति एगट्ठं, अंबिलं पसिद्धं, "आदि" सद्दाओ ओदनमादी, एते जत्थ संसत्ता आगंतुगेहिं तदुत्थेहिं वा संसत्ता, सत्तुगा, तु शब्दो आगंतुक तदुत्थप्राणिभेदप्रदर्शने। जहियं तु त्ति– "जहिं" विसए, "तु" शब्दो अवधारणे, किं अवहारयति ? उच्यते; नियमा तत्र संजमविराधनेत्यर्थः। मूइंगा पिवीलिया, "मच्छिया" मक्षिका एव, मूइंगसंसत्ते अमेहा भवति, मेहोवघातो भवतीत्यर्थः; मच्छियासु संसत्तेसु उड्डं भवति, वमनमित्यर्थः। एसा आयविराहणा, "च" शब्दः संयमविराहणा प्रदर्शने। भत्ते त्ति दारं गतं ॥२६२॥

इदाणिं सेज्ज त्ति दारं –

जत्थ सेज्जा संसज्जति तत्थिमाहिं चेट्ठाहिं ते पाणिणो वहेंति –

ठाण-णिसीयण-तुअट्टण-णिक्खमण-पवेस-हत्थ-णिक्खेवो।
उव्वत्तणमुल्लंघण,[1] चिट्ठा सेज्जादि-सत्तवेति ॥२६३॥

ठाणं काउस्सग्गं, णिसीयणं उव-विसणं, तुयट्टणं सयणं, णिक्खमणं बहिया, पविसण अंतो, हत्थो सरीरेगदेसो, तस्स णिक्खेवो भूमीए, अहवा हत्थगो रयहरणं भण्णति, तं वा णिक्खवइ भूमीए, न आत्मा-वग्रहादित्यर्थः। उव्वत्तणं नाम परावर्तनं। एगसेज्जाए उवविट्ठस्स तुयट्टस्स वा चिरं असमाणस्स जदा सरीरं दुक्खिउमारद्धं तदा परिवत्तिउमण्णहा ट्ठाति त्ति वुत्तं होइ। उल्लंघणं [2]एलुगस्स "आदि" सद्दाओ संथारगस्स भित्तिफलगाण वा। एवमादिसु चेट्ठासु ते संसत्तवसहीए पाणिणो वहेंति ॥२६३॥

किं च जा एया ठाण-निसीयणादियाओ चेट्ठाओ भणिया जाओ संजमकरीओ ता इच्छिज्जंति, ण इयरातो।

जओ भण्णति –

जा चिट्ठा सा सव्वा, संजमहेउं ति होंति समणाणं।
संसत्तुवस्सए पुण, पच्चक्खमसंजमकरी तु ॥२६४॥

---

१ उव्वत्तण मुल्लंघादिकासु चेट्ठासु उ वघंति। २ देहली।

जा इति अणिद्दिट्ठसरूवा चेट्ठा घेप्पति। अहवा "जा" इति कारणिककायक्रियाप्रदर्शनेत्यर्थः, कायक्रिया चेष्टा भण्णति। सव्वा असेसा। पावविणिवत्ती संजमो भण्णति। हेऊ कारणं। तु सद्दो अवधारणे। होइ भवति। समणाणं साहूण ति वुत्तं भवति। इह पुण संसत्तवसए पच्चक्खमसंजमकरी किरिया साहूणं भवतीत्यर्थः। तु सद्दो अवधारणे। वसहि त्ति दारं गतं ॥२६४॥

इदाणिं उवहि त्ति दारं –

छप्पति दोसा जग्गण, अजीर गेलण्ण तासिं परितावे।
ओदणपडिते भुत्ते, उद्दं डउरातिया दोसा ॥२६५॥

छप्पति त्ति जूआ भण्णंति, ताहिं जत्थ विसए उवहि संसज्जति तत्थ बहु दोसा भवंति। ते इमे-ताहिं खज्जमाणो जग्गति, जागरमाणस्स भत्तं ण जीरति, अजीरमाणे य गेलण्णं भवति, एत्थ गिलाणारोवणा भणियव्वा।

अहवा ताहिं खज्जमाणो कंडूयति, कंडूयमाणस्स खयं भवति, एवं वा गिलाणारोवणा। तासिं परितावो त्ति तासिं छप्पयाणं कंडूइयमाणो परितावणं करेति, संघट्टति, उद्दवेइ वा। एत्थ तण्णिफण्णं पायच्छित्तं दट्ठव्वं। इह पुव्वद्धे आयसंजमविराहणा दो वि दरिसिया। इमा पुण आयविराहणा ओयणपडिते भुत्ते त्ति-ओदणो कूरो तत्थ पडिया छप्पतिता, सो य ओदणो भुत्तो, तंमि य भुत्ते उद्दं भवति, डउयरं वा भवति, "डउयरं" जलोयरं भण्णति। उवहि त्ति दारं गयं ॥२६५॥

इयाणिं फलग-संथारे त्ति दारं –

संसत्तेऽपरिभोगो, परिभोगामंतरेण अधिकरणं।
भत्तोवधि संथारे, पीढगमादीसु दोसाओ ॥२६६॥

संसत्ते त्ति फलगसंथारेसु संसत्तेसु अपरिभोगो त्ति अभुज्जमाणेसु, परिभोगमंतरेणं ति परिभोगस्स अंतरं परिभोगमंतरं परिभोगाभावेत्यर्थः, अधिकरणं ति अपरिभुज्जमानं अधिकरणं भवति। कहं ? यतोऽभिधीयते।

गाथा – "जं जुज्जति उवकारे, उवकरणं तं से होइ उवकरणं।
अतिरेगं अहिकरणं, अजओ य जयं परिहरंतो" ॥३९॥

भत्तोवहिसंथारे पीढगमादीसु दोसाओ एते जे अधिकरणं ते भणिया। तु शब्दः दोसावधारणे ॥२६६॥

अहवा इमे दोसा –

संसत्तेसु तु भत्तादिएसु, सव्वेसिमे भवे दोसा।
संघट्टादि पमज्जण, अपमज्जण सज्जघातो य ॥२६७॥

पुव्वद्धं कंठं। संघट्टादि त्ति संघट्टणं फरिसणं, "आदि" सद्दातो परितावणोद्दवणं एते, भत्तादिसु सव्वेसु संभवंति। पमज्जण त्ति संसत्ता सेज्जादी जति पमज्जति तो ते चेव संघट्टणादि दोसा भवंति, अपमज्जण त्ति जई ते सेज्जाती संसत्ते ण पमज्जति तो सज्जघातो य त्ति सज्जो सद्यो वर्तमान एव प्राणिनां घातो भवतीत्यर्थः। च सद्दो समुच्चये। फलग-संथारय त्ति दारं गय ॥२६७॥

इदाणिं सव्वदारावसेसं भणति –

एयं पुण जत्थ जत्थ दारे जुज्जइ तत्थ तत्थ घडावेयव्वं ।

वेण्टियगयगहणणिक्खेवे, णिच्छुभणे आतवातो छायं च ।
संथारए णिसेज्जाए, ठाणे य णिसीयण तुयट्टे ॥२६८॥

वेंटिय त्ति उवकरणलोली भण्णइ, तीए गहणं करेति णिक्खेवं वा, तत्थ इमे सत्त भंगा –

[1]ण पडिलेहेति ण पमज्जेति, [2]ण पडिलेहेति-पमज्जति
[3]पडिलेहेति ण पमज्जति, [4]पडिलेहेति पमज्जति
[5]जं तं पडिलेहितं पमज्जितं त दुप्पडिलेहियं दुप्पमज्जियं
[6]दुप्पडिलेहियं-सुप्पमज्जियं, [7]सुप्पडिलेहितं दुप्पमज्जितं

एतेसु पच्छित्तं पूर्ववत् । सुप्पडिलेहियं करेमाणस्स वि संघट्टणादिणिप्फण्णं पूर्ववत् –

खेलणिच्छुभणे वि एवं चेव । आयवो उण्हं, आयववज्जा च्छाया, ततो आयवातो उवकरणं च्छायं संकामेति, एत्थ वि अपमज्जमाणस्स प्राणिविराहणा । कहं ? उण्हजोणिया सत्ता च्छायाए विराहिज्जंति, छायाजोणिया वि उण्हे विराहिज्जंति । अतो अपमज्जमाणस्स पाणिविराहणा । एवं संथारगे वि पमज्जंतस्स संघट्टादिणिप्फण्णं, अकरेमाणस्स य सत्तभंगा ।

णिसज्जंति सुत्तत्थाणं निमित्तं जत्थ भू-पदेसे णिसिज्जा कज्जति तत्थ पमज्जंतस्स संघट्टणादीयं अकरेमाणस्स य सत्त भंगा । ठाणमिति काउस्सग्गट्ठाणं, तत्थ वि एवं चेव । णिसीयणं उवविसणट्ठाणं, तुयट्टणं सुवणट्ठाणं, एतेसु वि एवं चेव । पुढविसम्मिस्सिएसु जीवेसु एस पायच्छित्तविही भणितो ॥२६८॥

इमो पुण उवकरणसम्मिस्सिय छप्पदिगादिसु विधी भण्णति –

परिट्ठावण-संकामण-पप्फोडण-धोव्व-तावणे अविधी ।
तसपाणंमि चउव्विहे, णायव्वं जं जहिं कमति ॥२६९॥

छप्पदिगाओ परिट्ठवेति, वत्थाओ वत्थे संकामेति, जहा रेणुगुण्डियं पप्फोडिज्जति एवं पप्फोडेति, छप्पया सडंतु त्ति, साडण णिमित्तं वा धोवणं करेति, उण्हे अगणीए वा तावेति । सव्वेसेतेसु पत्तेय चउलहुअं । एवं ताव णिक्कारणगताणं । कारणे वि अविहि त्ति कारणगताणं पुण अविहीए संकामंतस्स चउलहुयं, संघट्टणपरितावणउद्दवणणिप्फण्णं च दट्ठव्वं । तसपाणंमि त्ति तसकायग्रहणं, सो य तसक्कातो चउव्विहो इमो-वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया । णायव्वं बोधव्वं, जं पायच्छित्तं, जहिं ति वेइंदियातिकाए, क्रमति घडति युज्यतेत्यर्थः । तं पुण परिट्ठावणादिदारेसु जहासंभवं जोएयव्वं । उदाहरणं मंकुण-पिसुकादयः[1] ॥२६९॥

विंटिय-ग्रहण-णिक्खेवदाराणं इमा पच्छित्त गाहा –

अप्पडिलेहऽपमज्जण, सुद्धं सुद्धेण वेंटियादीसु ।
तिग मासिय तिग, पणए लहुगं कालतवोभए जं च ॥२७०॥

गतार्थाः । इमो अक्खरत्थो । अप्पडिलेह अप्पमज्जण त्ति सत्तभंगा गहिया, सुद्धं सुद्धेण ति जति वि पाणे ण विराहेति तहावि पायच्छित्तं, निक्कारणा असंजमविसयगमणातो । ते पुण सत्त भंगा वेंटियादीसु त्ति ।

१ क्षुद्रकीटिविशेषाः ।

आइल्लेमु तिसु भगेसु मासलहु, ततोऽणंतरेसु तिसु पणगं, चरिमो सुद्धो कायणिप्फण्णं वा । लहुत्ति-लहु-मासपणगविसेसण ।

अहवा-लहुं कातेण य तलेण य उभएण य विसेसियव्वा मासा पणगा य । जं च त्ति जं च तसकायणिप्फण्णं तं च दट्ठव्वं ॥२७०॥

संकप्पादिपदेसु परिट्ठावणादि पदेसु इमो विही दट्ठव्वो –

णिक्कारणे अविधि, विधी य वा वि कज्जे अविधिए ण कप्पे ।
संकप्पादी तु पदा, कज्जंमि विधीए कप्पंति ॥२७१॥

णिक्कारणे अविहित्ति पढमभगो, विधीय त्ति वितितभगो गहितो, णिक्कारणे विधीय त्ति वुत्त भवति । कज्जे त्ति अविहीए ण कप्पेति ततियभंगो गहितो । उवयुज्य यत्र युज्यते तत्र भगा योज्या । गता दप्पिया पडिसेवणा ॥२७१॥

इयाणि कप्पिया भण्णति – पच्छद्धं कंठ । णवरं-चउभंगो गृहीतेत्यर्थः ॥२७१॥

किं कज्जं, का वा विही, जेण णिद्दोसो भवति ? भण्णति –

पाणादिरहितदेसे, असिवोमादी तु कारणा होज्जा ।
अच्छितु बोलेतु मणा, य कुज्ज संसत्तसंकप्पं ॥२७२॥

पाणा बेइंदियादी, तेहिं रहिओ वज्जितेत्यर्थः, को सो देसो ? तंमि देसे असिव होज्जा, ओमोयरिया वा होज्जा, आदिसद्दातो आगाढरायदुट्ठं वा होज्ज, तु सद्दो अवधारणे । एवमादी कारणा जाणिऊण संजम-विसयं मोत्तूणं असंजमविसयं गंतुकामा । ते य तत्थ असंजमविसए अच्छिउकामा मज्झेण वा बोलेउमणा कुर्यात् बेइंदियादियाण ससत्तविसए गमणादिसंकप्पं ॥२७२॥

तत्थ जे ते बोलेउमणा तेसिं पंथे गच्छंताणिमा जयणा –

जं वेलं संसज्जति, तं वेलं मोत्तु णिब्भए जंति ।
सत्थे तु तलिय पिट्ठतो, अक्कंत थिरातिसंजोगा ॥२७३॥

वेलं ति यस्मिन्कालेत्युक्तं भवति । पच्चूस-मज्झण्ह-अवरण्हादीसु जं वेलं पंथो ससज्जति तं वेलं मोत्तुं असंसत्तवेलाए गच्छंति त्ति वुत्तं भवति, णिब्भए एव गच्छंति । "सत्थे" उ त्ति सभए सत्थेण गतव्व । "तलिय त्ति" उवाहणातो अवणयति, सत्थस्स य पिट्ठतो वच्चति । अक्कतथिरादि-संजोग त्ति अक्कत-जणवदेण, थिरा दढसंघयणा, "संजोग" त्ति सो य सत्थो अक्कंतपहेण गच्छेज्जा अणक्कंतेण वा, तत्थ जो अक्कंतपहेण गच्छति तेण गंतव्वं, सो थिरसंघयणेसु वा अथिरसंघयणेसु वा गच्छेज्जा, जो थिरसंघयणेसु तेण गतव्वं, सो सभए वा गच्छेज्जा णिब्भएण वा, णिब्भएण गंतव्वं, सो पुणो दिया वा गच्छेज्ज राओ वा, जो दिवा तेण गंतव्वं । एसो चेव अत्थो सोलसभगविगप्पेण वा दट्ठव्वो । ते य इमे सोलस-भंगा –

अक्कंतथिरणिब्भतदिवसतो एस पढमभगो । अक्कंतथिरणिब्भयरातो एस बितिय भंगो ।

एवं सोलसभंगा कायव्वा । एत्थ पढमभंगे अणुण्णा । सेसेसु पडिसेहो । एवं ता गच्छंत भणिया – .दी, ते य

इमा पुण जत्थ सत्थो भत्तट्ठातिरंधणणिमित्तं ठाति । तसकाय असति

वसति वा जत्थ, तत्थ जयणा भण्णति –

ठाणणिसीय-तुयट्टण, गहितेतर जग्ग जतण सुवणं वा ।
अब्भासथंडिले वा, उवकरणं सो व अण्णत्थ ॥२७४॥

ठाणं उस्सग्गो भण्णति, णिसीयणं उवविसणं, तुयट्टणं निवज्जणं । गहितेणं ति उवकरणेणं, तसकाय-संसत्तपुढवीए गहितोवकरणा सव्वराइं उस्सग्गेण ऽच्छंति । अह ण तरंति तो गहितोवकरणा चेव णिसण्णा सव्वराइं अच्छंति । अह तह वि ण सक्कंति ताहे जयणाए गहितोवकरणा [1]णिवज्जंति । इयर त्ति उवकरण-णिक्खेवो, जग्गंति गहिते णिक्खित्ते वा सव्वरातिं जागरणा कायव्वा । अह ण तरंति जागरिउं तो जयणा सोवणं वा । इमा जयणा—पडिलेहिअ पमज्जिअ उव्वत्तणा परावत्तणाकुंचणपसारणा कायव्वा । सुवणं पुण निद्दावसगमनइत्यर्थः । अह[2] सोवकरणस्स एगं थंडिलं ण होज्ज तो अब्भासथंडिले वा उवकरणं "अब्भासं" पच्चासण्णं, तत्थोवकरणं ठवयति, सो व अण्णत्थ – "सोवति" साहू संवसति, "अण्णत्थ" त्ति थंडिलं संवज्जति ॥२७४॥

चोदग आह – "सो य एवं पढियव्वे सो व किमर्थं पठ्यते" ?

आचार्याह – 'वा" विकल्पप्रदर्शने, जति पच्चासण्णे थंडिलं णत्थि तो दूरे वि णिब्भए करेति उवकरणं । एसेव अत्थो जम्हा पुव्वं पुढविक्काए गतो. तम्हा अतिदेसेण भासति –

जह चेव पुढविमादी, सुवणे जतणा तहेव तसेसु ।
णवरि पमज्जितु उवहिं, मोत्तूण करेंति ठाणादि ॥२७५॥

जहा पुढविमादीसु सुवणे जयणा भणिया तहा तसेसु वि वत्तव्वा । णवरिं – विसेसो पुढवीए पमज्जणा णत्थि, सचित्तता पुढवीए, इहं पुण अच्चित्ता पुढवी, णवरं—तससंसत्ता, ते तसे पमज्जिऊण तत्थ उवकरणं मोत्तूणं करेंति ठाणादी ।

तं पुण उवकरणं केरिसे ठाणे मोत्तव्वं ? भण्णति –

जत्थ तु ण वि लग्गंति, उवइगमादी तहिं तु ठवयंति ।
संसप्पएसु भूतिं, पमज्जिउं छारठाणे वा ॥२७६॥

जत्थ त्ति भू-पदेसे, तु सद्दो थंडिलावधारणे, ण वि प्रतिषेधावधारणे लग्गंति कंबल्यादिषु, उवइग त्ति उद्देहिया, सादि सद्दातो य घण्णकारिकमर्कोटकादयः, तहिं तु तत्र प्रदेशे उवकरणं स्थापयंतीत्यर्थः । अह पुण अन्नट्ठाणातो बिलाओ वा आगंतूण, संसप्पगेसु त्ति संसप्पंती ति संसप्पगा उस्सरंति त्ति वुत्तं भवति, तेसु ससप्पगेसु भूमिं पमज्जिऊणं ति जे तत्थ थंडिले पुव्वा गता ते पमज्जिउं[3] भूमिं ददंती ति वक्कसेसं, छारठाणं व त्ति अह समंततो उवयिगमादी संभवो होज्जा, ताहे छारट्ठाणं पडिलेहेउं तत्थ ठावयतीत्यर्थः ॥२७६॥

अक्कंतथिरातिसंजोग त्ति इह वयणे सामण्णेण अक्कंतथिरातिसंजोगा कता । तद्विशेषव्याख्याप्रतिपत्तिनिमित्तमुच्यते –

बिय तिय चउरो पंचिंदिएसु अक्कंत तह अणक्कंते ।
थिरणिब्भतेतरेसु य संजोगा दिवसरत्तिं च ॥२७७॥

वि पांणे ७,

१ क्षुद्रकन्णाय । २ गा. २७३ । ३ भूमिं पमज्जिऊणं ।

बेइंदिया संखणगमादी, तेइंदिया पिपीलियादी, चउरिंदिया गोपादी, पंचेंदिया मंडुक्कलियादी। एते जनपदेण अक्कंता वा अणक्कंता वा थिरा वा णिब्भतो वा पहो होज्ज। इयरगहणा अथिर सब्भय-गहणं। संजोगा दिवसरत्ति च पूर्ववत्। णवरं पुव्वं बेइंदिएसु अक्कंतथिरणिब्भयदिवसतो, ततो पच्छा-अक्कतअथिरणिब्भयदिवसओ, तओ पच्छा—अणक्कतथिरणिब्भयदिवसतो, तओ पच्छा—अणक्कतअथिर-णिब्भयदिवसतो। एते चउरो भंगा। अण्णे एतेसु चेव ट्ठाणेसु रत्तीए चउरो भगा। एते अट्ठ। तओ पच्छा तेइंदिएसु एवं चेव अट्ठ। ततो पच्छा—चउरिंदिएसु एवं चेव अट्ठ। तओ पच्छा—पंचिंदिएसु वि एवं चेव अट्ठ। एते चउरो अट्ठगा बत्तीसं भगा णिब्भएण भणिया। ततो पच्छा—बेइंदियादिसु सभएण पुव्वकमेणेव अण्णे बत्तीसं भंगा णेयव्वा। एते सव्वे चउसट्ठिं। एस ताव कमो भणितो। इयरहा जत्थ जत्थ अप्पतरो दोसो तेण उक्कमेणावि गंतव्वं। एसा पथे सट्ठाणे य जयणा भणिया। पथे त्ति दारं गतं ॥२७७॥

इदाणिं भत्तदार-जयणा भण्णति —

पत्ताणमसंसत्तं, उसिणं पउरं तु उसिण असतीए।
सीतं मत्तग पेहित, इतरत्थ छुभंत सागरिए ॥२७८॥

पत्ताणं जत्थ देसे भत्तपाणं संसज्जति, तं देस पत्ताण इमा जयणा—असंसत्तं ति असंसज्जिमदव्वं ओदणादि जति पत्तमुण्ह तो गेण्हति। पउरं प्रभूतं, तु शब्दो पादपूरणे वक्खमाणविहि प्रदर्शने वा। "उसिणं" उण्ह तस्स असति अभावादित्यर्थः, अओ उसिणाभावा असंथरमाणा य सीतं गेण्हति। जतो भण्णति—सीतं मत्तगपेहियं "सीतं" सीयल, "मत्तगो" तुच्छ भायणं, तत्थ तं सीयल गेण्हिय, "पेहित" प्रत्युपेक्षय, "इतरत्थ" त्ति पडिग्रहे. छुभंति प्रक्षिपंति, तं पुण छुभंति असागरिए गृहस्थेनादृश्यमानेत्यर्थः। असागरियग्रह-णाच्च इदं ज्ञापयति—कदाचित् कमढगेपि गृह्यते, तत्र च गृहीतं पडिग्रहे प्रक्षिप्यमानं सागारिकं भवति, अओ असागारिके प्रक्षेत्तव्यमिति ॥२७८॥

अह मत्तगमादीहिं जं गहियं त संसत्तं होज्जा, तस्सिमा परिट्ठावणविही —

तिण वई झुसिरट्ठाणे, जीवजढे चक्खुपेहिए णिसिरे।
मा तस्संसियघातो, ओदणभक्खी तसासीसु वा ॥२७९॥

"तिणा" दब्भमाती, "वती" वाडी, झुसिरसद्दो एतेष्वेव प्रत्येकं। अहवा तिणकट्ठसंकरो जत्थ त झुसिरट्ठाणं भण्णति। एते य तिणाती जति जीव-जढा जीववर्जिता इत्यर्थ.। तेसु तिणाइसु चक्खुपेहिएसु णिसिरे परित्यजेत्यर्थः। सा पुण णिसिरणा दुविहा—पुंजकडा प्रकिरणा वा बीजवत्, आगंतुगेसु पिपीलियादिसु पकिरणा संभवति, तदुत्थेसु किमिगादिसु पुंजकडा संभवति।

चोदक आह — किमर्थं तिणवतिमादिसु परिट्ठविज्जति ?

उच्यते, — मा तस्संसितघातो "मा" इत्ययं शब्द· प्रकृतार्थावधारणे अविधिपरित्याग-प्रतिषेधप्रदर्शने च, "तदिं" त्यनेन भक्तं संबध्यते, "संसिता" आश्रिता "घातो" मरणं, तस्मिन्संसिता "तस्ससिता", ताण घातो "तस्ससितघातो"।

केण पुण तस्संसितघातो भवेज्ज ?

उच्यते, ओदणभक्खीतसासिसु व त्ति ओयणं जे भक्खयति ते ओयणभक्खी सुणगादी, ते य ओदणं भक्खयता जे तस्संसिया पिपीलिकादी ते वि भक्खयति त्ति वुत्तं भवइ। पिपीलिकादि तसकाय असति

भक्खयंति जे ते तसासी, न ओदणभक्खी त्ति वुत्तं भवइ, अतो मा तेसु ओदणभक्खिसु तसासीसु वा घातिज्जति त्ति काउं वतिमातिसु परिट्ठविज्जति। भत्तं पति एसा जतणा भणिता ॥२७६॥

जत्थ पुण सत्तुगा संसज्जति तत्थिमा जयणा –

तद्दिवसकताण तु, सत्तुगाण गहिताण चक्खुपडिलेहा ।
तेण परं णववारे, असुद्धे णिसिरे (इ) तरे भुंजे ॥२८०॥

तु सद्दो अवधारणे । तद्दिवसकताण एव जवा भुग्गा पासा णज्जंतगे दलिया सहिणा सत्तुगा भण्णंति । तेसिं गहिताण आत्मीकृतानां चक्खुपडिलेहा भवतीत्यर्थः ।

चोदगाह – "णणु सच्चं च्चिय चक्खुपडिलेहणा, को अभिप्पाओ जेण चक्खुपडिलेहगहणं करेसि ।" ?

उच्यते, पिंडविसोही पडुच्च णत्थण्णा चक्खुवतिरित्ता पडिलेहा, इमो पुण से अभिप्पाओ भायणत्थस्सेव चक्खुणा अवलोयणा चक्खुपडिलेहा, ण रयत्ताण विगप्पणावस्थाप्येत्यर्थः । तेण परं ति तद्दिवसकताण परओ दुदिवसातिकयाणं ति वुत्तं भवति, णववारे त्ति उक्कोसं णववारा पडिलेहा कायव्वा, असुद्धे त्ति जति णवहिं वाराहिं पडिलेहिज्जमाणा ण सुद्धा तो णिसिरे परित्यजेत् । इयरे भुंजे त्ति इतरे जे सुद्धा नववाराए आरओ वा ते भोक्तव्या इति ॥२८०॥

कहं पुण सत्तुगाणं पडिलेहा ? भण्णति –

रयत्ताणपत्तबंधे, पइरित्तुच्छल्लियं पुणो पेहे ।
ऊरणिया आगरा, ऽसति कप्परथेवेसु छायाए ॥२८१॥

पत्तगबंधमइलीकरणभया रयत्ताणं पत्थरेऊण तस्सुवरिं पत्तगबंधं तंमि पत्तगबंधे, सत्तुगा पइरित्तु प्रकीर्य वाप्येत्यर्थः, उच्छल्लिउं ति एकपार्श्वे नयित्वा[1] जा तत्थ पत्तगबंधे ऊयरिणिया लग्गा ता उद्धरित्तु कप्परे कज्जंति, पुणो पेहंति, पुणो पतिरित्तुच्छल्लित्तु पुणो पेहिज्जंति त्ति वुत्तं भवति । एवं णववारा । एसा सत्तुगपडिलेहणविही भणिया । ऊरणीया आगर त्ति जा ऊरणिया पडिलेहमाणेण कप्परादिसु कता ताओ – आगरादिसु परिट्ठवेयव्वा । को पुण आगरो ? भण्णति, जत्थ घरट्टादिसमीवेसु बहुं जव भुसुट्टं सो आगरो भण्णति । असति त्ति तस्साऽगरस्सासति, कप्पर थेवेसु त्ति कप्परे थेवा सत्तुगा छोढूणं तं कप्परं सीयले भू-पदेसे च्छायाए परिट्ठविज्जति ॥२८१॥

जत्थ पाणगं संसज्जति तत्थ आयामउसिणोदगं गेण्हंति । पूतरगादिसंसत्तं च धम्मकरगादिणा गालिज्जति । जत्थ गोरस-सोवीर-रसगादीहिं संसज्जंति तत्थ तेसिं अग्गहणं, सियग्गहियाणं वा परिट्ठवणविही जा परिट्ठावणा णिज्जुत्तीए भणिया सा दट्ठव्वा इति । भत्त-पाणदारजयणा गता ।

इयाणिं वसहिदारजयणा भण्णति –

दोण्णि उ पमज्जणाओ, उडुंमि वासासु ततिय मज्झण्हे ।
वसहि बहुसो पमज्ज व, अतिसंघट्टणण्हि गच्छे ॥२८२॥

जत्थ वि वसही ण संसज्जति तत्थ वि दो वारा उडुबद्धिएसु मासेसु वसही पमज्जिज्जति पच्चूसे अवरण्हे य, वासासु एताओ चेव दो पमज्जणाओ, ततिता मज्झण्हे भवति । संसत्ताए पुण वसहीए "बहुसो

[1] नीत्वा ।

पमज्ज व" कंठं, णवरं वकारो विकप्पदरिसणे । को पुण विकप्पो ? इमो—जइ उडुवासासु संसत्ता वि वसही पुव्वाभिहियप्पमाणेणेव असंसत्ता भवति तो णाइरित्ता पमज्जणा, णो चेत् बहुसो पमज्जगे त्ति । अह् बहूवारा पमज्जिज्जमाणे अतिसंघट्टो पाणिणं भवति, अतो अण्ण वसहिं गच्छंतीत्यर्थः ॥२८२॥

अहेगदेसे मुइङ्गादिणगरं हविज्ज अण्णतरपाणिसंतानगो वा तत्थिमा विही –

मुइंगमादि-णगरग कुडमुह छारेण वा वि लक्खेंति ।
चोदेंति य अण्णोण्णं, विसेसओ सेह अयगोले ॥२८३॥

मुइंगा पिपीलिका, आदि सद्दातो मक्कोडगादि णगरं घरं आश्रयेत्यर्थ. । कुडमुहो कुडय ट्ठातं तत्थ ट्ठवयंति छारेण वा परिहरंतो उवलक्खितं करेंति । अणुवउत्ते य गच्छंते चोदयति य अण्णोण्णं, सेहो अभिणव-पव्वातितो, अयगोलो पुण बालो णिद्धंमो वा, एते विसेसओ चोदयंतीत्यर्थः । वसहि त्ति दारजयणा गता ॥२८३॥

इयाणिं उवहिद्दारजयणा भण्णति –

अइरेगोवधिगहणं, सततुवभोगेण मा हु संसज्जे ।
महुरोदगेण धुवणं, अभिक्ख मा छप्पदा मुच्छे ॥२८४॥

जत्थ विसए उवही संसज्जति तत्थ चोलपट्टादि उवहि अतिरित्ता घेप्पति । अह किमयं अतिरित्तो-वहिगहणं स्यात् ? उच्यते, सततोवभोगेण मा हु संसज्जेइ, एगपडोयारस्स "सयतुवभोगाओ" सततोवभोगा-दित्यर्थः, मा हु रित्ययं यस्मादर्थं द्रष्टव्यः, "संसज्जे त्ति संसज्जति, तस्मात् अइरित्तोवहिग्रहणं क्रियत इति । किं चान्यत्—मधुरोदगेण मधुरपाणएण उण्होदगादिणा धुवणं । अभिक्खणं पुणो पुणो कज्जति त्ति वुत्तं भवति स्यात् । किमर्थं ? उच्यते, मा छप्पया मुच्छे, संमुच्छेत्यर्थः ॥२८४॥

जं च वत्थं सोहेयव्वं तंसि जति छप्पया होज्ज ता इमेरा विहिणा अण्णवत्थे संकामेयव्वा –

कायल्लीणं कातुं, तहिं संकामेतरं तु तस्सुवरिं ।
अहवा कोणं कोणं, मेलेतुं ईसिं घट्टेंति ॥२८५॥

जं वत्थं न धुवेयव्वं कायल्लीणं काउं ति "कायो" शरीरं, लीणं काउं, अणंतरिउं पावरिउं तहिं संकामेति, किं हत्येनोद्धृत्य संक्रामेत् ? नेत्युच्यते । इतरं तु तस्सुवरिं "इयरं" जं धुवियव्वं, तु पूरणे "तस्स" त्ति पुव्वपाउदस्स, "उवरिं" पाउणे ।

अहवा अण्ण सकामणविही भण्णति । कोणमिति कण्णं । धोव्वमाणस्स अधोव्वमाणस्स य वत्थस्स कण्णकण्णे मेलिऊणं ईसिं सणियं छप्पदा घट्टेउं सकामेति । उवहिजयण त्ति दारं गयं ॥२८५॥

इदाणीं फलगजयणा भण्णति –

फलगादीण अभिक्खण, पमज्जणा हेट्ठि उवरि कातव्वा ।
मा य हु संसज्जेज्जा, तेण अभिक्खं पतावेज्जा ॥२८६॥

फलगा चंपगपट्टादी, आदि सद्दातो संथारगभेसगमादी, एएसिं अभिक्खणं पुणो पुणो, पमज्जणा रयहरणेण हेट्ठ उवरिं कायव्वा । मा प्रतिषेधे, च पूरणे, हु शब्दो यस्मादर्थे, जम्हा अपदाविज्जमाणा फलगादी पणगमादीहिं संसज्जंति तेणं ति तम्हा अभिक्खणं पुणो पुणो, उण्हे पयावेज्जा । फलह-संथाराण जयणा गया ॥२८६॥

इदाणिं उवहिमादीणं सामण्णा जयणा भण्णति –

वेंटियमाईएसुं, जतणाकारी तु सव्वहिं सुज्झे ।
अजयस्स सत्त भंगा, सट्ठाणं चेव आवण्णे ॥२८७॥

वेंटिगादीउवकरणजाए गाहणिक्खेवादिकिरियासु जयणाकारी तु सव्वहिं सुद्धो अप्रायश्चित्तीत्यर्थः। अजयणाकारिस्स पुव्वाभिहिता सत्तभंगा भवंति । पायच्छित्तं पूर्ववत् । अजयणाए य वट्टमाणो जं वेइंदियादीणं संघट्टण-परितावण उद्दवणादि आवण्णे सट्ठाण पायच्छित्तं दट्ठव्वमिति ॥२८७॥

अह कस्स त्ति वणभगंदलादि किमिया हवेज्जा तेसिमा णीहरण-परिट्ठवणविही भण्णति –

पोग्गल असती समितं, भंगदले छोढुं णिसिरति अणुण्हे ।
किमि कुट्ठादिकिमी वा, पिउडादि छुभंति णीणेतुं ॥२८८॥

कस्सइ साहुस्स भगंदलं होज्ज, तस्स ततो भगंदलाओ किमिया उद्धरियव्वा । पोग्गलं मंसं, तं गहेऊण भगंदले पवेसिज्जति, ते किमिया तत्थ लग्गंति, असती पोग्गलस्स समिया घेप्पइ, समिता कणिक्का, सा महुघएहिं तुप्पेउं मद्दिउं च भगंदले च्छुभति, ते किमिया तत्थ लग्गंति । जे य ते पोग्गलममियादीसु लग्गा किमिया ते "णिहरंति" परित्यजंति, अणुण्हे च्छायाए त्ति वुत्तं होति, तत्थ वि अद्दकडेवरादीसु । किमि कुट्ठादिकिमी वा आदि सद्दाओ वणकिमियादी अद्दकलेवरादिसु परिट्ठवेंति । आर्द्रकडेवरस्याभावात् पिउडादिसु छुब्भंति । "पिउड" पुणं उज्झं भण्णति णीणेउं भगदलादिस्थानात् ॥२८८॥

संसत्तपोग्गलादी, पिउडे पोमे तहेव चंमे य ।
आयरिते गच्छंमी, बोहियतेणे य कोंकणए ॥२८९॥

साहूणा वा भिक्खं हिंडंतेण संसत्तं पोग्गलं लद्धं, आदि सद्दातो मच्छभत्तं वा संसत्तं लद्धं तं पि तहेव पुव्वाभिहिय कडेवरादिसु परिट्ठवेंति । पिउडे वा पोमे वा, "पोम" ति कुसुंभयं ।

अण्णे पुण आयरिया पोम पोममेव भण्णंति, आर्द्रचम्मे वा महुघयतोप्पिते परित्यजेदित्यर्थः । एवं तसकायजयणा भणिया । भवे कारणं जेण तसकायविराहणं पि कुज्जा । किं पुण तं कारणं जेण तसकाय-विराहणं करेति ? भण्णति—आयरिए त्ति आयरियं, कोइ पडिणीओ विणासेउमिच्छति, सो जइ अण्णहा ण ट्ठाति तो से ववरोवणं पि कुज्जा । एवं गच्छघाए वि । बोहिगतेणे य त्ति जे मेच्छा, माणुसाणि हरंति ते बोहिगतेणा भण्णंति ।

अहवा "बोहिगा" मेच्छा, "तेणा" पुण इयरे चेव । एते आयरियस्स वा गच्छस्स वा वहाए उवट्ठिता । च सद्दातो कोति संजतिं वला घेत्तुमिच्छति, चेतियाण वा चेतियदव्वस्स वा विणासं करेइ ।' एव ते सव्वे अणुसट्ठीए अट्ठायमाणा ववरोवेयव्वा । आयरियमादीणं णित्थारणं कायव्वं । एवं करेंतो विसुद्धो ।

जहा से कोंकणे –

एगो आयरिओ बहुसिस्सपरिवारो उ संज्झकालसमये बहुसावयं अडविं पवण्णो । तंमि य गच्छे एगो दढसंघयणी कोंकणगसाहू अत्थि । गुरुणा य भणियं—कहं अज्जो । जं एत्थ दुट्ठसावयं किं वि गच्छं अभिभवति तं णिवारेयव्वं, ण उवेहा कायव्वा ।" ततो तेण कोंकणग-साहूणा भणियं-कहं ? विराहिंतेहिं अविराहिंतेहिं णिवारेयव्वं ? गुरुणा भणियं – "जइ सक्कइ

तो अविराहितेहिं पच्छा विराहितेहिं वि ण दोसो"। ततो तेण कोंकणगेण लवियं "सुवय वीसत्था, अहं भे रक्खिस्सामि"। तो साहवो सव्वे सुत्ता। सो एगागी जागरमाणो पासति सीहं आगच्छमाणं। तेण हुडि त्ति जंपियं, ण गतो, ततो पच्छा उद्धाइऊण सणियं लगुडेण आहतो, गओ परिताविओ। पुणो आगतं पेच्छति, तेण चिंतियं ण सुट्ठु परिताविओ, तेण पुणो आगओ, पुणो गाढयरं आहतो। पुणो वि ततियवारा एवं चेव, णवर सव्वायामेण आहतो, गता राती। खेमेण पच्चूसे गच्छंता पेच्छंति सीह अणुपंथे मयं, पुणो अदूरे पेच्छंति बितियं, पुणो अदूरंते ततियं। जो सो दूरे सो पढमं सणियं आहओ, जो वि मज्झे सो बितिओ, जो णियडे सो चरिमो गाढं आहतो मतो। तेण कोकणंएण आलोइयमारियाणं, सुद्धो। एवं आयरियादीकारणेसु वावादितो सुद्धो। गता पाणातिवायस्स दप्पिया कप्पिया पडिसेवणा। गतो पाणातिवातो ॥२८९॥

इयाणिं मुसावादपडिसेवणा दप्पकप्पेहिं भण्णति। तत्थ वि पुव्वं दप्पिया पडिसेवणा भण्णति –

दुविधो य मुसावातो, लोइय-लोउत्तरो समासेणं।
दव्वे खेत्ते काले, भावंमि य होइ कोधादी ॥२९०॥

दुविहो दुभेदो, मुसा अनृतं, वदनं वादः, अलिअवयणभासणेत्यर्थः। लोइय त्ति असंजयमिच्छादिट्ठिलोगो घेप्पति, उत्तरग्रहणात्संजतसम्मदिट्ठिग्रहणं कज्जति। समासो संखेवो पिंडार्थेत्यर्थ.। च सद्दो मूलभेदावधारणे। पुणो एक्केक्को चउभेदो—दव्वे, खेत्ते, काले, भावमि य। च सद्दो समुच्चये। कोहाति "आदि" सद्दातो माणमायालोभा ॥२९०॥

एत्थ लोइतो ताव चउव्विहो भण्णति। तत्थवि दव्वे पुव्व –

विवरीय दव्वकहणे, दव्वब्भूओ य दव्वहेउं वा।
खेत्तणिमित्तं जंमि व, खित्ते काले वि एमेव ॥२९१॥

दव्वस्स अणाराहणी जा भासा सा दव्वमुसावाओ भण्णति। कहं पुण दव्वअणाराहणं? भण्णति. विवरीयदव्वकहणे "विवरीयं" विपर्यस्तं, कहणमाख्यानं, यथा गौरश्व कथयति, जीवमजीवं ब्रवीति। दव्वभूतो णाम अणुवउत्तो, भावशून्येत्यर्थः। सो जं अलिय भासति सो दव्वमुसावाओ। वा विकप्पसमुच्चये। दव्वं हिरण्णादि हेऊ कारणं, दव्वकारणत्थी मुसं वदति त्ति वुत्त भवति, जहा कोइ लंच लभीहामि त्ति अलियं सक्खेज्जं वदति। वाकारो विकल्पसमुच्चये। गतो दव्वमुसावातो।

इदाणिं खेत्ते भण्णति –

खेत्तं लभीहामि त्ति मुसावातं भासति, जस्स वा खेत्ते मुसावायं भासति सो खेत्ते मुसावातो। वाकारो विकप्प दरिसणे। इमो विकप्पो विवरीयं वा खेत्तं कहेति, अणुवउत्तो वा खेत्तं परूवेति, एसो खेत्तमुसावातो।

इदाणिं काले भण्णति –

काले वि एमेव त्ति, जहा खेत्ते तहा काले वि। णवरं – कालणिमित्तं ति ण घडइ ॥२९१॥

इदाणिं भावमुसावातो भण्णति –

भावमुसावातस्स भद्दबाहुसामिकता वक्खाणगाहा –

कोधम्मि पिता पुत्ता, थणं माणंमि माय उवधिंमि।
लोभंमि कूडसक्खी, णिक्खेवगमादिणो लोगे ॥२९२॥

कोहंमि पित्ता पुत्ता उदाहरणं, माणे धण्णं उदाहरणं, मायाए उवहिमुदाहरण, लोभंमि उदाहरणं जे लोभाभिभूता दव्वं घेत्तूण कूड सक्खित्तं करेंति, एस लोभे उ भावमुसावाओ।

चोदग आह— णणु दव्वणिमित्तं दव्वे एस दव्वे भणितो ?।

आचार्य आह— "सत्यं, तत्र तु महती द्रव्यमात्रा द्रष्टव्या, इह तु लोभाभिभूतत्वात् स्वल्पमात्रा एव मृषं ब्रवीति। किं च जे वणियादयो लोगे णिक्खेवगं णिक्खित्तं, लोभाभिभूता अवलवंति एस वि लोभतो भावमुसावातो दट्ठव्वो। आदि सद्दाओ वीसंभसमप्पियमप्पगासं अवलवंति जे ॥२६२॥ पश्चार्द्धं व्याख्यातमेव ॥

पुव्वद्धस्स पुण सिद्धसेणायरिओ वक्खाणं करेति –

कोहेण ण एस पिया, मम त्ति पुत्तो ण एस वा मज्झं।
हत्थो कस्स बहुस्सती, पूएउघरा छुभति धण्णं ॥२६३॥

पुत्तो पिउणो रुट्ठो भणति—न एस पिया ममं ति, अह पिया वा पुत्तस्स रुट्ठो भणति—ण एस वा मज्झं पुत्तो त्ति। कोहमि पितापुत्त त्ति गतं। "धण्णं माणंमि" अस्य व्याख्या। "हत्थो" पच्छद्धं। दुअगाणं कुडुंबीणं विवातो – हत्थो कस्स बहुस्सइ त्ति "हत्थो" हसत्यनेन मुखमावृत्य इति हस्तः, "कस्स" त्ति क्षेपे दृष्टव्यं, ममं मोत्तुं कस्सण्णस्स बहुसती त्ती हत्थो भवेज्ज। इतरो वि एवमेव पच्चाह।

अहवा कस्सति त्ति संसतत्राती, तुज्झं मज्झं वा ण णज्जति, "बहुसइ" ति बहुधण्णकारी, एवं तेसिं विवादे कुडुंबीणं मज्झत्थपुरिसधण्णमवणं सरिसं वावणं जातेसु लूतेसु मलितेसु पूतेसु परिपूता परिसोहिता सवमलापनीतानीतीत्यर्थः। घरा छुब्भति धण्ण त्ति तत्थेगो मानावष्टब्धो माहं जिग्गे इत्यभिप्रायेण गृहात् धान्यमानीय खलधान्ये प्रक्षिपति, मीयमानेषु तस्यातिरेकत्वं संवृत्तं, मम [1]बहुस्सती हत्थो त्ति, एस माणतो भावमुसावातो। धण्णं माणे त्ति द्वार गतं ॥२६३॥

इदाणिं मायउवहिम्मि त्ति। मायउवहि त्ति उवहिरिति उवकरणं, ताणि य वत्थाणि। तेहिं उवलक्खियं उदाहरणं भण्णति। अण्णे पुण आयरिया एवं भण्णंति—जहा माय त्ति वा उवहि त्ति वा एगट्ठं।

एत्थ उदाहरणं भण्णति –

सस-एलासाढ-मूलदेव-खंडा य जुण्णउज्जाणे।
सामत्थणे को भत्तं, अक्खातं जो ण सद्दहति ।।२६४॥

चोरभया गावीओ, पोट्टलए बंधिऊण आणेमि।
तिलअइरूढकुहाडे, वणगय मलणा य तेल्लोदा ॥२६५॥

वणगयपाटण कुंडिय, छम्मासा हत्थिलग्गणं पुच्छे।
रायरयग मो वादे, जहिं पेच्छइ ते इमे वत्था ॥२६६॥

अवंती उज्जेणी णाम णगरी, तीसे उत्तरपासे जिण्णुज्जाणं णाम उज्जाणं। तत्थ वहवे धुत्ता समागया। ससगो, एलासाढो, मूलदेवो, खंडपाणा य इत्थिया। एक्केक्कस्स पंच पंच धुत्तसत्ता, धुत्तीणं पंचसयं खंडपाणाए। अह अण्णया पाउसकाले सत्ताहवद्दले भुक्खत्ताणं इमेरिसी कहा संवुत्ता। को अम्हं देज्ज भत्तं ति। मूलदेवो भणति—जं जेणणुभूयं सुयं वा सो तं कहयतु, जो

१ शक्तिः।

तं ण पत्तियति तेण सव्वधुत्ताणं भत्तं दायव्वं, जो पुण भारह-रामायण-सुती-समुत्थाहिं उवणय-उववत्तेहिं पत्तीहिति सो मा किंचि दलयतु । एवं मूलदेवेन भणिते सव्वेहिं वि भणियं साहु साहु त्ति । ततो मूलदेवेन भणियं को पुव्वं कहयति । एलासाढेण भणियं अहं भे कहयामि । ततो सो कहिउमारद्धो—अहयं गावीओ गहाय अडविं गओ, पेच्छामि चोरे आगच्छमाणे, तो मे पावरणी-कंबली-पत्थरिऊणं तत्थ गावीओ छुभिऊणाहं पोट्टलयं बंधिऊए गाममागतो, पेच्छामि य गाममज्झयारे गोहहे रममाणे, ताहं गहिय गावो ते पेच्छिउमारद्धो, खणमेत्तेण य ते चोरा कल-यलं करेमाणा तत्थेव णिवतिता, सो य गामो स-दुपद-चउप्पदो एक्कं वालुंकं पविठ्ठो, ते य चोरा पडिगया. तं पि वालुंकं एगाए अजियाए गसियं, सा वि अजिआ चरमाणा अयगलेण गसिया, सो वि अयगलो एक्काए ढंकाए गहितो, सा उड्डिउं वडपायवे णिलीणा तीसे य एगो पाओवलंबति, तस्स य वडपायवस्स अहे खंधावारो ट्ठिओ, तंमि य ढेंकापाए गयवरो आगलितो, सा उड्डिउं पयत्ता, आगासि उप्पाइओ, गयवरो कड्डिउमारद्धो, डोवेहिं कलयलो कओ, तत्थ सद्दवेहिणो गहियचावा पत्ता, तेहिं सा जमगसमगं सरेहिं पूरिता मता, रण्णा तीए पोट्टं फाडा-वियं, अयगरो दिट्ठो, सो वि फाडाविओ, अजिया दिट्ठा, सा वि फाडाविआ, वालुंकं दिट्ठं, रमणिज्जं, एत्थंतरे ते गोहहा उपरता, "पतगसेना इव भूबिलाओ" सो गामो वालुंकातो निग्गंतु-मारद्धो, अहं पि गहिय गाओ णिग्गतो, सव्वो सो जणो सट्ठाणाणि गतो, अहं पि अवउज्झिय गाओ इहमागतो, तं भणइ कहं सच्चं । सेसगा भणंति सच्चं सच्चं । एलासाढो भणति—कहं गावीओ कंवलीए मायाओ, गामो वा वालुंके । सेसगा भणति—भारह-सुतीए सुव्वति—जहा पुव्वं आसी एगण्णवं जगं सव्वं, तम्मि य जले अंडं आसी, तंम्मि य अंडगे ससेलवणकाणणं जगं सव्वं जति मायं, तो तुह कंवलीए गावो वालुंके वा गामो ण माहिति ? जं भणसि जहा—"ढेंकूदरे अयगलो तस्स य अतिआ तीए वालुंक" एत्थ वि भण्णति उत्तरं—ससुरासुर सनारकं ससेलवण-काणणं जगं सव्व जइ विण्हुस्सुदरे मातं, सो वि य देवतीउदरे मातो, सा वि य सयणिज्जे माता, जइ एयं सच्चं तो तुह वयणं कहं असच्च भविस्सति ?

ततो ससगो कहितुमारद्धो । अम्हे कुटुंबिपुत्ता, कयाइ च करिसणाति, अहं सरयकाले खेत्तं अहिगतो, तम्मि य छेत्ते तिलो वुत्तो, सो य एरिसो जातो जो पर कुहाडेहिं छेत्तव्वो, तं समंता परिभमामि पेच्छामि य आरण्णं गयवरं, तेणम्हि उच्छित्तो पलातो, पेच्छामि य अइप्पमाणं तिलरुक्ख, तं मि विलग्गो, पत्तो य गयवरो, सो मं अपावंतो कुलालचक्क व त तिलरुक्खं परिभ-मति, चालेति ततो तिलरुक्ख तेण य चालिते जलहरो विव तिलो तिलवुट्ठि मु चति, तेण य भमंतेण चक्कतिलाविव ते तिला पिलिता, तओ तेल्लोदा णाम णदी वूढा, सो य गओ तत्थेव तिलचलणीए खुत्तो मओ य, मया वि से चम्म गहिय दतितो कतो, तेल्लरसभरितो, अह पि खुधितो खलभारं भक्खयामि, दस तेल्लघडा तिसितो पियामि, तं च तेल्लपडिपुण्णं दइय घेत्तुं गाम पट्ठिओ, गाम-बहिया रुक्खसालाए णिक्खिविउं तं दइयं गिहमतिगतो, पुत्तो य मे दइयस्स पेसिओ, सो त जाहे ण पावइ ताहे रुक्खं पाडेउं गेण्हेत्था, अहं पि गिहाओ उट्ठिओ परिभमंतो इहमागओ । एयं पुण मे अणुभूतं । जो ण पत्तियति सो देउ भत्तं ।

सेसगा भण्णति— अत्थि एसो य भावो भारह-रामायणे । सुतीसु णज्जति—

"तेषां कटतटभ्रष्टैर्गजानां मदबिन्दुभिः ।
प्रावर्त्तत नदीघोरा हस्त्यश्वरथ-वाहिनी ॥१॥"

जं भणसि "कहं ए महंतो तिलरुक्खो भवति," एत्थ भण्णति—पाडलिपुत्ते किल मासपादवे भेरी णिमविया, तो किह तिलरुक्खो एमहंतो ण होज्जाहि ।

ततो मूलदेवो कहिउमारद्धो । सो भणति – तरुणत्तणे अहं इच्छिय-सुहाभिलासी धाराघरणट्ठताए सामिगिहं पट्ठितो छत्तकमंडलहत्थो, पेच्छामि य वण-गयं मम वहाए एज्जमाणं, ततो अहं भीतो अत्ताणो असरणो किंचि णिलुक्कणट्ठाणं अपस्समाणो दगच्छड्डुणणालएगं कमडल अतिगओम्हि, सो वि य गयवरो मम वहाए तेणेवंतेण अतिगतो, ततो मे सो गयवरो छम्मासं अंतोकुंडीयाए वामोहिओ, तओहं छम्मासंते कुंडीयगीवाए णिग्गतो, सो वि य गयवरो तेणेवंतेण णिग्गतो, णवरं वालग्गं ते कुंडियगीवाते लग्गो, अहमवि पुरतो पेच्छामि अणोरपारं गंगं, सा मे गोपयमिव तिण्णा, गतोम्हि सामिगिहं, तत्थ मे तण्हाछुहासमे अगणेमाणेण छम्मासा धारिया धारा, ततो पणमिऊणं महसेनं पयाओ सपत्तो उज्जेणिं, तुब्भ च इह मिलिओ इति । तं जइ एयं सच्चं तो मे हेऊहिं पत्तियावेह अह मण्णह अलियं ति धुत्ताणं देह तो भत्तं । तेहिं भणिय सच्चं । मूलदेवो भणइ कहं सच्चं ? ते भणंति सुणेह – जह पुव्व बभाणस्स मुहातो विप्पा णिग्गया, बाहूओ खत्तिया, ऊरूसु वइस्सा, पदेसु सुद्दा, जइ इत्तिओ जणवओ तस्सुदरे माओ तो तुम हत्थी य कुंडियाए ण माहिह ? अण्णं च किल बभाणो विण्हु य उड्ढाहं धावता गता दिव्ववाससहस्स तहा वि लिंगस्सतो ण पत्तो, तं जइ एमहंतं लिंगं उमाए सरीरे मात तो तुह हत्थी य कुंडीयाए ण माहिह ? ज भणसि "वालग्गे हत्थी कहं लग्गो", तं सुणसु—विण्हू जगस्स कत्ता, एगण्णवे तप्पति तवं जलसयणगतो, तस्स य णाभीओ बंभा पउमगब्भणिभो णिग्गतो णवरं पंकयणाभीए लग्गो, एवं जइ तुमं हत्थी य विणिग्गता, हत्थी वालग्गे लग्गो को दोसो ? जं भणसि "गंगा कहं उत्तिण्णो," रामेण किल सीताए पव्वित्तिहेउं सुग्गीओ आणत्तो, तेणावि हणुमंतो, सो बाहाहिं समुद्दं तरिउं लंकापुरिं पत्तो, दिट्ठा सीता, पडिणियत्तो सीयाभत्तुणा पुच्छितो कहं समुद्दो तिण्णो ? भणति ।

[2]"तव प्रसाद्भर्तुश्च ते देव तव प्रसादाच्च ।
साधूनते येन पितुः प्रसादात्तीर्णो मया गोष्पदवत्समुद्रः ॥"

जइ तेण तिरिएण समुद्दो बाहाहिं तिण्णो तुम कह गंगं ण तरिस्ससि । जं भणसि "कहं छम्मासे धारा धरिता," एत्थ वि सुणसु—लोगहितत्था सुरगणेहिं गंगा अब्भत्थिता अवतराहि मउयलोगं, तीए भणियं—को मे [1]धरेहिति णिवडंती, पसुवतिणा भणियं—अहं ते ऐग जडाए धारियामि, तेण सा दिव्वं वाससहस्सं धारिता । जइ तेण सा धरिता तुम कह छम्मासं ण धरिस्ससि ?

अह एत्तो खंडपाणा कहितुमारद्धा । सा य भणइ –"ओलंवितंति अम्हेहिं जइ" अंजलि करिय सीसे ओसप्पेह जति न ममं तो भत्तं देमि सव्वेसिं, तो ते भणंति—धुत्ती ! अम्हे सव्वं जगं तुलेमाणा किह एवं दीणवयणं तुब्भ सगासे भणिहामो । ततो ईसिं हसेऊण खंडपाणा कहयति अहगं रायरजकस्स धूया, अह अण्णया सह पित्रा वत्थाण महासगडं भरेऊण पुरिससहस्सेण समं णदिं सलिलपुण्णं पत्ता, धोयाति वत्थाइं, तो आयवदिण्णाणि उव्वायाणि, आगतो महावातो, तेण ताणि सव्वाणि वत्थाणि अवहरिताणि, ततोहं रायभया गोहारूवं काऊण रयणीए णगरुज्जाणं गता, तत्थाहं चूयलया जाता, अण्णया य सुणेमि—जहा रयगा उम्मिट्टंतु, अभयोसिं, पडहसद्दं

---

१ धरिष्यति । २ धूर्ताख्यानप्रकरणे तु श्लोकोऽयमेवंरुपेण मुद्रितः –
तव प्रसादात् तव च प्रसादात्, भर्तुश्च ते देवि तव प्रसादात् ।
साधूनते येन पितुः प्रसादात्, तीर्णो मया गोष्पदवत् समुद्रः ॥

सोऊण पुण-णवसरीरा जाया, तस्स य सगडस्स णाडगवरत्ता जंबुएहिं छागेहिं भक्खिताओ, तओ मे पिउणा णाडगवरत्ताओ अण्णिस्समाणेण महिस-पुच्छा लद्धा, तत्थ णाडगवरत्ता वलिता। तं भणह किमेत्थ सच्चं ? ते भणंति-बंभकेसवा अंतं ण गता लिंगस्स जति तं सच्चं तया तुह वयणं कहं असच्चं भविस्सइत्ति। रामायणे वि सुणिज्जति—जह हणुमंतस्स पुच्छ महंतं आसी, तं च किल अणेगेहिं वत्थसहस्सेहिं वेठिऊण तेल्लघडसहस्सेहिं सिंचिऊण पलीवियं, तेण किल लंकापुरी दड्ढा। एवं जति महिसस्स वि महंतपुच्छेण णाडगवरत्ताओ जायाओ को दोसो ? अण्ण च इम सुई सुव्वति, जहा गंधारो राया रण्णे कुडवत्तणं पत्तो, अवरो वि राया किमस्सो णाम महाबलपरक्कमो, तेण य सक्को देवराया समरे णिज्जिओ, ततो तेण देवरायेण सावसत्तो रण्णे अयगलो जातो, अण्णया य पंडुसुआ रज्जभट्ठा रण्णे ट्ठिता, अण्णया य एगागि णीग्गतो भीमो, तेण य अयगरेण गसितो, धम्मसुतो य अयगरस्स मूलं पत्तो, ततो सो अयगरो माणुसीए वायाए तं धम्मसुत सत्तपुच्छातो पुच्छति, तेण य कहितातो सत्तपुच्छातो, ततो भीमं णिग्गिलइ, तस्स सावस्स अंतो जातो, जातो पुणरवि राया। जइ एय सच्चं तो तुमं पि सब्भूतं गोहाभूय सभावं गंतूण पुणण्णवा जाता। तो खंडपाणा भण्णति—एवं गते वि मज्झ पणामं करेह, जइ कहं जिप्पह तो काणा वि कवड्डिया तुब्भ मुल्लं ण भवति। ते भणंति कोम्हे सत्तो णिज्जिऊण। तो सा हसिऊण भणति—तेसिं वात-हरियाण वत्थाण गवेसणाय णिग्गया रायाणं पुच्छिऊणं, अण्णं च मम दासचेडा णट्ठा, ते य अण्णिस्सामि, ततोहं गामणगराणि अडमाणी इहं पत्ता, तं ते दासचेडा तुब्भे, ताणि वत्थाणि-माणि जाणि तुब्भं परिहियाणि, जइ सच्चं तो देह वत्था, अह अलियं तो देह भत्तं। असुण्णत्थं भणियमिणं। सेसं धुत्तक्खाणगाणुसारेण णेयमिति। गतो लोइयो मुसावातो –

इयाणिं लोउत्तरिओ दव्वादि चउव्विहो मुसावातो भण्णति। दव्वे ताव सच्चित्तं अचित्तं भण्णति, धम्मदव्वं वा अधम्मदव्वत्तेण परूवयति, अधम्मदव्वं वा धम्मरूवेण, एवं सेसाणि वि दव्वाणि। खेत्तं लोगागासं अलोगासपज्जवेहिं परूवयति, अलोगं वा लोगपज्जवेहिं, भरहखेत्तं वा हिमवयखेत्तपज्जवेहिं परूवयति, हेमवय वा भरहपज्जवेहिं परूवइ, एवं सेसाणि वि खेत्ताणि। काले उस्सपिणी अवसप्पिणिपज्जवेहिं परूवयति, एवं सुसमादि कालविवच्चासं करेति। भावे जं कोहेण वा, माणेण वा, मायाए वा, लोभेण वा अभिभूतो वयणं भणति, एरिसो भावमुसावातो।

अहवा लोउत्तरिओ भावमुसावातो दुविहो, जओ भण्णति –

सुहुमो य बादरो वा, दुविधो लोउत्तरो समासेणं ।
सुहुमो लोउत्तरिओ, णायव्वो इमेहिं ठाणेहिं ॥२९७॥

सुहुमबायररूवं वक्खमाणं, समासो संखेवो, इमेहि त्ति वक्खमाणेहिं पयलादीहिं, ठाणेहिं ति पदेहिं-दारेहिं ति वुत्तं भवति ॥२९७॥

ताणि य इमाणि ठाणाणि –

पयला[1] उल्ले[2] मरुए[3], पच्चक्खाणे[4] य गमण[5] परियाए[6] ।
समुद्देस[7] संखडी[8], खुड्डए[9] य परिहारी[10] य मुहीओ[11] ॥२९८॥

अवस्सगमणं दिस्सासु, एगकुले चेव एगदव्वे य ।
पडियाइक्खिय गमणं, पडियाइक्खित्ता य भुंजणं ॥२९९॥

एतातो दोण्णि दारगाहातो ।

(१) पयल त्ति दारं । अस्य व्याख्या –

पयलासि किं दिवा, ण पयलामि लहु दोच्च णिण्हवे गुरुओ ।
अण्णदाइत णिण्हवे, लहुया गुरुगा बहुतराणं ॥३००॥

कोइ साहू पयलाइ दिवा, अण्णेण साहुणा भण्णति—पयलासि किं दिवा ? तेण पडिभणियं ण पयलामि। एवं अवलवंतस्स पढमवाराए मासलहुं । पुणो वि सो उघेउं पवत्तो, पुणो वि तेण साहुणा भणियं-मा पयलाहि त्ति, सो भणति—ण पयलामि त्ति । एवं वितिय वाराए" "दोच्च णिण्हवे गुरुग त्ति" वितियवाराए णिण्हवेंतस्स मासगुरुभवतीत्यर्थः । अण्णदाइत णिण्हवे लहुग त्ति ततो पुणरवि सो पयलाइउं पवत्तो, तओ तेण साहुणा अण्णस्स साहुस्स दाइतो, दिक्खिओ त्ति वुत्तं भवति, तेण साहुणा भणितो—अज्जो ! किं पयलासि, सो पुणरवि णिण्हवे ण पयलामि त्ति, चउलहुगं भवति । गुरुगा बहुतरगाणं ति तेण साहुणा दुतिअग्गाणं दंसिओ, पुणरवि णिण्हवेति, तेण से चउगुरुगा भवंति ॥३००॥

णिण्हवणे णिण्हवणे, पच्छित्तं वड्ढति तु जा सपदं ।
लहुगुरुमासो सुहुमो, लहुगादी बादरे होंति ॥३०१॥

पुव्वद्ध कठं । णवरं समुदायत्थो भण्णति । पंचमवारा णिण्हवेंतस्स छल्लहुअं, च्छट्ठीए गुरुअं, सत्तमवाराए च्छेदो, अट्ठमवाराए मूलं, णवमवाराए अणवट्ठो, दसमवाराए पारंची ।

चोदक आह—"एस सव्वो सुहुममुसावातो ? ।

आयरियाह – लहुगुरुमासे सुहमो त्ति जत्थ जत्थ मासलहुं मासगुरुं वा तत्थ तत्थ सुहुमो मुसावातो भण्णति, चउलहुगादी बायरो मुसावातो भवतीत्यर्थः । पयले त्ति दारं गतं ॥३०१॥

(२) इदाणिं उल्ले ति दारं । उल्लेमि ति वासं –

किं वच्चसि वासंते,ण गच्छे णणु वासबिंदवो एते ।
भुंजंति णीह मरुगा, कहिं ति णणु सव्वगेहेहिं ॥३०२॥

कोइ साहू वासे पडमाणे अण्णतरपओयणेण पट्ठिओ । अण्णेण साहुणा भण्णति – अज्जो ! किं वच्चसि वासंते ? किमि ति परिप्रश्ने वच्चसि व्रजसीत्यर्थः, वासंते वर्षंते, तेण पट्ठितसाहुणा भण्णति—वासंते हं ण गच्छे, एवं भणिऊण वासंते चेव पट्ठिओ । तेण साहुणा भण्णति–णणु अलियं । इतरो पच्चाह–ण । कहं ? उच्यते, णणु वासबिंदवो एते "णणु" आसंकितावहारणे, "वासं" पाणीयं तस्स एए बिंदवो, बिंदुमिति थिबुकं ।

सीसो पुच्छई – "एत्थ कतरो मुसावाओ ?"

गुरुराह – जो भणति "णाहं वासंते गच्छे" एस मुसावातो, च्छलवादोपजीवित्वाच्च, जो पुण भणाति "किं वच्चसि वासंते" एस मुसावातो ण भवति । कहं ? उच्यते, "[1]ण चरेज्ज वासे वासंते" इति वचनात् । उल्ले त्ति दारं गयं ।

१ दश० अध्य० ५ उद्दे० १ ।

(३) इदाणिं मरुए त्ति व्याख्या – "भुंजंति पच्छद्धं। कोइ साहू कारणविणिग्गतो उवस्सयमागंतूण साहू भणति—णीह णिग्गच्छह, भुंजंति मरुआ, अम्हे वि तत्थ गच्छामो। ते साहू उग्गाहियभायणा भणंति कहिं ते मरुया भुंजंति। तेण भणियं णणु सव्वगेहेहिं ति। मरुए त्ति गयं ॥३०२॥

(४) पच्चक्खाणे य। अस्य व्याख्या—बितियदारगाहातें चरिमो पादो "पडियाइक्खित्ता य भुंजामि त्ति निषिद्धेत्यर्थः, पुनरपि भोगे मृषावादः। अस्येवार्थस्य स्पष्टतरं व्याख्यानं सिद्धसेनाचार्यः करोति –

भुंजसु पच्चक्खातं, ममंति तक्खण पभुंजितो पुट्ठो।
किं च ण मे पंचविधा, पच्चक्खाता अविरतीओ ॥३०३॥

कोइ साहू केण य साहुणा उवग्गह भोयणमंडलिवेलाकाले भणितो एहि भुंजसु। तेण भणियं—भुंजह तुब्भे, पच्चक्खाय मम ति। एवं भणिऊण मंडलिवेलाए तक्खणादेव भुंजितो। तेण साहुणा पुट्ठो—अज्जो! तुमं भणसि मम पच्चक्खायं। सो भणति 'किं च" पच्छद्धं, पाणातिपातादि पंचविहा अविरती, सा मम पच्चक्खाया इति। पच्चक्खाण त्ति दारं गयं ॥३०३॥

(५) इयाणिं गमणे त्ति, अस्य व्याख्या। बितियदारगाहाए ततित पादो – "पडियाइक्खिय गमणं" ति पडियाइक्खित्ता ण गच्छामि त्ति वुत्तं भवति। एवमभिधाय पुणरवि णिग्गमणं, मुसावायोऽस्यैवार्थस्य सिद्धसेनाचार्यो व्याख्यान करोति –

वच्चसि णाहं वच्चे, तक्खणे वच्चंत-पुच्छिओ भणति।
सिद्धंत ण वि जाणसि, णणु गंमति गंममाणं तु ॥३०४॥

केण ति साहुणा चेतियवंदणादिपयोयणे वच्चमाणेण अण्णो साहू भणितो—वच्चसि? सो भणति – "णाहं वच्चे, वच्च तुमं। सो साहू पयातो। इतरो वि तस्स मग्गतो तक्खणादेव पयातो। तेण पुण पुव्वपयायसाहुणा पुच्छितो "कह ण वच्चामी ति भणिऊण वच्चसि?" सो भणति – "सिद्धंतं ण वि जाणह" कहं? उच्यते, "[1]णणु गम्मति गम्ममाणं तु" गमणं णागम्ममाणं जं मि य समए तुमे अहं पुट्ठो तंमि य समए ण चेवाहं गच्छेत्यर्थः। गमणे त्ति दार गयं ॥३०४॥

(६) इयाणिं परिताए त्ति –

दस एतस्स य मज्झ य, पुच्छितो परियाग बेति तु छलेण।
मज्झ णव त्ति य वंदिते, भणाति वे पंचगा दस उ ॥३०५॥

कोइ साहू केणइ साहुणा वंदिउकामेण पुच्छिओ कति वरिसाणि ते परिताओ। सो एवं पुच्छतो भणति—एयस्स साहुस्स मज्झ य दस वरिसाणि परियाओ। एवं च्छलवायमंगीकृत्य ब्रवीति। सो पुच्छंतग साहू भणति—मम णव वरिसाणि परियाओ। एवं भणिउण पवंदिओ, ताहे सो पुच्छियसाहू भणति—णिविसह भंते! तुब्भे वंदणिज्जा। सो साहू भणति – कहं? मम णववरिसाणि तुब्भं दसेवरिसाणि। सो च्छलवाइसाहू भणति—णणु बे पंचगा दस उ, मम पंच वरिसाणि परितातो एयस्स य साहुणो पंच वरिसाणि चेव, एवं बे पंचगा दस उ। परियाए त्ति गत ॥३०५॥

---

१ भगवत्या. प्रथम शतकस्य प्रथमोद्देशके "चलमाणे चलिए" इति पाठमभिलक्ष्य कथितमिदम्।
सम्पादकः

(७) इदाणिं समुद्देस त्ति –

वट्टति तु समुद्देसो, किं अच्छह कत्थ एह गयणंमि ।
वट्टति संखडीओ, घरेसु णणु आउखंडणता ॥३०६॥

कोइ साहू कातिइ भोमादि विणिग्गतो आदिच्चं परिवेस परिचियं दट्ठूण ते साहवो सत्थे अच्छमाणा तुरियं भणति—वट्टति उ समुद्देसो, किं अच्छह, उट्ठेह गच्छामो । ते साहू अलियं ण भासति त्ति गहियभायणा उट्ठिता पुच्छंति, कत्थ सो ? सो च्छलवादी भणति—णणु एस गगणमग्गंमि आदिच्चपरिवेसं दर्शयतीत्यर्थः । समुद्देसे त्ति गयं ।

(८) संखड त्ति पच्छद्धं –

कोइ साहू पढमालिय पाणगादि णिग्गतो पच्चागओ भणति । इहज्ज णिवेसे पउराओ संखडीओ ते य साहवो गंतुकामा पुच्छंति—कत्थ ताओ संखडीओ वट्टंति ? सो य च्छलवाइसाहू भणति—वट्टंति संखडीओ घरेसु अप्पणप्पणएसु त्ति वुत्तं भवति । साहवो भणंति—कहं ता अपसिद्धा संखडीओ भण्णंति । सो च्छलवाइसाहू भणति—णणु आउखंडणया "णणु" आसंकितार्थावधारणे, जं एति जाइ य तमाउं भण्णति, जमि वा ट्ठियस्स सव्वकम्माणि उवभोगमागच्छंति तमाउं भण्णति, तस्स खंडणा विनासः, सा ननु सर्वगृहेषु भवतीत्यर्थः । संखडि त्ति गतं ॥३०६॥

(९) इदाणिं खुड्डए त्ति –

खुड्डग जणणी ते मता, परुण्णे जियइ त्ति एव भणितंमि ।
माइत्ता सव्वजिया, भविंसु तेणेस माता ते ॥३०७॥

कोइ साहू उवस्सयसमीवे दट्ठूण मयं सुणहिं खुड्डयं भणति—खुड्डग ! जणणी ते मता । "खुड्डो" वालो, "जणणी" माता, "मया" जीवपरिचत्ता । ताहे सो खुड्डो परुण्णो । तं रुवंतं दट्ठूणं सो साहू भणति-मा रुय जीयइ त्ति । एवं भणियंमि खुड्डो अण्णे य साहू भणंति—किं खु तुमं भणसि जहा मया । सो मुसावाइसाहू भणति—एसा जा साणी मता एसा य तुब्भ माया भवति । खुड्डो य भणति—कहं एस मज्झ माता भवति । सो भणति "मादित्ता" पच्छद्धं, भविंसु अतीतकाले आसीदित्यर्थः ।

भणियं च भगवता –

[1]"एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स सव्वजिवा मातित्ताए पियत्ताए भातित्ताए भज्जत्ताए पुत्तत्ताए धूयत्ताए भूयपुव्वा ?

१ पं० बेचरदासेन सम्पादितायां भगवत्यामेवंरूपेण पाठोऽयं समुपलभ्यते ।

प्रश्न – अयं णं भत्ते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पितित्ताए भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताऐ, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?

उत्तर – हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ।

प्रश्न – सव्वजीवा वि णं भते ! इमस्स जीवस्स माइत्तए जाव उववन्नपुव्वा ? ।

उत्तर – हन्ता गोयमा ! जाव अणन्तखुत्तो । भगवती शतक १२ उद्देशा ७

सम्पादकः

हंता गोयमा ! एगमेगस्स जीवस्स एगमेगे जीवे मादित्ताए जाव भूय-पुव्वत्ति" ।

तेण एस साणी माता भवतीत्यर्थः । खुड्डे त्ति गयं ॥३०७॥

(१०) इदाणिं परिहारिय त्ति –

ओसण्णे दट्ठूणं दिट्ठा परिहारिय त्ति लहु कहणे ।
कत्थुज्जाणे गुरुओ, अदिट्ठदिट्ठेसु लहुगुरुगा ॥३०८॥

कोइ साहू उज्जाणादिसु ओसण्णे दट्ठूण आगंतूण भणति—मए दिट्ठा परिहारिग त्ति । सो छलेण कहयति । इतरे पुण साहू जाणंति—जहा परिहारतवावण्णा अणेण दिट्ठा इति । तस्स छलाभिप्पायतो कहंतस्सेव मासलहुं पायच्छित्तं भवति । पुणो ते साहुणो परिहारिसाहू दरिसणोसुगा पुच्छति—कत्थ ते दिट्ठा ? सो कहयति, उज्जाणे त्ति । एवं कहितस्स मासगुरुं । अदिट्ठदिट्ठेसु त्ति परिहारियदंसणोसुगा चलिया जाव ण पासंति ताव तस्स कहितस्स चउलहुगा, "दिट्ठेसु" ओसण्णेसु कहंतस्स चउगुरुगा ॥३०८॥

छल्लहुगा य णियत्ते, आलोएंतंमि छगुरू होंति ।
परिहरमाणा वि कहं, अप्परिहारी भवे छेदो ॥३०६॥

तेसु साहुसु णियत्तेसु कहंतस्स छलहुगा भवति । ते साहवो इरियावहियं पडिक्कमिउं गुरुणो गमणागमणं आलोएति भणंति य "उप्पासिया अणेण साहुणा" एव तेसु आलोयंतेसु कहयतस्स छगुरुगा भवंति । सो उत्तरं दाउमारद्धो पच्छद्धं । परिहरंती ति परिहारगा, ते परिहरमाणा वि कहं अपरिहारगा । एवं उत्तरप्पयाणे च्छेदो भवति ॥३०६॥

ते साहवो भणंति—किं ते परिहरंति जेण परिहारगा भण्णंति ? उच्यते –

खाणुगमादी मूलं, सव्वे तुब्भेगोऽहं तु अणवट्ठो ।
सव्वे वि बाहिरा, पवयणस्स तुब्भे तु पारंची ॥३१०॥

उड्ढायति ठुयं कट्ठं खाणुगं भण्णति, आदि सद्दातो कंटग-गड्डादि परिहरंति । तेण ते परिहारगा भण्णति । एवं उत्तरप्पयाणे मूलं भवति । ततो तेहिं सव्वेगवयणेहिं साहूहिं भण्णति—धिट्ठोसि जो एवगए वि उत्तरं पयच्छसि, ततो सो पडिभणति – सव्वे तुब्भे सहिता एगवयणा, एगो ह तु असहाओ जिच्चामि, ण पुण परिफग्गुवयणं मे जंपियं । एवं भणंतो अणवट्ठो भवति । ज्ञानमदावलिप्तो वा स्यात् एवं ब्रवीति "सव्वे वि" पच्छद्धं । "सव्वे" असेसा, "बाहिरा" आज्ञा, "पवयणं" दुवालसंगं गणिपिडगं, तुब्भे "त्ति" णिद्देसे, "तु" सद्दो भावमात्रावधारणे । एवं सव्वाहिक्खेवाओ पारंची भवति । परिहारिए त्ति गय ॥३१०॥

(११) इदाणिं मुहीओ त्ति –

भणइ य दिट्ठ णियत्ते, आलोयामंते घोडगमुहीओ ।
किं मणुस्सा सव्वे, गो सव्वे बाहिं पवयणस्स ॥३११॥

एगो साहू वियारभूमिं गओ । उज्जाणुद्देसे वडवाओ चरमाणीओ पासति । सो य पच्चागओ साहूण विम्हियमुहो कहयति—सुणेह अज्जो ! जारिसयं मे [1]चोज्जं दिट्ठं । तेहिं भणति—किमपुव्वं तुमे दिट्ठं । सो भणति – घोडगमुहीओ मे इत्थिआओ दिट्ठाओ । ते उज्जुसभावा "अणलियवाइणो त्ति साहू" साहुणो पत्तिया ।

१ आश्चर्यम् ।

जहा परिहारे तहा इहावि असेसं दट्ठव्वं। णवरं अक्खरत्थो भण्णति। भणति घोडगमुहीओ दिट्ठा इति। साहुहिं पुच्छिओ, कत्थ ? "उज्जाणसमीवे" त्ति वितिय-वयणं। साहवो दट्ठव्वाभिप्पाई वयंति त्ति ततियवयणं। "दिट्ठुति वडवाओ" चउत्थं। "पडिणियत्ता" इति पंचमं। "गुरुण आलोएंति पवंचियामो" छट्ठं। सहोढा पच्चुत्तरपयाणं "आमति घोडगमुहीओ जेण दीह मुहं अहो मुहं च अश्वतुल्य एवेत्यर्थः?" सत्तमं पद। साहुहिं भण्णति "कहं ता इत्थिआओ" सो पडिभणाति "किं खाइंति ? मणुस्सा" अट्ठमं पदं। "सव्वे तुब्भे अहं एगो" नवमं पदं। "सव्वे बाहिरा पवयणस्स" दसमं पदं ॥३११॥

एतेसु दससु जहासखेणिमं पायच्छित्तं –

मासो लहुओ गुरुओ, चउरो मासा हवंति लहुगुरुगा।
छम्मासा लहुगुरुगा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥३१२॥

दुगं अणवट्ठपारंचियं। सेसं कंठं। घोडगमुहीओ त्ति गतं ॥३१२॥

(१२) इदाणिं अवस्सगमणं ति। अस्य व्याख्या –

गच्छसि ण ताव गच्छं, किं खु ण यासि त्ति पुच्छितो भणति।
वेला ण ताव जायति, परलोगं वा वि मोक्खं वा ॥३१३॥

गच्छसि ण ताव त्ति। कोइ साहू केणइ साहुणा पुच्छिओ – 'अज्जो ! गच्छसि भिखायरियाए ण ताव गच्छसि त्ति" एसा पुच्छा। गच्छं ति सो भणति—अवस्सं गच्छामि। तेण साहुणा गिहीतभायणोवकरणेण भण्णइ—अज्जो ! एहि वच्चामो। सो पच्चाह—अवस्सं गंतव्वे ण ताव गच्छामि, तेण साहुणा पुणो भण्णति—तुमे भणियं "अवस्सं गच्छामि" तो किं पुण जासि त्ति। एवं पुच्छिओ भणति—वेला ण ताव पच्छद्ध। परलोगगमणवेला ण ताव जायति, तो ण ताव गच्छामि, मोक्खगमणवेला, वा "अपि" पदार्थं संभावने, किं पुण संभावयति ? अवस्सं परलोगं मोक्खं वा गमिष्यामीत्यर्थः, "वा" विकल्पे। गमणे त्ति गत ॥३१३॥

(१३) इदाणिं दिस त्ति। अस्य व्याख्या –

कतरं दिसं गमिस्ससि, पुव्वं अवरं गतो भणति पुट्ठो।
किं वा ण होइ पुव्वा, इमा दिसा अवरगामस्स ॥३१४॥

एगो साधू एगेण साधुणा पुच्छितो—अज्जो ! कतरं दिसं भिक्खायरियाए गमिस्ससि। सो एवं पुच्छितो भणति—पुव्वं। सो पुच्छंतगसाहू उग्गाहेऊण य गतो अवरं दिसं। इयरो वि पुव्वदिसिगमणवादी अवरं गओ। "अज्जो ! तुमे भणियं अहं पुव्वं गमिस्सामि, कीस अवरं दिसिमागतो", एवं पुट्ठो भणइ – "पुट्ठो" पुच्छिओ त्ति वुत्तं भवति "किं वा" पच्छद्धं। अण्णस्स अवरगामस्स इमा पुव्वदिसा किं पुण ण भवति ? भवति चेव। दिस त्ति गतं ॥३१४॥

(१४) एगकुले त्ति। अस्य व्याख्या –

अहमेगकुलं गच्छं, वच्चह बहुकुलपवेमणे पुट्ठो।
भणति कहं दोण्णि कुले, एगसरीरेण पविसि ॥३१५॥

भिक्खणिमित्तुट्ठितेण साहुणा साहू भणति—अज्जो ! एहि वयामो भिक्खाए। सो भणति—अहं एगकुलं गच्छं, वच्चह तुब्भे। "अहमि" त्ति आत्मणिर्देशे, "कुलं" इति गिहं, "गच्छं" पविसे, वच्चह त्ति

विसर्जनं । गता ते साधवो । सो वि य एवं भणिऊण पच्छा बहुकुलाणि पविसति । तेहिं साहुहिं भणितो— अज्जो ! तुमे भणियं एगकुले पविसिस्सं" । एवं बहुपवेसणे पुट्ठो भणति "कहं" केणप्पगारेण एगसरीरेण— दोण्णि कुले पविसिस्सामि, एगं कुल चेव प्रविशेत्यर्थ.[1] । एगकुले त्ति गत ।।३१५।।

(१५) इदाणिं एगदव्व त्ति । अस्य व्याख्या –

वच्चह एगं दव्वं, घेच्छं णेग्गहपुच्छितो भणति ।
गहणं तु लक्खणं पुग्गलाण णण्णेसिं तेणेगं ।।३१६।।

भिक्खाणिमित्तुट्ठितेण साहुसंघाडगेणेगो साहू भण्णति— वयामो भिक्खा । सो भणति—वच्चह तुब्भे, अहमेगं दव्वं घेच्छं । ते गता । इतरो वि अडंतो ओदणदोच्चंगादी बहुदव्वे गेण्हंतो तेहिं साहुहिं दिट्ठो पुच्छितो य अज्जो ! तुमे भणितं एगं दव्वं घेच्छं । एवं णेगग्गह पुच्छितो भणति त्ति अणेगाणि दव्वाणि गेण्हंतो पुच्छितो इमं भणति गहणं तु—पच्छद्ध । गतिलक्खणो धम्मत्थिकाओ, ठितिलक्खणो अधम्मत्थिकाओ, अवगाहलक्खणो आगासत्थिकाओ, उवओगलक्खणो जीवत्थिकाओ, गहणलक्खणो पुग्गलत्थिकाओ । एएसिं पंचण्ह दव्वाणं पुग्गलत्थिकाय एव गहणलक्खणो एगो णण्णेसिं ति धम्मादियाण एयं गहणलक्खण ण विज्जतेत्यर्थः । तेणेगं ति तम्हा अहमेग दव्वं गेण्हामि त्ति वुत्तं भवति । सव्वेसेतेसु पयलातिसु भणतस्सेव मासलहुं पायच्छित्तं । एतेसु चेव य पयलादिसु अभिणिवेसेण एक्केक्कस्स पदातो पसंगपायच्छित्त दट्ठव्वं जाव पारचिय ।।३१६।।

एत्थ सुहुमवायरमुसावातलक्खणं भण्णति –

अणिकाचिते लहुसओ, णिकाइए वायरो य वत्थादी ।
ववहार दिसा खेत्ते, कोहाति सेवती जं च ।।३१७।।

अणिकातिते लहुसओ मुसावातो भवति, णिकातिते वायरो मुसावातो भवति । वत्थाइ त्ति-अणिकाय-णिकायणाणं भेदो दरिसिज्जति, जहा केणति साहुणा कस्सति साहुस्स कंदप्पा वत्थं णूमियं, जस्स य तं वत्थं णूमियं सो सामण्णेण पुच्छति-अज्जो ! केण वि वत्थं [2]णूमितं कहयह । सव्वे भणति – ण व त्ति । एवं वत्थहारिणी अवलवंतस्स अणिकातियं वयणं भवति । जया पुण साहुस्स केण य कहितं जहा अमुगेण साहुणा गहियं, तेण सो पुट्ठो भणति—ण व त्ति । एवं णिकायणा भवति ।

अहवा जेण तं गहितं सो चेव पढमं पुट्ठो "अजो ! तुमे मे वत्थं ठवितं" सो भणति ण व त्ति एवं "अणिकाइयवयणं । अतो परं जं पुच्छिज्जंतो ण साहति सा णिकायणा भवति । आदिशब्दादेवमेव पात्रादिष्वप्यायोजनीयं ।

अहवा इमे बादरभेदा ववहारं अण्णहा णेति, दिसावहारं वा करेति, खेत्ते वा आहव्वं ण देति, ममाभव्वं ति काउं । एए ववहारादी कोहादीहिं सेवति जता तया वादरो मुसावातो भवतीत्यर्थः ।

अहवा एते ववहारादिपदा ण विणा कोहेणं ति बादरो एव मुसावादो दट्ठव्वो । कोहा ति सेवती जं च त्ति अण्णत्थ वि कोहादी आविट्ठो मुसं भासति, सो सव्वो बादरो मुसावातो दट्ठव्वो इति ।।३१७।।

"वत्थाइ" ति अस्य व्याख्या –

कंदप्पा परवत्थं, णूमेउणं ण साहती पुट्ठो ।
जं वा णिग्गह पुट्ठो, भणिज्ज दुट्ठंतरप्पा वा ।।३१८।।

---

१ प्रविशामीत्यर्थः । २ संगोवियं ।

पुव्वद्धं गतार्थं। ववहार-दिसा-खेत्तपदाणं सामन्नत्थव्याख्या पच्छद्धं। "जं वा" वयणं संवज्जति, "णिग्गहो" निश्चयः 'पुट्ठो' पुच्छितो 'भणेज्ज" भासेज्ज, "दुट्ठं" कलुसियं, "अंतरप्पा" चेतो चित्तमिति एगट्ठं, "वा" विकप्पे। एवं बादरो मुसावातो भवति। निश्चयकालेपि पृष्टो दुष्टान्तरात्मा भूत्वा यद्वचनमभिधत्ते स बादरो मुसावादो भवतीत्यर्थः ॥३१८॥

"कोहादी सेवती जं च" त्ति अस्य व्याख्या –

कोहेण व माणेण व, माया लोभेण सेवियं जं तु।
सुहुमं व बादरं वा, सव्वं तं बादरं जाण ॥३१९॥

"सेवितं जं तु" मुसावायवयणं संबज्जति, तं दुविहं – सुहुमं वा बादरं वा। तं कोहादीहिं भसियं सव्वं बादरं भवतीत्यर्थः ॥३१९॥

"अणिकाइए त्ति" जा गाहा तीए गाहाए जे अवराहपदा तेसु पच्छित्तं भणति –

लहुगो लहुगा गुरुगा, अणवट्ठप्पो व होइ आएसो।
तिण्हं एगतराए, पत्थारपसज्जणं कुज्जा ॥३२०॥

लहुओ त्ति सुहुममुसावाते पच्छित्तं 'लहुग" त्ति। बायरमुसावाते पच्छित्तं दिसावहारे चउगुरुगा पायच्छित्तं। साहंमितेणेवि चउगुरुगा चेव।

अहवा साहंमियतेणे अणवट्ठो। आदेसो णाम सुत्ताएसो, तेण अणवट्ठप्पो भवति।

[1]तं चिमं सुत्तं— "तओ अणवट्ठप्पा पणत्ता तं जहा –

साहंमियाणं तेणं करेमाणे, अण्णहम्मियाणं तेणं करेमाणे, हन्थातालं (दालं) दलेमाणे।"

तिण्हं वि तिविहो मुसावातो—जण्णहो मज्झिमो उक्कोसो। जत्थ मासलहुं भवति स जहण्णो मुसावातो, जत्थ पारंचियं स उक्कोसो, सेसो मज्झिमो। एगतराए त्ति जति जहण्ण मुसावातं पढमताए भासति, ततो पत्थारपसज्जणं कुज्जा। अह उक्कोसं पढमताए भासति, ततो वा पत्थारपसज्जणं कुज्जा। "प्रस्तारो" विस्तारः "प्रसज्जनं" प्रसंगस्तदेकैकस्मिन्नारोपयेदित्यर्थः।

अहवा "तिण्णं" ति दिसा खेत्तं, कोहाती सेसं पूर्ववत्।

अहवा तिण्हं मासलहु, चउलहु, चउगुरुगं। एतेसिं एगतरातो पत्थारपसज्जणं कुज्जा। केति पढंति चउण्हं एगतराए त्ति चउण्ह कोहादीणं एगतरेणावि मुसं वयमाणस्स पत्थारदोसो भवतीत्यर्थः। एसा मुसावायदप्पिया पडिसेवणा गता ॥३२०॥

इयाणिं कप्पिया भणति –

उड्डाहरक्खणट्ठा,[1] संजमहेउं[2] व बोहिके[3] तेणे[4]।
खेत्तंमि[5] व पडिणीए,[6] सेहे वा खेप्पलोए[7] वा ॥३२१॥ दारगाहा

---

१ ठाणा० अ० ३ उद्द० ४।

उड्डाहरक्खणट्ठा मुसावातं भासति। संजमहेउं वा मुसावातं भासति। वोहियतेणेहिं वा गहितो मुसावातं भासति। पडिणीयखेत्ते वा मुसावातो भासियव्वो। सेहणिमित्तं मुसावातो भासिज्जति। सेहस्स वा लोयणिमित्तं मुसावातो भासिज्जति ॥३२१॥

"उड्डाह-सजम-वोहिय-तेणा" एगगाहाए वक्खाणेति –

भुंजामो कमढगादिसु, मिगादि णवि पासे अहव तुसिणीए।
वोहिगहणे दियाती, तेणेसु व एस सत्थो त्ति ॥३२२॥

जति धिज्जातियादयो पुच्छंति–तुब्भे कह भुंजह ? ताहे वतव्व, भुंजामो कमढगादिसु। "कमढग" णाम करोडगागारं अट्टंगेण कज्जति। आदि सद्दातो करोडगं चेव घेप्पति। एवं उड्डाहरक्खणट्ठा मुसावातो वत्तव्वो।

"संजमहेउं" ति। जइ केइ लुद्धगादी पुच्छंति "कतो एत्थ भगवं ! दिट्ठा मिगादी" ? "आदि" सद्दातो सुअराती, ताहे दिट्ठेसु वि वत्तव्वं – "ण वि पासे" त्ति ण दिट्ठ त्ति वुत्तं भवति।

"अहवा तुसिणीओ अच्छति। भणति वा – ण सुणेमि त्ति। एवं संजमहेउं मुसावातो।

"वोहिय-पच्छद्धं। वोहिएसु वा गहितो भणाति "दियादि" त्ति अब्राह्मणोपि ब्राह्मणोऽहमिति ब्रवीति। तेणेसु वा गहितो भण्णति "एस सत्थो" त्ति ते चोरे भणति णासह णासह त्ति घेप्पइ त्ति ॥३२२॥ "खेत्तंमि वि पडिणीते" प्रत्यनीकभाविते क्षेत्रे इत्यर्थः।

तं च खेत्तं –

भिक्खुगमादि उवासग पुट्ठो दाणस्स णत्थि णासो त्ति।
एस समत्तो लोओ, सक्को य ऽभिधारते छत्तं ॥३२३॥

भिच्छुगा रत्तपडा, "आदि" सद्दातो परिव्वायगादि। तेहिं भावियं जं खेत्तं तत्थ उवासगा पुच्छंति सढताते परमत्थेण वा "भगवं ! जम्हे भिच्छुगादीआण दाणं दलयामो एयस्स फलं किं अत्थि ण व त्थि त्ति। सो एवं पुट्ठो भणति—दाणस्स णत्थि णासो त्ति, जति वि य तेसिं दाणं दिण्णं अफलं तहा चेव भणाति, मा ते उद्दुरुट्ठा घाडेहंतीत्यर्थः।

"सेहो" त्ति। सेहो पवज्जाभिमुहो आगतो पव्वतितो वा। तं च सण्णायगा से पुच्छंति। तत्थ जाणंता वि भणंति – "ण जाणामो ण वा दिट्ठो" त्ति। सेहस्स वा अणहियासस्स लोए कज्जमाणे बहुए वा अच्छमाणे एवं वत्तव्वं "एस समत्तो लोओ", थोवं अच्छइ त्ति, अण्णं च साहुस्स लोए कज्जमाणे तत्रस्थित एव शक्रो देवराजा छत्रमभिधारयते इत्यर्थः ॥३२३॥ गता मुसावायस्स कप्पिया पडिसेवणा। गतो मुसावातो ॥

इयाणिं अदिण्णादाणं भण्णति –

तस्स दुविहा पडिसेवणा – दप्पिया कप्पिया य। तत्थ दप्पिया ताव भण्णति –

दुविधं च होइ तेण्णं, लोइय-लोउत्तरं समासेणं।
दव्वे खेत्ते काले, भावंमि य होति कोहादी ॥३२४॥

---

१ शठतया।

दुविहं दुभेदं । च पादपूरणे । होति भवति । तेण्णं चोरियं । कतमं दुभेदं ? उच्यते, लोइय-लोउत्तरं समासेण । व्याख्या पूर्ववत् । तत्थ लोइयं चउव्विहं दव्वे पच्छद्धं ॥३२४॥

एसा चिरंतणगाहा । एयाए चिरंतणगाहाए इमा भद्दबाहुसामिकया चेव वक्खाणगाहा –

महिसादि छेत्तजाते, जहियं वा जच्चिरं विवच्चासं ।
मच्छरऽभिमाणघण्णे, दगमाया लोभश्रो सव्वं ॥३२५॥

दव्वग्रदिण्णादाणे महिसादि उदाहरणं । खेत्तग्रदत्तादाणस्स "च्छेत्तजाय" त्ति "च्छेत्तं" खेत्तं, "जाय" त्ति विकप्पा । कालग्रदिण्णादासस्स वक्खाणं 'जहियं वा जच्चिरं विवच्चासं' ति, जंमि काले ग्रवहरति, जावतियं वा कालं विवच्चासितं वत्थं भुंजति तं कालतेण्णं । "भावंमि य होति कोहादी" ग्रस्य व्याख्या "मच्छर" पच्छद्धं । मच्छरे त्ति कोहो ग्रहिमाणो माणो, तत्थ घण्णोदाहरणं । दगं पानीयं, तं मायाए उदाहरणं । लोभग्रो सव्वं ति, जमेयं दव्वादि भणियं एयंमि सर्वत्र लोभो भवतीत्यर्थः ॥३२५॥ जं तं लोइयं दव्वतेण्णं तं तिविधं – सच्चित्तं ग्रचित्तं मीसं ।

जतो भण्णति –

दुपय-चउप्पयमादी, सच्चित्ताचित्त होति वत्थादी ।
मीसे सचामरादी, वत्थूमादी तु खेत्तम्मि ॥३२६॥

दुपयं माणुस्सं, चउप्पदं महिसाति ग्रादि सद्दातो ग्रपदं, तं च ग्रंबाडगादि । एवं जो ग्रवहरति एयं सच्चित्त दव्वतिण्णं भवति । ग्रचित्तं होइ वत्थादी "ग्रादि" सद्दातो हिरण्णादी । मीसगदव्वतेण्णं सचामरादि ग्रस्सहरणं "ग्रादि" सद्दातो जं वा ग्रण्णं सभंडं दुपदादि ग्रवहरिज्जति तं सव्वं मीसदव्वतेण्णं । च्छेत्तजाए त्ति ग्रस्य व्याख्या – वत्थुमादीग्रो खेत्तंमि "वत्थु" तिविहं—खातं, उसित, खात-उसितं । खातं भूमिगिहं, उसियं पासादादि, खाग्रोसिय हेट्ठा भूमिगिहं उवरिं पासाग्रो कग्रो, "ग्रादि" सद्दातो सेउं केउ घेप्पति । एवमादियाण खेत्ताण जो ग्रवहारं करेति, खेत्तंमि तेण्णं भवति ॥३२६॥

"जहियं वा जच्चिर विवच्चास" ति ग्रस्य व्याख्या –

जाइतवत्था दमुए, काले दाहं ण देति पुण्णे वि ।
एसो उ विवच्चासो, जं च परक्कप्पणो कुणति ॥३२७॥

जाइता पाडिहारिया वत्था गहिया, ते य गहणकाले एवं भासिया "ग्रमुगे काले दाहं" ति ग्रमुगकालं वसंतं परिभुंजिऊण गिम्हे पच्चप्पिणिस्सामि, "ण देति पुण्णे" वि त्ति, पुण्णे वि ग्रवहिं काउं ण देति ताणि वस्त्राणीत्यर्थः । एसो उ विवच्चासो य त्ति जो भणियो, तु सद्दो ग्रवधारणे, "विवच्चासो" त्ति, ण जहा भासितं करेति त्ति वुत्तं भवति । एवं ग्रवहिकालाग्रो जावतियं कालं उवरिं ग्रदत्तं भुंजति तं कालग्रोग्रदत्तादाणं भवति । जं व त्ति वत्थादिवतिरित्तस्स ग्रणिद्दिट्ठसरूवस्स गहणं । "पर" ग्रात्मव्यतिरिक्तः, न स्वकीयं, परकीयमित्यर्थः । तं पुव्वाभिहिएण कालविवच्चासेण "ग्रप्पणो कुणति" ग्रात्मीकरोतीत्यर्थः ।

ग्रहवा "जं च परक्कप्पणो कुणति" ति सामण्णेण दव्वादिग्राण वक्खाणं "जं च" त्ति दव्वखेत्तकाला संवज्जंति, तेसिं परसंतगाण जं ग्रप्पीकरणं तं तेण्णं भवती ति वुत्तं भवति । काले त्ति गयं ॥३२७॥

मच्छरे त्ति अस्य व्याख्या –

कोहा गोणादीणं, अवहारं कुणति वद्धवेरो तु ।
माणे कस्स बहुस्सति, परधण्ण सवत्थुपक्खेवो ॥३२८॥

पुव्वद्धं "कोहो" । कोवेण जं गोणादीणं अवहारं करेति, 'आदि' सद्दाओ महिषाश्वादीनां, वद्धवैरोऽणुबद्धवैरत्वात्, "तु" शब्दो कोहतेण्णावधारणे ।

अहवा सीसो पुच्छति – "भगवं ! कह क्रोधात्स्तैन्यं भवति" ?

आचार्याह – गोणादीणं अवहरणं करेति वद्धवैरो, "तु" निर्णयः । एव कोहातो भावतेण्णं भवति । "अहिमाणधण्णे" त्ति अस्य व्याख्या – "माणे" पच्छद्धं । जहा मुसावाए तहेहावि । णवर—परधण्णं हरिऊण, सवत्थुपक्खेवो त्ति "स" इति स्वात्मीये, "वत्थु" रिति धण्णरासी, "पक्खेवो" पुनः छुभण भवति । "माह जिच्चिस्सामी" ति परायय धण्णं अवहरिऊण सवत्थुते पक्खित्ता भणति "पुव्व मए भणितं मम बहु-[1]सतीहत्थो इदाणिं पच्चक्खं । एवं माणतो भावतेण्णं भवति ॥३२८॥

"दगमायं" ति अस्य व्याख्या –

वारगसारणि अण्णावएस पाएण णिक्कभेत्तुणं ।
लोहेण वणिगमादी सव्वेसु निवत्तती लोहो ॥३२९॥

"वारग" पुव्वद्धं । बहवे करिसगा वारगेण सारिणीए खेत्तादी पज्जेंति वारगो परिवाडी, सारणी णिक्का । तत्थेगो करिसगो अण्णस्स वारए अण्णावदेसा पादेण णिक्कं भेत्तुण अण्णावदेसो अदंसियभागो द्वितो चेव "माहं णिउडमाणो दिस्सिस्सामि" त्ति पाएण णिक्कं भेत्तूण फोडेऊण अप्पणो खेत्ते पाणियं छुभति । एवं भावओ मायातेण्णं भवति ।

"लोभतो सव्वं" ति अस्य व्याख्या । "लोभेण" पच्छद्धं । लोभेण तेण्णं, वणियमादि त्ति जं वाणियगा परस्स चक्खुं वंचेऊण मप्पकं करेंति, कूडतुलकूडमाणेहिं वा अवहरंति तं सव्वं लोभतो तेण्ण ।

अहवा सव्वेसु कोहातिसु, णिवडति लोभो त्ति, सव्वेसु कोहातिसु लोभोऽन्तर्भूत एवेत्यर्थः ।३२९॥

एवं भावतो लोभतेण्णं भवति । लोइयं तेण्णं गतं ।

इयाणिं लोउत्तरियं तेण्णं भण्णति –

सुहुमं च बादरं वा, दुविधं लोउत्तरं समासेणं ।
तण-डगल-च्छार-मल्लग-लेवित्तिरिए य अविदिण्णे ॥३३०॥

सुहुमं स्वल्पं, बादरं णाम बहुगं । पायच्छित्त-विहाणगे वा सुहुमबादरविकप्पो भवति । जत्थ पणगं तं सुहुमं, सेसं बादरं । "च" शब्दो भेदसमुच्चये । दुविहं दुभेदं, "लोगो" जणवओ, तस्स "उत्तरं" पहाणं, तम्मि द्विता जे ताण तेण्णं लोउत्तरं तेण्णं भवति । तं समासेण संखेवण दुविहं ति वुत्तं भवति । तस्सिमे भेदा—तणाणि कुसादीणि, डगलगा उवलमादी, अगणिपरिणामियमिंधणं च्छारो भण्णति, मल्लगं सरावं, लेवो भायणरंगणो, इत्तिरिये य त्ति पंथं वच्चंतो जत्थ विस्समिउ कामो तत्थोग्गह णाणुण्णवेइ, "च" सद्दाओ कुडमुहादयो घेप्पति, अविदिण्णे त्ति वयणं सव्वेसु तणादिसु संबज्जति ॥३३०॥

---

१ शक्तिः ।

किं चान्यत् –

अविदिण्ण[1] पाडिहारिय[2], सागारिय[3] पढमगहण[4]खेत्ते[5] य ।
साधंमि[6] य अण्णधंमे[7], कुल[8]-गण[9]-संघे[10] य तिविधं तु ॥३३१॥

अविदिण्णमिति गुरूहिं पाडिहारियं ण पच्चप्पिणति, सागारियसंतियं अदिण्णं भुंजति, पढमसमोसरणे वा उवहिं गेण्हति, परखेत्ते वा उवहिं गेण्हति, साहम्मियाण वा किंचि अवहरति, अण्णधम्मियाण वा अवहरति, कुलस्स वा अवहरति, एवं गणस्स वा, संघस्स वा । च सद्दो समुच्चये । तिविहं सच्चित्तादि दव्वं भण्णति ॥३३१॥

एतेसिं तणाइयाण सामण्णतो ताव पच्छित्तं भणामि –

तण-डगलग-छार-मल्लग, पणगं लेवित्तिरीसु लहुगो तु ।
दव्वादविदिण्णे पुण, जिणेहिं उवधी णिप्फण्णं ॥३३२॥

तणेसु डगलगेसु छारेसु मल्लगे य अदिण्णे गहिये पणगं पच्छित्तं भवति । लेवे अदिण्णे गहिते य इत्तिरिए य रुक्खहेट्ठादिसु अणणुण्णविएसु लहुओ उ मासो भवति । "तु" शब्दात् कुडमुहादिसु य । दव्वादविदिण्णे पुण त्ति – "दव्वे" पतिविसिट्ठे, "अदत्ते" गृहीते, "पुण" विसेसणे पुव्वाभिहियपच्छित्ताओ, जिणा तित्थगरा, तेहिं उवकरणणिप्फण्णं भणियं । जहण्णोवहिम्मि पणगं, मज्झिमे मासो, उक्कोसेण चउमासो, एवं उवकरणणिप्फण्णं ॥३३२॥

अविदिण्णे त्ति[1] अस्य व्याख्या –

लद्धुं ण णिवेदेती, परिभुंजति वा णिवेदितमदिण्णं ।
तत्थोवहिणिप्फण्णं- अणवट्ठप्पो व आदेसा ॥३३३॥

कोइ साहू भिक्खादि विणिग्गतो उवकरणादिजातं "लद्धुं न निवेदेति" त्ति "लद्धुं" लभित्ता, "ण" इति पडिसेहे, "णिवेदन" माख्यानं, तमायरियउवज्झायाणं ण करेतीत्यर्थः ।

अहवा परिभुंजति वा अणिवेदितं चेव परिभुंजति ।

अहवा णिवेदितं अदिण्णं भुंजति । एवं अदत्तादानं भवति । एत्थोवहिणिप्फण्णं दट्ठव्वं । सुत्तादेसेण वा अणवट्ठो भवति ॥३३३॥

"पडिहारिय" त्ति अस्य व्याख्या –

पडिहारियं अदेंते, गिहीण उवधीकतं तु पच्छित्तं ।
सागारि संतियं वा, जं भुंजति असमणुण्णातं ॥३३४॥

गिहिसंतियं उवकरणं पडिहरणीयं पाडिहारितं, अदेंते अणप्पिणंते, तेसिं गिहीण, उवहीकयं तु उवहीणिप्फण्णं, पच्छित्तं भवतीत्यर्थः ।

[1] गा. ३३१ ।

"सागारिए" त्ति अस्य व्याख्या । पच्छद्धं । सागारिओ सेज्जायरो, तस्स संतियं स्वकीयं, वा विकल्पे, जमिति उवकरणं, भुंजति परिभोगं करेति, असमणुण्णाय तस्स अदेंतस्सेत्यर्थः । एत्थं पि तदेव उवहिणिप्फण्णं ॥३३४॥

"पढमगहणे" त्ति अस्य व्याख्या –

गुरुगा उ समोसरणे, परक्खित्तेऽचित्तउवधिणिप्फण्णं ।
सचित्ते चउगुरुगा, मीसे संजोग पच्छित्तं ॥३३५॥

पढमसमोसरणं वरिसाकालो भण्णति । तत्थ य भगवया णाणुण्णायं उवहिग्गहणं । तम्मि अणणुण्णाते गहणं करेंतस्स अदत्तं भवति । एत्थ चउगुरुगा पायच्छित्तं भवति

"खेत्ते" त्ति अस्य व्याख्या –

तिण्णि पदा परा अण्णगच्छिल्लगा, तेसिं जं खेत्तं तं परखेत्तं, तम्मि य परखेत्ते जति अचित्तं दव्वं गेण्हति तत्थ से उवहिणिप्फण्णं पायच्छित्तं भवति । सचित्ते चउगुरुग त्ति अह परखेत्ते सचित्तं गेण्हति तत्थ से चउगुरुगं पच्छित्तं भवति । मीसे त्ति मीसो सोवहितो सीसो वा तं च से संजोगपच्छित्तं भवति । तत्थ जं अचित्तं तत्थोवहिणिप्फण्णं, जं च सचित्तं तत्थ चउगुरुयं, एयं संजोगपच्छित्तं भण्णति ॥३३५॥

"साहम्मिय" त्ति अस्य व्याख्या –

साधंमिया य तिविधा, तेसिं तेण्णं तु चित्तमचित्तं ।
खुड्डादी सच्चित्ते, गुरुग उवधिणिप्फण्णमचित्ते ॥३३६॥

समाणधम्मिया साहम्मिया स्वप्रवचनं प्रतिपन्नेत्यर्थः, च शब्दो पादपूरणे, ते तिविहा लिंगसाहम्मि-पवयणसाहम्मि चउभंगो, आदिल्ला तिण्णिभंगा तिविह साहम्मिय त्ति वुत्तं भवति, चउत्थो भंगो असाहम्मिओ त्ति पडिसिद्धो ।

अहवा तिविहा साहम्मी—साहू, पासत्थादि, सावगा य ।

अहवा समणा समणी सावगा य । तेसिं ति साहम्मिया संवज्झंति । तेण्णं अवहारो । तु शब्दो यच्छब्दे तच्छब्दे च द्रष्टव्यः । चित्तं सचेयणं । अचित्तं अचेयणं । तेसिं तेण्णं जं तं चित्तमचित्तेत्यर्थः । किं पुण सचित्तं ? भण्णति–खुड्डादी सच्चित्ते, "खुड्डो" सिसू बालो त्ति वुत्तं भवति, "आदि" सद्दातो अखुड्डो वि, तंमि य सचित्ते अपहृते गुरुगा पच्छित्तं भवति, अचित्ते पुण उवहिणिप्फण्णं भवति ॥३३६॥

इदाणिं "कुल-गण-संघा" जुगवं भण्णंति – हति तहा वि

एतेच्चिय पच्छित्ता, कुलंमि दोहि गुरुया मुणेयव्वा । त्यर्थः ।
तवगुरुया तु गणंमी, कालगुरू होंति संघंमि ॥३वं अदिण्णे त्ति दारं

एतेच्चिय जे साहम्मिय तेण्णे पच्छित्ता भणिता ते च्चिय पच्छित्ता कुलतेण"चउ" त्ति पाडिहारियं, दोहि गुरू मुणेयव्वा । दोहिं ति कालतवेहिं कुलपच्छित्ता गुरुगा कायव्वा इत्यर्थः । अदिण्णे वि गेण्हेज्जा । गणतेण्णे तवगुरुगा दट्ठव्वा काललहु । संघतेण्णे कालगुरु दट्ठव्वा तवलहुगा ॥३३७॥

अहवा चउरो दव्वं खेत्तं कालो भावो य एते वा असिवग्गहिता होऊण अदत्ते गेण्हेज्जा।

अहवा चउरो जहण्णमज्झिमउक्कोसोवही सेहो य।

अहवा चउरो साहम्मियसंतियं, सिद्धउत्तसंतियं, सावगसंतियं, अण्णतित्थीण य। एयाणि वा असिवग्गहिता होऊण अदत्ताणि गेण्हेज्जा।

अहवा चउरो असणं पाणं खातिमं सातिमं। एयाणि वा अदिण्णाणि गेण्हेज्जा। एयं सामण्णं पडिहारियस्स ॥३४३॥

इमा पत्तेयं विभासा भण्णति –

असिवगहित त्ति काउं, ण देंति दुक्खं ट्ठिता णिच्छोढुं।
अवि य ममत्तं, छिज्जति छेयगहितोवभुत्तेसुं ॥३४४॥

पुव्वं सिवे वट्टमाणेहि तणाति उवकरणं च पाडिहारियं गहितं तम्मिय काले अपुण्णे अंतरा असिवं जायं। तेण य असिवेण ते साहवो गहिता। अतो असिवग्गहिय त्ति काउं ण देंति तं पाडिहारियं गहितं, मा एते वि गिहत्था असिवेण घेप्पेज्जा इति। ते वि य गिहत्था तेसु पाडिहारिएसु तणफलगेसु कालपरिच्छिन्नासु वसेज्जा। सुदुक्खं ट्ठिया य णिच्छुढे त्ति ण णिच्छुब्भंति, अवि य तेसिं गिहत्थाणं तेसु तणादिसु पाडिहारिएसु ममत्तं छिज्जति, ममेदं ममेयमिति जो य ममीकारस्तं ममत्तं, तेसु तणादिसु छिज्जति फिट्टइ त्ति वुत्तं भवति। कम्हा ममत्तं छिज्जति ? भण्णति—छेदगगहितोवभुक्तत्वात्, असिवं च्छेदगं भण्णति, तेणगहिता छेदगगहिता तेहिं जाणि उवभुत्ताणि तणफलगादीणि तेसु ताण गिहत्थाण ममत्तं छिज्जति। स्वल्पश्चादत्तादानदोषेत्यर्थः।

अहवा – एसा गाहा एवं वक्खाणिज्जति –

साहू असिवग्रहिता इति कृत्वा ते गिहत्था तेसिं साहूण तणफलगसेज्जाती ण देंति। अतो असिवकारणत्वात् अदत्ता वि घेप्पंति। तेसु अदत्तेसु गहितेसु ठितेसु वा दुक्खं ट्ठिता य णिच्छुहण त्ति ण णिच्छुब्भंति। तेसु चेव अदत्तगहितेसु "अवि य" पच्छद्धं पूर्ववत् ॥३४४॥

"असंथरे त्ति अस्य व्याख्या –

साधम्मियत्थलीसुं, जाय अदत्ते भणावण गिहीसुं।
असती पगासगहणं, बलवतिदुट्ठेसु च्छण्णं पि ॥३४५॥

असिवगहिते वि सति असिवगहिया वा साहू असंथरंता असिवगहिता वि सउत्तिण्णा वा दुल्लहभत्ते देसे पत्ता असंथरंता "साहम्मिय" त्ति समाणधम्मा साहम्मिया, "थली" देवद्रोणी, "जाय" त्ति जाचयंति—आरहंत-पासत्थ-परिग्रहीय देवद्रोणीसु पुव्वं याचयंतीत्यर्थः। "अदेंते" त्ति जता ते पासत्था णेच्छंति दाउं तदा गिहत्थेहिं "भणाविज्जंति" सव्वसामण्णाए देवद्रोणीए किं ण देह ? "असति" त्ति तह वि अदेंताण, "पगासगहणं" पगासं प्रकटं स्वयमेव ग्रहणं क्रियते। अह ते पासत्था बलवगा राजकुलपुरचातुर्विधाश्रिता इत्यर्थः, दुट्ठेसु त्ति स्वयमेव वा दुष्टा आसुकारिणः, तदा तासु चेव साहम्मियथलीसु छण्णमप्रकाशं गृह्यतेत्यर्थः ॥३४५॥

साहम्मियत्थलासति, सिद्धगए सावगऽण्णतित्थीसु।
उक्कोस-मज्झिम-जहण्णगंमि जं अप्पदोसं तु ॥३४६॥

अह साहम्मियत्थलीण असती अभावो होज्जा, ताहे गिहत्थेसु घेत्तव्वं। तेसु वि पुव्वं सिद्धपुत्तेसु-सभार्यको अभार्यको वा। सो णियमा सुक्कंबरधरो खुरमुंडो ससिही असिही वा णियमा अडंडगो अपत्तगो य सिद्धपुत्तो भवति।

सिद्धपुत्तासती सावगेसु त्ति, सावगा ते गिहीयाणुव्वता अगिहीयाणुव्वता वा, पच्छा तेसु वि घेप्पति। असति सावगाणं अण्णतित्थीसु त्ति अण्णतित्थिया रत्तपडादी, ताण थलीसु घेप्पइ। सव्वत्थ पुण गेण्हंतो पुव्वं जहण्णं गिण्हइ, पच्छा मज्झिम, पच्छा उक्कोसं।

अहवा – उक्कोसे मज्झिमे जहण्णे वा जत्थेव अप्पतरो दोसो तं चेव गेण्हाति ॥३४६॥

एमेव गिहत्थेसु वि, भद्दगमादीसु पढमंतो गिण्हे।
अभियोगासति ताले, ओसोवण अंतधाणादी ॥३४७॥

एमेव त्ति जहा सिद्धपुत्त-सावगेसु अविदिण्ण गहियं एमेव मिच्छादिट्ठिगिहत्थेसु वि भद्दगमादीसु पढमतो गेण्हंति। अण्णतित्थिय-समीवातो पुव्वं अहाभद्दगेसु अदिण्णं घेत्तव्वं, पच्छा अण्णतित्थिएसु वि। एतेसु पुण सव्वेसु पगासं पच्छण्णं वा गेण्हंतस्स इमा जयणा—अभियोग त्ति अभियोगो वसीकरणं, तं पुण विज्जाचुण्णमंतादीहिं, तेण वसीकरेत्तुं गेण्हंति। असति त्ति वसीकरणस्स, ताहे तालुग्घाडणीए विज्जाए—तालगाणि विहाडेऊण, ऊसोवणिविज्जाए य ओसोवेउ गेण्हंति। जेणं जेणजणविज्जादिणा अद्दिस्सो भवति तं अंतद्धाणं भण्णति। "आदि" सद्दातो अणपायं जाणिऊण पगासं तेण्णमवि कज्जति। असिवे त्ति दारं गयं ॥३४७॥

एमेव य ओमंमि वि रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अगतोसहादिदव्वं कल्लाणग-हंसतेल्लादी ॥३४८॥

जहा असिवद्दारे अदिण्णपाडिहारियातिदारा भणिया, एवं ओम-रायदुट्ठ-भय-गेलण्णदारेसु वि अदिण्णपाडिहारिगादिदारा जहासंभवं उवउज्ज वक्तव्या। दव्वासति त्ति दारं अस्य व्याख्या 'अगदो" पच्छद्ध। कस्सति गिलाणस्स जेण दव्वेण तं गेलन्नं पउणति तस्स दव्वस्स "असती" अभावेत्यर्थः, तं पुण अगतोसहा-दिदव्वं "अगतं" नकुलाद्यादि, "औषध" एलाद्यचूर्णगादि, कल्लाणगं वा घृतं, "हंसतेल्लं" हंसो पक्खी भण्णति, सो फाडेऊण मुत्तपुरीसाणि णीहरिज्जंति, ताहे सो हंसो दव्वाण भरिज्जति, ताहे पुणरवि सो सीविज्जति, तेण तदवत्थेण तेल्लं पच्चति, तं हंसतेल्लं भण्णति। "आदि" सद्दातो सतपाग-सहस्सपागा य तेल्ला घेप्पति। एवमादियाण दव्वाण अभिओग्गादी पूर्वक्रमेण ग्रहणं कर्तव्यमिति ॥३४८॥

"वोच्छेये" त्ति अस्य व्याख्या –

पत्तं वा उच्छेदे, गिहिखुड्डगमादिगं तु वुग्गाहे।
णिद्धंम खुड्डमखुड्डगं वा जततु त्ति एमेव ॥३४९॥

पत्तं णाम सुत्तत्थदुभयस्स ग्रहणधारणाशक्तेत्यर्थः। उच्छेए त्ति उच्छेओ, सुत्तत्थाणं ववच्छेदो त्ति वुत्तं भवति। गिहासमे ट्ठिता गिहत्था। खुड्डगो सिसू बालो त्ति वुत्तं भवति "आदि" सद्दातो अबालो वि।

अहवा साहम्मियण्णधम्मियाण वा। "तु" सद्दो कारणावधारणे। विवरीयं गाहते वुग्गाहते—मा गिहवासे रम इति वुत्तं भवति। सिसुमितरं वा सूत्रार्थोभयच्छेदे योग्यमिच्छमानमपहरतीत्यर्थः। वोच्छेय त्ति गयं।

"असंविग्गे" त्ति दारं, अस्य व्याख्या -"णिद्धंम" पच्छद्धं। णिग्गतधम्मा णिद्धम्मा पासत्था इति, तेसिं संतियं खुड्डयं अखुड्डयं, एमेव जहा गिहत्थखुड्डगं तहा वुग्गाहे। केणावलंबणेण वुग्गाहे ति भण्णति "जयउ" त्ति संजमजोगेसु जयम्रो, घडउ उज्जमउ त्ति वुत्तं भवति। तेसिं पासत्थाणमुपरितो जहा विप्परिणमति तहा कुर्यादित्यर्थः, अवहरति वा ॥३४६॥

चोदगाह - जुत्तं सुत्तत्थोभयवोच्छेदे गिहसाहम्मियतरखुड्डगादि अवहरणं, जं पुण णिद्धंम खुड्डगेतरं वा तत्थ णणु फुडं तेण्णं भवति ?

आचार्याह -

तेसु तमणुण्णातं अणणुण्णातगहणे विसुद्धो तु ।
किं तेण्णं असंजमपंके खुत्तं तु कड्ढंते ॥३५०॥

तेसु त्ति पासत्थेसु, तमिति खुड्डगो सेहो वा संवज्जति, अणुण्णायं दत्तं गेण्हंति। पुव्वं पासत्थाणुण्णायं खुड्डगमितरं वा गेण्हंतीत्यर्थः। जति वि तेहिं पासत्थेहिं अणणुण्णायमदत्तेत्यर्थः, ग्रहणमुपादानं, विविहं सुद्धो विसुद्धो, सर्वप्रकारेणेत्यर्थः। तु सद्दो पूरणे।

अहवा चोदकाह "तेसु तमणुण्णायग्गहणं जुत्तं, अणणुण्णायग्गहणे विसुद्धो उ कहं ?

आचार्याह - अदत्ते किं तेण्णं पच्छद्धं, "क" कारो खेवे दट्ठव्वो, "जहा को राया जो ण रक्खति", "तेण्णं" अवहारो, असंजमो अणुवरती, "पंको" दव्वभावतो—दव्वओ चलणी, भावओ असंजम एव, अतो भण्णति, असंजम एव पंको, तंमि खुत्तं तु खुत्तो णिसण्णो, तु सद्दो तस्मादर्थे द्रष्टव्यः, कढणं आगरिसणं उद्धरणमित्यर्थः। तस्मात् असंजमपंकादागसंतस्स किं तेण्णं भवतीत्यर्थः ॥३५०॥

अपि च -

सुहसीलतेणगहिते, भवपल्लिं तेण जगडितमणाहे ।
जो कुणति कूवियत्तं, सो वण्णं कुणति तित्थस्स ॥३५१॥

"सुहं" अणाबाहं, "सीलं" रुची, "तेणगो" अवहारी, 'गहित." आत्मीकृतो। "भव:" संसारः, बहुप्राण्युपमर्दो यत्र सा 'पल्ली"। "तेण" तन्मुखः, "जगडितो" प्रेरितो लोगे पुण भण्णति "उवट्टितो", अण्णाहो असरणेत्यर्थः। सुहे सीलं सुहसीलं सुहसील एव तेण्णो सुहसीलतेण्णो, तेण गहितो सुहसीलतेणगहितो। भव एव पल्ली, भवपल्लिं नेण जगडियमणाहे णिज्जमाणे जीवे जो कुणति 'कूवियत्तं "ज" इति अणिदिट्ठो, "कुणति" करेति, "कूविया" कुढिया भण्णंति। जो एवं करेति सो वण्णं करेति "सो" इति स निर्देसे, प्रभावणा "वण्णो" भण्णति, तं करेति "तित्थस्स" तित्थं चाउवण्णो समणसंघो, दुवालसंगं वा गणिपिडगं ॥३५१॥ अदिण्णादाणस्स कप्पिया पडिसेवणागता। गतं अदिण्णादाणं ॥३२४-३५१॥

इदाणिंमेहुणं भणति -

तस्स दुविहा पडिसेवणा—दप्पिया कप्पिया य। तत्थ दप्पियं ताव भणामि -

मेहुण्णं पि य तिविधं दिव्वं माणुस्सयं तिरिच्छं च ।
दव्वे खेत्ते काले भावंमि य होंति कोहादी ॥३५२॥

---

१ मोप-व्यावर्तकः=चुराई हुई वस्तु की खोज करने वाला।

मेहुणं जुम्मं, तस्स भावो मेहुण्णं, "मिहु" वा रहस्सं, तम्मि उप्पण्णं मेहुणं, अवि सद्दो एवकारार्थे, च सद्दो पायपूरणे, मेहुण्णमवि च त्रिविधेत्यर्थः। तिविह त्ति तिविधभेदं भण्णति, "तिण्णि" त्ति संख्या तिण्णि भेदा तिविहं। के ते तिण्णि भेया? भण्णति—दिव्वं माणुस्सं तेरिच्छं च। एक्केक्कं पुण चउभेदं "दव्वे" पच्छद्धं। च सद्दो समुच्चये। होति भवति। "आदि" सद्दातो माणमायालोभा घेप्पंति ॥३५२॥

दव्वे त्ति अस्य व्याख्या –

रूवे रूवसहगते, दव्वे खेत्ते य जम्मि खेत्तंमि।
दुविधं छिण्णमछिण्णं, जहियं वा जच्चिरं कालं ॥३५३॥

अनाभरणा इत्थी रूवं भण्णति। रूवसहियं पुण तदेवाभरणसहियं।

अहवा अचेयणं इत्थीसरीरं रूवं भण्णति, तदेव सच्चेयणं रूवसहगतं भण्णति। दव्वे त्ति दव्वमेहुणे एतं वक्खाणं भण्णति।

खेत्ते य त्ति दारं गहितं। जंमि खेत्तंमि व्याख्या—जंमि खेत्तमि मेहुणं सेविज्जति वण्णिज्जति वा तं खेत्तमेहुणं।

कालेति अस्य व्याख्या। 'दुविधं" पच्छद्धं। कालओ जं मेहुणं तं दुविहं—छिण्णं अछिण्णं च। छिण्णं दिवसवेलाहिं वाराहिं वा, अच्छिण्णं अपरिमितं। जंमि वा काले मेहुण सेविज्जति, जावतितं वा काल मेहुणं सेविज्जति, जहियं वा वण्णिज्जति त कालमेहुणं भण्णति ॥३५३॥

रूवे रूवसहगए त्ति अस्य व्याख्या –

जीवरहिओ उ देहो, पडिमाओ भूसणेहिं वा विजुत्तं।
रूवमिह सहगतं पुण, जीवजुयं भूसणेहिं वा ॥३५४॥ (गतार्था)

[1]"भावम्मि य होइ कोहाइ" त्ति अस्य व्याख्या –

कोहादी मच्छरता, अभिमाण पदोसऽकिच्च पडिणीए।
तच्चणिगि अमणुस्से, रूय घण उवसग्ग कप्पट्ठी ॥३५५॥

कोहादिग्गहणाओ भावदारं सूचितं। मच्छर त्ति कोहेण मेहुणं सेवति। अभिमाणो माणो भण्णति, पदोसो त्ति माणेगट्ठितं, तेण पदोसेण, किच्चंति अकिच्चपडिसेवणं करेति; मायालोभा दट्ठव्वा।

अहवा किच्चं करणीयं, रागकिच्चमिति यावत्, एस माया घेप्पति। पडिणीयग्गहणातो लोभो घेप्पति, मोक्षप्रत्यनीकत्वात् प्रत्यनीकः, सेज्जायरधूअपच्चणीगोवलक्खणाओ वा पच्चणीगो लोभो भण्णति। तच्चणिगि रत्तपडा, सा कोवे उदाहरण भविस्सति। अमणुस्से त्ति णपुंसग, एयं माणे उदाहरणं भविस्सति। रूये त्ति रोगे, एयं मायाए उदाहरणं भविस्सति। घणे त्ति घणविगईओ, उवसग्गेति उवसग्ग एव कप्पट्ठी सेज्जायरधूआ, कविलचेल्लगो लोभा सेज्जातरकप्पट्ठीए उवसग्गं करोतीत्यर्थः ॥३५५॥

एसेवत्थो किंचि विसेसिओ भण्णति –

कोहाति समभिभूओ, जो तु अबंभं णिसेवति मणुस्सो।
चउ अण्णतरा मूलुप्पत्ती तु सव्वत्थ पुण लोभो ॥३५६॥

---

१ गा. ३५२।

"आदि" सद्दाओ माणमायालोभा समभिभूतो आर्त्त इत्यर्थः। "जो" अणिद्दिट्ठो। अबंभं मेहुणं। णिसेवति आचरतीत्यर्थः। मनोरपत्यं मनुष्यः, तस्य तदाख्यं भवतीत्यर्थः। चउ त्ति कोहादयो। तेसिं अण्णतराओ मूलुप्पत्तीओ आद्युत्पत्तिरित्यर्थः। तु शब्दोऽवधारणे। सव्वत्थ पुण लोभो को? उप्पण्णे मेहुणभावे लोभो भवति, एवं माणमायासु वि लोभो, पुण सट्ठाणे भवति चेव ॥३५६॥

"तच्चिणिग" त्ति अस्य व्याख्या –

सेहुब्भामगभिच्छुणि, अंतर वयभंगो वियडणा कोवे।
अट्टित्तोओभासमणिच्छे सएज्झि अपुमत्ति माणंमि ॥३५७॥

एगो सेहो उब्भामगं गतो, भिक्खायरियाए त्ति वुत्तं भवति। सो य गामंतरा अडवीए भिक्खुणी पासति। तस्स तं पासिऊण रोसो जाओ। एसा अरहंतपडिणीया इति किच्चा "वयं से भंजामि" त्ति मेहुणं सेवति। पच्छा गतुं गुरुसमीवं आलोएति—भगवं! रोसेण मे वयभंगणिमित्तं मेहुणं सेवितमिति।

"अमणुसे" त्ति अस्य व्याख्या – "अट्टिओ" पच्छद्धं। "अट्टिओ" पुणो पुणो, "ओभासति" याचयति, अणिच्छे अणभिलसते, सएज्झिया, समोसितिया, अपुमंति णपुंसगः। काइ साहुपडिस्सगसमीवे इत्थी सुरूवं भिक्खुं दट्ठूण अज्झोववण्णा सा, तं पुणो पुणो भणति "भगव! मम पडिसेवसु," सो णेच्छति। जाहे सुबहुं वारा भणितो णेच्छति ताव तीए सो साहू भण्णति—तुमं णपुंसगो धुवं, जेण मे रूवजोव्वणे वट्टमाणीं ण पडिसेवसि। तस्सेवं भणियस्स माणो जातो अहमेतीए अपुमं भणिआ, पडिसेवामि, तेण पडिसेविया। एवं माणतो मेहुणमिति ॥३५७॥

"रूव" त्ति अस्य व्याख्या –

विरहालंभे सूल, प्पतावणा एव सेवतो मायी।
सेज्जातरकप्पट्ठी, गोउल दधि अंतरा खुड्डो ॥३५८॥

विरहो विजनं, तस्स अलंभे, सूलं रोगविकारो, पयावणा अग्गीए, एव त्ति एवं, सेवति विसओवभोगं करेइ। कोइ साहू समोसीयाए इत्थीए साइज्जति, साहुस्स बहुसाहुसमुद्दायातो विरहो णत्थि, अतो तेण साहुणा अलियमेवं भण्णति "मम सूलं कज्जति, अहमेतीए गिहे गंतुं तावयामि"। आयरिएण भणियं—गच्छ। सो गतो, तेण पडिसेविता। एवं मायाए मेहुणं भवति।

"घणउवसग्गकप्पट्ठि" त्ति अस्य व्याख्या –

"सेज्जातर" पच्छद्धं। कंमि वि णिओए आयरिया बहुसिस्सपरिवारा वसंति। तंमि य गच्छे कविलो णाम खुड्डगो अत्थि। सो सेज्जायरधूयाए अज्झोववण्णो। सो तं पत्थयति। सा णेच्छति। अण्णया सा कप्पट्ठी दहिणिमित्तेण गोउलं गता। सो वि कविलगो तं चेव गोउलगं भिक्खायरियाए पट्ठितो। सा तेण खुड्डगेण गाम-गोउलाणंतरा दिट्ठा ॥३५८॥

उप्पात अणिच्छ प्पितु, परसु छेद जुण्ण-गणि-गिहे ततिओ।
आदि पुमं ततो अपुमं, इत्थीवेए य छिड्डंमि ॥३५९॥

सा तेणंतरो भारियाभावेणुप्पादिता। अणिच्छमाणीउ उप्पातितं रुहिरं. अणिच्छमाणीए योनिभेदेनेत्यर्थः। तीए रेणुगुंडियगत्ताए गंतूण पिउणो अक्खायं। सो परसुं कुहाडं गहाय निग्गतो। दिट्ठो यणेण, से वसणं पजणणं छिण्णं, ततो सो उन्निक्खंतो एगाए जुण्णगणियाए संगहिओ। तस्स तत्थ ततिओ

णपुंसगवेओ उविण्णो, तओ इत्थीवेदो । तम्मि य वसणपदेसे अहोट्ठो भगो जातो। तीए गणियाए इत्थीवेसेण सो दुविओ, संववहरितुमाढत्तो इति अस्य एकस्मिन् जन्मनि त्रयो वेदाः प्रतिपाद्यन्ते । ते अनेन च क्रमेण, आदौ पुमं, ततो अपुम, छिड्डे जाते इत्थीवेदे उदिण्णे तइयवेदेत्यर्थः । एवं तस्स कविलखुड्डगस्स सेज्जातरकण्णट्टीए लोभा मेहुणमि त्ति । एव माणुसगं भणितं ॥३५९॥

एवं कोहातीहिं दिव्वतिरिएसु वि दट्ठव्वा । एवमुक्तमिति त्रिधा भिद्यते । किं कारणं ? उच्यते, पुव्वभणियं तु कारणगाहा ।

इह विसेसोवलंभणिमित्तं भण्णति –

मेहुण्णं पि य तिविहं, दिव्वं माणुस्सयं तिरिच्छं च ।
पडिसेवण आरोवण, तिविहे दुविहे य जा भणिता ॥३६०॥

पुव्वद्धं कंठं । एवं दिव्वादियं जं भणियं एक्केक्कं तिविहं उक्कोसं, मज्झिमं, जहण्णंच । एते णव विकप्पा । दुविहे य त्ति पुणो एक्केक्को भेदो दुगभेदेण भिज्जति पडिमाजुय देहजुएणं ति वुत्तं भवति । एते अट्ठारस विकप्पा । जे भणिय त्ति एतेसिं अट्ठारसण्ह विकप्पाण एक्केके विकप्पे जा भणिता आरोवणा सा दट्ठव्वा । का य सा ? इमा, पडिसेवणा आरोपण त्ति पडिसेविए आरोवण पडिसेवणारोपणा, "पडिसेवणा पच्छित्तं" ति वुत्तं भवति, ठाणपायच्छित्तं च ॥३६०॥

इणमेव अत्थो किं चि विसेसा भण्णति –

दिव्वाइ तिगं उक्कोसगाइ एक्केकगं तु तं तिविधं ।
तिप्परिग्गहमेक्केक्कं, सममत्तऽममत्ततो दुविधं ॥३६१॥

दिव्वं माणुस्सयं तिरियं च एक्केक्कयं पुणो तिविहं—उक्कोस-मज्झिम-जहण्णयं च । पुणो एक्केक्कं तिपरिग्गहं तुडिय कोडुंबिय पायावच्चं च । पुणो एक्केक्कं दुविकप्पं-सममत्त अमत्तभेदेण । एते चेयणे अचेयणे च भेया । इमे पुण पायसो अचेयणे भवंति ॥३६१॥

पडिमाजुत देहजुयं, पडिमा सण्णिहित एतरा दुविधं ।
देहा तु दिव्ववज्झा, सचेतणमचेतणा होंति ॥३६२॥

पडिमाणं पडिमा, जुअं सह, प्रतिमयासेवनमित्यर्थः । जं पडिमा जुयं तं दुविहं—सण्णिहियपडिमा वा, असण्णिहियपडिमा वा । दिव्ववज्झ त्ति मणुयतिरियाण सचेयणा अचेयणा य भवति । दिव्वा पुण सचेयणा एव, अचेयणा ण भवंति । जम्हा पदीवजाला इव सहसा विद्धंसंति । एवं सप्पभेदं इहेवज्झयणे छट्ठुद्देसे भण्णिहिति । गया दप्पिया मेहुण पडिसेवणा ॥३६२॥

इयाणिं कप्पिया पडिसेवणा भण्णति –

एवं सूरिणा भणिते चोदगाह –

चिट्ठउ ता कप्पिया पडिसेवणा, दप्पकप्पियाणं ताव विसेसं भणाहि, कहं वा दप्पिया कप्पिया पडिसेवणा भण्णति ?

गुरुराह -

रागद्दोसाणुगता तु, दप्पिया कप्पिया तु तदभावा ।
आराधतो तु कप्पे, विराधतो होति दप्पेणं ॥३६३॥

पीतीलक्खणो रागो, अप्पीतीलक्खणो दोसो, अणुगता सहिया, णिक्कारणलक्खणो दप्पः, रागदोसाणुगया दप्पिया भवतीत्यर्थः । कारणपुव्वगो कप्पो, तदभावाद्रागदोसाभावात्, कारणे रागद्दोसाभावात् च कप्पिया भवतीत्यर्थः

शिष्यः पुनरपि पृच्छेत्— दर्प्पकल्पाभ्यां सेविते किं भवति ? ।

उच्यते, आराहओ पच्छद्धं, कप्पेण ज्ञानादीनामाराहको भवति, तेषां चेव दर्पात् विराधको भवति । विराधको विनाशकः ॥३६३॥

पुनरप्याह चोदक—जति रागदोसपच्चयाओ दप्पिया पडिसेवणा भवति, मेहुणे कप्पियाए अभावो पावति।

आयरियाह -

कामं सव्वपदेसु विउस्सग्गववातधम्मता जुत्ता ।
मोत्तुं मेहुण-[1]धम्मं, ण विणा सो रागदोसेहि ॥३६४॥

अहवा—संबंधं, आचार्य एव आह—मेहुणे कप्पियाए अभावो ।

चोदगाह – णणु सव्वपदाण अपवाद-धम्मता जुत्ता ? ।

आचार्याह – "कामं" सव्वगाहा । काम शब्दः इच्छार्थे अनुमतार्थे च, इह तु अनुमतार्थे द्रष्टव्यः । सव्वपयाणि मूलुत्तरपयाणि, अविसद्दो अवधारणे । तेसु उस्सग्गववात धम्मया जुत्ता । "उस्सग्गो" पडिसेहो, "अववातो" अणुण्णा "धम्मता" लक्खणता, जुज्जते घटतेत्यर्थः । सच्चं सव्वेसु मूलगुणउत्तरगुणपदेसु उस्सग्गअववायलक्खणं जुज्जति तहावि मोत्तु परित्यज्य मेहुणं जुम्मं, तस्स भावो मेहुणभावो अंबभभावेत्यर्थः । किमर्थं ? उच्यते, न विणा रागद्वेषाभ्यां सो मेहुणभावो भवतीत्यर्थः । रागद्वेषादिसंभवे सत्यपि संयमजीवितादि णिमित्तं आसेवमानः स्वल्पप्रायश्चित्त इत्याह ॥३६४॥

संजमजीवियहेउं, कुसलेणालंबणेण वण्णेणं ।
भयमाणे उ अकिच्चं, हाणी वड्ढी व पच्छित्ते ॥३६५॥

जीवितं दुविहं—संजमजीवितं असंजमजीवितं च । असंजमजीवियवुदासा संजमजीवियकारणाए त्ति वुत्तं भवति । चिरं कालं संजमजीविएण जीविस्सामीत्यर्थः । कुसलं पहाणं, विसोहिकारकमिति वुत्तं भवति । आलंविज्जति जं तमालंवणं, तं दुविहं—दव्वे वल्लिवियाणाइ, भावे णाणादि । अण्णमिति पुव्वभणितातो अण्णं एवमादीहिं कारणेहिं भयमाणे उ अकिच्चं "भय" सेवाते, "तु" सद्दो अवधारणे, "अकिच्चं" मेहुणं, तं कारणे सेवियं तो हाणी वा पच्छित्ते वुड्ढी वा पच्छित्ते भवतीति ॥३६५॥

पुनरप्याह चोदकः—जति कुसलालंवणसेवणे पच्छित्तं वुत्तं भवति, कम्हा मेहुणे कप्पिया इति भणिय ?

उच्यते —

गीयत्थो जतणाए, कडजोगी कारणंमि णिद्दोसो ।
एगेसिं गीत कडो, अरत्त ऽदुट्ठो उ जतणाए ॥३६६॥

---

१ "भावं" इत्यपि पाठः ।

गीतो अत्थो जेण गीतत्थो गृहीतार्थ. इत्यर्थः। जयणा—जं जं अप्पतरं अवराहट्ठाणं तं तं पडिसेवितं तो जयणा भण्णति । कडजोगी—जोगो किरिया सा कया जेण सो कडजोगी भण्णति । सा य तवे विसुद्धट्ठाणण्णेसणे वा । कारणं पुण णाणाति । एस पढमभगो। एत्थ य णिद्दोसो भवति । गीयत्थो जयणाए कडजोगी णिक्कारणे सद्दोसो एस बितिय भगो । एवं सोलसभगा कायव्वा । एत्थ पढमभंगेण पडिसेवियं तो कप्पिया भवतीत्यर्थः।

एगेसिं पुनराचार्याणां इह द्वात्रिंशद्भंगा भवन्ति । गीयत्थो कडजोगी अरत्तो अदुट्ठो जयणाए, एस पढमो भंगो । गीयत्थो कडजोगी अरतो अदुट्ठो अजयणाए, एस बितियभंगो । एव बत्तीसं भंगा कायव्वा । एत्थ वा पढमभगे पडिसेवयंतो कप्पिया भवति ॥३६६॥

चोदगाह – "जइ पढमभगे कप्पिया णणु तया णिद्दोस एव" ?

आचार्याह—

जइ सव्वसो अभावो, रागादीणं हवेज्ज णिद्दोसो ।
जतणाजुतेसु तेसु, अप्पतरं होति पच्छित्तं ॥३६७॥

यदीत्ययमभ्युपगमे । सव्वसो सर्वप्रकारेण, अभावो सर्वप्रकारानुपलब्धि, केसिं अभावो ? रागादीनां, "आदि" सद्दातो दोसो मोहो य घेप्पति । यद्येवं तो मेहुणे हवेज्ज णिद्दोसो अप्रायश्चित्तीत्यर्थः । ण पुण सव्वसो रागादीणां मेहुणे अभावो अपायच्छित्ती वा, णवरं—जयणाजुतेसु "जयणा" यत्नः, ताए "जुता" उपेता इत्यर्थः, "तेसु" त्ति जयणाकारिसु पुरिसेसु, तु सद्दो अवधारणे यस्मादर्थे वा, अप्पतरं होइ पच्छित्तं, तम्हा जयणाए वट्टियव्व ॥३६७॥

उवदेसो "भयमाणे उ अकिच्च" अस्य व्याख्या।

सामत्थ णिव अपुत्ते, सचिव मुणी धम्मलक्ख वेसणता ।
अणह विय तरुणु, रोधो एगेसिं पडिमदायणता ॥३६८॥

एगो राया अपुत्तो सचिवो मंती तेण समाणं सामत्थणं-संप्रधारणं, अपुत्तस्स मे रज्जं दाइएहिं पारब्भेज्ज, किं कायव्वं ? सचिवाह—जहा परखेत्ते अण्णेण बीयं वावियं खेत्तिणो आहव्व भवति, एवं तुह अंतेउरखेत्ते अण्णेण बीयं णिसट्ठं तुह चेव पुत्तो भवति"। पडिसुतं रण्णा, को पवेसेज्जति ? सचिवाह—पासंडिणो णिरुद्धिंदिया भवन्ति, ते पवेसिज्जंतु। एत्थ राया अणुमए कोइ मुणी धम्मलक्खेण पवेसेज्ज, "मुणी" साहू, भगव ! अंतेउरे धम्मकहक्खाणं कायव्वं, "लक्खं" छद्म, तेण धम्मकहाख्यानछद्मे न प्रवेशयंति । ते य जे तरुणा अणहबीया ते पवेसिता, अविणट्ठबीया इति वुत्तं भवति ।

अहवा "अणघा" णिरोगा अणुवहयपंचेंदियसरीरा, "बीया" इति सबीया । ते तरुणित्थियाहिं समाणं ओरोहो अंतेपुरं तत्थ बला भोगे भुंजाविज्जंति । एत्थ कोइ साहू णेच्छइ भोत्तुं,

उक्तं च –

"वरं प्रवेष्टुं ज्वलितं हुताशनं, नचापि भग्नं चिरसंचितं व्रतम् ।
वरं हि मृत्युः सुविशुद्धकर्मणो, न चापि शीलस्खलितस्य जीवितम् ॥"

तस्स एवं अणिच्छमाणस्स रायपुरिसेहिं सीस कट्टियं। एगेसिं पडिमादायणं त्ति— अण्णे पुण आयरिया भणंति – जहा ण सुट्ठु प्रगासे लिप्पयपडिमं काउं लक्खारसभरियाए सीसं च्छिन्नं ततो पच्छा साहुं भणंति जहा—एयस्स अणिच्छमाणस्स सीसं छिण्णं एवं जति णेच्छसि तुमं पि छिंदामो ॥३६८॥

एवं साभाविते कतके वा सिरच्छेदणे कए अभोगत्वेन व्यवसितानामिदमुच्यते –

सुट्ठुल्लसिते भीते, पच्चक्खाणे पडिच्छ गच्छ थेर विदू ।
मूलं छेदो छगुरु, चउगुरु लहु मासगुरुलहुओ ॥३६९॥

जस्स ताव सिरं छिण्णं स सुद्धो ।

"उल्लसिओ" एतेण वि ताव मिसेण इत्थीं पावामो हरिसितो ।

अवरो जति ण सेवामि तो मे सिरं छिज्जति अतो भीतो सेवति ।

अवरो वि किमेवं अणालोऽअपडिक्कंतो मरामि, सेवामि ताव पच्छालोइयपडिक्कंतो कतपच्चक्खाणो मराहीमि त्ति आलंवणं काउं सेवति ।

अवरो इमं आलंवणं काउं सेवति, जीवंतो पडिच्छयाणं वायणं दाहं ति सेवति ।

अवरो गच्छ सारिक्खस्सामी ति सेवति ।

अवरो चिंतयति मया विणा थेराणं ण कोति कितिकम्मं काहिति अहं जीवंतो थेराणं वेयावच्चं काहिति सेवति ।

अवरो विदू आयरिया, तेसिं वेयावच्चं जीवंतो करिस्सामि त्ति सेवति ।

एतेसिं उल्लसियं मूलं, भीए छेदो, पच्चक्खाणे छगुरुअं, पडिच्छे चउगुरुगा, गच्छे चउलहुगा, थेरे मासगुरु, विदू मासलहुय त्ति ॥३६९॥

"उल्लसित-भीत-पच्चक्खाणस्स" इमा वक्खाणगाहा –

णिरुवहतजोणित्थीणं, विउव्वणं हरिसमुल्लसण मूलं ।
भय रोमंचे छेदो, परिण्णं कालं ति छगुरुगा ॥३७०॥

पंचपंचासण्हं वरिसाणं उवरि उवहयजोणी इत्थिया भवति, आरेइअ अणुवहयजोणी गर्भं गृण्हातीत्यर्थः। विउव्विया मंडियपसाहिया दट्ठुं हरिसुद्धुसितरोमस्स मूलं भवति । भयसा पुण रोमंचे छेदो । परिण्णा पच्चक्खाणं । सेसं कंठं ॥३७०॥

"पडिच्छगादी" एगगाहाए वक्खाणेति –

मा सीएज्ज पडिच्छा, गच्छो फुट्टेज्ज थेर संपेच्छं ।
गुरूणं वेयावच्चं काहंति य सेवओ लहुओ ॥३७१॥गतार्था॥

"भयमाणे उ अकिच्चं" जहा वुड्ढी पच्छित्ते तहा भण्णति[1] –

लहुओ य होइ मासो, दुब्भिक्ख विसज्जणा य साहूणं ।
णेहाणुरायरत्तो, खुड्डो वि य णेच्छते गंतुं ॥३७२॥

---

१ गा० ३६५ ।

असिवाइकारणेसु उप्पण्णेसु वा उप्पज्जिस्सति वा णाउं जइ य सयं गंतुमसमत्थो आयरिओ जंघवलपरिक्खीणो साहू ण विसज्जेइ । तो आयरियस्स असमाचारीणिप्फण्णं मासलहुं पच्छित्तं । अविसज्जेंतस्स य आणादी दोसा । तत्थ य असंजमरत्ता एसणं पेल्लेज्जा, मरणं वा हवेज्जा भत्ताभावओ, जम्हा एते दोसा तम्हा गुरुणा विसज्जेयव्वो गच्छो । गुरुणा सव्वो गच्छो विसज्जितो । तत्थेगो खुड्डगो गुरूणं णेहाणुरागरत्तो णेच्छति गंतुं ॥३७२॥

असती गच्छविसज्जण, देसखंधाओ खुड्डओसरणं ।
णीसा भिक्ख विभाओ पवसितपति दाण सेवा य ॥३७३॥

असति भत्तपाणाओ सव्वो गच्छो गओ । खुड्डो वि अणिच्छओ पेसिओ । जता गच्छो देसखंधं गतो, देसंतेत्यर्थः, तदा सो खुड्डो णासिओ णियत्तो । गुरुणा भणिय—दुट्ठु ते कयं जं णियत्तो । जा तस्स आयरियस्स णिसाहरे[1] सो भिक्खा लब्भति तीए विभागं अहिततरं खुड्डस्स देति । सो खुड्डो चिंतयति—एस वि मे आयरिओ किलेसितो ततो गुरुमापुच्छिउं [2]वीसु परिहिंडिओ गतो । एगागीए पवसितपतीत्थियाए भण्णति "अहं ते भत्तं दलयामि जति मे पडिसेवसि" तेण पडिसुयं ॥३७३॥

"पवसियपति दाण सेवा य" अस्य व्याख्या –

भिक्खं पि य परिहायति, भोगेहिं णिमंतणा य साहुस्स ।
गिण्हति एगंतरियं, लहुगा गुरुगा य चउमासा ॥३७४॥
पडिसेवंतस्स तहिं, छम्मासा छेद होति मूलं च ।
अणवट्टप्पो पारंचिओ, आपुच्छा य तिविधं मि ॥३७५॥

सो खुड्डगो चिंतयति "जइ एयं पडिसेवियं णेच्छामि तो मरामि, अह सेवामि तो जीवंतो पच्छित्तं चरिहामि, सुत्तत्थाणि य घिच्छं, दीहं च कालं सजमं करिस्सामि" । एवं चिंतिऊण जयणं करेति । एगंतरिय भत्तं गेण्हति पडिसेवति य, पढम दिवसे गेण्हतस्सेवतस्स चउलहुगं, बितियदिवसे अभत्तट्ठं करेति, ततियदिवसे गेण्हतस्सेवंतस्स चउगुरुगं, एवं चोद्दसमे दिवसे पारंचियं । अह णिरंतरं पडिसेवति ततो बितियदिणे चेव मूलं भवति । एसा वुड्ढी भणिता ॥३७४॥३७५॥

पुच्छा य तिविहंमि त्ति सीसो पुच्छति—दिव्व-माणुस-तिरिच्छेसु कहं मेहुणाभिलासो उप्पज्जति ? ।

आचार्याह –

वसहीए दोसेणं, दट्ठुं सरिउं व पुव्वभुत्ताइं ।
तेगिच्छा सद्दमाती, असज्जणा तीसु वि जतणा ॥३७६॥

वसही सेज्जा, तीसे दोसेण मेहुणअभिलासो उप्पज्जति स्त्र्यादिसंसक्तेत्यर्थः ।

अहवा दिव्वादित्थिं दट्ठुं, पुव्वं गिहत्थकाले जाणि इत्थियाहिं समं भुत्ताणि वा हसियाणि वा ललियाणि वा ताणि य सरिऊण मेहुणभावो भवति । एवं उप्पण्णे किं कायव्वं ? भण्णति—तिगिच्छा कायव्वा, सा तिगिच्छा णिव्वीयाइ त्ति, तं अइक्कंतस्स सद्दमाई जत्थित्थीसद्दं सुणेत्ति रहस्ससद्दं वा, "आदि" ग्गहणाओ आलिंगनोवगूहनचुंबनादयः, तत्रासौ स्थविरसहितो स्थाप्यते, यद्येवं स्यादुपशमः । असंजण त्ति असंगो

१ निश्राग्रहे । २ पृथग् ।

अगेहीत्यर्थः, ण ताए अच्चियजयणाए गेही कायव्वा इति । एवं तिसु दिव्वाइसु जयणा दट्ठव्वा । गता मेहुणस्स कप्पिया पडिसेवणा ॥३७६॥ गयं मेहुणं ॥३५२-३६७॥

इदाणिं परिग्गहो भण्णति –

तस्स दुविहा पडिसेवणा – दप्पिया कप्पिया य । तत्थ दप्पियं ताव भणाति –

दुविधो परिग्गहो पुण, लोइय-लोउत्तरो समासेण ।
दव्वे खेत्ते काले भावंमि य होति कोधादी ॥३७७॥

पुण सद्दो अवधारणे पादपूरणे वा । एक्केक्को पुण दव्वादि दट्ठव्वो । सेसं कंठं ॥३७७॥

दव्व-खेत्त-कालाणं इमा वक्खा –

सच्चित्तादी दव्वे, खेत्तंमि गिहादि जच्चिरं कालं ।
भावे तु क्रोधमादी, कोहे सव्वस्स हरणादी ॥३७८॥

सच्चित्तं दव्वं दुपयं चउपयं अपयं वा, "आदि" ग्गहणातो अच्चित्तमीसे, अचित्तं हिरण्यादि, मीसं णिज्जोगसहियं आसादि । एताणि जो परिगेण्हति मुच्छित्तो स दव्वपरिग्गहो भण्णति । गिहाणि खाओसितोभयकेउमादियाणि खेत्ताणि परिगेण्हंतस्स खेत्तपरिग्गहो भवति । जमि वा खेत्ते वण्णिज्जति स खेत्तपरिग्गहो भवति । एते चेव दव्वखेत्तपरिग्गहा जच्चिरं कालं परिगिण्हाति जंमि वा वणिज्जंति काले स कालपरिग्गहो भवति । भावंमि य होति कोहाति त्ति अस्य व्याख्या "भावे उ" पच्छद्धं । भावे उ परिग्गह, "तु" शब्दो परिग्गहवाचकः, कोहाती "आदि" सद्दातो माणमायालोभा घेप्पंति । तत्थ कोहपरिग्गहव्याख्या— कोहे सव्वस्स हरणादी । कोहेण य रायादी कस्सइ रुट्ठो सव्वस्स हरिउं अप्पणो पडिग्गहे करेति, एस कोहेण भावपरिग्गहो । "आदि" सद्दातो डंडेति, अवकारिणो वा अवहरेंति कोहेण ॥३७८॥

इदाणिं माणे –

दोगच्च वइतो माणे, धणिमं पूइज्जति त्ति अज्जिणति ।
माया णिधाणमाती, सुवण्ण-दुवण्णकरणं वा ॥३७९॥

दोगच्चं दारिद्दं, सविसतातो गतो वतिओ भण्णति, माणे त्ति एवं माणेण उवज्जिणइ, भणियं च "दोगच्चेण वइतो माणेण व णिग्गतो घरा सो उ जइ वि ण णंदति पुरिसो मुक्को परिभूयवासाओ ।"

अहवा धणिमं धणमंतो लोगो पूइज्जिति त्ति अहं पि पूइज्जिस्सामि त्ति, दरिद्रं न कश्चित्पूजयतीत्येवं माणओ परिग्गहं उवज्जिंणति । माया णिहाणमादी मायाए णिहाणयं णिहणंति, "आदि" ग्रहणाद छद्मेण व्यवहरति ।

अहवा कण्णे हत्थे वा आभरणं किंचि, 'मा मे कोति हरिस्सइ" त्ति, सुवण्णं दुवण्णं करेंति । एवं मायाए भावपरिग्गहो भवति ॥३७९॥

[1]"सव्वाणुपातित्ता लोभस्स" अतो लोभो णाभिहितो। जो वि एस कोहादि परिग्गहो भणितो एसो वि लोभमंतरेण ण भवतीति उक्त एव लोभः, जम्हा अतीव मुच्छितो उवज्जिणति, सो वि लोभे भावपरिग्गहो भवति त्ति भणितो लोइयपरिग्गहो ।

---

१ गा० ३६५ ।

इदाणिं लोउत्तरिओ भण्णति । सो समासओ दुविहो –

सुहुमो य बादरो य, दुविहो लोउत्तरो समासेणं ।
कागादि साण गोणे, कप्पट्ठग रक्खण ममत्ते ॥३८०॥

ईसि ममत्तभावो सुहुमो परिग्गहो भण्णति । तिव्वो य ममत्तभावो बायरो परिग्गहो भण्णति । एसो दुविहो वि, पुणो वि चउहा वित्थारिज्जति— दव्व-खेत्त-काल-भावे । तत्थ दव्वे "कागादि" पच्छद्धं । अप्पणो पाणगादिसु काकं अवरज्झंतं णिवारेति । "आदि" ग्गहणातो साण-सिगालादि, साणं वा डसमाणं, गोणं वा वसहिमादिसु अवरज्झत, सेज्जायरादियाण वा कप्पट्ठगं अण्णावदेसेण रक्खइ, सयणादिसु वा ममत्तगं करेइ ॥३८०॥

सेहादी पडिकुट्ठो, सच्चित्ते अणेसणादि अच्चित्ते ।
ओरालिए हिरण्णे, छक्काय परिग्गहे जं च ॥३८१॥

सेहा वा पडिकुट्ठा पव्वावेंतस्स परिग्गहो भवति । अण्णाभव्वं वा पव्वावणिज्जं सचित्तं पव्वावेंतस्स परिग्गहो भवति । "आदि" भेदवाचकः । अणेसणीयं वा अचित्तं भत्तादिगेण्हंतस्स परिग्गहो भवइ । "आदि" सद्दो भेदवाचकः । आदिसद्दातो वा वत्थ-पाद-सेज्जा घेप्पंति । अचित्तग्गहणातो वा अतिरित्तोवहिग्रहणं करोति । स चानुपकारित्वात् परिग्रहो भवतीत्यर्थ. । घडियरूवं द्रविणं ओरालियं भण्णति, अघडियरूवं पुण हिरण्णं भण्णति, एताणि गेण्हंतस्स परिग्गहो भवति । छक्कायसच्चित्ते जीवनिकाए गेण्हंतस्स परिग्गहो भवति । जं च त्ति जं एतेसु कागादिसु पायच्छित्तं तं च दट्ठव्वमिति ॥३८१॥

एतेसिं कागाइयाणिमा चिरंतणा पायच्छित्तगाहा –

पंचादी लहुगुरुगा, एसणमादीसु जेसु ठाणेसु ।
गुरुगा हिरण्णमादी, छक्कायविराधणे जं च ॥३८२॥

पंच त्ति पणगं, तं आइ काउं एसणादिसु जत्थ जत्थ संभवति जं पायच्छित्तं तं दायव्वमिति । लहुगा गुरुगा य त्ति पणगा एव संवज्झंति ।

अहवा पणगमादि काउं जाव चउलहु चउगुरुगा जं जेसु ठाणेसु पायच्छित्तं संभवति तं दायव्वमिति । "आदि" सद्दातो उप्पायण उग्गमा घेप्पंति । "हिरण्णं" गिण्हंतस्स चउगुरुगा । "आदि" सद्दातो ओरालिए वि चउगुरुगा । छक्कायविराहणे "जं" पायच्छित्तं दट्ठव्वं तं चिमं "[1]छक्काय चउसु लहुगा" ऽऽकारग गाहा ॥३८२॥

इणमेवार्थं भाष्यकारो व्याख्यानयति –

गिहिणोऽवरज्झमाणे, सुण-मज्जारादि अप्पणो वा वि ।
वारेऊण न कप्पति, जिणाण थेराण तु गिहीणं ॥३८३॥

गिहिणो गिहत्थस्स अवरज्झंति अवराहं करेंति, साणो मज्जारो वा. "आदि" सद्दातो गोणगादओ घेप्पंति, अप्पणो वा एते भत्तादिसु अवरज्झति, ते "अवरज्झमाणे" वि वारेऊण ण कप्पंति, जिणाण जिणकप्पियाण, थेरा गच्छवासिणो, तेसु गिहत्थाण अवरज्झमाणा वारेऊण ण कप्पंति, अप्पणो य वारेऊण कप्पंतीत्यर्थः ॥३८३॥

---

१ गा. ११७ ।

एतेसु चेव "कागादिसु पच्छित्तं भण्णति –

काकणिवारणे लहुओ, जाव ममत्तं तु लहुअ सेसेसु ।
मज्झसवासादि त्ति व, तेण लहू रागिणो गुरुगा ॥३८४॥

कागं णिवारेति मासलहुं, सेसेसु त्ति साण-गोण चउलहुगा, सेज्जातरममत्तेण कप्पट्ठगं रक्खति चउलहुगं चेव । मज्झसवासा एगग्गामणिवासिनः स्वजना वा तेण सण्णादिगादिसु ममत्तेण रक्खति तहावि चउलहुं । अह कप्पट्ठगं रागेण रक्खति तो चउगुरुगं ॥३८४॥

"सेहादिपडिकुट्ठे" त्ति अस्य व्याख्या –

भेदअडयालमेहे, दुरूवहीणा तु ते भवे पिंडे ।
घडितेतरमोरालं, वत्थादिगतं ण उ गणेंति ॥३८५॥

अडयालीसं भेदा सेहाण अपव्वावणिज्जा, ते य इमा ।

गाहा – "अट्ठारस पुरिसेसुं, वीसं इत्थीसु, दस णपुंसेसुं ।
पव्वावणा अणरिहा, भणिया माणेण एते उ ॥"

एतेसिं तु सरूवं पच्छित्तं च जहा अणलसुत्ते तहा दट्ठव्वमिति । इह पुण सामण्णओ चउगुरु पच्छित्तं । अणाभव्वं सच्चित्तं गेण्हंतस्स चउगुरुगा चेव ।

"अणेसणे" इति अस्य व्याख्या—दुरूवहीणाओ ते भवे पिंडे पडिकुट्ठभेदा ये अधिकृता ते दुरूवहीणा भेदा पिंडे भवन्तीत्यर्थ. । अडयालीसभेदमज्झातो दो रूवा सोहिता जाता छायालीसं । कहं पुण छायालीसं भवंति ?

गाहा – "सोलसमुग्गमदोसा, सोलसमुप्पायणाए दोसा उ ।
दस एसणाए दोसा, संजोयणमादि पंचेव ॥"

संजोयणा, अइप्पमाणं, इंगाले, धूम, णिक्कारणे त एते सव्वे समुदिता सत्तयालीसं भवति ।

एत्थ मीसजायं अज्झोयर-सरिसं काऊण केडिज्जति अतो छायालीसं ।

अण्णे पुण आयरिया—सव्वाणुप्पाती संका इति काउं संकं अवणयंति ।

अण्णे पुण—संजोयणादि णिक्कारणवज्जिया छायालीसं करेंति । एतेसिं सरूवं जहा "पिंडणिज्जुतीए", पच्छित्तं जहा[1] "कप्पपेढे" तहा इहं पि दट्ठव्वमिति । अचित्ते जहण्ण-मज्झिम-उक्कोसेसु तण्णिप्फण्णं दट्ठव्वमिति ।

"ओरालिए हिरण्णे" अस्य व्याख्या – घडितेतरमोरालियं घडियं आभरणादी ओरालं भण्णति, "इतरं" पुण अघडियं तं हिरण्णं भण्णति । एत्थ जहा कमणिद्देसे हिरण्णसद्दो लुत्तो दट्ठव्वो ।

अहवा – घडियं, "इतरं" अघडियं, सव्वं सामण्णेण ओरालियं भण्णति । वत्थं वासावप्पादि "आदि" सद्दातो पात्रादि धम्मोवकरणं सव्वं घेप्पति । गतशब्दो धर्मोपकरणभेदावधारणे द्रष्टव्यः ।

अहवा – गगारो आदि सद्दे पविट्ठो "वत्थातिगं," तगारेण वत्थादिगाण णिद्देसो, णकारो प्रतिषेधे, तु सद्दो अपरिग्गहावधारणे त्ति । ण गणेंति णमण्णंती ति वुत्तं भवति । वत्थातीतं धर्मोपकरणं ण परिग्रहं मन्यंतेत्यर्थः । तान्येव महद्धनानि मुच्छाए वा परिभुजंतस्स परिग्गहो भवति । चउगुरुगं च से पच्छित्तं भवति । दव्वपरिग्गहो गतो ॥३८५॥

---

१ बृह० पीठिका गाथा ५३३ से ५४० तक ।

इदाणीं खेत्तपरिग्गहो भण्णति –

ओगासे संथारो, उवस्सय-कुल-गाम-णगर-देस-रज्जे य ।
चत्तारि छच्च लहु, गुरु छेदो मूलं तह दुगं च ॥३८६॥

ओगासो पडिस्सगस्सेगदेसो, तम्मि पवातादिके रमणीये ममत्तं करेति । संथारगो संथारभूमी, तीए ममत्तं करेइ । उवस्सओ वसही, तीए वा ममत्तं करेति । एवं कुले कुल कुटुंवं, गाम-णगरा पसिद्धा, देसो पुण जहा कच्छदेसो सिंधुदेसो सुरट्ठादि, राणयभोत्ती रज्जं भण्णति । सा पुण भोत्ती एगविसओ अणेगविसओ वा होज्ज । [1]एतेसोगासादिसु पच्छित्तं जहासंखेण "चत्तारि छच्च" पच्छद्धं कठं । खेत्त परिग्गहो गतो ॥३८६॥

इदाणीं कालपरिग्गहो भण्णति –

कालादीते काले, कालविवच्चास कालतो अकाले ।
लहुओ लहुया गुरुगा, सुद्धपदे सेवती जं चण्णं ॥३८७॥

कालातीए त्ति कालतों अतीतं, उडुबद्धे मासातिरित्तं वसंतस्स, वासासु य अतिरित्त वसंतस्स, काले त्ति कालपरिग्गहो भवति, णितिय वासदोसो य भवति, कालविवच्चासे ति कालस्स विवच्चासो तं करेति, कहं ? भण्णति, कालओ अकाले ति "कालओ" त्ति ण उडुबद्धे काले विहरति, "अकाले" त्ति वासाकाले विहरइ ।

अहवा दिवा ण विहरति, राओ विहरति, एस विपर्यास, इदं पायश्चित्तं उडुबद्धे अतिरित्ते मासलहुगो, वासातिरित्ति चउलहुगा, कालविवच्चासे चउगुरुगा, एते पच्छित्ता सुद्धपदे भवंति, "सुद्धपद" णाम जइवि अवराहं ण पत्तो तहा वि पच्छित्तं भवतीत्यर्थ. । सेवते जं च ण्णं ति "ज चण्ण" संजम-पवयण-आयविराहणं सेवति, तंणिप्फण्णं च पायच्छित्त दट्ठव्वमिति । कालपरिग्गहो गतो ॥३८७॥

इदाणिं भावपरिग्गहो भण्णति –

भावंमि रागदोसा, उवधीमादी ममत्त णिक्खित्ते ।
पासत्थ ममत्त परिग्गहे य, लहुगा गुरुगा य जे जत्थ ॥३८८॥

भावमि भावपरिग्गहो रागेण दोसेण य भवति, उवही ओहिओ "आदि" सद्दातो उवग्गहिओ घेप्पति, तंमि दुविहे वि ममत्तं करेति । णिक्खित्त णाम गरलिगावद्धं स्थापयति. चोरभएण णिक्खिवति गोपयतीत्यर्थः । पासत्थादिसु वा ममत्त करेति, ममीकारमात्र, राएण वा परिगेण्हति आत्मपरिग्गहे स्थापयतीत्यर्थः । च सद्दातो अहाच्छदेसु इत्थीसु य ममत्त परिग्गहं वा करेति । लहुगा गुरुगा, जे जत्थ त्ति रागादयो संवज्झंति, ते तत्र दातव्या । पासत्थादिसु ममत्ते चउलहुगा, अह रागं करेति तो चउगुरुगा, दोसेण पासत्थादिसु चउलहुगा चेव । उवहिणिनिखत्तेसु चउलहुगा, सच्छदइत्थीसु चउलहु चउगुरुगा ॥३८८॥

पासत्थादि अहाच्छंदइत्थीसु इमा ममत्त व्याख्या –

मम सीस कुलिच्च-गणिच्चओ व मम भाति भाइणिज्जोत्ति ।
एमेव ममत्तकारंते, पच्छित्ते मग्गणा होति ॥३८६॥

---

[1] एतेषु अवकाशादिषु ।

तेसु पासत्थादिसु एवं ममत्तं करेति । सेसं कंठं ॥३८९॥

इमा भाष्यकर्त्तरिका प्रायश्चित्त गाहा –

उवधिममत्ते लहुगा, तेणभया णिक्खवंति ते चेव ।
ओसण्णगिही लहुगा, सच्छंदित्थीसु चउगुरूगा ॥३९०॥

ते चेव त्ति चउलहुगा, ओसण्ण गिहीण य ममत्ते चउलहुगा चेव, सेसं गतार्थं ।
गतो भावपरिग्गहो । गता परिग्गहस्स दप्पिया पडिसेवणा ॥३९०॥

इदाणिं कप्पिया भण्णति –

अणभोगे[1] गेलण्णे[2] अद्धाणे[3] दुल्लभ[4]ऽद्भजाते[5] य ।
सेहे[1] गिलाणमादी[2] मज्जाया[3] ठावणु[4]ड्डाहो[5] ॥३९१॥
अणभोगे[1] गेलण्णे[2] अद्धाणे[3] दुल्लभु[4]त्तिम[5]ट्ठोमे[6] ।
सेहे[1] गिलाणमादी[2] पडिक्कमे[3] विज्ज[4]-दुट्ठे[5] य ॥३९२॥

एयाओ दोण्णि दारगाहाओ । एत्थ पढमदारगाहा-पुव्वद्धेण दव्वदाराववातो गहितो, पच्छद्धेण खेत्ता-ववाओ गहिओ । वितियदारगाहा-पुव्वद्धेण कालाववातो गहितो, पच्छद्धेण भावाववातो गहितो ॥३९१-३९२॥

"अणाभोगे" त्ति अस्य व्याख्या –

सव्वपदाणाभोगा, गेलण्णोसधपदावणे वारे ।
काकादि अहिपडंते, दव्व ममत्तं च वालादी ॥३९३॥

सव्वे पदा सव्वपदा, के ते सव्वपदा? "कागादि[1] साण-गोणा छक्कायपरिग्गहावसाणा, एते सव्वपदा । एते जहा पडिसिद्धा तहा अणाभोगेण कुर्यादित्यर्थः । अणाभोगे त्ति गतं ।

"गिलाणे" त्ति अस्य व्याख्या— गेलण्णोसह गिलाणस्स ओसहाणि उण्हे कताणि, तत्थ कागे अहिपडंते णिवारेति । "आदि" सद्दातो साण-गोणा णिवारेति । एवं गिलाणकारणेण णिवारेंतो सुद्धो । गिलाणकारणेण वा कप्पट्ठगरक्खणं ममत्तं वा कुज्जा, जओ भण्णति—दव्वममत्तं च वालादि त्ति "दव्वमि" ति दव्वदारज्ञापनार्थं, दव्वं वा लभिस्सामि त्ति ममत्तरक्खणं करेति, "ममत्तं" अण्णतरदव्वणिमित्तं वाले वा सुही मायापियरो से गिलाणस्स पडितप्पंति, "वाले" त्ति वालस्स रक्खणं कुज्जा गिलाणपडितप्पणत्थं, 'आदि" सद्दातो अवाले वि ताव रक्खणं कुज्जा गिलाणट्ठायमिति गेलण्णट्ठा वा ॥३९३॥

अडयालसेहा पडिकुट्ठा पव्वावेज्जा, जतो भण्णति –

अतरंत परियराण व, पडिकुट्ठा अधव विज्जस्स ।
तेसट्ठायमणेसिं, विज्ज-हिरण्णं विसे कणगं ॥३९४॥

---

१ गा. ३८०-८१. ।

अतरंतो गिलाणो, पडियरगा गिलाणवावारवाहगा, वगारो समुच्चये, पडिकुट्ठा णिवारिता अपव्वावणिज्ज त्ति वुत्तं भवति—तप्पेंति त्ति वावारवहणत्थे वट्टिसंतीत्यर्थः, गिलाणस्स वा पडिचरगाण वा वेयावच्चं करिष्यंतीत्यतः प्रव्राजयति ।

अहवा – वेज्जस्स करिष्यंती ति ततो वा प्रव्राजयति । तेसिं गिलाणपडियरगविज्जाणट्ठाय अणेसणं पि करेज्जा । गिलाणमंगीकृत्य वेज्जट्ठता य हिरण्णं पि गेण्हेज्जा । ओरालस्यावबादः, विसे कणगं ति विषग्रस्तस्य सुवर्णं कनक तं घेत्तुं घसिऊण विसणिग्घायणट्ठा तस्स पाणं दिज्जति, अतो गिलाणट्ठा ओरालियग्रहणं भवेज्ज ॥३९४॥

गिलाणट्ठा "छक्कायपरिग्गहे" त्ति अस्यापवाद –

कायाण वि उवओगो, गिलाणकज्जे व वेज्जकज्जे वा ।
एमेव य अद्धाणे सेज्जातरभत्तदाइसु वा ॥३९५॥

काया पुढवादी छ तेसिं पि उवओगो उवभोगो भवेज्ज, गिलाणकज्जे व गिलाणस्सेव अप्पणोवभोगा य लवणादि, वेज्जस्स वा उवभोगाय, तदपि ग्लाननिमित्तं । एवं गिलाणकारणेण कागादओ सव्वे अववतिता । गिलाणे त्ति गतं ।

इदाणिं "अद्धाणे" ति अस्य व्याख्या—"एमेव य" पच्छद्धं "एव" मवधारणे, जहा गिलाणट्ठा कागादिया दारा वुत्ता तहेव अद्धाणेवीत्यर्थः । अद्धाणपडिवण्णाण जो सेज्जातरो जो वा दाणाइसड्ढो भत्तं देति । "व" कारो समुच्चये, एतेसिं किंचि वि सागारियं आयवे होज्जे, तत्थ काग-गोण-साणा अहिवडंता णिवारेज्जा, पीतिं से उप्पज्जउ सुट्ठुतरं पडितप्पिसंतीति काउं कप्पट्ठग पि रक्खेज्जा ममत्तं वा करेज्जा ॥३९५॥

ओरालिए-हिरण्णे-सेहाति-पडिकुट्ठा-एसण-छक्काया" एग गाहाए वक्खाणेति –

दुक्खं कप्पो वोढुं, तेण हिरण्णं कताकतं गेण्हे ।
पडिकुट्ठा वि य तप्पे, एसण काया असंथरणे ॥३९६॥

दीहद्धाणपडिवण्णेहिं दुक्खं अद्धाणकप्पो वुब्भति, तेण कारणेण, हिरण्णं द्रविणं, कताकतं घडियरूवं अघडियरुवं वा अद्धाणे घेप्पति । अद्धाणपडिवण्णाण चेव पडिकुट्ठसेहा भत्तपाणविस्सामणोवकरणवहणादीहिं तप्पिस्सती ति काउ दिक्खेज्जा । अद्धाणे वा असंथरंता एसण पि पेल्लेज्जा—अणेसणीय गेण्हंतीत्यर्थः । अद्धाणे वा असंथरणे कायाण वि उवओग करेज्जा प्रलवादेरित्यर्थः । अद्धाणे त्ति गयं ॥३९६॥

इदाणिं "दुल्लभे" त्ति दारं –

दुल्लभदव्वं दाहिति, तेण णिवारे ममत्तमादि वा ।
पडिकुट्ठेसणघातं, ओराल कओ व काया वा ॥३९७॥

दुक्खं लभति जं तं दुल्लभं, तं च सयपाक-सहस्सपागादियं दव्व तं दाहिति त्ति तेण कारणेण काग-सुणगादी णिवारेति ममत्तं वा करेति, "आदि" सद्दातो कप्पट्ठगादि रक्खति । पडिकुट्ठे वा सेहे पव्वावेति, ते तं दुल्लभ दव्वं लभिउं समत्था भवंति ।

अहवा—कोपि गिही तेरासियपुत्तेण लब्भमाणो भणाति—जइ मम पुत्तं तेरासिय पव्वासेसि तो जं इमं दुल्लभं दव्वं तुमं अण्णेससि एयं चेव पयच्छामि । एवं दुल्लभदव्वट्ठताए पडिकुट्ठे पव्वावेजा । एसणं पि

पेलेज्जा, अह उग्गमउप्पायणेसणादोसेहि जुत्तं दुल्लभं दव्वं गेण्हंतीत्यर्थः । दुल्लभदव्वट्ठता वा ओरालहिरण्णे गेण्हेज्जा, ताणि ओरालहिरण्णाणि घेत्तूण दुल्लभदव्वं किणिज्जा । काया व त्ति दुल्लभदव्वट्ठया वा सचित्त काया गेण्हेज्जा, कहं ? पवालादिणा सचित्तपुढविक्काएण तं दुल्लभदव्वं किणिज्जा । दुल्लभदव्वं ति गतं ॥३९७॥

इदाणिं अत्थजाए त्ति दारं भणति –

एमेव अट्ठजातं, दाहिंतो वारणा ममत्तं वा ।
पडिकुट्ठव्व तदट्ठा, काया पुण जातरूवादी ॥३९८॥

एवावहारणे, जहा दुल्लभदव्वे एवं अट्ठजाए वि दट्ठव्वं । "जात" शब्दो भेदवाचक. अर्थभेदेत्यर्थः । एते सेज्जातराति अट्ठजायं दाहिंतीति तेण तेसिं काग-गोण-साणे अवरुज्झते णिवारेज्जा, कप्पट्ठगं वा रक्खेज्जा, ममत्तं वा करेज्जा, चकारो समुच्चये, पडिकुट्ठं वा सेहं पव्वावेज्ज । तदट्ठाय दव्वट्ठायेति वुत्तं भवति, सो पडिकुट्ठसेहो पव्वावितो दव्वजायं उप्पादयिष्यतीत्यर्थः । अट्ठजायंपि उप्पादेंतो एसणं पि पेल्लेज्जा, अहाभद्दग-कुलेसु वा अणेसणीयं पि भिक्खं गिण्हिज्जा, मा हु रुट्ठो ण दाहिति अट्ठजायं, अट्ठजायणिमित्तेण वा काए गेण्हेज्जा, कहं ? उच्यते, धातुपासाणमट्टियादि गहेऊण जातरूवं सुवण्णं, तं उप्पाएज्जा । पुण सद्दो विसेसणे दट्ठव्वो, "आदि" सद्दातो रुप्प-तंब-सीसग-तउगादी धाउवायप्पओगा उप्पायतीत्यर्थः ।

अहवा "जायरूवं"—जं च प्रवालगवत् जातं तं जातरूवं भणति । दव्वपरिग्गहाववातो गतो ॥३९८॥

इदाणिं खेत्तोववातो भणति –

वुत्तं दव्वावातं, अधुणा खेत्तावायततो वोच्छं ।
सेहे[1] गिलाणमादी, मज्झाता ठावणुड्डाहे ॥३९९॥ (नास्ति चूर्णिः)

सेहेति अस्य व्याख्या –

ओवासादिसु सेहो, ममत्त पडिसेहणं व कुज्जाहि ।
एमेव गिलाणे वी, णेह ममं तत्थ पउणिस्सं ॥४००॥

उवासो आदि जेसिं ताणि उवासादीणि, ताणि संथार-उवस्सय-कुल-गाम-णगर-देस-रज्जं च पदेसु सेहो अयाणमाणो ममत्तं वा करेज्जा ।

अहवा भणेज्जा – मम एत्थ देसे मा कोति अल्लियओ, एस पडिसेहो । सेहे त्ति गयं ।

इदाणिं गिलाणे त्ति । "एवमेव" पच्छद्धं—एवं अवधारणे, जहा सेहो उवासादिसु ममत्तं करेज्जा एवं गिलाणो वि उवासादिसु ममत्तं करेज्जा ।

अहवा स गिलाणो एवं भणेज्जा – णेह ममं तं गामं णगरं देसं रज्जं, तत्थाहं णीओ पउणिस्सा-मीत्यर्थः । "आदि" सद्दातो अगिलाणा वि सणायगो वग्गपत्तो भणेज्जा—"णेह ममं तं गामं तत्थहं णोव-सग्गिज्जामि" त्ति । गिलाणे त्ति गतं ॥४००॥

---

१ गा. ३९१ ।

इदाणिं मज्जाय त्ति अस्य व्याख्या –

सागारिअदिण्णेसु व, उवासादिसु णिवारए सेहे ।
ठवणाकुलेसु ठविएसु, वारए अलसणिद्धम्मे ॥४०१॥

सागारिओ सेज्जातरो, तेण जे उवासा ण दिण्णा, तेसु उवासेसु सेहे अमज्जादिल्ले आयरमाणे णिवारेज्जा । "आदि" सद्दाओ उवस्सओ घेप्पति । मज्जाये त्ति गतं ।

इदाणिं ठवणे त्ति अस्य व्याख्या – "ठवणा" पच्छद्धं । ठवणकुला अतिशयकुला भण्णंति, येष्वाचार्यादीनां भक्तमानीयते, तेसु ट्ठविएसु अलसणिद्धम्मे पविसंते णिवारेतेत्यर्थः । ठवणे त्ति गतं ॥४०१॥

गाम-णगर-देस-रज्जाणं अववातो भण्णति । उड्डाहे त्ति अस्य व्याख्या –

उड्डाहं व कुसीला, करेंति जहियं ततो णिवारेंति ।
अत्थंतेसु वि तहियं, पवयणहीला य उच्छेदो ॥४०२॥

जहियं ति गाम-णगर-देस-रज्जे कुसीला पासत्था अकिरियपडिसेवणा उड्डाहं करेज्जा । ततो त्ति गाम-णगरादियाओ णिवारेयव्वाणि, "वारणा" इह गामे अकिरियपडिसेवणा ण कायव्वा । अच्छंतेसु वा तेसु पासत्थेसु, तहियं गामे पवयणं संघो, तस्स हीला णिंदा भवति, भक्तपाणवसहि सेहादियाण वा वि उच्छेदो तेसु अच्छतेसु, तम्हा ते ताओ पारंचिए वि करेज्जा । उड्डाहे त्ति गयं ॥४०२॥

चोदगाह—"णणु वारेंतस्स गामादिसु ममत्तं भवति" ?

आचार्याह – ण भवति, कहं ? उच्यते –

जो तु अमज्जाइल्ले, णिवारए तत्थ किं ममत्तं तु ।
होज्ज सिया ममकारो, जति तं ठाणं सयं सेवे ॥४०३॥

य इत्यनुद्दिष्टस्य ग्रहणं, तु सद्दो णिद्देसे, "मज्जाया" सीमा ववत्था, ण मज्जाया अमज्जाया, तीए जो वट्टति सो अमज्जादिल्लो, तं जो ताओ अमज्जाताओ "णिवारते तत्थ किं ममत्तं तु" तत्थ किमि त्ति अमज्जायपवत्तीणिवारणे, "किमि" त्ति क्षेपे, "ममत्तं" ममीकारो, "तु" सद्दो अममत्तावधारणे "होज्ज" भवेज्ज, सिया आसंकाए अवधारणे वा ममीकारः, यदीत्यभ्युपगमे, तमिति अमज्जायट्ठाणं संबज्झति, स्वयं इति आत्मना प्रत्यासेवतीत्यर्थः । खेत्तावंवातो गतो ॥४०३॥

इदाणिं कालाववातो भण्णति । अणाभोगे त्ति अस्य व्याख्या –

अणभोगा अतिरित्तं, वसेज्ज अतरंतो तप्पडियरा वा ।
अद्धाणंमि वि वरिसे, वाघाए दूरमग्गे वा ॥४०४॥

अणाभोगो अत्यंतविस्मृतिः, किं उडुमासकप्पो वासाकप्पो वा, पुण्णो ण पुण्णो वा, एवं अणुवओगाओ अतिरित्तं पि वसिज्जा । अणाभोगे त्ति गय ।

गेलण्णे त्ति अस्य व्याख्या – अतरंतो तप्पडियरा वा "अतरंतो" गिलाणो सो विहरिउम-समत्थो, उउबद्धं वासिय वा अइरित्तं वसेज्जा । गिलाणपडियरगा वा ग्लानप्रतिबद्धत्वात् अतिरित्तं वसेज्जा । गिलाणे त्ति गतं ।

अद्धाणे त्ति अस्य व्याख्या – अद्धाणं पच्छद्धं । "अद्धाणं" पहपडिवत्ती, तं पडिवन्ना अंतरा य वासं पडेज्जा ततो कालविवच्चासो वि हवेज्जा । वाघातो त्ति "वाघातो" णाम विग्घं, तं वसहिभत्तादियाण होज्जा, अतो तंमि उप्पण्णे वासासु वि गच्छेज्जा ।

अहवा – उडुवद्धियखेत्ताओ वासावासखेत्तं गच्छंता अंतरा वाघातेण ट्ठिता वासिउमारद्धो, वाघातो-वरमे अप्पयाया, एवं कालविवच्चासं करेज्जा । दूरे वा तं वासकप्पजोग्गं खित्तं वाघाततो वा अवाघातओ वा गच्छंताणं वास पडिउमारद्धं, एवं वा वि विवच्चासं कुज्जा । दूरे वा तं वासकप्पखेत्तं अंतरा य वहू अवाया अतो ण गता, तत्थेव उडुवासिए खेत्ते वासकप्पं करेंत्ति, एवं वा अतिरित्तं वसंति । अद्धाणे त्ति गय ॥४०४॥

दुल्लभे त्ति अस्य व्याख्या –

धुवलंभो वा दव्वे, कइवय दिवसेहिं वसति अतिरित्तं ।
उडुअतिरेको वासो, वासविहारे विवच्चासो ॥४०५॥

दुल्लभदव्वट्ठता अतिरित्तं पि कालं वसेज्जा । कहं ? उच्यते, पुण्णे मासकप्पे वासकप्पे दुल्लभ-दव्वस्स धुवो अवस्सं लाभो भविस्सति तेण कति वि थोवदिवसे अतिरित्तं पि वसेज्जा । उडुवद्धकाले अतिरेगो वासो एवं संभवति । दुल्लभदव्वट्ठता वा वासासु विहरति । एवं कालविवच्चास करेति । दुल्लभे त्ति गत ॥४०५॥

इदाणिं उत्तिमट्ठे त्ति अस्य व्याख्या –

सप्पडियरो परिण्णी, वास तदट्ठा व गम्मते वासे ।
संथरमसंथरं वा, ओमे वि भवे विवच्चासो ॥४०६॥

परिण्णी अणसणोवदिट्ठो, तस्स जे वेयावच्चकारिणो ते पडियरगा, परिण्णी सह पडियरएहिं अतिरित्तं पि कालं वसेज्जा । तदट्ठ त्ति परिण्णी पडियरणट्ठा वा गमते वासासु वि । एस विवच्चासो । परिण्णि त्ति गतं ।

इदाणिं ओमे इति अस्य व्याख्या –

"संथर" पच्छद्धं । जत्थ संथरं तत्थ मासकप्पो अतिरित्तो वि कज्जति, जत्थासंथरं तत्थ ण गंमति । जत्थ पुण वासकप्पट्ठिताण ओमं हवेज्जा ततो वासासु वि गंमति । एस विवच्चासो ।

अहवा वासकप्पट्ठिताण णज्जति जहा कत्तियमग्गसिराइसु मासेसु असंथरं भविस्सति, मग्गा य दुप्पगंमा भविस्संति, अतो वासासु चेव संथरे वि विवच्चासो कज्जति, असथरे पुण का वितक्का । ओमे त्ति गतं । गओ कालो ॥४०६॥

इदाणिं भावाववातो भण्णति । तत्थ सेह त्ति दारं । अस्य व्याख्या–

सिज्जादिएसु उभयं, करेज्ज सेहोवधिंमि व ममत्तं ।
अविकोविअत्तणेण, तु इयरगिहत्थेसु वि ममत्तं ॥४०७॥

"सेहो" अगीयत्थो अभिणवदिक्खिओ वा, सो सेज्जाते उभयं करेज्जा, 'उभयं" णाम रागदोसा, "आदि" सद्दातो उवासकुलगामणगरदेसरज्जादयो घेप्पंति । उवहिंमि वा वासकप्पाइए ममत्तं कुज्जा । अविकोवियत्तणाओ चेव इतरगिहत्थेसु वि ममत्तं कुज्जा । तु सद्दो विकप्पदरिसणे गीयत्थो वि कुज्जा । "इतरे" पासत्थादयो ॥४०७॥

चोदगाह – "अगीतो अगीयत्थत्तणातो पासत्थगादिसु ममत्तं करेज्जा, गीतो पुण जाणमाणो कहं कुज्जा" ? ।

आचार्याह –

जो पुण तट्ठाणाओ, णिअत्तते तस्स कीरति ममत्तं ।
संविग्गपक्खिओ वा, कज्जंमि वा जातु पडितप्पे ॥४०८॥

जो इति पासत्थो । पुण सद्दो अवधारणे तट्ठाणं पासत्थट्ठाणं, तओ जो पासत्थो णियत्तति, तओ णियत्तमाणस्स कीरइ ममत्तं, न दोषेत्यर्थः । अणुज्जमंतो वि संविग्गपक्खितो जो तस्स वा कीरिज्ज ममत्तं । कज्जं णाणादिगं, तं गेण्हंतस्स जो पडितप्पति पासत्थो तस्स वा ममत्तं कज्जति । कुलगणादिग वा कज्जं तं जो साहयिस्सति, पासत्थो तस्स या ममत्तं कज्जति । एवं गीयत्थो पासत्थादिसु ममत्त कुज्जा । सेहे त्ति गतं ॥४०८॥

इदाणिं गिलाणमादि त्ति दारं । अस्य व्याख्या –

पासत्थादिममत्तं अतरंतो भेसतट्ठता कुज्जा ।
अतरंताण करिस्सति माणसिविज्जट्ठता वितरो ॥४०९॥

अतरंतो गिलाणो, सो पासत्थादिसु ममत्तं कुज्जा । किं कारण ? उच्यते, भेसयट्ठता "भेसह" ओसहं, तं दाहि त्ति मे तेण कुज्जा, अतरंताण वा एस करिस्सति त्ति तेण से ममत्तं कुज्जा । अतरंतपडियरगा वा जे ताण या असंथरंताण वट्टिस्सति तेण वा ममत्तं कुज्जा, ममं वा गिलाणीभूयस्स वट्टिस्सति तेण वा कुज्जा । माणसिविज्जट्ठता वा ममत्तं कुज्जा । "माणसिविज्जा" णाम मणसा चिंतिऊण ज जावं करेति तं लभति । तमेस दाहिति त्ति ममत्तं कुज्जा । "आदि" सद्दाओ इतरो वि कुज्जा, "इतरो" णाम अगिलाणो, सो वि एवं कुज्जा । गिलाणे त्ति गतं ॥४०९॥

इदाणिं पडिक्कमे त्ति दारं अस्य व्याख्या –

पगतीए संमतो साधुजोणिओ तं सि अम्ह आसण्णो ।
सद्धावणण्णं मे वितरे विज्जट्ठा तूभयं सेवे ॥४१०॥

कोइ पासत्थो पासत्थत्तणाओ पडिक्कमिउकामो, सो एवं सद्धाविज्जति, पगती सभावो, सभावतो तुमं मम प्रियेत्यर्थः, पगतीओ वा वणिय-लोह-कुंभकारादओ तेसिं जो सम्मओ तस्स ममत्तं कीरति । साहुजोणीओ णाम साधुपाक्षिकः आत्मनिंदकः उद्यतप्रशंसाकारी, सो भण्णति–"तुम सदाकालमेव साहुजोणिओ इदाणिं उज्जम, अण्ण व सो भण्णति—"तुमं अम्ह सज्जेंतिओ कुलिच्चो" य तेण ते सुट्ठु भणामो "इतरो" पासत्थो, सो एवं अण्णवयणेहिं सबुज्झति, संवुद्धो अब्भुट्ठेहि ति । पडिक्कमे त्ति गत ।

इदाणि विज्ज त्ति अस्य व्याख्या—विज्जट्ठा उभयं सेवि त्ति, "उभयं" णाम पासत्थ-गिहत्था, ते विज्जमंतजोगादि णिमित्तं सेवेत्यर्थः ।

केती पुण एवं पढंति – "विज्जट्ठा उभयं सेवे" ति वेज्जो गिहत्थो पासत्थो वा हवेज्ज, त ओलग्गेज्जा, सुह एसो गिलाणे उप्पण्ण गिलाणकिरिय करिस्यतीत्यर्थः ।

अहवा "उभयं वेज्जो विज्जणियल्लगा य, वेज्जस्स गिलाणकिरियं तस्स सेवं करेज्जा, वेज्जणियल्लाण वा सेवं करेज्जा, ताणि तं वेज्जं किरियं कारयिष्यंतीत्यर्थः । विज्ज त्ति गतं ॥४१०॥

इदाणिं दुट्ठे त्ति दारं । अस्य व्याख्या –

परिसं व रायदुट्ठे सयं च उवचरति तं तु रायाणं ।
अण्णो वा जो पदुट्ठो सलद्धि णीए व तं एवं ॥४११॥

दुट्ठं णाम राया पदुट्ठो होज्जा, तंमि पदुट्ठे जा तस्स परिसा सा उवचरियव्वा, ओलग्गा कायव्वा इति वुत्तं भवति । जो वा तं रायाणं एगपुरिसो उवसामेहि त्ति सो वा सेवियव्वो, उवसामणलद्धिसंपण्णो वा साहू स तमेव रायाणं उवचरति, "त" तु प्रद्विष्टराजानमित्यर्थः । अण्णो जो रायवतिरित्तो भड-भोइ आदि जइ पदुट्ठो तं पि सलद्धिओ जो साहू सो पदुट्ठवं णीए वासे सेवेज्ज। एवं पदुट्ठणिमित्तं गिहत्थेसु वि ममत्तं कुज्जा। पदुट्ठे त्ति गतं । गओ भावपरिग्गहो । गता परिग्गहस्स कप्पिया पडिसेवणा ॥४११॥ गतो परिग्गहो ॥३७७–४११॥

इदाणिं रातीभोयणस्स दप्पिया पडिसेवणा भण्णति –

राईभत्ते चउव्विहे, चउरो मासा भवंतणुग्घाया ।
आणादिणो य दोसा, आवज्जण संकणा जाव ॥४१२॥

चउव्विहे त्ति, रातीभत्ते चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा ।

दियागहियं दिया भुत्तं, पढमभंगो । दिया गहियं राओ भुत्तं, एस बितियभंगो ।

राओ गहियं दिया भुत्तं – ३, राओ गहियं राओ भुत्तं – ४ ।

एवं – चउव्विहं राईभोयणं। एतेसु चउसु वि भंगेसु चउरो मासा भवंतणुग्घाता चउगुरुगा इत्यर्थ. । एत्थ दोहिं वि कालतवेहिं लहुगा पढमभंगे, सेसेसु तीसु कालतवोभएसु गुरुगा । किंचान्यत्—राओ गहभोयणे तित्थयराणं आणादिक्कमो भवति, आणाभंगे य चउगुरुं पच्छित्तं, "आदि" ग्रहणातो अणवत्थमिच्छत्ते जणयति. पच्छित्तं च से चउलहुयं । आवज्जण त्ति रातो गहभोयणे अचक्खुविसएण पाणातिवायं आवज्जति जाव-परिग्गहं पि आवज्जति । संकणा जाव त्ति राओग्गहभोयणं करेमाणो असंजयेण पाणातिवातादिसु संकिज्जति, जह भण्णे एस पुरा धम्मदेसणातिसु राओ ण भुंजामि त्ति भणिऊण राओ भुंजति, एवं णूणं पाणातिवातमविकरेति, जाव परिग्गहं पि गेण्हइ" ॥४१२॥

राईभोयणे आय-संजम-विराहणा-दोसदरिसणत्थं भण्णइ –

गहण[1] गवेसण[2] भोयण[3], णिसिरण[4] सव्वत्थ उभयदोसा उ ।
उभयविरुद्धग्गहणं[5], संचयदोसा[6] अचिता[7] य ॥४१३॥ दा. गा.

गहणे त्ति गहणेसणा, गवेसण त्ति गवेसणेसणा, भोयणे त्ति घासेसणा, णिसिरण त्ति पारिट्ठावणिया, सव्वत्थ त्ति सव्वेसु तेसु गहणादिसु दारेसु उभयदोसा भवंति "उभयदोसा" णाम आय-संजमविराहणा दोसा 'तु' सद्दो अवधारणे । राओभयविरुद्धं वा करेज्ज "उभयं" णामं दव्वं सरीरं च, दव्वे ताव खीरे अंबिलं

गेण्हेज्जा, सरीरस्स वा अकारगं गेण्हेज्जा । "संचयदोस" त्ति सव्वंमि वा भुत्तवसिट्ठे वा परिवसमाणे जे सणिहीए दोसा ते भवंति, सुत्तत्थाणं अचिंता य ॥४१३॥

गहणे त्ति अस्य व्याख्या –

रयमाइ मच्छि विच्छु य, पिवीलिगा रस य पुप्फ बीयादी ।
विसगरकंटगमादी, गरहितविगती य ण वि देहे ॥४१४॥

रातो अंधकारे इमे दोसे ण याणति, सच्चित्तरयसा गुंडियं गेण्हति, "आदि" सद्दाओ ससणिद्ध-मट्टियादिहत्थेहिं वा गेण्हेज्जा, मच्छियाहिं वा मिस्सं गेण्हेज्जा, विच्छिएण वा वतिमिस्सं गेण्हति, मक्कोडि-यादिहिं वा वतिमिस्सं गेण्हति, रसएहिं वा ससत्तं, पुप्फेहिं वा वलिमादि सच्चित्तं गेण्हेज्जा, बीएहिं सालिमादीहिं परिघासिय गेण्हेज्जा । विसगरेहिं वा जुत्तं गेण्हेज्जा, अणेगाणं उवविसदव्वाणं णिगरो अकालघायगो "गरो" भण्णति, कंटगं वा ण पस्सति, "आदि" सद्दाओ अट्ठियसक्करा ण पस्सति, गरहिय विगतीओ मज्जमसादिआ य अणुकंपपडिणीयणाभोगेण दिज्जमाणा ण देहति ण पश्यतीत्यर्थः । गहणे त्ति दारं गतं ॥४१४॥

इदाणि गवेसण त्ति अस्य व्याख्या –

साणादीभक्खणता, मक्कोडग-कंटविद्धसंकाए ।
उवग-विसमे पडगं, विगलिंदिय आयघातो वा ॥४१५॥

रातो पिंडं गवेसमाणो साणादिणा भक्खिज्जति, "आदि" सद्दातो विरुयसियालाति-दीवियादीहिं, मक्कोडेण वा डक्को कंटगेण वा विद्धो सप्पं संकति, संकाविसं से उल्लसति ।

अहवा दीहादिणा डक्को मंक्कोड-कंटए संकति, किरियं ण करेति । आयविराहणा से भवति । उवगो खड्डा कुसारो वा, तत्थ पातो विराहिज्जति । विसम णिण्णोण्णतं तत्थ पडति, अंधकारे वा विगलिंदिए वा घाए ति । साणादिसु आयघातो अभिहिय एव ॥४१५॥

अहवा आयघातो इमो –

गोणादी व अभिहणे, उग्गमदोसा य रत्ति ण विसोधे ।
दव्वादी य ण जाणे, एमादि गवेसणा दोसा ॥४१६॥

गोणो अंधकारे अदिस्समाणो अभिहणेज्ज । "आदि" सद्दातो महिसादि । राओ य अंधकारे उग्गमदोसा ण सोहेंति । अंधकारे य दव्वं ण जाणति, किं ग्राह्यं अग्राह्यं, भक्ष्यं अभक्ष्यं, पेयं अपेयं, चेव वंदणगादिखेत्तं ण याणति । गोणाइयाणं वा णिग्गम-पवेसं ण याणति । कालतो देसकालं ण याणति । भावओ चियत्ताचियत्तं ण याणति, एवमादिया राओ गवेसणदोसा भवंति । गवेसणे त्ति दारं गतं ॥४१६॥

इदाणि भोयणे त्ति दारं –

कंटट्ठि मच्छि विच्छुग, विसगर कंदादिए य भुंजंतो ।
तमसंमि उ ण वि जाणे, उभयस्स य णिग्गिणे दोसा ॥४१७॥

रातो अंधकारे कंटगं कवलेण सह भुंजति, तेण गले विलग्गति, अट्ठगो वा लग्गति, एवं अट्ठि, मच्छिगाए वग्गुलीवाही भवति ; विच्छिगेण आयविराहणा संजमविराहणा य ; विसगरादिसु आयविराहणा । कंद-पत्त-पुप्फ-बीयाणि वा अंधकारे अयाणंतो भुंजति । भुंजणे त्ति दारं गतं ।

णिसिरणे त्ति दारं -

अहवा - आहार णिहारोऽभिहियते । उभयस्स य णिसिरणे दोस त्ति "उभयं णाम काइयं सण्णा. णिसिरणं वोसिरणं तत्थ श्राय-सजमदोसा भवति ।

अहवोभयं भत्तपाणं - अहवा - भत्तपाणगं च एक्कं काइये, सण्णा य एक्कं, एवं उभयं । णिसिरणे ति गयं ।।४१७।।

"उभयविरुद्धं गहणे" त्ति दारं भण्णति -

संजमदेहविरुद्धं, ण याणती ठवित संणिधी दोसा ।
दियरातो य अडंते, सुत्तत्थाणं तु परिहाणी ।।४१८।।

संजमो सत्तरसप्पगारो, तस्स विराहगं दव्वं अकल्पिकमित्यर्थ. । देहं सरीरं, तस्स वा अकारगं ण याणति, अंधकारे इति वाक्यशेषम् । उभयविरुद्धे ति गतं ।

संचयदोसे त्ति दारं भण्णति -

ठविए संणिहि दोसो, रातो अडिऊण एयद्दोसपरिहरणत्थं दिवा भोक्ष्यामीति स्थापयति, भुक्त्वा-वशिष्टं वा तत्थ संणिहिदोसा भवंति । "संनिहिदोसा" लेवाडय परिवासपरिग्गहो य, पिपीलिकादीण य मरणं, ज्झरणे तक्कंतपरंपर उवघाओ, पलुट्टे छक्काओवघातो, अहिमातिणा वा जिंघिते आतोवघातो, एवमादी। सण्णिहिदोसे त्ति गयं ।

अचिंतये त्ति दारं भण्णति—दियरातो य पच्छद्धं । दिया राओ य भत्तपाणणिमित्तं अडमाणस्स सूत्रार्थयोः परिहाणी, अगुणणत्वात् । गया रातीभोयणस्स दप्पिया पडिसेवणा ।।४१८।।

इदाणिं कप्पिया भण्णति -

अणभोगे गेलण्णे, अद्धाणे दुल्लभुत्तिमट्ठोमे ।
गच्छाणुकंपयाए, सुत्तत्थविसारदायरिए ।।४१९।। द्वा. गा.

अणाभोगेण वा रातीभुत्तं भुंजेज्जा । गेलण्णकारणेण वा । अद्धाणपडिवण्णा वा । दुल्लभदव्वट्ठता वा । उत्तिमट्ठपडिवण्णो रातीभत्तं भुंजेज्जा । ओमकाले वा, गच्छणुकंपयाए वा रातीभत्ताणुण्णा । सुत्तत्थ विसारतो वा रातीभत्ताणुण्णा । एस संखेवत्थो ।।४१९।।

इदाणिं एक्केक्कस्स दारस्स विस्तरेण व्याख्या क्रियते ।

तत्थ पढमं अणाभोगे त्ति दारं -

लेवाडमणाभोगा, ण धोत परिवासिमासए व कयं ।
धरति त्ति व उदितो त्ति व गहणादियणं व उभयं वा ।।४२०।।

पत्तगवंधादीसु लेवाडयं अणाभोगा ण धोतं हवेज्जा । एवं से रातीभोयणस्सतीचारो होज्ज ।

अहवा - पढमभंगेण सीतक्यादि परिवासितं अणाभोगा आसए कतं होज्ज, असत्यनेनेति "आसयं" मुखमित्यर्थः, "कयं" मुखे प्रक्षिप्तमित्यर्थः । धरइ त्ति आदित्य, एस दुतियभंगो गहितो । उदितो त्ति व आदित्य, एस ततियभंगो गहितो । गहणादिअणं व त्ति धरति त्ति व गहणं करेति, दुतियभंगो, उदितत्ति य

आदियणं करेति, ततियभंगो । उभयं वा "उभयं" णाम गहणं आदियणं च करेति रातो अणाभोगात् । एवं चउसु वि भंगेसु अणाभोगओ रात्रीभोजन भवेत्यर्थः । अणाभोगे त्ति दारं गत ॥४२०॥

गेलण्णे त्ति दारं । अस्य व्याख्या –

आगाढमणागाढे, गेलण्णादिसु चतुक्कभंगो उ ।
दुविहंमि वि गेलण्णे, गहणविसोधी इमा तेसु ॥४२१॥

गेलण्णं दुविहं—आगाढं अणागाढ च, "आदि" सद्दातो अगिलाणो वि पढमवितियपरिसहेहि अभिभूतो, एवमादि कज्जेसु चतुक्कभंगो "चउभगो" णाम दिया गहिय दिया भुत्तं ऽ्ऽ । तु सद्दो अवधारणे । दुविह मि वि आगाढाणागाढगेलण्णे । गहणविसोधी इमा तेसु त्ति जहा आगाढे वा गहणविसोही वक्ष्यामीत्यर्थः ॥४२१॥

तत्थ पढमभंगं ताव भणामि –

वोच्छिण्णमडंबे, दुल्लहे व जयणा तु पढमभंगेणं ।
सूलाहिअग्गितण्हादिएसु वितिओ भवे भंगो ॥४२२॥

वोच्छिण्णमडबं णाम जत्थ दुजोयणब्भतरे गामघोसादी णत्थि, तत्थ तुरिते कज्जे ण लब्भति, अतो तत्थ छिण्णमडवे ओसहगणो परिवासिज्जति । एव एवमादिसु कज्जेसु जयणा पढमभगेण कज्जति ।

इयाणि वितियभंगो कहिज्जति –

कस्सति उक्कोउअं सूलं तं ण णज्जति कं वेलं उदेज्ज, अतो सूलोवसमणोसहं लद्धपच्चयं दिया गहियं रातो दिज्जति, एवं अहिणा वि डक्के, अग्गिए वा वाहिंमि उतिण्णे, तिण्हा तिसा ताए वा रातो अणाहियासियाए उदिण्णाए, "आदि" सद्दातो अणाहियासियछुहाए वा भत्तं दिज्जेज्जा, विस-विसूयग-सज्ज-क्खता वा घेप्पंति । एवमादिसु वितितो भवे भंगो ॥४२२॥

इदाणि ततितो भण्णति –

एसेव य विवरीओ ततिय चरिमो तु दोण्णि वी रत्ति ।
आगाढमणागाढे पढमो सेसा तु आगाढे ॥४२३॥

एसेव वितिय भंगो विवरीतो ततिय भंगो भवति, कहं ? रातो गहियं दिवा भुत्तं, तं च खीरादि दिवसतो ण लब्भति रत्ति लब्भइ, अतो रातो घेत्तुं दिया जाए वेलाए कज्जं ताए वेलाए दिज्जति, अह विणस्सति ताहे कड्ढिउं ठविज्जति, एस ततियभगो । एतेसु चेव सूलादिसु संभवति । चरिमो पच्छिमभंगो, दोण्णि वि त्ति गहणभोगा, तु शब्दो रात्रौ ग्रहणभोगावधारणे, एतेसु चेव सूलादिसु संभवंति । एतेसिं चउण्हं भगाणं पढमभंगो आगाढगेलण्णे अणागाढगेलण्णे य संभवति, सेसा तिण्णि भंगा णियमा आगाढे भवतीत्यर्थः । गेलण्णे त्ति गतं ॥४२३॥

इदाणिं अद्धाणे त्ति –

पडिसिद्ध समुद्धारो गमणं चउरंग दवियजुत्तेणं ।
दाणादिवाणिय समाउलेण दियभोगिसत्थेणं ॥४२४॥

पडिसिद्धि त्ति उद्दद्दरे सुभिक्खे सथरंताण असिवातियाण अभावे अद्धाणपव्वज्जणं पडिसिद्धं । समुद्धारो त्ति अणुण्णा, कहं असंथरताण जोगपरिहाणी भवेज्ज ? असिवाइतकारणेसु वा समुप्पण्णेसु

श्रद्धाणपव्वज्जणं होज्ज, एस समुद्धारो। श्रद्धाणे पुण गमणं कारणे जता कज्जति तदा चउरंगं दविय जुत्तेणं सत्थेणं गंतव्वमिति, "चउरंगं" अश्वा गौः सगड पाइक्का, "जुत्त" ग्गहणं चतुर्णामपि समवायप्रदर्शनार्थं, दवियजुत्तेणं वा दविणं असणादि।

अहवा – तंदुला णेहो गोरसो पत्थयणं।

अहवा – गणिमं १ धरिमं २ मेज्जं ३ पारिच्छ ४।

गणिम – जं दुगाइयाए गणणाए गणिज्जति, तं च हरीतकीमादि।

धरिमं – जं तुलाए धरिज्जति, जहा मरिच-पिप्पली-सुंठिमादि.।

मेज्जं – जं माणेणं पत्थगमातिणा मितिज्जति, तं च तंदुल-तेल्ल-घयमादि।

पारिच्छं – जं परिच्छिज्जति, तं च रयणमादि।

दाणादि त्ति दाणसड्ढादिहिं समाउलेण सत्थेण गंतव्वं। 'आदि" सद्दातो अविरयसम्मद्दिट्ठि गहियाणुव्वया य घेप्पंति। सो य सत्थो जति दिया भुंजति तो गंतव्वं, ण रात्री भोजनेत्यर्थः। एरिसेणं सत्थेणं वच्चंति ॥४२४॥

उग्गमादिसुद्धं आहारेंता वच्चंतु, इमेहिं वा कारणेहिं पज्जत्तं न लब्भति –

पडिसेधे वाघाते, अतियत्तियमादिएहि खइते वा।
पडिसेहक्कोऽतियंतो करेज्ज देसे व सव्वे वा ॥४२५॥

पडिसेह त्ति कोति पडिणीतो सत्थे पभू अतियत्ती वा पडिसेहं करेज्ज, "पडिसेहो" णिवारणा, "मा तेसिं समणाणं भत्तं पाणगं वा देह," एगतरणिवारणं एसो, उभयणिवारणं सव्वणिसेहो। पच्छद्ध पडिसेहस्स वक्खाणं भणियं। वाघाए त्ति अंतरा वच्चंताण वरिसिउमारद्धं, सत्थणिवेसं च काउं ठितो सत्थो, ते एवं दीहकालेण णिट्ठितं संबलभत्तं, आतियत्तिएहि वा बहुहि खइतं, "आदि" सद्दातो चोरेहि वा मुसितं, भिल्लपुलिंदादीहिं वा अद्धेल्लियं ॥४२५॥ एवमादिएहिं कारणेहिं अलब्भमाणे इमा जयणा –

ओमे तिभागमद्धे, तिभागमायंबिले अभत्तट्ठे।
छट्ठादेगुत्तरिया, छम्मासा संथरे जेणं ॥४२६॥

ओमे त्ति बत्तीसं कीर कवला पुरिसस्साहारो कुच्छिपूरओ भणिओ। सो य एगकवलेण दोहिं तिहिं वा ऊणो लब्भति। तेणेवच्छउ, मा य अणेसियं भुंजउ। तिभागो त्ति आहारस्स तिभागो, सो य दसकवला दोयकवलस्स तिभागा, तेण तिभागेण ऊणो आहारो लब्भति, ते य एक्कवीसं कवला कवल त्रिभागश्चेत्यर्थः। तेणेवच्छउ, मा य अणेसियं गेण्हउ। अद्धे त्ति अद्धं सोलसकवला आहारस्स, जदा ते सोलसकवला लब्भंति तदा तेणेवच्छउ, मा य अणेसियं भुंजउ। तिभागे त्ति तिभागो चेव केवलो आहारस्स लब्भति, तेणेवच्छउ, मा य अणेसणीयं गेण्हेउ। एस गमो वंजणसहितोऽभिहितः। आचाम्लेऽप्येवमेव, उभयेऽप्येवमेव। जता पुण सो वि तिभागो ऊणो लब्भति ण वा किंचि वि लब्भति तदा अब्भत्तट्ठं करेति।

अण्णे पुणराचार्य्या इदं पूर्वार्द्धमन्यथा व्याख्यानयंति – "ओमे" त्ति किंचोमोदरिया पमाणपत्तोमोयरिया य गहिता, एग-दु-ति-कवलेहि ऊण भोती किंचोमोदरियाभोती भण्णति, चउवीसं कवलाहारी पमाणपत्तोमोयरिया भोती भण्णति। "तिभागे" त्ति चउवीसाए अ तिभागो अट्ठकवला, तेण— ऊणिया चउवीसो सेसा सोलसकवला, ते परं लद्धा, तेणेवच्छउ, मा य अणेसणीयं भुंजउ। "अद्धे" त्ति चउवीसाए

अद्धं दुवालस, तेणेवच्छउ, मा य अणेसणीयं भुंजउ। "तिभागे" त्ति चउवीसाए तिभागो अट्ठकवला, ते लद्धा, तेणेवच्छउ, मा य अणेसणीय भुंजउ। एस वंजणसहिते कमो, "आयबिले" वि एसेव, मीसे वेसेव। सव्वहा अलब्भमाणे 'चउत्थ" करेउ, मा य अणेसणीयं भुंजउ। चउत्थपारणदिवसे उग्गमादिदोससुद्धस्स बत्तीसं कवला भुंजउ। बत्तीसाए अलब्भमाणेसु एगूणे भुंजउ जाव एग लंबणं भुजिऊण अच्छउ, मा य अणेसणीयं भुंजउ। तंमि पारणदिवसे सव्वहा अलब्भमाणे छट्ठ करेउ, मा य अणेसणीय भुंजउ। एगुत्तरिय त्ति एव छट्ठपारणए वि बत्तीसातो जाव सव्वहा अलब्भाणे अट्ठमं करेउ। एवं एगूत्तरेणं ताव णेयं जाव छम्मासा अच्छउ उववासी, मा य अणेसणीयं भुंजउ। एसा संथरमाणस्स विही। असंथरे पुण जेण सथरति सच्चित्ताचित्तेण सुद्धासुद्धेण वा भुंजतीत्यर्थः ॥४२६॥

एसेव गाहत्थो पुणो गाथाद्वयेन व्याख्यायतेत्यर्थः -

बत्तीसादि जा लंबणो तु खमणं व ण वि य से हाणी।
आवासएसु अच्छउ, जा छम्मासा ण य अणेसिं ॥४२७॥

बत्तीसं लंबणा आहारो कुक्षिपूरगो भणिओ। जति ण लब्भति पडिपुण्णमाहारो तो एगूणे भुंजउ, एवं एगहाणीए-जाव-एगलंबणं भुंजउ, मा य अणेसिय भुंजउ। तंमि वि अलब्भमाणे खमणं करेउ। वा विकप्पदर्शने, कः पुनः विकल्प ? उच्यते, खमणं सिय करेति सिय णो करेति त्ति विकप्पो। जइ से आवस्सग-जोगेसु परिहाणी तो ण करेति खमणं, अहावस्सयपरिहाणी णत्थि तो उववासी अच्छउ जाव छम्मासा ण य अणेसणिय भुंजउ ॥४२७॥

एस गमो वंजणमीसएण आयंबिलेण एसेव।
एसेव य उभएण वि, देसीपुरिसे समासज्ज ॥४२८॥

एसो त्ति जो बत्तीसं लंबणादिगो भणितो, गमो प्रकारो, एस वंजणमीसएण भणिओ, वंजणं उल्लणं दधिगादि, तेण उल्लियस्स, एवं स प्रकारोभिहितेत्यर्थः। आयंबिलेण एसेव गमो असेसो दट्ठव्वो। एसेव य उभएण वि गमो दट्ठव्वो। उभयं णाम अद्ध-तिभागाति वंजणजुत्तस्स लब्भति सेसं आयंबिल, एवं उभएण वि कुक्षिपूरगो आहारो भवतीत्यर्थः। देसीपुरिसे समासज्जति—जति संधवाति देसपुरिसो आयंबिलेण ण तरति तस्स वंजणमीसं दिज्जति, जो पुण कोंकणादि देसपुरिसो तस्स आयंबिल दिज्जति। एसा पुरिसेसु भोयणकाले जयणा भणिता। एवमलब्भमाणे धितिसघयणोभयजुत्तस्स अणेसियं परिहरंतस्स छम्मासा अंतरं दिट्ठं ॥४२८॥

तस्स पारणे विही भण्णति -

छम्मासियपारणए, पमाणमूणं व कुणति आहारं।
अवणेत्ता वेक्केक्कं, णिरंतरं वच्च भुंजंतो ॥४२९॥

छम्मासियस्स पारणए सति लाभे भत्तस्स पमाणजुत्तं आहारं आहारेइ, ऊणं वा आहारं आहारेति। अह ण लब्भति एसणिज्जो कुच्छिपूरतो आहारो तो एगकवलूणो अच्छउ छम्मासियपारणे। एवं जाव एगक-वलेणा वि अच्छउ, मा य अणेसणिय भुंजउ। अवणेत्तावेक्केक्कति - अह एवं जाणनि जहा असति भत्तलाभस्स सति वा भत्तलाभे छम्मासिगखमणेण मम आवस्सयपरिहाणी भवेज्ज तो छम्मासियखमणं मा करेतु। छम्मासा एगदिवसूणा खवयतु। जति तहवि परिहाणी तो दोहिं ऊणो खमउ, एवं एक्केक्कं दिवसं अवणेत्ता जाव चउत्थ करेउ। जति तहवि से आवस्सगपरिहाणी तो णिरंतरं वच्च भुंजंतो। तत्थ वि पुव्वं आयबिलेण णिरंतरं

वच्च भुंजंतो । अह से देसीपुरिसे समासज्ज ण खमति आयंबिलं तो जावतियं खमति तावतियं भुंजउ, सेसं वंजणसहियं भुंजउ । अह तं वि से ण खमति तो सव्वं चिय वंजणसहितं णिरंतरं वच्च भुंजतो । एस विही पुव्वक्खातो ॥४२९॥

एत्थ विद गाहापुव्वद्धं भावेतव्वं –

आवासगपरिहाणी, पडुपण्णे अणागते व कालंमि ।
गच्छे व अप्पणो वा, दुक्खं जीतं परिच्चइउं ॥४३०॥

अहवेवं गाहा समोआरेयव्वा – जति से आवस्सगपरिहाणी णत्थि ओमेणेसणियं भुजंतस्स तो मा अणेसणीयं गेण्हतु ।

अतो भण्णति "आवस्सग" गाहा ।

अवस्सकरणीएसु जोएसु जति से परिहाणी णत्थि पडुपण्णणागते काले तो तेणेवेसणीएण जहा लाभं अच्छतु, मा य अणेसणीयं भुंजतु ।

अह पुण एवं हवेज्ज – गच्छस्स वा आवस्सगपरिहाणी होज्जा, आयरियस्स वा अप्पणो वा आवसगस्स परिहाणी हवेज्ज, दुक्खं वा बुभुक्खिएहिं जीवियचागो कज्जति अतो अणेसणीयं पि घेप्पति ॥४३०॥

"गच्छे व अप्पणो" वा अस्य व्याख्या –

गच्छे अप्पाणंमि य, असंथरे संथरे य चतुभंगो ।
पणगादि असंथरणे, दुकोडि जा कम्म णिसि भत्तं ॥४३१॥

आयरिओ अप्पणा ण संथरति गच्छो वा ण संथरति, एवं चउभंगो कायव्वो । एत्थ चरिमभंगे णत्थि । तिसु आदिमभंगेसु असंथरे इमो विही भण्णति—जावतियं सुद्धं लब्भति तावतियं घेत्तुं सेसं असुद्धं अज्झपूरयं गेण्हतु । सव्वहा वा सुद्धालंभे सव्वमणेसियं गेण्हतु । पुव्वं विसोहिकोडिए । जं तं असुद्धं अज्झपूरयं गेण्हति । सव्वं वा असुद्धं तं काए जयणाए ? भण्णति – इमाए, "पणगादि" पच्छद्धं । सव्वहा असंथरणे पणगकरणं गेण्हति, "आदि" सद्दातो दस-पण्णरस-वीस-भिण्णमास-मास-चउम सेहिं य लहुगुरुगेहिं । एस कमो दरिसिओ ।

अहवा वितियक्कमप्पदरिसणत्थं भण्णति – "दुकोडि त्ति" विसोहिकोडी अविसोहिकोडी य । पुव्व-पुव्वं विसोहिकोडीए घेतव्वं पच्छा अविसोहिकोडीए । एवं दोसु वि कोडीसु पुव्वं अप्पतरं पायच्छित्तट्ठाणं भयंतेण ताव णेयव्वं जाव कम्मंति आधाकर्म्मकेत्यर्थः । जया पुण पि अहाकम्मं पि ण लब्भति तदा णिसिभत्तंपि भुंजति अद्धाणपकप्पो त्ति वुत्तं भवति ॥४३१॥

"पणगादि असंथरणे" त्ति अस्य व्याख्या –

एसणमादी भिण्णो संजोगा रुद्द परकडे दिवसं ।
जतणा मासियट्ठाणा आदेसे चतुलहू ठाणा ॥४३२॥

"एसणे" त्ति एसणा गहिता, "आदि" सद्दातो उप्पायणउग्गमा घेप्पंति । भिण्णो त्ति भिण्णमासो गहितो । 'संजोग' त्ति पणगं दस जाव भिण्णमासो, एतेसिं संजोगा गहिता । 'रुद्दो' त्ति रुद्दघरं महादेवायतन-मित्यर्थः । परकडे त्ति 'परा' गिहत्था, "कडं" णिट्ठियं, तेसिं गिहत्थाण कडं परकडं परस्योपसाधितमित्यर्थः । 'दिवस' त्ति रुद्दालियघरेसु दिवसणिवेदितं गृहीतव्यमित्यर्थः । तदुपरि जयणा मासियट्ठाणेसु सव्वेसु कायव्वा ।

जाहे मासट्ठाण अतीतो भविष्यति तदा चउलहुट्ठाणं पत्तस्स आदेशांतरेण ग्रहणं भविष्यतीत्यर्थः। एस संखेवेण भणितो गाहत्थो ॥४३२॥

इदाणिं एतीए गाहाए वित्थरेणत्थो भण्णति –

"एसणे" त्ति अस्य व्याख्या –

ससणिद्ध-सुहुम-ससरक्ख-बीय-घट्टादि पणग संजोगा।
जा तं भिण्णमतीतो, रुद्दादिणिकेयणे गेण्हे ॥४३३॥

एसणाए आदि सद्दाओ उग्गमो उप्पायणा घेप्पति। एतेसु जत्थ जत्थ पणगं तेणं पुव्वं गेण्हति। ससिणिद्धं ति हत्थो उदगेण ससिणिद्धो। सुहुम त्ति सुहुमपाहुडीया। ससरक्ख त्ति सच्चित्तपुढविरएण दव्व हत्थो मत्तो वा उग्गुंडितेत्यर्थः। बीजं सालिमादी, तस्संघट्टणेण पाहुडीया लद्धा, "आदि" सद्दातो परित्तकाए मीसे परंपरणिक्खित्ते इत्तरट्ठविया य घेप्पंति। पणगं ति एतेसु सव्वेसु जहुद्दिट्ठेसु पणगं भवतीत्यर्थः। संजोग त्ति जाहे पणगेण पज्जत्त लब्भति ताहे जावतित पणगेण लब्भति तावतित घेत्तुं, सेसं दसरातिंदियदोसेण दुट्ठं अज्झवपूरयं गेण्हति। पचराइदियदुट्ठं जाहे सव्वहा ण लब्भति ताहे सव्व दसरातिंदियदोसेण दुट्ठं गेण्हति। तं पि जया पज्जत्तं ण लब्भति तया पण्णरसराइंदियदोसेण दुट्ठ अज्झवपूरग गेण्हति। जया दसराइंदियदोसेण दुट्ठं सव्वहा ण लब्भति तया सव्वं चेव पण्णरसराइदियदोसेण दुट्ठं गेण्हति। जता तं पि पज्जत्तं ण लब्भति तदा वीसरातिंदियदोसेण दुट्ठ अज्झवपूरय गेण्हति। एव हेट्ठिल्लपद मुंचमाणेण उवरिमपदेण अज्झवपूरयतेण ताव णेयव्वं जाव सव्वहा भिण्णमासपत्तो[1]।

एवं गाहापुव्वद्धे वक्खाते सीसो पुच्छति – "ससणिद्धादिसु पणगसभवो दिट्ठो दसादिआण भिण्णमासपज्जवसाणाण ण कुओ वि पिंडपत्थारे आव त्ति दिट्ठा, कहं पुण तद्दोसोवलित्ताए भिक्खाए ग्रहणं हवेज्ज ?।

आयरियाह – सयोगात् ससणिद्धेण पणगं भवति। ससणिद्धेण ससरक्खेण य दसरातं भवति, ससणिद्धेण ससरक्खेण बीयसंघट्टेण य पण्णरसरातिंदिया भवंति। ससणिद्धेण ससरक्खेण बीयसंघट्टेण सुहुम-पाहुडीयाए य वीसतिरातिंदिया भवंति, ससणिद्धेण ससरक्खेण बीयसघट्टेण सुहुमपाहुडीयाए इत्तरट्ठविएण य भिण्णमासो भवति। एव दसादिआण सभवो भवतीत्यर्थ। "रुद्दे" त्ति अस्य व्याख्या रुद्दादि णिकेयणे गेण्हइ, रुद्दघरे महादेवायतनेत्यर्थः। "आदि" सद्दातो मातिघरा दिव्वदुग्गादिएसु जाणि उवाचिआणि णिवेदिताणि उंबरातिसु पुंजकडाणि उज्झियहम्मियाणि ताणि पुव्व मासलहु दोसेण दुट्ठाणि गृण्हातीत्यर्थः ॥४३३॥

"परकडे दिवस" ति अस्य व्याख्या –

ताहे पलंबभंगे, चरिमतिए परकडे दिया गिण्हे।
ताहे मासियठाणातो आदेसा इमे होंति ॥४३४॥

पुव्वद्धं ताहे त्ति जाहे रुद्दघरादिसु ण लब्भति ताहे पलबभंगे, चरिमतिगे त्ति पलंबभगा चउरो पलंबसुत्ते वक्खाणिता, ते य इमे – भावओ अभिण्णं दव्वतो अभिण्णं, भावओ अभिण्णं दव्वओ भिण्णं, भावतो भिण्णं दव्वओ अभिण्णं, भावओ भिण्णं दव्वतो भिण्णं—इ। एतेसिं चउण्हं भंगाणं पुव्वं चरिमभगे गहण करेति, पच्छा ततियभगे। परकडे त्ति "परा" गृहस्था, "कडं" त्ति निष्ठिता पक्वा इत्यर्थः, तेसिं गिहत्थाणं कडा परकडा, ते दिया गेण्हंति ण रात्रावित्यर्थः। तत्थ पुव्वं जं भत्तमीसोवक्खड तं गेण्हति, पच्छा अमीसोव-

---

१ गा. ४३२।

क्खडं एतेसिं असतीए अणुवक्खडियं पि चरिमतइएसु भंगेसु गेण्हंति। एएसिं असतीते जयणा 'मासियट्ठाणा य त्ति'' – जाणि पिंडपत्थारे उद्दिसियादीणि मासलहुट्ठाणाणि तेसु सव्वेसु जहा लाभं जयइव्वं घडियव्वं गृहीतव्यमित्यर्थः। [1]''दुकोडि'' त्ति जं पुव्वभणियं तस्सेयाणि कमपत्तस्स अत्थफासणा कज्जति—जाहे मासलहुणा विसोहि कोडिए ण लब्भति ताहे विसोहिकोडीए चेव मासगुरुणा गेण्हंति। जाहे तेण वि ण लब्भति ताहे अविसोहिकोडीए मासगुरुणा गेण्हंति। एवं जया सव्वाणि मासगुरुठाणाणि अतीतो भवति ''ताहे मासि य'' गाहा पच्छद्धं। ताहे मासियट्ठाणाओ परतो आदेसा इमे होंति ''आदेसा'' विकप्पा इत्यर्थः ॥४३४॥

[2]''एसणमादि'' त्ति अस्याप्यादि शब्दस्य भाष्यकारो व्याख्यां करोति –

आदिग्गहणेणं उग्गमो य उप्पादणा य गहिताइं।
संजोगजा तु वुढ्ढी, दुगमादी जाव भिण्णो उ ॥४३५॥

पुव्वद्धं कंठं। ''संजोग'' त्ति अस्य व्याख्या—संजोगजा उ गाहापच्छद्धं गतार्थं। विशेषो व्याख्यायते – वुढ्ढी दुगमादि त्ति पणगेण समाणं दसमादी जाव भिण्णमासो ताव सव्वपदा चारेयव्वा। एवं जाव वीसाभिण्णमासो य चारेयव्वो। पच्छा एएसिं चेव तिगसंजोगो दट्ठव्वो, ततो पच्छा चउपंचसंजोगो वि कायव्वो ॥४३५॥

[3]''आदेसे चउलहुट्ठाण'' त्ति अस्य व्याख्या –

इंदिय सलिंग णाते, भयणा कम्मेण पढमबितियाणं।
भोयण कम्मे भयणा, विसोहि कोडीतरे दूरे ॥४३६॥

जाहे सव्वहा मासगुरुं अतीतो ताहे चउलहुयं अठाणं पत्तो। तत्थ जाणि पिंडपत्थारे उद्देसियकियगड-तीलणिमित्तं कोहादिसु य जाहे सव्वाणि चउलहुगाणि अतीतो ताहे इमे आदेसा भवंति इंदिए त्ति बेतिंदिया-जाव-पंचेंदिया घेप्पंति। सलिंगे त्ति रयहरण-मुहपोत्तिया-पडिग्गहादि धारणं सलिंगं भण्णति। णाते त्ति कं पि य विसए णज्जंति ''समणा भगवंतो जहा मंसं ण खायति,'' कम्हियि पुण ''एस मंसभक्खाभक्खविचार एव णत्थि''। भयणंति सेवणा। कम्मे त्ति अहाकम्मेत्यर्थः। पढमबितियाणं ति जे पुव्वं पलंबभंगा चउरो रइता तेसिं पढमबितियभंगाण इत्यर्थः। भोयणे त्ति अद्धाणकप्पो रात्रीभोजनमित्यर्थः। कम्मेण अहाकम्मेण, भयणा सेवणा, विसोहि त्ति अप्पं दुट्ठं, कोडिरिति अंसः विसुद्धाण कोडी ''विसोहिकोडी'' अप्पतरदोसदुट्ठा इत्यर्थः। इतरं णाम अहाकम्मं, दूरे त्ति विप्रकृष्टाध्वानेत्यर्थः। एस गाहा अक्खरत्थो ॥४३६॥

इदाणिं एतासे गाहाए अत्थपदेहिं फुडतरो अत्थो भण्णति –

''इंदिय-सलिंगणाए भयणा कम्मेण'' अस्य व्याख्या – बेइंदियाणं पिसियग्गहणे चउलहु भवति, अहाकम्मे चउगुरु भवति।

एत्थ कतरेण गेण्हउ? अतो भण्णति –

लिंगेण पिसितगहणे, णाते कम्मं वरं ण पिसितं तु।
वरमण्णाते पिसितं, ण तु कम्मं जीवघातो त्ति ॥४३७॥

णाए त्ति जत्थ णज्जंति जहा – ''एते समणा मंसं ण खायंति'' तत्थ सलिंगेण पिसिते घेप्पमाणे उड्डाहो भवति, अतो वरं अहोकम्मं ण पिसियं तु। ''वरमण्णाए'' पच्छद्धं, जत्थ पुण णज्जंति जहा – ''एते

२ गा. ४३१। ३ गा. ४३२। ४ गा. ४३२-

मंसं ण खायंति वा" तत्थ वरतरं पिसियं परिणिट्ठियं, ण अहाकम्मं सब्जो जीवोपघ तत्वात् । एवं पिसियग्गहणे दिट्ठे पुव्वं बेइंदियपिसितं घेतव्वं, तस्सासति तेइंदियाण, एवं असतीते-जाव-पंचेदियाण पिसितं ताव णेयव्वं । उक्कमेण पुण गेण्हंतस्स चउलहुआ पच्छित्तं भवति, ते य तवकालविसेसिया ।।४३७।। "इंदिय सलिंग णाते भयणा । पढमबितिताणं" त्ति अस्य व्याख्या – बेइदियायि पिसिते चउलहुअं, परित्तवणस्सइकाइयस्स पढम-बितितेसु भंगेसु चउलहुयं चेव ।

एत्थ कतमेण गेण्हउ ? अतो भण्णति –

एवं चिय पिसितेणं, पलंबभंगाण पढमबितियाणं ।
णिसिभत्तेण वि एवं, णाताणात भवे भयणा ।।४३८।।

एवं चेव अवशिष्टावधारणं कज्जति । जहा पिसियकम्माण गहणं दिट्ठं तहेव पिसियस्स पलंबभंगाण य पढम-बितियाणं दट्ठव्वं । च सद्दो अवधारणाविसेसप्पदरिसणे । को विसेसो ? भण्णति, पलबभगेसु पुव्वं बितियभगे गेण्हति पच्छा पढमभगे, जाहे परित्तेण ण लब्भति ताहे अणंतेण, एवं चेवग्गहणं करेति ।

"[1]इंदियसलिंगणाए भयणा – भोयणे" त्ति अस्य व्याख्या – बेइंदियाइपिसियग्गहणे चउलहुयं अद्धाणकप्पभोयणे चउगुरुय, एत्थ कतरेण घेत्तव्व ? अतो भण्णति – णिसिभत्तेण वि एवं पच्छद्धं । जहा पिसियकम्माण गहणं दिट्ठं एवं पिसिय-णिसिभत्ताण वि दट्ठव्वमिति । णाताणाते भवे भयणा, गतार्थ एवायं पादस्तथाप्युच्यते – जत्थ साहू णज्जंति जहा "मंसं ण खायंति" तत्थ वर अद्धाणकप्पो, ण पिसियं, जत्थ पुणो ण णज्जति तत्थ वरं पिसितं, ण णिसिभत्तं मूलगुणोपघातत्वात् गुरुतरप्रायश्चित्तत्वात् च । "भयणा" सेवणा एवं कुर्यादित्यर्थः । "इंदिय" त्ति अर्थ-पद व्याख्यात ।।४३८।।

इदाणिं "[2]भयणा कम्मेण पढमबितियाणं" अस्य व्याख्या – कम्मस्स य पलंबभंगाण य पढम-बितियाण भयणा कज्जति ।

अतो भण्णति –

एमेव य कम्मेण वि, भयणा भंगाण पढमबितियाणं ।
एमेवादेसदुगं, भंगाणं रात्तिभेत्तेणं ।।४३९।।

जहा पिसियकम्माइयाण णाताणातादेसदुगेण भयणा कया एवं कम्मपलंबभंगाण य आदेसदुएण भयणा कायव्वा । के पुण ते दो आदेसा ? भण्णति – मूलुत्तरगुणाणुपुव्वि पच्छित्ताणुपुव्वि य । उत्तरगुणोवघायमंगीकाऊण वरं अहाकम्मिय, ण बितियपढमभगेसु परित्ताणंतापलबा, मूलगुणोपघातत्वात् । अह पच्छित्ताणुपुव्विमगीकरेऊण तो वरतरं परित्तवणस्सति बितिय-पढमभंगा चउलहुगापत्तित्वात्, ण य कम्मं चउगुरुगापत्तित्वात् । अह परित्तवणस्सतिलाभाभावे साधारणग्गहणे प्राप्ते किं कम्म गेण्हउ ? किं साधारणवणस्सतिं बितिय-पढमे-भगेहिं गेण्हउ ? कम्मं गेण्हउ, उत्तरगुणोपघातित्वात् परोपघातित्वाच्च, ण साधारणं-दावर-कलीसु भगेसु मूलगुणोपघातित्वात् स्वय सद्योघातित्वाच्च ।

इदाणिं पढम-बितियाणं भंगाणं भोयणस्स भयणा भण्णति – एमेवादेसदुग पच्छद्धं । जहा कम्मपलंबाण आदेसदुग, एवं पलबरातीभोयणाण य आदेसदुग कायव्वं । पलंबभगेसु चउलहुयं रातीभोयणे

[1] गा. ४३ ६ । [2] गा. ४३६ ।

चउगुरु, दोवि एते मूलगुणोपघायगा तहावि वरतरं श्रद्धाणकप्पो परोपघातत्वात्, ण य पलंवभंगा सव्वघा-तत्वात् ॥४३९॥

"[१]भोयण कम्मे भयणा" अस्य व्याख्या – अहाकम्मीए चउगुरु, रातीभोयणे वि चउगुरु, एत्थं पण एगं उत्तरगुणोवघातियं एगं च मूलगुणोवघातियं, कयवं सेयतरं ? अतो भण्णति –

कम्मस्स भोयणस्स य, कम्मं सेयं ण भोयणं रातो ।
कंमं व सव्वघातो, ण तु भत्तं तो वरं भत्तं ॥४४०॥

'कम्मस्स' त्ति अहाकम्मियस्स, 'भोयणस्स' त्ति । रातीभोयणं श्रद्धाणकप्प त्ति वुत्तं भवति । दोण्ह वि कम्मभोयणाण विज्जमाणाणं कतरं भोयव्वं ? भण्णति–कम्मं सेयं, ण भोयणं रातो मूलगुणोपघातित्वादित्यर्थः ।

अहवान्येन प्रकारेणाभिधीयते – कम्मं पच्छद्धं । "कम्म" मिति अहाकम्मियं तं सव्वजीवो-पघातित्वात्, अत्यंतदुट्ठं, ण उ भत्तं ति "न" इति प्रतिषेधे, "भत्तं" ति रात्रीभोजनं श्रद्धानकप्पो, तु सद्दो अवधारणे, किमवधारयति ? सव्वजीवोपघातकं ण भवतीत्येतदवधारयति । तो इति तस्मात्कारणात् वरं प्रधानं रात्रीभोजनं नाधाकम्मिकेत्यर्थः ॥४४०॥

"[२]विसोहिकोडि" त्ति अस्य व्याख्या क्रियते – जइ श्रद्धाणकप्पो अहाकम्मियो तो वरं आधाकम्मियं, ण भोयणं दु-दोषदुष्टत्वात् । अह श्रद्धाणकप्पो विसोहिकोडिपडुप्पण्णो तो वरं स एव, ण कम्मं सव्वघातित्वात् ।

अहवा – श्रद्धाणकप्पो सकृतघातित्वात् वरतरो, ण कम्मं तीक्ष्णघातित्वात् –

अहवा – श्रद्धाणकप्पो चिरकालोपघातित्वात् वरतरः, ण सव्वकालोपघातित्वात् कर्म –

"[३]इतरं दूरे" त्ति अस्य व्याख्या –

अह दूरं गंतव्वं, तो कम्मं वरतरं ण णिसिभत्तं ।
अब्भासे णिसिभत्तं, सुद्धमसुद्धं व ण तु कम्मं ॥४४१॥

अहेत्ययमानंतर्ये विकल्पे वा द्रष्टव्यः । दूरमद्धाणं गंतव्वं तंमि दूरमद्धाणे वरतरं आधाकम्म ण णिसिभत्तं । कहं पुण आधाकम्मं वरतरं ण णिसिभत्तं ? अतो भण्णति—दीहद्धाणपडिवण्णयाण कोइ दाणसड्ढो भणेज्ज "अहं" भे दिणे दिणे भत्तं दलयामि तं भोयव्वं, ण य वत्तव्वं जह "अकप्पं" त्ति । श्रद्धाणकप्पो अत्थि त्ति काउं पडिसिद्धं अकप्पियं च पइट्ठावितं" । ततो पच्छा दीहश्रद्धाणे पडिवण्णया श्रद्धाणकप्पे णिट्ठते किं करेउ ? अतो भण्णति "दीहमद्धाणे वरं आहाकम्मं, ण णिसिभत्तं"। "अब्भासे पच्छद्धं अब्भासे अब्भासगमणे न दूरमध्वानेत्यर्थः, तत्थ वरं श्रद्धाणकप्पो । सो पुण श्रद्धाणकप्पो सुद्धो असुद्धो वा, "सुद्धो" बातालीसदोस-वज्जितो, "असुद्धो" अण्णतरदोसजुत्तो, ण य कम्मं सव्वजीवोपघातत्वात् ॥४४१॥

एसेवत्थो गाहाए पट्ठतरो कज्जति, जतो भणति –

जति वि य विसोधिकोडी कम्मं वा तं हवेज्ज णिसिभत्तं ।
वरमब्भासं तं चिय ण य कम्ममभिक्खजीवघातो ॥४४२॥

१, ४३६ । २, ४३६ गा./४ । ३, ४३६ गा./४ ।

जइ वि य सो अद्धाणकप्पो विसोहिकोडीए वा गहितो—अविसोहिकोडीए वा अहाकम्मादि गहितो तहा वि अब्भासगमणे वरं सो च्चिय ण य अहाकम्मियं, अभिक्खजीवोपघातित्वात् ॥४४२॥

"एसणमादी भिण्णे" त्ति जा एस गाहा वक्खाणिता एसा भाष्यकारसत्का इयं तु भद्रबाहुस्वामिकृता गतार्था एव द्रष्टव्या –

एसणमादी रुद्दादि, विसोधी मूल इंदियविघाए ।
परकडदिवसे लहुओ, तव्विवरीए सयंकरणं ॥४४३॥

अहवा – पुव्वभणियं तु ज भण्णति तत्थ कारणगाहा । पुव्व भणिओ वि अत्थो विसेसोवलंभ-णिमित्तं भण्णति "एसणमादी रुद्दाइ त्ति" गतार्थं । विसोहि त्ति विसोहिकोडी य जहा घेप्पंति तहाभिहितमेव । मूले त्ति पलंबभगा सूतिता जम्हा ते मूलगुणोवघाती । इंदियविघाते त्ति "इंदिए" त्ति बेइंदियादी, "विघाए" त्ति विणासो मारणमित्यर्थः । बेइंदियादीणं विघाते मंसं भवति ।

अहवा – 'इंदियविभागे" त्ति पाढंतर, बेइंदियमंसं-जाव-पंचेंदियमंसं—एस विभागो । एतेसिं पलंबपोग्गलाणं कतर श्रेयतरं ? उत्तरं पूर्ववत् । परकडदिवसे पच्छद्धं, "परा" गृहस्था, तेहिं रुद्दादिघरेसु "कडं" स्वाभिप्रायेण स्थापितं तं दिवसतो गेण्हमाणस्स मासलहुओ भवति । तव्विवरीयं णाम जदा परेहिं ण कतं तदा सतं करणं, 'सयंकरणं" णाम कारावणमित्यर्थ. । एवं जत्थ अणुमतिकारावणकरणाणि जुज्जंति तत्थ तत्थ योजयितव्याणीत्यर्थ. ॥४४३॥

इदाणिं सुद्धासुद्धगहणे पलंबाहारविही भण्णति –

अविसुद्ध पलंबं वा वीसुं गेण्हितरे लद्धे तं णिसिरे ।
अण्णेहिं वा वि लद्धे अणुवट्ठाविताण वा दिंति ॥४४४॥

अविसुद्धपलंबा विसुद्धपलंबा य दो वि जत्थ लब्भंति तत्थ "अविसुद्धा" वीसुं घेतव्वा । "इतरे" णाम विसुद्धपलंबा तेसु पव्वतेसु लद्धेसु तं णिसिरेंति अविसुद्धपलवा परित्यजत्यर्थः । अण्णेहिं पच्छद्ध, अण्णएहिं साहुसंघाडएहिं उग्गमादिसुद्धा पज्जत्ता ण लद्धा अण्णेहिं य साहुसंघाडएहिं सुद्धा अप्पणो पज्जत्तिया लद्धा ततो जे उग्गमादिअसुद्धा लद्धा ते अणुवट्ठावियसाहूण दिज्जंति, इतरे सुद्धाणि भुंजति ॥४४४॥

इदाणिं अविसुद्धग्गहणे जयणं पडुच्च लक्खणं भण्णति – पच्छित्ताणुपुव्वि वा पडुच्च भण्णति, मूलुत्तरगुणाणं वा के पुव्व पडिसेवियव्वा ?

अस्य ज्ञापनार्थमिदमुच्यते –

बायालीसं दोसे हिययपडे सुतकरेण विरएत्ता ।
पणगादी गुरु अंते पुव्वप्पतरे भयसु दोसे ॥४४५॥

सोलस उग्गम दोसा, सोलस उप्पायणा दोसा, दस एसणा दोसा, एते सव्वे समुदिता बातालीसं भवंति । एते सुयकरणे "सुय" श्रुतज्ञानं, "करो" हस्तः, तेण सुतमतेण करेण, हिययपडे वियरइत्ता हृदय एव पट· "हृदयपटः;" विरएत्ता पत्थारेत्ता, किं कायव्वं ? भणाति – जत्थ अप्पतर पायच्छित्तं सो पुव्वं दोसो भतियव्वो सेवितव्येत्यर्थः । तं च. पच्छित्त पिंडपत्थारे भणितं "पणगादी चउगुरुगमते" त्यर्थः ॥४४५॥

जति पुण एताए जयणाए जयंतो दिवसतो भत्तपाणं ण लभति ताहे राओ वि जयणाए घेतव्व ।

अजयणाए गेण्हंतस्स इमं पच्छित्तं भवति -

लिंगेण कालियाए, मीसाणं कालियाए गुरु लिंगे ।
सुद्धाण दियाऽलिंगे, अलाभए दोसु वी तरणं ॥४४६॥

'लिंगेणं' ति सलिंगेण, 'कालियाते' रानीते, जइ गेण्हंति चउगुरुगं । 'मीसाणं' ति अगीयत्थेहिं मीसा जता रातो सलिंगेण वा परलिंगेण वा गेण्हंति ततो चउगुरुगं । सुद्धाणं ति "सुद्धा" गीयत्था एव केवला, जति ते दिया परलिंगेण गेण्हति ततो चउगुरु । अलाभए त्ति सव्वहा अलब्भमाणे, दोसुवि त्ति फासु-अफासुयत्ते वा जहालाभेण अप्पणो गच्छस्स वा तरणं करेति, "तरणं" णाम णित्थारणं ॥४४६॥

एसेव गाहत्थो व्याख्यायते -

गिहिणात पिसीय लिंगे, अगीतणाता णिसिं तदुभए वी ।
अग्गीतगिहीणाते, दिवसओ गुरुगा तु परलिंगे ॥४४७॥

"[1]लिंगेण कालियाए' त्ति अस्य व्याख्या—गिहिणादि त्ति जत्थ गिहत्था जाणंति जहा साहूणं ण वट्टति राम्रो भुंजिउं तत्थ जति राम्रो सलिंगेण गेण्हंति चउगुरुगं । पिसित्ते त्ति जत्थ गिहत्था जाणंति जहा साहूणं ण वट्टति पिसियं घेत्तुं भुत्तुं च तत्थ जइ सलिंगेण गेण्हति चउगुरुगं ।

"[2]मीसाणं कालिगाए गुरु लिंगे" त्ति अस्य व्याख्या - अगीयणाया णिसिं तदुभए वि "अगीता" मृगा, तेहिं णाता जहा "एतेहिं एयं भत्तपाणं रातो गहितं," तदुभएणं ति सलिंगेण वा परलिंगेण वा, तहा वि चउगुरुं । अगीयत्थ पच्छद्धं, अगीयत्थसाहूहिं ण तं, गिहत्थेहिं वा णातं जहा एतेहिं परलिंगेण गिहितं, एत्थ वि चउगुरुं, दिवसतो वि, किमंग पुण रातो ।

अहवा "दिवसओ" त्ति सुद्धा गीयत्था जति दिवसओ सलिंगेण लब्भमाणे परलिंगेण गेण्हंति तो चउगुरुअं ॥४४७॥ जं एयं पच्छिद्धं भणितं एयं कज्जे अजयणाकारिस्स भणियं ।

जतो भण्णति - ,

अजतणकारिस्सेवं कज्जे परदव्वलिंगकारिस्स ।
गुरुगा मूलमकज्जे, परलिंगं सेवमाणस्स ॥४४८॥

अजयणं जो करेति सो भण्णति - "अजयणकारी" तस्स अजयणकारिस्स अजयणाए परदव्वलिंग करेंतस्स चउगुरुगा पच्छित्तं भणियं । जो पुण अकारणे परदव्वलिंगं सेवति करोतीत्यर्थः तस्स मूलं पच्छित्तं भवति ॥४४८॥

एतेसिं असतीए ताए गहणं तमस्सतीए तु ।
लिंगदुग णातणाते गीयमगीतेहिं भयणा तु ॥४४९॥
(अस्याश्चूर्णिर्नास्ति)

"[3]दोसु वि" त्ति अस्य व्याख्या -

फासुगपरित्तमूले, दिवसतो लिंगे विसोधिकोडी य ।
सप्पडिवक्खा एते, णेतव्वा आणुपुव्वीए ॥४५०॥

---

१ गा. ४४६ । २ गा० ४४६ । ३ गा. ४४६ ।

फासुयं ववगयजीवियं, परित्तं संखेयासंखेय-जीव, मुलेत्ति मूलगुणा मूलपलवा वा, दिवसतो त्ति उदिते जाव अणत्थंते, लिंगे त्ति सलिंगेण, विसोहिकोडि त्ति अप्पतरदोसा। सपडिवक्खा य पच्छद्धं कठं। एते त्ति फासुगादी पदा सवंज्झति। फासुगेण वा अफासुगेण वा अप्पणो गच्छस्स वा तरणं करेति। एवं परित्तेण वा अणंतेण वा, मूलगुणावराह-पडिसेवणाए उत्तरगुणावराह-पडिसेवणाए वा।

अहवा – मूलपलवेसु वा अग्गपलवेसु वा, दिवसतो वा रातीए वा, सलिंगेण वा परलिंगेण वा, विसोहिकोडीए वा अविसोहिकोडीए वा, जहा तरति तथा करोतीत्यर्थः। एस अद्धाणे असथरणे गहण-जयणा भणिया ॥४५०॥

इदाणिं असंथरणे चेव समगजोजणा कज्जति –

अद्धाणमसंथरणे, चउसु वि भंगेसु होइ जयणा तु।
दोसु अगीते जतणा, दोसु तु सब्भावपरिकहणा ॥४५१॥

अद्धाणपडिवण्णा असंथरमाणा चउसु वि रातीभोयणभगेसु जयणं करेति। का पुण जयणा ? भण्णति – पुव्वं पढमभगेण पच्छा ततियभगे, ततो वीयभगे, ततो चरिमे। दोसु त्ति पढमततिएसु भंगेसु अगीयत्थातो जयणा कज्जति, जहा अगीयत्थो ण जाणति तहा घेतव्वं। दोसु त्ति बितियचरमेसु भंगेसु अगीयत्थाणं सब्भावो परिकहिज्जति। 'परिकहणा" णाम पण्णवणा, ते अगीता एवं पण्णविज्जंति, जहा "अप्पं संजमं चएउं वहुतरो सजमो गहेयव्वो, जहा वणिओ – अप्पं दविणं चइउ बहुतरं लाभं गेण्हति एवं तुमं पि करेहिं।" भणियं च।

"सव्वत्थ संजमं संजमाओ अप्पाणमेव रक्खंतो।
मुच्चति अतिवाताओ पुणो विसोही ण ताविरती" ॥

भण्णइ य जहा – "तुमं जीवतो एयं पच्छित्तेण विसोहेहिसि, अण्णं च संजमं काहिसि"। एवं च पण्णवेउं सो वि गेण्हाविज्जति। अद्धाणेत्ति दारं गत॥४५१॥

इयाणिं "[1]दुल्लभे" त्ति दार –

दुल्लभदव्वे पढमो, हवेज्ज भंगो परिण्णचउरो वि।
ओमे वि असंथरणे, अध अद्धाणे तहा चउरो ॥४५२॥

दुल्लभदव्वं सतपाकसहस्सपागादि वा त्रिकटुकादि वा; तं च पत्ते कारणे ण लब्भिहिति त्ति काउं अणागयं च घेत्तुं सारक्खणा कायव्वा, पच्छा समुप्पण्णे कारणे तं दिया भुंजति। एस चेव प्रायसो पढमभंगो दुल्लभदव्वे संभवतीत्यर्थ.। दुल्लभे त्ति गयं।

इदाणिं "उत्तमट्ठे" त्ति दारं –

परिण्णचउरोवि त्ति "परिण्ण" अणसणं, तंमि अणसणे "चउरो" वि रातीभोयणभंगा समाहिहेउं घडावेयव्वा। उत्तमट्ठे त्ति दारं गयं।

इदाणिं "ओमे" त्ति दारं –

ओमे वि पच्छद्धं। "ओमं" दुभिक्खं, तंमि दुब्भिक्खे असंथरता जहा अद्धाण पडिवण्णा चउसु रातीभोयणभगेसु गहणं करेंति तहा ओमंमि वि। ओमे त्ति दारं गतं ॥४५२॥

१ गा. ४१९।

इदाणिं "गच्छाणुकंपया". "सुत्तत्थविसारयायरिए" एते दो वि दारा जुगवं भण्णंति -

गच्छाणुकंपणट्ठा, सुत्तत्थविसारए य आयरिए ।
तणुसाहारणहेउं, समाहिहेउं तु चउरो वि ॥४५३॥

गच्छो सबालवुड्ढो, तस्स अणुकंपणहेउं, सुत्तं च अत्थो य "सुत्तत्थं" तंमि सुत्तत्थे "विसारतो" विनिश्चितः [1]जानकेत्यर्थः तस्स विसारयायरिस्स गच्छस्स वा तणुसाहारणहेउं, "तणू" सरीरं, "साहारणं" णाम बलावट्ठंभकरणं, "हेउं" कारणं, बलावष्टंभकारणायेत्यर्थः ।

गणस्स वा आयरियस्स वा असमाधाने समुत्पन्ने समाधिहेउं, समाधिकारणाय, चउरो वि रातीभोयणभंगा सेव्या इत्यर्थः ॥४५३॥

कहं पुण गच्छस्स आयरियस्स वा अट्ठाय चउभंगसंभवो भवति ? भण्णति -

संणिहिमादी पढमो, बितिओ अवरण्हसंखडीए उ ।
उस्सूरभिक्खहिंडण, भुंजंताणेव अत्थमितो ॥४५४॥

सन्निहाणं सन्निही, "सं" इत्ययमुपसर्गः 'णिही" ठावणं, सन्निही, सा य उप्पण्णे कारणे "तं कारणं साधयिस्सती" ति ठाविज्जति । सा य घृतादिका, तं दिया घेत्तुं दिया य दायव्वं - एस पढमभंगो एवं संभवति । बितियभंगो अवरण्हसंखडीए, जत्थ वा संणिवेसे उस्सूरे भिक्खा य आहिंडिज्जइ तत्थ जाव भुंजति ताव अत्थंतं, एवं बितियभंगो - दिया गहियं रातो भुत्तं ॥४५४॥

ततियचरिमभंगाण पुण इमो संभवो -

वइगाति भिक्खु भावित, सलिंगेणं तु ततियओ भंगो ।
चरिमो तु णिसि वलीए, दिय पेसण रत्ति भोयिसु वा ॥४५५॥

वतिता गोउलं, "आदि" ग्गहणातो अण्णत्थ वा जत्थ अणुदिए आदिच्चे वेला भवति, सा वइया जइ भिक्खूहिं अरुणोदए भिक्खग्गहणेण भाविता तो सलिंगेण चेव गेण्हति, इतरहा परलिंगेण वि, पच्छा उदिते आदिच्चे भुंजति । एस ततितो भंगो । चउत्थभंगो णिसि राती, बलि असिवादिप्पसमणणिमित्त कूरो कज्जति, सा वली जत्थ राओ कज्जति तत्थ रातो चेव घेत्तु अणहियासा विणस्सणभया वा रातो चेव भुंजंति, "णिसि वलीए" वा बला भुंजाविज्जंति रण्णा । एस चरिमभंगो ।

अहवा - एस चरिमभंगो अण्णहा भण्णति - दिया पेसण त्ति आगाढकारणे आयरिएण कोति साहू पेसिओ, सो दिवसभुक्खितो रातो पच्चागओ, ताहे अणहियासस्स जाणि रातीए भुंजंति कुलाणि तेसु घेत्तुं रातो चेव दिज्जति । "वा" विकल्पे, दिवा भोजिकुलेष्वपि दीयते इत्यर्थः ।

अहवा - रत्तिभोज्जिसु व त्ति जत्थ जणवतो राओ भुंजति, जहा उत्तरावहे, तत्थ साहवो कारण-ट्ठिता चरिमभंगं सफलं करेंति । गया रातीभोयणस्स कप्पिया पडिसेवणा, गया राइभोयण पडिसेवणा ॥४१२-४५५॥ गता य मूलगुण-पडिसेवणा इति ॥४४५-४५५॥

इदाणिं उत्तरगुणपडिसेवणा भण्णति -

ते उत्तरगुणा पिंडविसोहादओ अणेगविहा । तत्थ पिंडे ताव दप्पियं कप्पियं च पडिसेवणं भण्णति ।

---

१ ज्ञातेत्यर्थः ।

तत्थ दप्पिया इमेहिं दारेहिं अणुगंतव्वा –

पिंडे उग्गम उप्पादणेसण संजोयणा पमाणे य ।
इंगाल धूम कारण, अट्ठविहा पिंडणिज्जुत्ती ॥४५६॥ दा०गा०॥

एतीए गाहाए वक्खाणातीदेसणिमित्तं भण्णति –

पिंडस्स परूवणता पच्छित्तं चेव जत्थ जं होति ।
आहारोवधिसेज्जा, एक्केक्के अट्ठ ठाणाइं ॥४५७॥

पिंडस्स परूवणा असेसा जहा 'पिंडणिज्जुत्तीए" तहा कायव्वा । पच्छित्तं च जत्थ जत्थ अवराहे जं तं जहा [1]कप्पपेढियाए वक्खमाणं तहा दट्ठव्वं । आहारो त्ति एस आहारपिंडो एव अट्ठहिं दारेहिं वक्खाणितो । एवं उवहीए सेज्जाते त एक्केक्के अट्ठ उग्गमादिदारा दट्ठव्वा ।

उवहीए – "उग्गम उप्पायण, एसणा य संजोयणा पमाणे य ।
इंगाल धूम कारण अट्ठविहा उवहिणिज्जुत्ती ॥"

सेज्जाए – "उग्गम उप्पायण, एसणे य संजोयणा पमाणे य ।
इंगाल-धूम-कारण अट्ठविहा सेज्जणिज्जुत्ती ॥"
एस दप्पिया पडिसेवणा गता ॥४५७॥

इदाणिं कप्पिया भण्णति –

असिवे ओमोदरिए, रायदुट्ठे भये य गेलण्णे ।
अद्धाणरोधए वा, कप्पिया तीसु वी जतणा ॥४५८॥

असिवं उद्दाइयाए अभिद्दुतं दुम्रोमं दुब्भिक्खं, राया वा पदुट्ठो, बोहिगादिभएण वा णट्ठा, गिलाणस्स वा, अद्धाणपडिवण्णगा वा, णगरादिउवरोहे वा ट्ठिता । तीसुवि त्ति आहार-उवहि-सेज्जासु जयणा इति पणगहाणीए-जाव-चउगुरुएण वि गेण्हमाणाणा कप्पिया पडिसेवणा भवतीत्यर्थः ॥४५८॥

चोदगाह – "मूलगुणउत्तरगुणेसु पुव्वं पडिसेहो भणितो ततो पच्छा कारणे पडिसेहस्सेव अणुण्णा भणिता । तो जा सा अणुण्णा किमेगंतेण सेवणिज्जा उत णे ति" ? ।

आयरियाह –

कारणपडिसेवा वि य, सावज्जा णिच्छए अकरणिज्जा ।
बहुसो विचारइत्ता, अधारणिज्जेसु अत्थेसु ॥४५९॥

कारणं असिवादी तम्मि असिवादिकारणे पत्ते जा "कारणपडिसेवा" सा सावज्जा, "सावज्जा" णाम बंधात्मिका सा णिच्छएण अकरणिज्जा, "णिच्छओ" णाम परमार्थः, परमत्थओ अकरणीया सा, अविशब्दात् किमंग पुण अकारणपडिसेवा ।

एवं आयरिएणाभिहिए चोदगाह – "जइ सा अणुण्णा पडिसेवा णिच्छएण अकरणिज्जा तो तीए अणुण्णं प्रति नैरर्थक्यं प्राप्नोति"।

---

१ बृह० पीठिका गाथा—५३३ से ५४० तक ।

आचार्याह – न नैरर्थक्यं । कहं ? भण्णति –

वहुसो पच्छद्धं । "वहुसो" अणेगसो, वियारइत्ता वियारेऊण अकर्तव्या येऽर्थाः ते अवहारणीया असिवादिकारणेसु उप्पण्णेसु जइ अण्णो णत्थि णाणातिसंवणोवाओ तो, वियारेऊण [1]अप्पवहुत्तं अधारणिज्जेसु अत्थेसु प्रवर्तत्तिव्यमित्यर्थः ।

अहवा – धारिज्जंतीति धारणिज्जा । के ते ? भण्णंति, अत्था, ते य णाणदंसणचरित्ता, तेसु अवधारणिज्जेसु पत्तेसुं अल्पवहुत्तं वहुसो विचारइता प्रवर्तितव्यमित्यर्थः ॥४५६॥

पुनरप्याह चोदक – "णणु कप्पिया पडिसेवं अणुण्णायं असेवंतस्स आणाभंगो भवति ?"

आचार्याह –

जति वि य समणुण्णाता, तह वि य दोसो ण वज्जणे दिट्ठो ।
दढधम्मता हु एवं, णाभिक्खणिसेव-णिद्दयता ॥४६०॥

जइ वि अकप्पियपडिसेवणा अणुण्णाता तहा वि वज्जणे आणाभंगदोसो न भवतीत्यर्थः । अणुण्णायं पि अपडिसेवंतस्य अयं चान्यो गुणो "दढधम्मया" पच्छद्धं । ण य अभिक्खणिसेवदोसा भवति, ण य जीवेसु णिद्दया भवति । तम्हा कप्पियपडिसेवा वि सहसादेव णो पडिसेवेज्जा ॥४६०॥

सा पुण कतमेसु पडिसेवियत्थेसु कप्पिया पडिसेवणा भवति ? भण्णति –

जे सुत्ते अवराहा, पडिकुट्ठा ओहओ य सुत्तत्थे ।
कप्पंत्ति कप्पियपदे, मूलगुणे उत्तरगुणे य ॥४६१॥

"जे सुत्ते अवराहा पडिकुट्ठा" अस्य व्याख्या –

हत्थादिवातणंतं, सुत्तं ओहो तु पेढिया होति ।
विधिसुत्तं वा ओहो, जं वा ओहे समोतरति ॥४६२॥

"जे भिक्खू हत्थकम्मं करेति करेंतं वा सातिज्जति," एयं हत्थकम्मसुत्तं भण्णति । एयं सुत्तं आदिकाउं जाव एगूणवीसइमस्स अंते वायणासुत्तं । एतेसु सुत्तेसु जं पडिसिद्धं । "[1]ओहतो सुत्तत्थे" त्ति अस्य व्याख्या – ओहो तु पेढिया होति, ओहो निसीहपेढिया, तत्थ जे गाहासुत्तेण वा अत्थेण वा अत्था पडिसेविता ।

अहवा – विहिसुत्तं वा सुत्तं भण्णति, तं च सामातियादिविधिसुत्तं भण्णति, तत्थ जे अत्था पडिसिद्धा ।

अहवा – जं वा ओहे समोयरइ त्ति सो ओहो भण्णति – उस्सग्गो ओहो त्ति वुत्तं भवति । तत्थ सव्वं कालियसुत्तं ओयरति । तं सव्वं ओहो भण्णति । एयंमि ओहे जे अत्था सुत्तेण वा अत्थेण वा "पडिकुट्ठा" णिवारिया इत्यर्थः, ते "कप्पंति" कप्पियाए, ते अववायपदेत्यर्थः । जे ते कप्पंति अववायपदेण ते "मूलगुणा वा उत्तरगुणा वा" दप्प-कप्प पडिसेवाणं समासओ वक्खाणं भणियं ॥४६१॥४६२॥

---

१ गा० ४६१ ।

इदाणिं समेया भण्णंति –

दप्प[1]-अकप्प[2]-णिरालंब[3]-चियत्तो[4] अप्पसत्थ[5]-वीसत्थे[6] ।

अपरिच्छ[7] अकडयोगी[8] अणाणुतावी[9] य णिस्संके[10] ॥४६३॥ द्वा. गा.

तत्थ दप्पो ताव भणामि एवं गाहा समोयारिज्जति –

अहवा – अन्येन प्रकारेणावतारः । दप्पिया कप्पिया पडिसेवणा भणिता ।

अहवा – अन्येन प्रकारेण दप्पकप्पपडिसेवाणं विभागो भण्णति – "दप्प अकप्प" दारगाहा, दस दारा ।

दप्पे त्ति अस्य व्याख्या –

वायामवग्गणादी, णिक्कारणधावणं तु दप्पो तु ।

कायापरिणयगहणं अकप्पो जं वा अगीतेणं ॥४६४॥

वायामो जहा लगुडिभमाडणं, उवलयकड्ढणं, वग्गणं मल्लवत् । "आदि" सद्दग्गहणा बाहुजुद्धकरणं चीवरडेवणं वा धावणं खड्डयप्पवाण । दप्पो गतो ।

अकप्पो त्ति दारं । "काया" पच्छद्धं, काय त्ति पुढवादी, तेसि अपरिणयाणं गहणं करेति, तेहिं वा कायेहिं हत्थमत्तादी संसट्ठा, तेहि य हत्थमत्तेहिं अपरिणएहि भिक्ख गेण्हति, जहा "उदउल्ला, ससणिद्धा, ससरक्खे" त्यादि, एस अकप्पो भण्णति । जं वा अगीयत्थेण आहार-उवहि-सेज्जादी उप्पादियं तं परिभुंजंतस्स अकप्पो भवति । अकप्पो गओ ॥४६४॥

निरालंबणे त्ति अस्य व्याख्या – सालंबसेवापरिज्ञाने सति णिरालंबसेवनावबोधो भवतीति कृत्वा सालंबसेवा पूर्वं व्याख्यायते –

संसारगड्डपडितो, णाणादवलंबितुं समारुहति ।

मोक्खतडं जध पुरिसो, वल्लिवितारणेण विसमा उ ॥४६५॥

संसारो चउगतिओ, गड्डा खड्डा, दव्वे अगडादि, भावे संसार एव गड्डा संसारगड्डा, ताए पडितो णाणाति अवलंबिउं समुत्तरति । "आदि" गहणातो दंसणचरित्ता । समारुहति तडं उत्तरतीत्यर्थः । मोक्खो त्ति [1]कृत्स्नकर्मक्षयात् मोक्ष. । तडं तीरं । जहा जेणप्पगारेण, वल्लि त्ति कोसंबवल्लिमादी, वियाणं णामं अणेगाणं संघातो ।

अहवा – वल्लिरेव वियाणं वितण्णत इति वियाणं, तेण वल्लिविताणेण जहा पुरिसो विसमातो समुत्तरति तहा णाणादिणा संसारगड्डातो मोक्षतड उत्तरतीत्यर्थः ॥४६५॥ ताणि णाणादीणि अवलंबिउं अकप्पियं पडिसेवति ।

जतो भण्णति –

णाणादी परिवुड्ढी ण भविस्सति मे असेवते बितियं ।

तेसिं पसंधणट्ठा सालंबणिसेवणा एसा ॥४६६॥

णाणदंसणचरित्ताण "वुड्ढी." फाती ण भविस्सति मे, तो तेसिं णाणादीण संधणट्ठाते, "संधणा" णाम ग्रहणं गुणन अतोऽसेवनादित्यर्थं, "बितित" अववातपदं, तं सेवति । एसा सालंबसेवना भवतीत्यर्थः ॥४६६॥

---

१ तत्त्वा० अ० १० सू०—कृत्स्नकर्मक्षयो मोक्षः ।

इमा णिरालंवना –

णिक्कारणपडिसेवा, अपसत्थालंवणा य जा सेवा ।
अमुगेण वि आयरियं, को दोसो वा णिरालंवा ॥४६७॥

अकारणे च्चेव पडिसेवति, एसा निरालंवा । अप्पसत्थं वा आलंवणं काउं पडिसेवति, एसा दिन्नि णिरालंवा । किं पुण तं अप्पसत्थं आलंवनं ? भण्णति – "अमुगेण वि आयरियं" अहं आयरामि, को दोसो वा इति भणिऊण आसेवति, जहा गंडं पिलागं वा परिपेल्लेज्जा मुहुत्तगं, एवं विण्णवणित्थीसु दोसो तत्थ कतो सिया, एवमादिया णिरालंवसेवादित्यर्थः । णिरालंवणे त्ति गतं ॥४६७॥

इदाणीं चियत्ते त्ति दारं –

जं सेवितं तु वितियं गेलण्णाइसु असंथरंतेणं ।
हट्ठो वि पुणो तं, चिय चियत्तकिच्चो णिसेवंतो ॥४६८॥

जं वितियपदेण अववायपदेण णिसेवितं गिलाणादिकारणेण असंथरे वा, पुणो तं चेव हट्ठो समत्थो वि होउं णिसेवंतो चियत्तकिच्चो भवति । "किच्चं" करणिज्जं, त्यक्तं कृत्यं येन स भवति त्यक्तकृत्यः – त्यक्तचारित्रेत्यर्थः । चियत्ते त्ति गतं ॥४६८॥

इदाणिं अप्पसत्थे त्ति दारं –

अप्पसत्थभावेण पडिसेवति त्ति वुत्तं भवति । जहा –

वलवण्णरूवहेतुं फासुयभोई वि होइ अप्पसत्थो ।
किं पुण जो अविसुद्धं णिसेवते वण्णमादट्ठा ॥४६९॥

"वलं" मम भविस्सति त्ति मंसरसमादि आहारे ति, सरीरस्स वा "वण्णो" भविस्सति त्ति घृतातिपाणं करेति, वलवण्णेहिं "रूव" भवती ति एतान्येव आहारयति, "हेउं" कारणं, "फासुग" गय-जीवियं, "अवि" अत्थसंभावणे, किं संभावयति ? "एसो वि ताव फासुग-भोती अप्पसत्थपडिसेवी भवति, "किं पुण" पच्छद्धं ? अविसुद्धं आहाकम्मादी, "वण्णो" "आदि" गहणातो रूववला घेप्पंति। अप्पसत्थे त्ति गतं ॥४६९॥

इदाणिं वीसत्थे त्ति दारं –

सेवंतो तु अकिच्चं लोए लोउत्तरंमि वि विरुद्धं ।
परपक्खे सपक्खे वा वीसत्था सेवगमलज्जे ॥४७०॥

सेवंतो प्रतिसेवंतो, अकिच्चं पाणादिवायादि ।

अहवा – अकिच्चं जं लोअलोउत्तरविरुद्धं, तं पडिसेवंतो सपक्खपरपक्खातो ण लज्जति । "सपक्खो" सावगादि, "परपक्खो" मिथ्यादृष्टयः । एसा वीसत्था सेवणा इत्यर्थः । वीसत्थे त्ति गतं ॥४७०॥

इदाणिं अपरिच्छिय त्ति दारं –

अपरिक्खिउमायवए णिसेवमाणो तु होति अपरिच्छं ।
तिगुणं जोगमकातुं वितियासेवी अकडजोगी ॥४७१॥

"अपरिक्खिउ" पुव्वद्धं । अपरिक्खिउं अनालोच्य, "आयो" लाभ प्राप्तिरित्यर्थः, "व्ययो" लब्धस्य प्रणाशः, ते य आयव्यये अनालोचितं पडिसेवमाणस्स अपरिक्ख पडिसेवणा भवतीत्यर्थः । अपरिच्छ त्ति दारं गतं ।

अकडजोग त्ति दारं –

"तिगुण" पच्छद्धं । ति त्ति संखा, तिण्णि गुणीओ तिगुणं, असंथरातीसु तिण्णिवारा एसणियं अण्णेसिउं जता ततियवाराए वि ण लब्भति तदा चउत्थपरिवाडीए अणेसणिय घेतव्वं । एवं तिगुण जोगमकाऊण, "जोगो" व्यापारः, बितियवाराए चेव अणेसणीयं गेण्हति जो सो अकडजोगी भण्णति । अकडजोगि त्ति गतं ॥४७१॥

अणाणुतावि त्ति दारं –

बितियपदे जो तु परं, तावेत्ता णाणुतप्पते पच्छा ।
सो होति अणणुतावी, किं पुण दप्पेण सेवेत्ता ॥४७२॥

"बितियं" अववातपदं तेण अववातपदेण "जो" साहू "परा पुढविकाया ते जो सघट्टणपरितावण-उद्दवणेण वा तावणं करेत्ता पच्छा णाणुतप्पति, जहा "हा दुट्ठुकय कारगगाहा" सो होति अणणुतावी अपच्छतावीत्यर्थ । कारणे बितियपदेणं जयणाए पडिसेविऊण अपच्छाताविणो अणणुतावी पडिसेवा भवति किं पुण जो दप्पेण पडिसेविता णाणुतप्यतेत्यर्थः । अणणुतावि त्ति गत ॥४७२॥

णिस्सक्के त्ति दार –

संकणं संका, अनिरपेक्षाध्यवसायेत्यर्थः । णिग्गयसंको निस्संको निरपेक्षेत्यर्थः । सा य निस्संका दुविहा–

करणे भए य संका, करणे कुव्वं ण संकइ कतो वि ।
इहलोगस्स ण भायइ, परलोए वा भए एसा ॥४७३॥

करणं क्रिया, तं करेंतो णिस्संको, भयं णाम अपायोद्वेगित्वं, "संक" त्ति, इह छंदोभगभया णिगारलोवो द्रष्टव्यः । करणणिस्संकताए वक्खाण करेति "करणे कुव्वं ण संकति कुतो" त्ति कुतो वि न कस्यचिदाशङ्केतेत्यर्थ । भयणिस्संकाए वक्खाणं करेति "इहलोगस्स" पच्छद्ध । भए एस त्ति एसा भए णिस्संकता इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥४७३॥

इदार्णि एतासु दससु वि असुद्धपडिसेवणासु पच्छित्तं भण्णति –

मूलं दससु असुद्धेसु जाण सोधिं च दससु सुद्धेसु ।
सुद्धमसुद्धवइकरे पण्णट्ठविदू तु अण्णतरे ॥४७४॥

दससु असुद्धेसु त्ति दससु वि एतेसु दप्पादिएसु असुद्धपदेसु मूलं भवतीत्यर्थ ।

अहवा – "मूलं दससु," दससु दप्पादिसु मूलं भवतीत्यर्थः । "असुद्धेसु त्ति एतेसु दससु असुद्धपदेसु पडिसेविज्जमाणेसु चारित्रमसुद्धं भवतीत्यर्थः । एतेसु चेव दससु दप्पादिसु सुद्धेसु चारित्रविशुद्धि जानीहि । कहं पुणरेषां सुद्धासुद्धं भवति ? उच्यते – वर्त्तमानावर्त्तमानयोरित्यर्थः, "सुद्धमसुद्ध वतिकरे" त्ति किंचि सुद्धं किं चि असुद्धं, तेसिं सुद्धासुद्धाणं मेलओ "वतिकरो" भण्णति ॥४७४॥ (शेषार्थं गा० ४७५ चूर्ण्याम्) ।

एत्थ वक्खाणगाहा -

सालंबो सावज्जं, णिसेवते णाणुतप्पते पच्छा ।
जं वा पमादसहिओ, एसा मीसा तु पडिसेवा ॥४७५॥

णाणादियं आलंबणं अवलंबमाणो सालंबो भण्णति । तं पसत्थमालंबणं आलंबिऊण सावज्जं णिसेविऊण णाणुतप्पति पच्छा, सालंबं पदं सुद्धं सालंबित्वात्, अणाणुतावी पदं असुद्धं अपश्चात्तापत्वात् । एवं अण्णाण वि पदाणं सुद्धासुद्धेण मीसा पडिसेवा भवतीत्यर्थः । जं वा अण्णतरपमाएण पडिसेवितं तं पच्छाणुतावजुत्तस्स असुद्धसुद्धं भवति एसा मीसा पडिसेवा भवतीत्यर्थः ॥४७५॥

एताए मीसाए पडिसेवणाए का आरोवणा ? भण्णति - [1]पण्णट्ठविऊ उ अण्णतरे "पण्ण त्ति" वा "पण्णवण" त्ति "परूवण" त्ति वा "विण्णवण" त्ति वा एगट्ठं, "अट्ठो" णाम मीसियाए पडिसेवणाए पच्छित्तं, "विदू" णाम ज्ञानी, "अण्णतरे" त्ति मीसपडिसेवणाविकप्पे मीसपडिसेवणाए जे विदू ते पायच्छित्तं परूवयंतीत्यर्थः । ॥४७४॥

अथवा दसण्ह वि पदाण इमं पच्छित्तं -

दप्पेण होंति लहुया सेसा काहं ति परिणते लहुओ ।
तब्भावपरिणतो पुण जं सेवति तं समावज्जे ॥४७६॥

दप्पेण धावणादी करेमि त्ति परिणए चउलहुगा भवंति । सेसा अकप्पादिया घेप्पंति, ते करेमि त्ति परिणते मासलहु भवति । एतं परिणामणिप्फण्णं । जता पुण तब्भावपरिणओ भवति, तस्य भावस्तद्भावः दप्पादियाण अप्पणो स्वरूपे प्रवर्त्तनमित्यर्थः । "पुन" विशेषणे, पूर्वाभिहितप्रायश्चित्तत्वात् अयं विशेषः । आय-संजमपवयणविराहणाणिप्फण्णं पच्छित्तं दट्ठव्वमिति ॥४७६॥

अहवा मीसा पडिसेवणा इमा दसविहा भण्णति -

दप्पपमादाणाभोगा आतुरे आवतीसु य ।
तिंतिणे सहस्सक्कारे भयप्पदोसा य वीमंसा ॥४७७॥द्वा०गा०॥

दप्पपमादाणाभोगा सहसकारो य पुव्व भणिता उ ।
सेसाणं छण्हं पी इमा विभासा तु विण्णेया ॥४७८॥

दप्पो पमादो अणाभोगो सहस्सकारो य एते इहेव आदीए पुव्वं 'वण्णिया' भणिया । तो सेसाणं विभासा अर्थकथनं ॥४७८॥

आतुरे त्ति अस्य व्याख्या -

पढम-वितियदुतो वा वाधितो वा जं सेवे आतुरा एसा ।
दव्वादिअलंभे पुण, चउविधा आवती होति ॥४७९॥

पुव्वद्धं । पढमो खुहापरिसहो वितिओ पिवासापरिसहो, वाधितो जर-सासादिगा । एत्थ जयणाए पडिसेवमाणस्स सुद्धा पडिसेवणा । अजयणाए तण्णिप्फण्णं पच्छित्तं भवति ।

---

[1] गा. ४७४ ।

"आवतीसु य" अस्य व्याख्या "दव्वादि" पच्छद्धं । दव्वादि "आदि" सद्दातो खेत्तकालभावा घेप्पंति । दव्वतो फासुगं दव्वं ण लब्भति, खेत्तओ अद्धाण-पडिवण्णताण आवती, कालतो दुब्भिक्खादिसु आवती, भावतो पुणो गिलाणस्स आवती । एत्थ जेण एयाए चउव्विहाए आवतीए पडिसेवति तेण एसा सुद्धा पडि-सेवणा, अजयणाए पुण तण्णिप्फण्णं ति । "आवईसु" त्ति दारं गतं ॥४७९॥

"तिंतिणे" त्ति अस्य व्याख्या –

दव्वे य भाव तिंतिण, भयमभियोगेण सीहमादी वा ।
कोहादी तु पदोसो, वीमंसा सेहमादीणं ॥४८०॥

पातो तिंतिणो दुविहो – दव्वे भावे य । दव्वे तेंबरुयं दारुयं अग्गिमाहियं तिडितिडे त्ति, भावे आहारातिसु अलब्भमाणेसु तिडितिडे त्ति, असरिसे वा दव्वे लद्धे तिडितिडे त्ति । तिंतिणियत्तं दप्पेण करेमाणस्स पच्छित्तं, कारणे वइयाइसु सुद्धो । तिंतिणे त्ति गत ।

"भए" त्ति अस्य व्याख्या –

भयमभियोगेण सीहमादी वा द्वितीयपादः । "अभियोगो" णाम केणइ रायादिणा अभिउत्तो पंथं दंसेहि, तद्भया दर्शयति । सीहभयाद्वा वृक्षमारूढ, एत्थ सुद्धो । अणाणुतापित्तेण पच्छित्तं भवति ।

"पदोसा" य त्ति अस्य व्याख्या –

कोहादी उ पदोसो तृतीयः पादः । कोहादिएण कसाएण पदोसेण पडिसेवमाणस्स असुद्धो भवति । मूलं से पच्छित्तं कसायणिप्फण्णं वा । पदोसे त्ति गत्तं ।

"वीमंसे" त्ति अस्य व्याख्या –

वीमंसा सेहमादीणं ति चतुर्थः पादः । वीमंसा परीक्षा । सेहं परिक्खमाणेण सच्चित्तगमणादिकिरिया कया होज्ज, किं सद्दहति ण सद्दहति त्ति सुद्धो ॥४८०॥

अहवा इमे मीसियपडिसेवणप्पगारा –

देसच्चाइ सव्वच्चाई, दुविधा पडिसेवणा मुणेयव्वा ।
अणुवीयि अणणुवीती, सइं च दुक्खुत्त बहुसो वा ॥४८१॥

चारित्तस्स देसं चयति त्ति देसच्चाती, सव्वं चयति त्ति सव्वच्चाती एसा दुविहा पडिसेवणा समासेण णायव्वा । अणुवीति चिंतेऊण गुणदोसं सेवति, अणणुवीत्ति सहसादेव पडिसेवति । सति त्ति एगसि, दुक्खुत्तो दो वारा, बहुसो त्रिप्रभृतिबहुत्वं ॥४८१॥

"देसच्चाइ" त्ति अस्य व्याख्या –

जेण ण पावति मूलं णाणादीणं व जहिं धरति किंचि ।
उत्तरगुणसेवा वा देसच्चाएतरा सव्वा ॥४८२॥

जेण अवराहेण पडिसेवितेण "मूलं" पच्छित्तं ण पावति सा देसच्चागी पडिसेवणा । जेण वा अवराहेण पडिसेवितेण णाण-दंसण-चरित्ताण किंचि धरति सा वि देसच्चागी पडिसेवणा । उत्तरगुणपडिसेवा वा देसच्चागी पडिसेवणा । इतरा सव्व त्ति "इतरा" णाम जाए मूलं पावति, णाणादीणं वा ण किंचि धरति, मूलगुणपडिसेवा वा, एसा सव्वच्चागी पडिसेवणा भवतीत्यर्थः ॥४८२॥

"अणणुवीय" त्ति अस्य व्याख्या –

जा तु अकारणसेवा सा सव्वा अणणुवीयितो होति ।
अणुवीयी पुण णियमा अप्पज्झे कारणा सेवा ॥४८३॥

पुव्वद्धं । जा अकारणतो पडिसेवा गुणदोसे अचिंतेऊण सा अणणुवीती पडिसेवा, प्पमाणतो एक्कसि दो तिण्णि वा परओ वा पडिसेवति ।

"अणुवीति" त्ति अस्य व्याख्या – अणुवीती पुण पच्छद्धं । असिवादी कारणे, आत्मवशः अपरायत्तेत्यर्थः, सो पुण गुणदोसे विचिंतिऊण जं जयणाए पडिसेवति एस से अणुवीतीपडिसेवणा भवतीत्यर्थः । भणिया मीसिया पडिसेवणा ॥४८३॥

इदाणिं कप्पिया पडिसेवणाए भेया भण्णंति –

दंसण[1]-णाण[2]-चरित्ते[3] तव[4]-पवयण[5]-समिति[6]-गुत्तिहेतुं[7] वा ।
साधम्मियवच्छल्लेण[8] वा वि कुलतो[9] गणस्सेव[10] ॥४८४॥
संघस्सा[11]यरियस्स[12] य असहुस्स[13] गिलाण[14]-बाल[15]-वुड्ढस्स[16] ।
उदय[17]ग्गि[18]-चोर[19]-सावय[20]-भय[21]-कंतारा[22]वती[23]वसणे[24] ॥४८५॥ एताओ दो दा०गा०

दंसण-णाण-चरणा तिण्णि वि एगगाहाए वक्खाणेति –

दंसणपभावगाणं सत्थाणट्ठाए सेवती जं तु ।
णाणे सुत्तत्थाणं चरणेसणइत्थिदोसा वा ॥४८६॥

दसणपभावगाणि सत्थाणि सिद्धिविणिच्छिय-सम्मतिमादिगेण्हंतो असथरमाणो जं अकप्पियं पडिसेवति । जयणाए तत्थ सो सुद्धो अपायच्छित्ती भवतीत्यर्थः । णाणे त्ति णाणणिमित्तं सुत्तं अत्थं वा गेण्हमाणो तत्थ वि अकप्पियं असंथरे पडिसेवतो सुद्धो । चरणे त्ति जत्थ खेत्ते एसणादोसा इत्थिदोसा वा ततो खेत्तातो चारित्रार्थिना निर्गंतव्यं ततो निग्गच्छमाणो जं अकप्पियं पडिसेवति जयणाते तत्थ सुद्धो ॥४८६॥

तव-पवयणे दो वि दारा एगगाहाए वक्खाणेति –

णेहाति एवं काहं, कते विकिट्ठे व लायतरणादी ।
अभिवादणा दि पवयणे, विहुस्स विउव्वणा चेव ॥४८७॥

तवं काहामि त्ति घृतादि णेहं णिवेज्जा । कते वा विकिट्ठतवे पारणए लायतरणादी पिएज्ज,

"लाया" णाम वीहियातिमिउं भट्ठे भुज्जित्ता ताण तंदुलेसु पेज्जा कज्जति, तं लायतरणं भण्णति, तं विकिट्ठतवपारणाए आहाकम्मिय पिएज्जा । अण्णेण दोसीण दव्वादिणा गेगो भवेज्ज आदिग्गहणातो आमलगसक्करादयो गृह्यते । जयणाए सुद्धो ।

पवयणे त्ति अस्य व्याख्या – "अभिवादण"पच्छद्धं । पवयणट्ठताए किंचि पडिसेवंतो सुद्धो, जहा – कोति रायां भण्णेज्ज – जहा "धिज्जातियाणं अभिवातणं करेह" "आदि" ग्गहणातो "अतो वा मे विसयाओ णीह" । एत्थ पवयगट्ठियट्ठयाए पडिसेवंतो सुद्धो । जहा विण्हू अणगारो, तेण रूसिएण लक्खजोयण-प्पमाणं विगुरुव्वियं रूवं, लवणो किल आलोडिओ चरणेण तेण ।

अहवा जहा एगेण रातिणा साधवो भणिता "धिज्जाइयाण पादेसु पडह"। सो य अणुसट्ठिहिं ण ट्ठाति। ताहे संघसमवातो कतो। तत्थ भणिय "जस्स काति पवयणुब्भावणसत्ती अत्थि सो तं सावज्जं वा असावज्जं वा पउंजउ।" तत्थ एगेण साहुणा भणिय -"अह पयुंजामि"। गतो सघो रातिणो समीव, भणिओ य राया "जेसिं धिज्जाइयाणं अम्हेहिं पाएसु पडियव्व तेसिं समवात देहि तेसिं सयराह अम्हे पायेसु पडामो, णो य एगेगस्स"। तेण रण्णा तहा कयं। संघो एगपासे ट्ठितो। सो य अतिसयसाहू कणवीरलय गहेऊण अभिमंतेऊण य तेसिं धिज्जाइयाणं सुहासणत्थाणं तं कणवीरलयं चुडलयं व चुडलिवदणागारेण भमाडेति। तक्खणादेव तेसिं सव्वेसिं धिज्जातियाण सिराणि णिवडियाणि। ततो साहू रुट्ठो रायाणं भणति "भो दुरात्मन्! जति ण ट्ठासि तो एवं ते सवलवाहणं चुण्णेमि"। सो राया भीतो संघस्स पाएसु पडितो उवसतो य।

अण्णे भणंति - जहा सोवि राया तत्थेव चुण्णतो। एवं पवयणत्थे पडिसेवतो विसुद्धो ॥४८७॥

समिति त्ति अस्य व्याख्या -

इरियं ण सोधयिस्सं, चक्खुणिमित्त किरिया तु इरियाए।
खित्ता बितिय ततिया, कप्पेण वऽणेसि संकाए ॥४८८॥

विकलचक्खू इरियं ण सोहेस्सामीति काउं चक्खुणिमित्तं किरियं करेज्जा। "क्रिया" नाम वैद्योपदेशात् औषधपानमित्यर्थः। एस पडिसेवना इरियासमितिनिमित्त। खित्तचित्तादिओ होउं बितियाए भासासमितिए असमितो तप्पसमणट्ठताए किंचि ओसहपाणं पडिसेवेज्ज। ततिय त्ति एसणसमितिताए अणेसणिज्ज पडिसेवेज्ज, अद्धाण-पडिवण्णो वा अद्धाणकप्पं वा पडिसेवेज्ज, एसणादोसेसु वा दससु संकादिएसु गेण्हेज्जा ॥४८८॥

आदाणे चलहत्थो पंचमिए कादि वच्च भोमादी।
विगडाइ मणअगुत्ते वई काए खित्तदित्तादी ॥४८९॥

आयाणे त्ति आयाणणिक्खेवसमिती गहिता, ताए चलहत्थो होउं किंचि पडिसेवेज्ज। चलहत्थो णाम कंपणवातणा गहितो। सो अण्णतो पमज्जति अण्णतो णिक्खेव करेति। एसा पडिसेवणा तप्पसमट्ठा वा ओसहं करेज्ज। पंचमिए त्ति परिट्ठावणासमिती गहिता, ताए किंचि कातियाभूमीए वच्चमाणो विराहेज्ज, "आदि" ग्गहणातो सण्णाभूमीए वा संठविज्जंतीए।

"गुत्तिहेउं व" त्ति अस्य व्याख्या - विगडाइ पच्छद्धं। "विगड" मज्जं, तं कारणे पडिसेवियं, तेण पडिसेविएण मणसा अगुत्तो भवेज्ज। वायाए वा अगुत्तो हवेज्ज। कायगुत्तिए वा अगुत्तो खित्तचित्तादिया हवेज्ज ॥४८९॥

"साहम्मिवच्छल्लाइआण बाल-वुड्ढपज्जवसाणाण छण्हं दाराणं एगगाहाए वक्खाणं करेति।

वच्छल्ले असितमुंडो, अभिचारुणिमित्तमादि कज्जेसु।
आयरियऽसहुगिलाणे, जेण समाधी जुयलए य ॥४९०॥

साहम्मियवच्छल्लयं पडुच्च किंचि अकप्पं पडिसेवेज्ज, जहा अज्जवइरसामिणा असियमुंडो णित्थारितो। तत्थ किं अकप्पियं? भणति - [1]"तहेवासजतं धीरो" सिलोगो कठः। कज्जेसु त्ति कुल-गण-संघकज्जेसु समुप्पण्णेसु अभिचारक कायव्वं,'अभिचारक" णाम वसीकरणं उच्चाटणं वा रण्णो वसीकरण मतेण होमं कायव्व, णिमित्तमादीणि वा पउत्तव्वाणि, "आदि" ग्गहणातो चुण्णजोगा। आयरियस्स असहिष्णोर्गिला-

१ दसवे० अ० ७।

णस्स य जेण समाधी तत्कर्तव्यमिति वाक्यशेषः। जुवलं णाम बालवुड्ढा, ताण वि जेण समाधी तत्कर्तव्यमिति ॥४९०॥

सीसो पुच्छति – "को असहू ! कीस वा जुवलं पडिसिद्धं दिक्खियं ? तेसिं वा जेण समाही तं काए जयणाए घेत्तुं दायव्वमिति"।

आयरिओ भणति –

णिवदिक्खितादि असहू जुवलं पुण कज्जदिक्खितं होज्ज ।
पणगादी पुण जतणा पाउग्गट्ठाए सव्वेसिं ॥४९१॥

णिवो राया, "आदि" सद्दातो जुवराय-सेट्ठि-अमच्च-पुरोहिया य, एते असहू पुरिसा भण्णंति। ते कीस असहू ? भण्णइ – अंत-पंतादीहिं अभावितत्वात्। जुवलं बाल-वुड्ढा, ते य कारणे दिक्खिया होज्जा, जहा वइरसामी, अज्जरक्खियपिया य। जेण तेसिं समाधी भवति तं पणगादियाए जयणाए घेतव्वं। "प्रायोग्यं" णाम समाधिकारकं द्रव्यं। "सव्वेसिं" त्ति आयरिय-असहूगिलाण-बाल-वुड्ढाणं ति भणियं भवति। जयणाए अलब्भमाणे पच्छा-जाव-आहाकम्मेण वि समाधानं कर्तव्यमिति ॥४९१॥

इदाणिं उदगादीण वसणपज्जवसाणाणं अट्ठण्हं दाराणं एगगाहाए वक्खाणं करेति –

उदग-ग्गि-तेण-सावयभएसु थंभणि वलाण रुक्खं वा ।
कंतारे पलंबादी वसणं पुण वाइ गीतादी ॥४९२॥

उदकवाहो पानीयप्लवेत्यर्थः। अग्गि त्ति दवाग्निरागच्छतीत्यर्थः। चोरा दुविहा – उवकरण-सरीराणं। सावतेण वा उच्छित्तो सीह-वग्घादिणा। भयं बोधिगाण समीवातो उप्पण्णं। एतेसिं अण्णतरे कारणे उप्पण्णे इमं पडिसेवणं करेज्जा – थंभणि विज्जं मंतेऊण थंभेज्ज, विज्जाभावे वा पलायति रोडेन नश्यतीत्यर्थः, पलाउं वा असमत्थो श्रांतो वा सच्चित्तरुक्खं दुरुहेज्जादित्यर्थः। चोर-सावय-बोहियाण वा उवरिं रोसं करेज्ज। तत्थ रोसेण अण्णतरं परितावणादिविगप्पं पडिसेवेज्ज तथाप्यदोष इत्यर्थः।

"कंतारे" त्ति अस्य व्याख्या – कंतारे पलंबादी, "कंतार" नाम अध्वानं, जत्थ भत्तपाणं ण लब्भति तत्थ जयणाए कयलगमादी पलंबा वा गेण्हेज्जा, "आदि" सद्दाओ उदगादी वा। "आवती" चउव्विहा – दव्व-खेत्त-काल-भावावती, चउरण्णतराए किंचि अकप्पियं पडिसेवेज्ज, तत्थ विसुद्धो।

"वसणे" त्ति अस्य व्याख्या – वसणं पुण वाइगीतादी, "वसणं" णाम तंमि वसंतीति वसणं, तस्स वा वसे वट्टतीति वसणं, सुअब्भत्थो वा – अब्भासो वसणं भण्णति। "पुण" अवधारणे। वाइगं णाम मज्जं, तं कोति पुव्वभावितो धरेउं ण सक्के ति तस्स तं जयणाए आणेउं दिज्जति। 'गीताइ" त्ति कोइ चारणादि दिक्खितो वसणतो गीउग्गारं करेज्जा, "आदि" सद्दातो पुव्वभावितो कोपि पक्कं तंबूलपत्तादि मुहे पक्खिवेज्जा ॥४९२॥

एतणंतरागाढे सदंसणो णाण-चरणसालंबो ।
पडिसेवितुं कडायी, होइ समत्थो पसत्थेसु ॥४९३॥

एतदिति यदेतद् व्याख्यातं – "दंसणादि-जाव-वसणे" त्ति एतेसिं अण्णतरे आगाढकारणे उप्पण्णे पडिसेवंतो वि सदंसणो भवति, सह दंसणेण सदंसणो, कहं ? यथोक्तश्रद्धावत्वात्।

अहवा – णाणचरणाणि सह दंसणेण आलंबणं काउं पडिसेवंती। कहं पडिसेवंतो ? उच्यते, कडाइ त्ति "कडाई" नाम कृतयोगी, तिक्खुत्तो कओ योगो, अलाभे पणगहाणी, तो गेण्हति। स एवं पणगहाणीए जयणाए पडिसेवेउं "होति" भवति, समत्थो त्ति पभु त्ति वुत्तं भवति, सो य पभू गीतार्थत्वात् भवति, केसु ? उच्यते, पसत्थेसु पसत्था तित्थकराणुण्णाया, जे कारणा प्रत्युपेक्षणादिका इत्यर्थः।

अहवा –"होति समत्थो पसत्थेसु," गीतगीयत्थत्तणातो समत्थो भवति, अगीओ समत्थो ण भवति, पसत्थेसु तित्थकराणुण्णातेष्वित्यर्थः॥४६३॥

एसाउ दप्पिया-कप्पिया पडिसेवणा समासेणं।
कहिया सुत्तत्थो पेढियाए देओ न वा कस्स ॥४६४॥

एसा दप्पिया कप्पिया य पडिसेवणा समासेणं संखेवेणं कहिता इत्यर्थः। "सुत्तत्थो पेढियाए देयो न वा कस्स" कस्स देओ कस्स वा न देओ इति।

अहवा – कहितो सुत्तत्थो पेढियाए णिसीहिय-पेढियाए सुत्तत्थो व्याख्यात, सो पुण णिसीहपेढिकाए सुत्तत्थो कस्स देओ कस्स वा ण देओ इति भण्णति ॥४६४॥

जेसिं ताव ण देओ ते ताव भणामि –

अबहुस्सुते च पुरिसे, भिण्णरहस्से पइण्णविज्जते।
णीसाणपेहए वा, असंविग्गे दुब्बलचरित्ते ॥४६५॥

बहुस्सुयं जस्स सो बहुस्सुतो, सो तिविहो – जहण्णो मज्झिमो उक्कोसो। जहण्णो जेण पकप्पज्झयणं अधीतं, उक्कोसो चोद्दस-पुव्वधरो, तम्मज्झे मज्झिमो, एत्थ जहण्णे वि ताव ण पडिसेहो। न बहुस्सुओ अबहुस्सुतो, येन प्रकल्पाध्ययनं नाधीतमित्यर्थं, तस्य निसीथपीठिका न देया।

अहवा – अबहुस्सुय जेण हेठिल्लसुत्तं न सुतं सो अबहुसुतो भण्णति। पुरिसे त्ति पुरिसो तिविहो परिणामगो, अपरिणामगो, अतिपरिणामगो, तो एत्थ अपरिणामग अतिपरिणामगाणं पडिसेहो।

"भिण्णं रहस्सं" जमि पुरिसे सो भिण्ण-रहस्सो रहस्सं ण धारयतीत्यर्थः। इह "रहस्सं" अववातो भण्णति। तं जो अगीताणं कहेति सो भिण्णरहस्सो। पइण्णविज्जत्तणं वा करेति जस्स वा तस्स वा कहयति आदी अदिट्ठभावाण सावगाण वि जाव कहयति। णिस्साणं णाम आलबनं, तं पेहेति प्रार्थयति अववात-पेहे त्ति वुत्तं भवति, त अववायपद णिक्कारणे वि सेवतीत्यर्थः। ण संविग्गो असविग्गो पासत्थादि त्ति वुत्तं भवति। दुब्बलो चरित्ते दुब्बलचरित्तो, विणा-कारणेण मूलुत्तरगुणपडिसेवणं करेतीत्यर्थः। एस पुण "पुरिस" सद्दो सव्वेसु अणुवट्ठावेयव्वो। एतेसु पेढिगा-सुत्तत्थो ण दायव्वो इति ॥४६५॥

जो पुण पडिसिद्धे पुरिसे देति तस्स दोसप्पदरिसणत्थमिदं भण्णति –

एतारिसंमि देंतो, पवयणघातं व दुल्लभबोहिं।
जो दाहिति पाविहि ता, तप्पडिपक्खे तु दातव्वो ॥४६६॥

एतेसिं दोसाण जो अण्णतरेण जुत्ती सव्वेहिं वा तम्मि णिद्देसो एतारिसंमि पुरिसे पेढियसुत्तत्थं देंतो पवयणघातं करेति। "पवयणं" दुवालसंगं, तस्सत्थो तेण घातितो भवति, उस्सुत्ताचरणाओ।

अहवा – "पवयणं" संघो, सो वा तेण घातितो। कहं ? उच्यते, अयोग्यदानत्वात्, अयोग्गो अववायपदाणि जाणित्ता, सो अयोग्गो जत्थ वा तत्थ वा अववातपदं पडिसेवति, लोगो तं पासिउं भणेज्ज – "णिस्सारं पवयणं, मा कोइ एत्थ पव्वयउ," अपव्वयतेसु य पव्वयणपरिहाणीओ वोच्छित्ती। एवं वोच्छेदे कते प्रवचनघातेत्यर्थः।

अहवा – सो अयोग्गो अववातपदेण किंचि रायविरुद्धं पडिसेवेज्ज, ततो राया दुट्ठो पत्थारं करेज्ज, एवं प्रवचनघातेत्यर्थः। किं चान्यत्, दुल्लभं च वोहिं जो दाहिति सो पाविहितीत्यर्थः। तप्पडिवक्खो णाम अवहुस्सुतपडिवक्खो वहुस्सुतो, एवं सेसाण वि पडिवक्खा कायव्वा, तेसु पडिपक्खपुरिसेसु एस पेढियासुत्तत्थो देयो इति ॥छ॥ ॥४९६॥ ग्रंथाग्रं ॥४५००॥

॥ सिरि णिसीहे पेढिया सम्मत्ता ॥

॥ मंगलं भवतु ॥

परिशिष्टानि

अकारादि-वर्णानामनुक्रमेण भाष्यगाथानामनुक्रमणिका ।

चूर्णिकृता समुद्धृतानां गाथादि-प्रमाणानामनुक्रमणिका।

: ३ :

विशेष-नाम्नामनुक्रमणिका ।

धातवः

कीटादयः, पशवश्च

: ४ :

उदाहरणानामनुक्रमणिका।

: ५ :

अप्रसिद्धशब्दानामर्थाः ।

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	गाथाङ्काः	पृष्ठाङ्काः
अ				
अगड	×	कूप	१७३	
अच्चिय	×	उत्कृष्ट	४१	
अड्डुग	×	अटक जाना	१४१	
अणवठप्प	अनवस्थाप्य	दोष सेवी साधु को देने योग्य एक-प्रकार का प्रायश्चित्त		
अणाजीवी	अनाजीवी	आशंसा रहित अनासक्त	गा० ४२	४२
अणाभोगा	अनाभोग	विस्मृति	गा० ६५	
अणुवीचि	अनुविचिन्त्य	विचार करके	गा० ४८१	११३
अप्परिहारी	×	शिथिलाचारी	गा० ३०६	
असंखड़	×	कलह	गा० १०५	
असंविग्ग	असंविग्न	शिथिलाचारी	गा० ३४२	
आ				
आगर	आकर	खदान	गा० २८१	
आगाढ	×	बलवान कारण	गा० ३४२	
आजीवी	×	इहलोक और परलोक की आशंसा रखने वाला		२४
आरनाल	×	कांजी		७४
आयाम	×	अवश्रामण चावल आदि का पानी	गा० २००	
इ				
इलग्र	×	छुरी		२१
इंगाल	×	आहार का एक दोष		१२४
उ				
उव्वरअ (उव्वरय)	×	ओवरी		६७
उड्डाह	उद्दाह	अवहेलना		२०
उवहाण	उपधान	एक प्रकार का तप	गा० १५	
उसप्पिणी	उत्सर्पिणी	दस कोटाकोटि सागरोपम परिमित वह उत्क्रान्ति काल जिसमें समस्त पदार्थों के वर्णादि गुणों की क्रमशः उन्नति होती है।		२१

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	गाथाङ्काः	पृष्ठाङ्काः
ए				
एलुग	×	देहली		६२
ओ				
ओसप्पिणी	अवसर्पिणी	दस कोटाकोटि सागरोपम परिमित वह ह्रासकाल जिसमें समस्त पदार्थों के वर्णादि गुणों की क्रमशः हानि होती है।		२७
क				
कण्हराई	कृष्णराजी	×		३३
कडयोगी	कृतयोगी	गीतार्थ-ज्ञानी	गा० ७७	
कट्ठोरग	×	एक प्रकार का पात्र		
कट्ठोल्ल	×	हल से तयार की हुई भूमि	,, १४७	
कत्ति	×	चटाइ	,, १६५	
कप्पट्ठी	कल्पस्था	बालिका	गा० ३५५	
कप्पिआ	कल्पिका	ज्ञानादि आचार की रक्षा के लिए अप्रमत्तभाव से अकल्प्य (निषिद्ध) का सेवन करना		४३
कमढग	×	एक प्रकार का पात्र		११३
करणवीरिय	करणवीर्य	मन, वचन और कायरूप करण का सामर्थ्य		२७
करोडग	×	एक प्रकार का पात्र		५१
कालगुरु	×	दीर्घकाल तक किया जाने वाला तप		
कूडसक्खी	कूटसाक्षी	झूठी गवाही	,, ३३७	
कुडंग	×	चावल के छिलके	,, १४८	
कुडुभक	×	जल-मेंढक	,, १८७	
कोडि	कोटि	एक अंश	,, ४३६	
कोप्पर	×	हाथ की कोहनी		४७
कमार	कर्मकार	लोहार		७६
ख				
खमग	क्षपक	मासोपवासी आदि तपस्वी साधु	,, ३३	
खुड्डग	क्षुद्रक	लघुशिष्य		२४
खग्ग	×	गेंडा	,, २०२	
ग				
गल्लोल	×	एक प्रकार का पात्र		
गीयत्थ	गीतार्थ	ज्ञानी	,, ३६६	
गुरुग	×			१०

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	गाथाङ्काः	पृष्ठाङ्काः
च				
चिलमिणी	×	कनात	,, ६६	
चोदग	चोदक	प्रेरक प्रश्नकर्त्ता		३८
चोलपट्ट	×	साधु के पहनने का कटिवस्त्र	,, १६७	
छ				
छन्दडिया	×	एक प्रकार का आसन	,,	६४
ज				
जड्ड	×	हाथी	,, २०२	
जिणकप्पिय	जिकल्पिक	जिन के समान विशिष्ट साधना करने वाला जैन भिक्षु		४०
झंपक	निर्वापक	आग बुझाने वाला	,, २१६	
ड				
डक्क	दष्ट	दांतों से डसा हुआ	,, १४१	
डगल	×	मिट्टी का ढेला	,, ३३०	
ण				
णिक्खेव	निक्षेप	किसी पदार्थ को नाम, स्थापना आदि रूप से स्थापित करना।	गा० ५६	
णालिग	×	घड़ी – समय का एक माप।		३१
णंतग	×	वस्त्र		८३
त				
तव-गुरुग	×			५०
तव-लहुग	×			,,
तमुक्काय	तमस्काय		गा० ६८	
तुप्प	×	चर्बी	गा० २०१	
थ				
थक्क	×	यथासमय		
थग्ग	×	थाह—पानी की गहराई।	गा० १६६	
थली	×		गा० ३४५	
थीणद्धी	स्त्यानर्द्धि	एक प्रकार की निद्रा।		५५
द				
दप्पिया	दर्पिका	कषाय भाव से अकारण ही अकल्प्य का सेवन		६२
देवद्रोणी	×		गा० ३४५	

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	गाथाङ्काः	पृष्ठाङ्काः
प				
पकप्प	प्रकल्प	काटना कतरना।	गा० ६१	
पच्छकम्म	पश्चात्कर्म	श्रमण की भिक्षा का एक दोष।	गा० १७८	
पज्जव	पर्यव	रूपान्तर होना	गा० ५५	
पडिमा	प्रतिमा	प्रतिज्ञा	गा० ३६२	
पडिसेवग	प्रतिसेवक	दोष सेवन करने वाला।		४०
पडिसेवणा	प्रति-सेवणा	दोषों का सेवन		७४
पडिसंलीणया	प्रतिसंलीनता	स्त्री पशु नपुंसक आदि से रहित एकान्त वसति में रहना तथा इन्द्रिय और कषायों का निग्रह।		२४
पणवग	प्रज्ञापक	ज्ञान देने वाला		३८
पयला	प्रचला	तंद्रा	गा० १३३	
परब्भसमाण	×	घिरा हुआ		१६
परित्थड	×	वृत्तान्त		८
परिण्ण	×	अनशन	गा० ४५२	
परिवाडी	परिपाटी	अनुक्रम		३०
पलंब भंग	प्रलम्बभंग	फल तोड़ना	गा० ४३४	
पल्लत्थ	×	पलटना		८
पलिओवम	×	उपमेयकाल		२८
पारंची	पारचित	दशवां प्रायश्चित्त	गा० ३१०	
		एक दोष	गा० १७८	
पंत	प्रान्त	तुच्छ		८
पथ फिडिया	×	पथ भ्रष्ट	गा० २५५	
पाडिहारिय	प्रातिहारिक	वापिस देने योग्य वस्तु	गा० ३४३	
पिंड	×	आहार		२
पुग्गल	पुद्गल	सूक्ष्मतम एक मूर्त द्रव्य	गा० ३१६	
पुरकम्म	पुराकर्म	श्रमण की भिक्षाचर्या का		
पूर्व	×	काल का एक परिमाण		३०
पोत	×	वस्त्र		१७
पोग्गल	पुद्गल	मास	गा० २८६	
ब				
बुकण्ण	×	खेलने का पासा		१७
भ				
भोयडा	×	पहनने का कच्छ		५२
म				
मल्लग	×	मिट्टी का पात्र	गा० ३३०	

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	गाथाङ्काः	पृष्ठाङ्काः
र				
रेल्लिया	×	पानी से तरबतर भूमी		६१
ल				
लहुगुरू	लहुगुरु	एक प्रकार का प्रायश्चित्त	गा० १७६	
व				
वत्थि-संजम	वस्ति संयम	मैथुन से विरति, ब्रह्मचर्य		१
वंजण	व्यञ्जनम्	शब्द, अक्षर अथवा अक्षरों से निष्पन्न श्रुत	गा० १२०	
वियड	विकृत	एक प्रकार का मद्य	गा० १०४	
वियार	×	शौच का स्थान		४४
विराधणा	विराधना	जिन आज्ञा का उल्लंघन	गा० १३४	
वेद	×	अठारह हजार पद वाला एक शास्त्र	गा० १	
वेयावच्च	वैयावृत्य	सेवा	गा० २७	
वच्चगिह	×	शौचालय		८
वरण	×	पुल		७२
स				
सइज्झिय	×	पडोसी		८
समुद्देश	+	साधुओं को देने के लिए बनाया बनाया गया आहार	गा० ३०६	
सव्वद्धा	+	सदैव	गा० ५४	
संखडि	+	सामुहिक भोजन	गा० ३०६	
संडेवग	×	पैर रखने के लिए पानी में रखा जाने वाला पत्थर		७२
संवुक्क	शाम्बुक्य	एक प्रकार का शंख	गा० २६१	
संविग्ग	संविग्न	मुमुक्ष	गा० २३२	
सागारि	×	गृहस्थ	गा० ३३४	
सागरोवम	सागरोपम	उपमेय काल		२८
साहुली	×	वाटिका		८५
सेयवड	श्वेतपट	श्वेताम्बर		७८
सेह	शैक्ष	प्रव्रज्याभिमुख अथवा नवदीक्षित शिष्य	गा० ३२१	
संद्राव	×	द्रव्यसमूह		३१
ह				
हंसोलीण	×	कंधे पर चढना		१७

: ६ :

चूर्णिकृता प्रमाणत्वेन निर्दिष्टानां ग्रन्थानां नामानि ।